मुक्तिदाता

मुक्तिदाता

चारों सुसमाचार

एकही कथा-सूत्र में ग्रथित

ग्रन्थकार

कामिल बुल्के, एस० जे०

१९५६

काथलिक प्रेस

राँची

तीसरा संशोधित संस्करण

Imprimi potest: J. MOYERSOEN, S.J.
Vice-Provincialis
Missionis Ranchiensis
16-2-1956

Imprimatur: P. KERKETTA, S.J., Vic. Gen.
17-2-1956

प्राक्कथन

(दूसरा संस्करण)

प्रभु येसु ख्रीस्त मनुष्यजाति के मुक्तिदाता हैं। वे ईश्वर भी हैं और मनुष्य भी। वे मनुष्यजाति के सदस्य और प्रतिनिधि बने और हमारे सब पापों का प्रायश्चित्त करके उन्होंने हमको अनन्त जीवन प्रदान किया है। ईश्वर होने के कारण वे इस महान् कार्य की पूर्त्ति में समर्थ हुए। मरने के बाद पुनर्जीवित होकर, उन्होंने अपने प्रेरितों को सारे संसार में भेजा जिससे वे जाकर मनुष्यजाति की मुक्ति का सुसमाचार फैलावें।

उस समय पवित्र आत्मा की प्रेरणा से चार धर्मपुस्तकें लिखी गईं जो इंजील या सुसमाचार के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन चार धर्मपुस्तकों का विषय तो एकही है, अर्थात् प्रभु येसु की शिक्षा और जीवन-चरित्र ; लेकिन उद्देश्य और दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न होने के कारण हर एक लेखक ने उपदेशों और घटनाओं का संकलन स्वतन्त्रता-पूर्वक किया है। आधुनिक विशेषज्ञों की देश-काल आदि संबंधी खोजों के आधार पर मैंने इन चार पुस्तक-रत्नों को एकही कथा-सूत्र में पिरोने का प्रयत्न किया है। अक्षरशः उद्धरण का संग्रह होने के कारण भाषा कहीं-कहीं तो अवश्य शिथिल प्रतीत होगी ; किन्तु इससे एक बड़ा लाभ यह हुआ है कि प्रस्तुत पुस्तक के वृत्तान्त में शब्दमात्र भी न मिलेगा जो पवित्र आत्मा की प्रेरणा से न लिखा गया हो।

प्रस्तुत द्वितीय संस्करण में अनुच्छेदों के क्रम में कुछ परिवर्त्तन किया गया है। इसके अतिरिक्त मैंने भाषा का भी बहुत कुछ संशोधन किया है। इस कार्य में डॉ० रघुवंश से जो सहायता मिली है उसके लिए मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ।

कामिल बुल्के, एस० जे०

विषय-परिचय

अध्याय | पृष्ठ

प्रथम भाग—अप्रत्यक्ष जीवन और प्रत्यक्ष जीवन का आरंभ

द्वितीय भाग—गलीलिया में उपदेश

अध्याय | पृष्ठ

तृतीय भाग – यहूदिया और पेरेआ में उपदेश

चतुर्थ भाग – दुःखभोग और पुनरुत्थान

प्रथम भाग

अप्रत्यक्ष जीवन और प्रत्यक्ष जीवन का आरंभ

प्रस्तावना

सन्त योहन की प्रस्तावना

१ आदि में शब्द * था, और शब्द ईश्वर के साथ था, और शब्द ईश्वर था। आदि में वही ईश्वर के साथ था। सब कुछ उससे बनाया गया, और जो कुछ बनाया गया, वह उसके बिना नहीं बना। उसमें जीवन था, और जीवन मनुष्यों की ज्योति था; और ज्योति अंधकार में चमकती है और अंधकार ने उसे बुझाया नहीं।

२ ईश्वर का भेजा हुआ योहन नाम का एक मनुष्य था। यह साक्ष्य के लिए आया था, ज्योति के विषय में साक्ष्य देने के लिए जिससे उसके द्वारा सब विश्वास कर सकें; वह स्वयं ज्योति नहीं था पर ज्योति के विषय में साक्ष्य देनेवाला था।

३ वह सच्ची ज्योति थी जो इस जगत् में आनेवाले हर एक मनुष्य को प्रकाश देती है। वह जगत् में था, और जगत् उसी के द्वारा बनाया गया है, पर जगत् ने उसे पहचाना नहीं। वह अपने यहाँ आया, और उसके अपनों ने ही उसे अपनाया नहीं। पर जितनों ने उसे अपनाया और जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं, उनको उसने ईश्वर के पुत्र बनने का अधिकार दिया। वे न लोहू से, न शरीर की वासना से, न मनुष्य की इच्छा से परन्तु ईश्वर से उत्पन्न हुए हैं। **

४ और शब्द देहधारी हुआ, और उसने हमारे बीच में वास किया; और हमने उसकी महिमा देखी, जैसी महिमा पिता के एकलौते पुत्र की होती है; कृपा और सत्य से पूर्ण। योहन उसका साक्ष्य देता है और पुकारकर कहता है: "यह वही है जिसके विषय में मैंने कहा: जो मेरे पीछे आनेवाला है

---

* शब्द अर्थात् पुत्र परमेश्वर, पवित्र त्रित्व का दूसरा जन।

** हम एक आत्मिक पुनर्जन्म के द्वारा ईश्वर के पुत्र बन जाते हैं। यह पुनर्जन्म साधारण शारीरिक जन्म से कोई संबंध नहीं रखता।

वह मुझसे श्रेष्ठतर है, इसलिए कि वह मुझसे पहले था।" क्योंकि उसकी पूर्णता से हम सबों ने पाया, कृपा पर कृपा ; वैसे नियम तो मूसा के द्वारा दिया गया, पर कृपा और सत्य येसु ख्रीस्त के द्वारा मिला। ईश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा ; उस एकलौते पुत्र ने, जो पिता की गोद में है, हमें उसको बतलाया।

५ **सन्त लूकस की प्रस्तावना**

अनेकों ने हमारे बीच में बीती घटनाओं का वर्णन करने का प्रयास किया है, जैसा पहले प्रत्यक्षदर्शियों ने और शब्द के सेवकों ने इनको हम तक पहुँचाया है। मैंने भी प्रारंभ से सभी बातों का सावधानी से अनुसंधान किया है ; इसलिए, हे श्रीमान् थेयोफियुस, मुझे तेरे लिए इनका क्रमबद्ध विवरण लिखना उचित जान पड़ा जिससे तू इन बातों के सत्य को जान ले जो तुझे सिखाई गई हैं।

१ — स्वर्गीय संवाद-दाता

६ **योहन बपतिस्ता के जन्म का संवाद**

यहूदिया के राजा हेरोद के समय में अबियस के दल में ज़करियस नामक एक याजक था। एलीज़बेथ नामक उसकी पत्नी हरून की बेटियों में से थी। वे दोनों प्रभु की सभी आज्ञाओं और नियमों पर निर्दोष चलते हुए ईश्वर के सामने धार्मिक थे। उनके कोई बेटा नहीं था क्योंकि एलीज़बेथ बाँझ थी। और दोनों बूढ़े हो चले थे।

ऐसा हुआ कि, जब वह अपनी नियुक्ति के क्रमानुसार ईश्वर के सामने याजक का काम कर रहा था, याजकों के रिवाज़ से उसकी चिट्ठी निकली कि वह प्रभु के मन्दिर में प्रवेश करके धूपदान करे। और धूप जलाते समय लोगों की सारी भीड़ बाहर प्रार्थना कर रही थी। तब प्रभु का एक दूत उसे धूप की वेदी की दाँईं ओर खड़ा दिखाई दिया। स्वर्गदूत को देखकर ज़करियस घबरा उठा और उसपर भय छा गया। परन्तु स्वर्गदूत ने उससे कहा: "हे ज़करियस, मत डर, क्योंकि तेरी प्रार्थना सुनी गई है: तेरी पत्नी एलीज़बेथ के एक पुत्र उत्पन्न होगा और तू उसका नाम योहन रखना। वह तेरा आनन्द

और उल्लास होगा और उसके जन्म से बहुतेरे आनन्द मनाएँगे, क्योंकि वह प्रभु के सामने महान् होगा, दाखरस और मदिरा न पीएगा, अपनी माँ के गर्भ ही में पवित्र आत्मा से भरपूर हो जाएगा और वह इस्राएल के बहुत लोगों का मन उनके प्रभु ईश्वर की ओर फेर देगा। एलियस के आत्मा और सामर्थ्य में वह आपही ईश्वर के आगे चलेगा जिससे वह बापों का मन बेटों की ओर और अविश्वासियों को धर्मियों की समझ की ओर फेर सके और प्रभु के लिए एक सिद्ध प्रजा तैयार करे।"

पर ज़करियस ने स्वर्गदूत से पूछा: "इसपर मैं कैसे प्रतीति करूँ? क्योंकि मैं तो बूढ़ा हूँ और मेरी पत्नी भी बूढ़ी हो गई है।" स्वर्गदूत ने उसे उत्तर दिया: "मैं गाब्रिएल हूँ, जो ईश्वर के सामने खड़ा रहता है और तुझसे बातें करने और यह खुशख़बरी तुझे सुनाने को भेजा गया हूँ। देख, तू गूँगा हो जाएगा और जिस दिन तक ये बातें पूरी न होंगी, उस दिन तक तू बोल न सकेगा; क्योंकि तू मेरी बातों पर, जो अपने समय में पूरी होंगी, विश्वास न लाया।"

भीड़ ज़करियस की बाट जोह रही थी। लोग अचम्भे में थे कि वह मन्दिर में इतनी देर क्यों लगा रहा है। बाहर निकलने पर जब वह उनसे बातें न कर सका तो वे समझ गए कि उसे मन्दिर में कोई साक्षात् हुआ है। वह उनसे इशारा करता था, और गूँगा ही बना रहा। और फिर वह अपनी सेवा के दिन पूरे हो जाने पर अपने घर चला गया।

कुछ दिनों के बाद, उसकी पत्नी एलीज़बेथ गर्भवती हुई; और उसने पाँच महीने तक अपने को यह कहकर छिपाए रखा: "प्रभु ने मुझपर दयादृष्टि करके अब मेरे साथ यह बरताव किया है और मनुष्यों में मेरा अपमान दूर कर देने की कृपा की है।"*

प्रभु के जन्म का संवाद ७

छठे महीने स्वर्गदूत गाब्रिएल, ईश्वर की ओर से, गलीलिया के नासरेत नामक नगर में एक कुँवारी के पास भेजा गया जिसकी मँगनी दाऊद के घराने के योसेफ नामक एक पुरुष से हुई थी, और उस कुँवारी का नाम था मरिया। स्वर्गदूत ने उसके पास अन्दर आकर कहा: "प्रणाम, कृपापूर्ण, प्रभु आपके

---

* यहूदी लोग निःसन्तान होना ईश्वरीय दण्ड समझते थे।

साथ है, धन्य आप स्त्रियों में।" पर मरिया उसकी बातें सुनकर घबराई और मन में सोचने लगी कि "यह कैसा नमस्कार है"। तब स्वर्गदूत ने उससे कहा: "हे मरिया, मत डरिए, क्योंकि आपने ईश्वर की कृपा प्राप्त की है। देखिए, आप गर्भवती होंगी, बेटा जनेंगी और आप उसका नाम येसु रखिएगा। वे महान् होंगे और उच्चतम का पुत्र कहलाएँगे और प्रभु परमेश्वर उन्हें उनके पिता दाऊद का सिंहासन देगा और वे याकूब के घराने पर सदा राज्य करेंगे; तथा उनके राज्य का अन्त न होगा।"

पर मरिया ने स्वर्गदूत से कहा: "यह कैसे होगा क्योंकि मैं पुरुष को जानती भी नहीं?" स्वर्गदूत ने उत्तर दिया: "पवित्र आत्मा आपके ऊपर उतरेगा और उच्चतम की शक्ति आपपर छा जाएगी। इसलिए जो आपसे उत्पन्न होंगे वे पवित्र होंगे और ईश्वर के पुत्र कहलाएँगे। देखिए, आपकी कुटुम्बिनी एलीज़बेथ को भी बुढ़ापे में बेटा होनेवाला है। अब उसे, जो बाँझ कहलाती है, छठा महीना हो रहा है। क्योंकि ईश्वर की ओर से कोई बात असम्भव नहीं।"

मरिया ने कहा: "देख मैं प्रभु की दासी हूँ; जो तूने कहा, वह मुझमें पूरा हो।"* और स्वर्गदूत उससे विदा हुआ।

एलीज़बेथ से मरिया की भेंट उन दिनों मरिया उठकर पहाड़ी देश में यूदा के एक नगर के लिए शीघ्रता से चल पड़ी और ज़करियस के घर में प्रवेश करके उसने एलीज़बेथ को नमस्कार किया। ऐसा हुआ कि ज्योंही एलीज़बेथ ने मरिया का नमस्कार सुना त्योंही बालक उसके गर्भ में उछल पड़ा और एलीज़बेथ पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गई। वह ऊँचे स्वर से बोल उठी: "धन्य आप स्त्रियों में और धन्य आपके गर्भ का फल। यह वरदान मुझे कहाँ से मिला कि मेरे प्रभु की माँ मेरे पास आएँ? क्योंकि देखिए, ज्योंही आपके नमस्कार का शब्द मेरे कानों में पड़ा त्योंही बालक मेरे गर्भ में आनन्द के मारे उछल पड़ा। और धन्य हैं आप जिन्होंने विश्वास किया क्योंकि जो बातें प्रभु ने आपसे कही हैं, वे पूरी होंगी।"

---

*उसी क्षण शब्द देह बना, अर्थात् ईश्वर के पुत्र ने मनुष्य का स्वभाव धारण किया। इसलिए वे ईश्वर भी हैं और मनुष्य भी।

मरिया का भजन ९

तब मरिया बोल उठी:

"मेरी आत्मा प्रभु की महिमा गाती है,
और मेरा मन मेरे मुक्तिदाता ईश्वर में आनन्द मनाता है,
क्योंकि उसने अपनी दासी की दीनता पर दृष्टि डाली है।
देख, अब से सब पीढ़ियाँ मुझे धन्य कहेंगी:
इसलिए कि जो शक्तिमान् है, उसने मेरे लिए बड़े-बड़े काम किए हैं
और उसका नाम पवित्र है।
जो उससे डरते हैं उनपर पीढ़ी-पीढ़ी उसकी कृपा बनी रहती है।
उसने अपना बाहुबल दिखाया,
मन के घमंडियों को तितर-बितर कर दिया।
सम्राटों को उनके आसनों से गिरा दिया
और विनीतों को महान् बना दिया।
उसने भूखों को अच्छी चीज़ों से तृप्त किया
और धनवानों को खाली हाथ लौटा दिया।
उसने अपनी दया का स्मरण करके
अपने दास इस्राएल की रक्षा की,
जैसे उसने हमारे पूर्वजों से प्रतिज्ञा की थी,
अब्रहाम और उसकी सन्तान से सदा लों।"

योहन बपतिस्ता का जन्म १०

मरिया प्राय: तीन महीने एलीज़बेथ के साथ रहकर अपने घर लौट गई।

प्रसव का समय पूरा होने पर एलीज़बेथ के एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसके पड़ोसियों और कुटुम्बियों ने सुना कि प्रभु ने उसपर अपनी दया दरसाई है और वे उसके साथ खुश हुए। फिर ऐसा हुआ कि आठवें दिन वे लड़के का खतना करने आए और उसका नाम उसके बाप के नाम पर ज़करियस रखना चाहते थे। परन्तु उसकी माँ ने कहा: "हरगिज़ नहीं, उसका नाम योहन रखा जाएगा।" उन्होंने उससे कहा: "तुम्हारे घराने में तो किसी का यह नाम नहीं है।" इसपर उन्होंने उसके पिता से इशारे में पूछा कि वह उसका क्या नाम रखना चाहते हैं। पाटी मँगाकर उसने लिखा: "उसका

नाम योहन है।" और सब अचम्भित हुए। उसी क्षण ज़करियस का मुँह और जीभ खुल गई और वह बोलने और ईश्वर को धन्यवाद देने लगा। आसपास के रहनेवालों पर भय छा गया; ये सब बातें यहूदिया के पहाड़ी देश में चारों ओर फैल गईं। और सब सुननेवाले ये बातें अपने-अपने हृदय में रखकर कहने लगे: "कौन जाने यह बालक क्या होनेवाला है?" निश्चय ही प्रभु का हाथ उसके साथ था।

११ ज़करियस का भजन

उसका पिता ज़करियस पवित्र आत्मा से भरपूर हो गया और इस प्रकार भविष्यद्वाणी करने लगा:

"धन्य प्रभु, इस्राएल का ईश्वर, उसने अपने लोगों से भेंट की और उन्हें मुक्ति दी है,
और अपने दास दाऊद के वंश में हमारे लिए मुक्ति की एक महाशक्ति उत्पन्न की है।
जैसे वह अपने पवित्र नबियों द्वारा प्राचीन काल से कहता आया है कि वह हमें हमारे शत्रुओं और सब बैर रखनेवालों के हाथ से छुड़ाएगा,
हमारे पूर्वजों पर दया करेगा और अपनी पवित्र सन्धि का स्मरण करेगा, जिसे उसने शपथ खाकर हमारे पिता अब्राहम से किया था,
जिससे हम अपने शत्रुओं के हाथ से मुक्त होकर निर्भयता, पवित्रता और धार्मिकता के साथ उसके सम्मुख उसकी आजीवन सेवा कर सकें।
और तू, हे बालक, परमेश्वर का नबी कहलाएगा, तू प्रभु के आगे चलकर उसका मार्ग तैयार करेगा।
तू उसकी प्रजा को पापों की क्षमा द्वारा मुक्ति का ज्ञान प्रदान करेगा,
हमारे ईश्वर की उस प्रेमपूर्ण दया से जिसके द्वारा हमें स्वर्ग से प्रकाश प्राप्त होगा,
कि वह अंधकार और मृत्यु की छाया में बैठनेवालों को ज्योति प्रदान करे और हमारे पैरों को शांति-पथ की ओर अग्रसर करे।"

वह बालक बढ़ता गया। उसकी आत्मिक शक्ति विकसित होती गई। और इस्राएल के सामने प्रकट होने के दिन तक वह उजाड़ स्थान में रहा।

२ — प्रभु येसु का जन्म

योसेफ को स्वर्गदूत का दिखाई देना १२

ख्रीस्त का जन्म इस प्रकार हुआ। जब येसु की माँ मरिया की मँगनी योसेफ से हुई थी तब उनके एक साथ रहने के पहले ही मरिया पवित्र आत्मा से गर्भवती पाई गई। उसके पति योसेफ ने, जो धार्मिक था, मरिया को बदनाम न करने की इच्छा से चुपके से त्याग देने का विचार किया। योसेफ इन बातों को विचार ही रहा था कि उसने स्वप्न में प्रभु के एक स्वर्गदूत को यह कहते हुए देखा: "हे योसेफ, दाऊद की सन्तान, अपनी पत्नी मरिया को अपने यहाँ लाने से मत डर क्योंकि जो उसके गर्भ में है वह पवित्र आत्मा की शक्ति से है। वह पुत्र प्रसव करेगी और तू उनका नाम येसु रखना क्योंकि वे अपने लोगों को उनके पापों से बचाएँगे।"

यह सब इसलिए हुआ कि नबी के द्वारा कहा हुआ प्रभु का वचन पूरा हो: देखो, एक कुँवारी गर्भवती होगी और पुत्र पैदा करेगी, और लोग उसका नाम एम्मानुएल रखेंगे, जिसका अर्थ है: ईश्वर हमारे संग है।

योसेफ नींद से उठकर प्रभु के दूत के आज्ञानुसार अपनी पत्नी को अपने यहाँ लाया। परन्तु जब तक * उसने अपना पहलौठा पुत्र प्रसव नहीं किया वह उसके पास नहीं गया और उसने उनका नाम येसु रखा।

प्रभु येसु की वंशावली १३

अब्रहाम की सन्तान दाऊद के पुत्र, येसु ख्रीस्त की वंशावली: अब्राहाम से इसाक जन्मा, इसाक से याकूब, याकूब से यूदस और उसके भाई, थमर द्वारा

---

* यद्यपि ख्रीस्त का जन्म माता मरिया के गर्भ से हुआ फिर भी मरिया और योसेफ दोनों जन्म-भर कुँवारे ही रहे।

यहूदियों की बोल-चाल में "जब तक" शब्द केवल भूत काल का बोध कराता है। इसलिए भविष्यत् काल की कुछ सूचना न देकर, यह शब्द केवल भूत काल की सूचना देता है। उदाहरणार्थ: "और शाऊल की बेटी के मरने के दिन तक उसके कोई सन्तान नहीं हुई" (२ राजा ६, २३)। मरने के बाद उसके अवश्य कोई सन्तान नहीं हो सकती।

यूदस से फ़रेस और ज़रस ; फ़रेस से एस्रोन, एस्रोन से आरम, आरम से अमीनदव, अमीनदव से नास्सोन, नास्सोन से सलमोन, रहब द्वारा सलमोन से वोज, रूथ द्वारा वोज से ओवेद, ओवेद से येस्से, येस्से से दाऊद राजा जन्मा। उरियस की स्त्री द्वारा दाऊद राजा से सुलेमान, सुलेमान से रोबोअम, रोबोअम से अवियस, अवियस से आसा, आसा से योसफ़त, योसफ़त से योरम, योरम से ओज्रियस, ओज्रियस से योअथम, योअथम से अख़ज, अख़ज से एज़्रिख़िअस, एज़्रिख़िअस से मनस्सेस, मनस्सेस से आमोन, आमोन से योसिअस, और बाबुल-निर्वासन के समय योसिअस से येख़ोनिअस और उसके भाई जन्मे।

बाबुल-निर्वासन के बाद येख़ोनियस से सलाथिएल, सलाथिएल से ज़ोरोबबेल, ज़ोरोबबेल से अबियुद, अबियुद से एलियाकिम, एलियाकिम से आज़ोर, आज़ोर से सादोक, सादोक से आख़िम, आख़िम से एलियुद, एलियुद से एलियेज़ेर, एलियेज़ेर से माथन, माथन से याकूब, याकूब से मरिया का पति योसेफ, और मरिया से येसु जन्मे जो ख्रीस्त कहलाते हैं।

इस प्रकार अब्रहाम से दाऊद तक कुल चौदह पीढ़ियाँ हैं, दाऊद से बाबुल-निर्वासन तक चौदह पीढ़ियाँ और बाबुल-निर्वासन से ख्रीस्त तक चौदह पीढ़ियाँ हैं।

१४ **प्रभु येसु का जन्म**

उन दिनों में ऐसा हुआ कि अगुस्तुस कैसर ने एक आज्ञापत्र निकाला कि सारे जगत् की मर्दुमशुमारी की जाए। वह मर्दुमशुमारी पहले पहल सीरिया के हाकिम सिरीनुस के द्वारा ली गई। सब लोग अपने-अपने नगर में नाम लिखवाने जाते थे। योसेफ दाऊद के घराने और वंश का था, इसलिए वह गलीलिया देश के नासरेत नगर से निकल कर यहूदिया में दाऊद के बेथलेहेम नामक नगर में गया, कि वह अपनी गर्भवती पत्नी मरिया के साथ नाम लिखवा ले। इस प्रकार जब वे वहाँ रह रहे थे, मरिया के गर्भ के दिन पूरे हुए, और उसने अपने पहलौठे* पुत्र को जन्म दिया और उसको कपड़ों में लपेटकर चरनी में लिटा दिया, क्योंकि उन्हें सराय में जगह न मिल सकी थी।

---

*यहूदी लोग एकलौते लड़के को भी पहलौठा लड़का कहते थे।

उसी प्रान्त में चरवाहे मैदानों में जागरण करके रात्रि के पहरों के अनुसार अपने झुंड की रखवाली कर रहे थे। और प्रभु का एक दूत उनके पास आ खड़ा हुआ; ईश्वर की महिमा उनके चारों ओर चमक उठी और वे अत्यधिक डर से डर गए। स्वर्गदूत ने उनसे कहा: "डरो मत, क्योंकि देखो, मैं तुम्हें महान् आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूँ जो समस्त जाति के लिए होगा: आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक मुक्तिदाता, ख्रीस्त प्रभु, जन्मा है। और तुम्हारे लिए यह चिह्न होगा: तुम एक बालक को कपड़ों में लपेटा और चरनी में लेटा पाओगे।" एकाएक स्वर्गदूत के साथ स्वर्गीय सेना का समूह दिखाई दिया और ईश्वर का स्तुतिगान यों करने लगा: "सर्वोच्च में ईश्वर की महिमा प्रकाशित हो और पृथ्वी पर उन लोगों को शान्ति मिले जिनसे ईश्वर प्रसन्न है।" १५

फिर जब स्वर्गदूत उनको छोड़कर स्वर्ग सिधारे थे, चरवाहे एक दूसरे से कहने लगे: "चलो, हम बेथलेहेम को चलें और इस सारी घटना को देख लें जिसे प्रभु ने हमपर प्रकट किया है।" वे शीघ्र ही गए और वहाँ उन्होंने मरिया, योसेफ तथा चरनी में रखे हुए बालक को पाया। और यह देखकर उन्होंने वह बात, जो उनसे इस बालक के विषय में कही गई थी, प्रकट की। और सभी सुननेवाले चरवाहों की बातों पर चकित हुए। लेकिन मरिया ने इन सब बातों को अपने हृदय में रखकर उनपर विचार करती रही। और चरवाहे जैसा उनसे कहा गया था, वैसा ही सारा हाल सुन और देखकर ईश्वर की स्तुति और महिमा गाते हुए लौट गए। १६

प्रभु येसु का ख़तना १७

बालक के ख़तने के लिए जब आठ दिन पूरे हुए तब उनका नाम येसु रखा गया, जो नाम गर्भ में आने के पहले ही स्वर्गदूत के द्वारा दिया गया था।

प्रभु येसु का मंदिर में चढ़ाया जाना १८

मूसा के नियमानुसार जब शुद्धीकरण के दिन पूरे हुए तब वे बालक को प्रभु को अर्पित करने येरुसलेम ले गए, जैसा प्रभु के नियम में लिखा है: हर पहलौठा बेटा प्रभु को अर्पित किया जाए; और इस मतलब से भी कि वे पंडुकों का एक जोड़ा या कबूतर के दो बच्चे बलिदान में चढ़ाएँ, जैसा प्रभु के नियम में लिखा है।

१९ और देखो, येरुसलेम में सिमेयोन नाम का एक पुरुष रहता था: जो धर्मी और भक्त होने के कारण इस्राएल की सांत्वना की राह देख रहा था, और पवित्र आत्मा उसपर था। उसने पवित्र आत्मा से यह सूचना पाई थी: "तू प्रभु के ख्रीस्त को देखे विना नहीं मरेगा।" वह पवित्र आत्मा की प्रेरणा से मन्दिर में आया। जव माता-पिता शिशु येसु के लिए नियम की रीतियाँ पूरी करने के लिए उसको भीतर लाए, तव सिमेयोन येसु को अपनी गोद में लिया और ईश्वर को धन्यवाद देकर कहा: "हे प्रभु, अव तू अपने दास को अपने वचनानुसार शान्ति में विदा देता है। क्योंकि मेरी आँखों ने इस मुक्ति को देखा है जिसे तूने सव जातियों के लिए प्रस्तुत किया है, यह अन्यजातियों के प्रकाश के लिए ज्योति और अपनी जाति इस्राएल के लिए महिमा है।"

माता-पिता येसु के सम्बन्ध में ये वातें सुनकर अचम्भे में पड़ गए। सिमेयोन ने उन्हें आशिष देकर येसु की माँ मरिया से कहा: "देखिए, यह बालक इस्राएल में वहुतों के पतन और उत्थान के लिए है, और विरोध के चिह्न के लिए नियुक्त हुआ है। और एक तलवार आपके हृदय को आर-पार वेधेगी जिससे वहुत से हृदयों के विचार प्रकट किए जाएँ।"

२० अन्ना नाम की एक नवियानी थी जो असेर के कुल में फ़नुएल की वेटी थी। वह वहुत वूढ़ी हो गई थी और अपने विवाह होने के बाद केवल सात वरस तक अपने पति के साथ रही थी। वह चौरासी वरस की विधवा थी; और वह मन्दिर को न छोड़कर रात दिन उपवास और प्रार्थना में ईश्वर की सेवा किया करती थी। वह भी उसी घड़ी भीतर आकर प्रभु की महिमा गाने लगी, और इस्राएल की मुक्ति के सभी अभिलाषियों से येसु के विषय में वातें करने लगी।

३—प्रभु का बालकपन

ज्ञानी पुरुषों की आराधना २१

हेरोद राजा के दिनों में जब यहूदिया के बेतलेहेम में येसु का जन्म हुआ, तब पूर्व से ज्ञानी पुरुष येरुसलेम में आकर कहने लगे: "यहूदियों के जिस राजा का जन्म हुआ वह कहाँ है? क्योंकि हमने पूर्व में उनका तारा देखा और उनको दण्डवत् करने आए हैं।" यह सुनते ही हेरोद राजा और उसके साथ सारा येरुसलेम घबड़ा उठा। राजा ने सब महायाजकों और जाति के शास्त्रियों को सभा में बुलाकर उनसे पूछा: "ख्रीस्त का जन्म कहाँ होगा?" उन्होंने उससे कहा: "यहूदिया के बेथलेहेम में; क्योंकि नबी ने ऐसा लिखा है: हे बेथलेहेम, यूदा की भूमि, तू अवश्य ही यूदा के मुखियों में सबसे छोटा नहीं, क्योंकि तुझमें से वह नेता उत्पन्न होगा, जो मेरी इस्राएली प्रजा को मार्ग बताएगा।"

तब हेरोद ने ज्ञानियों को चुपके से बुलाकर उनसे पूछताछ करके जान लिया कि तारा किस समय उन्हें दीख पड़ा; फिर राजा ने उन्हें बेतलेहेम को भेजकर कहा: "जाइए, और बालक का ठीक-ठीक पता लगाइए; उसे पाने पर मुझे ख़बर दीजिए जिससे मैं भी जाकर उसको प्रणाम करूँ।"

राजा की बात सुनकर वे चले गए और देखो, जो तारा उन्होंने पूर्व में देखा था, वह उनके आगे-आगे चलता रहा और जहाँ बालक था, उस जगह के ऊपर पहुँचकर ठहर गया। उस तारे को देखते ही वे बहुत आनन्दित हुए। घर में प्रवेश करके उन्होंने बालक को उनकी माँ मरिया के साथ पाया और उनको साष्टांग प्रणाम किया; फिर अपना-अपना ख़जाना खोलकर उन्हें भेंट चढ़ाई: सोना, लोबान और गंधरस। फिर स्वप्न में यह चितावनी पाकर कि हेरोद के पास फिर न जाना, वे दूसरे रास्ते से अपने देश को लौट गए।

मिस्र भागना २२

उनके चले जाने के बाद, प्रभु का एक स्वर्गदूत योसेफ को स्वप्न में दिखाई दिया और कहा: "उठ, बालक और उनकी माँ को लेकर मिस्र देश में भाग जा; जब तक मैं तुझसे न कहूँ

तब तक तू वहीं रह, क्योंकि हेरोद बालक को मार डालने के लिए उसे ढूँढ़ेगा।" वह रात ही को उठकर बालक और उनकी माँ को साथ लेकर मिस्र देश को चल दिया। वह हेरोद के मरने तक वहीं रहा जिससे यह वचन पूरा हो जो प्रभु ने नबी के द्वारा कहा था: "मिस्र देश से मैंने अपने पुत्र को बुलाया।"

२३ **निर्दोष बच्चों की हत्या** तब हेरोद यह देखकर बहुत क्रोधित हुआ, कि ज्ञानियों ने मुझे धोखा दिया है। उसने प्यादों को भेजकर ज्ञानियों से पूछे हुए समय के अनुसार बेथलेहेम और आसपास के सब स्थानों के सभी लड़कों को जो दो बरस के या उससे छोटे थे मरवा डाला। तब वह वचन पूरा हुआ जो येरेमियस नबी ने कहा था: "रामा में एक शब्द सुन पड़ा, दारुण रोना और बिलखना: राखेल अपने बालकों के लिए रो रही है और अपने आँसू किसी को पोंछने नहीं देती, क्योंकि वे अब नहीं रहे।"

२४ **नासरेत लौटना** देखो, हेरोद के मरने के बाद मिस्र देश में प्रभु के दूत ने योसेफ से स्वप्न में दर्शन देकर कहा: "उठो, बालक और उसकी माँ को लेकर इस्राएल देश को चले जाओ क्योंकि जो बालक के प्राण लेना चाहते थे वे मर गए।" योसेफ उठकर बालक और उनकी माँ को साथ लेकर इस्राएल देश को चला गया। परन्तु यह सुनकर कि अरखेलौस अपने पिता हेरोद की जगह यहूदिया पर राज्य करता है वह वहाँ जाने से डरा, और स्वप्न में चितावनी पाकर गलीलिया में चला गया। और वहाँ वह नासरेत नामक नगर में जाकर रहने लगा; इस प्रकार नबियों का यह कथन पूरा हुआ: "वह नासरी कहलाएगा।"

२५ **बालक येसु शास्त्रियों के बीच में** बालक बढ़कर बलवान् होते गए और ज्ञान से भरपूर हुए; और ईश्वर की कृपा उनपर बनी रहती थी।

उनके माता-पिता हर साल पास्का के पवित्र उत्सव के लिए येरुसलेम जाया करते थे। जब येसु बारह बरस के हुए, वे पर्व की रीति के अनुसार येरुसलेम गए। दिनों के पूरे हो जाने पर जब वे लौटे, तब बालक येसु

येरुसलेम में ही रह गए, परन्तु उनके माता-पिता यह नहीं जानते थे। यह समझकर कि येसु यात्री-दल के साथ हैं, वे एक दिन की राह चले आने के बाद उनको अपने कुटुम्बियों और परिचितों के बीच ढूँढ़ने लगे। येसु को न पाकर वे उनको ढूँढ़ते-ढूँढ़ते येरुसलेम को लौटे। और ऐसा हुआ कि तीन दिनों के बाद उन्होंने येसु को मन्दिर में शास्त्रियों के बीच बैठे, उनकी बातें सुनते और उनसे प्रश्न करते पाया। जो-जो उनकी बातें सुनते, वे सब उनकी समझ और उत्तरों पर अचम्भित होते थे। येसु को देखकर वे चकित हुए और उनकी माता ने उनसे कहा: "बेटा, हमारे साथ तूने ऐसा क्यों किया? देख, तेरा पिता और मैं दुःखी होकर तुझे ढूँढ़ते थे।" येसु ने उनसे कहा: "आप मुझे क्यों खोजते थे? क्या आप नहीं जानते कि मेरे लिए अपने पिता के कामों में लगा रहना आवश्यक है?" पर जो बात येसु ने उनसे कही, उसे वे न समझ सके।

येसु का अप्रत्यक्ष जीवन २६

येसु उनके साथ उतरकर नासरेत में आए और उनके अधीन रहे। उनकी माता ने इन सब बातों को अपने हृदय में संचित रखा। येसु ज्ञान और उम्र में तथा ईश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ते गए।

४—येसु के प्रत्यक्ष जीवन की तैयारियाँ

योहन बपतिस्ता का उपदेश २७

तिबेरियस कैसर के शासन काल के पन्द्रहवें वर्ष में जब पोन्तुस पिलातुस यहूदिया का राज्यपाल था, हेरोद गलीलिया का राजा और उसका भाई फ़िलिप इतूरिया और त्रखोनिस का राजा, लिसानियस अबिलेना का राजा और अन्नस तथा कैफ़स प्रधानयाजक थे; तब उजाड़ प्रदेश में प्रभु की वाणी ज़करियस के बेटे योहन को सुनाई पड़ी। वह यर्दन के सारे देश में घूम-घूमकर

और पापक्षमा के लिए पछतावे के वपतिस्मा का प्रचार कर, यों उपदेश देने लगा: "पछतावा करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ पहुँचा है। जैसे इसायस नबी के प्रवचनों की पुस्तक में लिखा है: उजाड़ प्रदेश में पुकारनेवाले की आवाज़: प्रभु का रास्ता तैयार करो, उसके मार्ग सीधे करो; हर एक घाटी भरी जाएगी, हर एक पहाड़ी नीची की जाएगी, टेढ़े रास्ते सीधे और विषम रास्ते समतल बनाए जाएँगे; और सब शरीरधारी ईश्वर की मुक्ति का दर्शन करेंगे।"

योहन ऊँट के रोम का कपड़ा पहिने था और उसकी कमर में चमड़े का पट्टा बँधा था; उसका भोजन टिड्डियाँ और वन का मधु था। उस समय येरुसलेम और सारा यहूदिया और यर्दन के आसपास के देश-निवासी योहन के पास आते थे। लोग अपने पापों को स्वीकार करते हुए यर्दन नदी में उससे वपतिस्मा पाते थे।

२८ परन्तु बहुतेरे फ़रीसियों और सदूसियों को वपतिस्मा के लिए अपने पास आते देखकर योहन ने उनसे कहा: "हे साँपों के बच्चो, किसने तुम्हें आगामी क्रोध से भागने का रास्ता दिखाया है? पछतावे का उचित फल उत्पन्न करो और अपने-अपने मन में ऐसा विचार मत करो: हमारा पिता अब्रहाम है। क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ: ईश्वर इन पत्थरों से अब्रहाम के लिए सन्तान उत्पन्न कर सकता है। क्योंकि अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ में लग चुका है: जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता वह काटा और आग में डाला जाएगा।"

२९ जनता उससे पूछती थी: "तो हम क्या करें?" वह उन्हें उत्तर देता था: "जिसके पास दो कुरते हों, वह एक उसे दे दे जिसके पास नहीं है, और जिसके पास भोजन है वह भी ऐसा ही करे।"

नाकेदार भी वपतिस्मा लेने आए और उन्होंने उससे कहा: "हे गुरु! हम क्या करें?" वह उनसे कहता था: "जो तुम्हारे लिए नियत है, उससे अधिक कुछ न उगाहो।" नौकरी करनेवाले सिपाही भी उससे यों पूछते थे: "और हम क्या करें?" वह उनसे कहता था: "किसी पर ज़ोर-ज़ुल्म न करो और न किसी पर झूठा दोष लगाओ, और अपने वेतन से सन्तुष्ट रहो।"

योहन का पहला साक्ष्य ३०

जब लोग योहन के विषय में बात करने लगे और सब अपने-अपने मन में सोच रहे थे कि कहीं यही ख़्रीस्त न हो, योहन ने सब को यों उत्तर दिया: "मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ ; परन्तु एक आवेगा, जो मुझसे शक्तिमान् है; जिसके जूतों का फ़ीता भी खोलने के योग्य मैं नहीं हूँ। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। उसके हाथ में सूप है जिससे वह अपना खलिहान ओसाकर साफ़ करे और अपना गेहूँ अपने खत्ते में जमा करे ; पर भूसे को वह न बुझनेवाली आग में जलाएगा।"

अनेक अन्य बातों से भी योहन लोगों को उपदेश दे रहा था।

प्रभु का बपतिस्मा ३१
(जनवरी में)

तब येसु गलीलिया से यर्दन के तट पर योहन के पास उससे बपतिस्मा लेने आए। परन्तु योहन यों कहकर उनको रोकने लगा: "मुझे तो आपसे बपतिस्मा ग्रहण करना चाहिए और आप मेरे पास आए हैं?" पर येसु ने उसे उत्तर दिया: "अभी यों होने दे क्योंकि उचित है कि हम इसी रीति से सब धर्म पूरा करें।" तब योहन ने येसु की बात मान ली। फिर ऐसा हुआ कि जिस समय येसु बपतिस्मा लेकर प्रार्थना कर रहे थे, स्वर्ग खुल गया और पवित्र आत्मा स्पष्ट रूप में कपोत-जैसा उनपर उतरा और यह स्वर्गवाणी हुई: "तू मेरा प्रिय पुत्र है, तुझसे मैं अति प्रसन्न हूँ।"

उस समय येसु की उम्र लगभग तीस वर्ष की थी ; लोगों के विचार में वह योसेफ के पुत्र थे।

प्रभु की परीक्षा ३२

तब शैतान की परीक्षा सहने के लिए आत्मा येसु को उजाड़ प्रदेश में ले गया।

जब येसु चालीस दिन और चालीस रात तक उपवास कर चुके थे तब उन्हें भूख लगी। परीक्षक ने पास आकर उनसे कहा: "यदि आप ईश्वर के पुत्र हैं तो कहिए कि ये पत्थर रोटियाँ बन जाएँ।" येसु ने उत्तर दिया: "लिखा है: मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं जीता परन्तु हर एक वचन से जो ईश्वर के मुँह से निकलता है।"

तब शैतान ने उनको उठाकर पवित्र नगर में मन्दिर की चोटी पर खड़ा किया और कहा: "यदि आप ईश्वर के पुत्र हैं तो अपने को नीचे गिराइए क्योंकि लिखा है: उसने तेरे लिए अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा दी और वे तुझे हाथों-हाथ उठा लेंगे जिससे पत्थरों से तेरे पैरों को चोट न लगे।"

येसु ने उससे कहा: "यह भी लिखा है: प्रभु, अपने ईश्वर की परीक्षा न लो।"

फिर शैतान ने उनको एक अति ऊँचे पहाड़ पर ले जाकर संसार के सभी राज्य और उनकी महिमा दिखलाई और कहा: "यदि आप दण्डवत् करके मेरी पूजा करें, तो मैं आपको यह सब दे दूँगा।" तब येसु ने उससे कहा: "दूर हो, शैतान, क्योंकि लिखा है: प्रभु अपने ईश्वर की आराधना करो और केवल उसी की सेवा करो।" सब परीक्षा समाप्त करके शैतान एक निश्चित समय* के लिए येसु के पास से चला गया और देखो, स्वर्गदूत आकर येसु की सेवा करने लगे।

५—प्रभु येसु के पहले चेले

(मार्च महीने में)

३३ **योहन का दूसरा साक्ष्य** जब यहूदियों ने येरुसलेम से याजकों और लेवियों को योहन के पास यह पूछने को भेजा: "आप कौन हैं?"; तब उसने इस प्रकार गवाही दी, उसने सच्चाई से स्वीकार किया: "मैं ख्रीस्त नहीं हूँ।" उन्होंने उससे पूछा: "तब आप कौन हैं? क्या आप एलियस हैं?" उसने कहा: "मैं नहीं हूँ।" "तो क्या आप नबी हैं?" और उसने उत्तर दिया: "नहीं।" फिर उन्होंने उससे कहा: "तो आप कौन हैं? हम अपने भेजनेवालों को क्या उत्तर दें? आप अपने विषय में क्या कहते हैं?" उसने कहा: "मैं उजाड़ स्थान में पुकारनेवाले की आवाज़ हूँ: प्रभु के मार्ग सीधे करो, जैसे इसायस नबी ने कहा है।"

---

*शैतान येसु के दुःखभोग के समय लौटनेवाला था।

जो फ़रीसियों की ओर से भेजे गए थे, उन्होंने उससे पूछा : "यदि आप न तो ख़्रीस्त हैं, और न एलियस, और न नबी, तो बपतिस्मा क्यों देते हैं ?" योहन ने उन्हें उत्तर दिया : "मैं पानी से बपतिस्मा देता हूँ, पर तुम्हारे बीच में एक खड़े हैं जिनको तुम नहीं पहचानते : वेही हैं जो मेरे पीछे आनेवाले हैं, जो मुझसे श्रेष्ठतर हैं, जिनके जूतों का फ़ीता भी खोलने के योग्य मैं नहीं हूँ।"

यह सब यर्दन के पार बेथानिया में हुआ जहाँ योहन बपतिस्मा दे रहा था।

योहन का तीसरा साक्ष्य ३४

दूसरे दिन योहन ने येसु को अपने पास आते देखकर कहा : "देखो, ईश्वर का मेमना ; देखो, जो संसार के पाप हर लेते हैं। ये वेही हैं, जिनके विषय में मैंने कहा : मेरे पीछे एक पुरुष आनेवाले हैं जो मुझसे श्रेष्ठतर हैं क्योंकि वे मुझसे पहले थे। और मैं उनको नहीं जानता था ; परन्तु मैं पानी से बपतिस्मा देता हुआ आया हूँ कि वे इस्राएल में प्रकट किए जाएँ।" फिर योहन ने यों साक्ष्य दिया : "मैंने पवित्र आत्मा को कपोत जैसा स्वर्ग से उतरते देखा और वह उनपर ठहर गया। मैं तो उनको नहीं जानता था पर जिसने मुझे पानी से बपतिस्मा देने को भेजा, उसने मुझसे कहा था : जिनपर तू पवित्र आत्मा को उतरते और ठहरते देखेगा वेही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देते हैं। मैंने देखा और साक्ष्य दिया कि येही ईश्वर के पुत्र हैं।"

प्रभु येसु के पहले चेले ३५

दूसरे दिन योहन अपने दो चेलों के साथ फिर खड़ा था और येसु को गुज़रते देखकर बोला : "देखो, ईश्वर का मेमना।"

दोनों चेले उसकी यह बात सुनकर येसु के पीछे हो लिए। येसु ने घूमकर और उनको अपने पीछे आते देख उनसे कहा : "तुम किसकी खोज में हो ?" उन्होंने उनसे कहा : "हे रब्बी, (अर्थात् : हे गुरु) आप कहाँ रहते हैं ?" येसु ने उनसे कहा : "आओ और देखो।" उन्होंने जाकर देखा कि वे कहाँ रहते हैं ; और उस दिन वे उनके साथ ठहर गए। यह समय दसवें घंटे के लगभग था।

योहन की गवाही सुनकर जो येसु के पीछे हो लिए थे, उन दोनों में से एक सिमोन पेत्रुस का भाई अन्द्रेयस था। उसने पहले अपने भाई सिमोन ३६

को पाकर उससे कहा: "हमने मसीह अर्थात् ख्रीस्त को पा लिया है।" और वह उसे येसु के पास लाया। येसु ने उसको देखकर कहा: "तू सिमोन है, योहन का बेटा, तू केफ़ास कहलाएगा" (जिसका अर्थ है पेत्रुस)।

३७ दूसरे दिन येसु ने गलीलिया में जाना चाहा। तब फ़िलिप को पाकर उन्होंने उससे कहा: "मेरा अनुसरण करो।" फ़िलिप, अंद्रेयस और पेत्रुस के नगर बेथसैदा का निवासी था।

फ़िलिप ने नथानाएल को पाकर उससे कहा: "जिनके विषय में मूसा ने नियम में और नबियों ने भी लिखा है, उन्हीं को हमने पा लिया है: वे हैं नासरेत-निवासी योसेफ के बेटे येसु।" पर नथानाएल ने उससे कहा: "क्या नासरेत से कोई अच्छी वस्तु निकल सकती है?" फ़िलिप ने उससे कहा: "आकर देख लो।"

येसु ने नथानाएल को अपने पास आते देखकर उसके विषय में कहा: "देखो, यह सचमुच इस्राएली है, जिसमें कपट नहीं।" नथानाएल ने उनसे कहा: "आप मुझे कैसे जानते हैं?" येसु ने उसे उत्तर दिया: "फ़िलिप के तुझे बुलाने के पहले से, जब तू अंजीर के पेड़ तले था, मैंने तुझे देखा था।" नथानाएल ने उन्हें उत्तर दिया: "हे गुरु, आप ईश्वर के पुत्र हैं, आप इस्राएल के राजा हैं।" येसु ने उसे उत्तर दिया: "मैंने तुझसे कहा है कि तुझे अंजीर के पेड़ तले देखा, इसीलिए तू विश्वास करता है; इनसे भी बड़ी-बड़ी बातें तू देखेगा।" और येसु ने उससे कहा: "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, तुम स्वर्ग को खुला हुआ और ईश्वर के दूतों को मनुष्य के पुत्र के ऊपर से चढ़ते-उतरते देखोगे।"

३८ **काना में विवाह**

तीसरे दिन गलीलिया के काना में विवाह था और येसु की माँ वहाँ थी। येसु और उनके चेले भी विवाह में निमंत्रित हुए थे। दाखरस के घटने पर येसु की माँ ने उनसे कहा: "उनके पास दाखरस नहीं है।" येसु ने उससे कहा: "भद्रे इससे मेरा और आपका क्या? अब तक मेरा समय नहीं पहुँचा है।" उनकी माँ ने सेवकों से कहा: "जो कुछ वे तुमसे कहें, सो करना।"

वहाँ पर यहूदियों के शुद्धीकरण के लिए पत्थर के छः मटके धरे थे जिनमें दो-दो तीन-तीन मन समाता था। येसु ने सेवकों से कहा: "मटकों में पानी

भर दो।" उन्होंने उनको लबालब भर दिया। फिर येसु ने उनसे कहा: "अब निकालकर प्रधान भंडारी के पास ले जाओ।" और वे ले गए। जब प्रधान भंडारी ने दाखरस बना पानी चखा, और यह न जाना कि वह दाखरस कहाँ से आया है—पर जिन सेवकों ने पानी निकाला था वे जानते थे—तब प्रधान भंडारी ने दूल्हे को बुलाकर उससे कहा: "हर एक मनुष्य पहले बढ़िया दाखरस परोसता है, और लोगों के तृप्त हो जाने पर घटिया दाखरस देता है, पर आपने बढ़िया दाखरस अब तक रख छोड़ा है।"

इस प्रकार येसु ने गलीलिया के काना में अपने चमत्कारों का आरंभ किया। उन्होंने अपनी महिमा प्रकट की और उनके चेलों ने उनपर विश्वास किया।

इसके बाद येसु और उनकी माँ, उनके भाई और चेले कफ़रनाहूम गए, पर वे वहाँ केवल कुछ दिन रहे। ३६

६—प्रभु का येरुसलेम में उपदेश

(पास्का पर्व के अवसर पर)

मन्दिर से बिक्री करनेवालों को निकालना ४०

यहूदियों के पास्का पर्व के निकट आने पर येसु येरुसलेम की ओर चढ़े। मंदिर में उन्होंने बैल, भेड़ और कबूतर बेचनेवालों और सर्राफ़ों को बैठे पाया। और रस्सियों का कोड़ा बनाकर उन्होंने सब भेड़ों और बैलों को मंदिर से निकाल दिया, सर्राफ़ों के सिक्के छितरा दिए, मेज़ें उलट दीं, और कबूतर बेचनेवालों से कहा: "यहाँ से यह सब हटा ले जाओ, मेरे पिता के घर को व्यापार का घर मत बनाओ।" और वे किसी को भी बोझ लिए हुए मन्दिर से होकर आने-जाने नहीं देते थे।

वे उनको यों सिखलाते थे: "क्या यह नहीं लिखा है कि मेरा घर सब जातियों का प्रार्थना-घर कहा जाएगा? पर तुमने उसको चोरों का अड्डा बना रखा है।" तब उनके चेलों को याद आया कि लिखा है: तेरे घर की चिन्ता मुझे खाए जाती है।

४१ इसपर यहूदी लोग उनसे कहने लगे: "आप जो ऐसे करते हैं इसके लिए हमें कौन-सा चिह्न दिखाते हैं?" येसु ने उन्हें उत्तर दिया: "इस मंदिर को गिरा दो, और तीन दिन में मैं इसे फिर खड़ा कर दूँगा।" तब यहूदियों ने कहा: "इस मंदिर के बनाने में छियालीस वर्ष लगे हैं, क्या आप इसे तीन दिनों में खड़ा कर देंगे?" वे तो अपने शरीर के मंदिर के विषय में कह रहे थे। इसलिए जब वे मुरदों में से जी उठे तो उनके चेलों को याद आया कि उन्होंने यह कहा था; तब उन्होंने धर्मशास्त्र पर और येसु के इस कथन पर भी विश्वास किया।

४२ **बहुतों का अधूरा विश्वास** जब येसु पास्का के पर्व के दिन येरुसलेम में थे तब बहुत-से लोग उनके किए हुए अचरज के कामों को देखकर उनके नाम पर विश्वास लाए। पर येसु अपने को उनके भरोसे नहीं छोड़ते थे क्योंकि वे सब को जानते थे, और उनके लिए यह आवश्यक न था कि मनुष्य के विषय में कोई उन्हें साक्ष्य दे, क्योंकि वे आपही जानते थे कि मनुष्य के दिल में क्या है।

४३ **निकोदेमुस के साथ संभाषण** फ़रीसियों में से निकोदेमुस नामक यहूदियों का एक मुखिया था। रात को उसने येसु के पास आकर उनसे कहा: "हे गुरु, हम जानते हैं कि आप ईश्वर की ओर से आए हुए गुरु हैं, क्योंकि कोई भी इन अचरज के कामों को नहीं कर सकता जो आप करते हैं यदि ईश्वर उसके साथ न हो।" येसु ने उसे उत्तर दिया: "मैं आपसे सच-सच कहता हूँ कि यदि कोई फिर जन्म न ले तो ईश्वर का राज्य नहीं देख सकता।" निकोदेमुस ने उनसे कहा: "मनुष्य बूढ़ा होकर भी कैसे जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माँ के गर्भ में दूसरी बार जाकर फिर जन्म ले सकता है?" येसु ने उत्तर दिया: "मैं आपसे सच-सच कहता हूँ: यदि कोई जल और पवित्र आत्मा से फिर जन्म न ले, तो ईश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता*।

*इन शब्दों से येसु मुक्ति के लिए बपतिस्मा को अत्यन्त आवश्यक बताते हैं। इतना ही काफ़ी नहीं कि हम येसु पर विश्वास करें परन्तु हमें बपतिस्मा के द्वारा भी काथोलिक धर्ममंडली में प्रवेश करना चाहिए।

जो शरीर से जन्म लेता है वह शरीर है, और जो आत्मा से जन्म लेता है वह आत्मा है।

"अचम्भा मत कीजिए कि मैंने आपसे कहा: तुम लोगों को फिर जन्म लेना पड़ता है। वायु जिधर चाहती उधर चलती है; आप उसकी आवाज़ सुनते तो हैं, परन्तु यह नहीं जानते कि किधर से आती और किधर जाती है। जो कोई आत्मा से जन्म लेता है, उसकी भी यही दशा है।" निकोदेमुस ने उनसे पूछा: "ये बातें कैसे हो सकती हैं?" येसु ने उसे उत्तर दिया: "आप इस्राएल में शिक्षक होते हुए भी ये बातें नहीं समझते? मैं आपसे सच-सच कहता हूँ: हम जो जानते हैं उसीको कहते हैं और जो हमने देखा है उसीका साक्ष्य देते हैं; पर तुम लोग हमारा साक्ष्य नहीं मानते। जब मैंने तुमसे पृथ्वी की बातें कही हैं और तुम विश्वास नहीं करते, तो फिर तुम कैसे विश्वास करोगे, यदि मैं तुमसे स्वर्ग की बातें कहूँ? कोई भी स्वर्ग में नहीं चढ़ा है, सिवाय उसके जो स्वर्ग से उतरा है, अर्थात् मनुष्य का पुत्र, जो स्वर्ग में है। और जैसे मूसा ने मरुभूमि में साँप को ऊँचा उठाया था, वैसे ही आवश्यक है कि मनुष्य का पुत्र ऊँचा उठाया जाए; जिससे जो कोई उसपर विश्वास करे वह नष्ट न हो वरन् अनन्त जीवन पाए।"

प्रभु येसु, संसार का मुक्तिदाता ४४

ईश्वर ने संसार को इतना प्यार किया, कि उसने अपने एकलौते पुत्र को अर्पित कर दिया, जिससे जो कोई उसपर विश्वास करे, नष्ट न हो, वरन् अनन्त जीवन पाए। क्योंकि ईश्वर ने संसार में अपने पुत्र को इसलिए नहीं भेजा कि वह संसार का विचार करे परंतु इसलिए कि उसके द्वारा संसार मुक्ति पाए। जो पुत्र पर विश्वास करता है उसका विचार नहीं किया जाता; पर जो पुत्र पर विश्वास नहीं करता उसका विचार हो चुका है, क्योंकि वह ईश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं करता। विचार तो यह है: संसार में ज्योति आई है, पर मनुष्यों ने ज्योति की अपेक्षा अंधकार को पसंद किया क्योंकि उनके काम बुरे थे। क्योंकि जो बुराई करता है वह ज्योति से बैर रखता है और ज्योति के पास नहीं आता, जिससे उसके कामों पर दोष न लगाया जाए। पर जो सत्य पर चलता है वह ज्योति के पास आता है जिससे उसके काम प्रकट हों क्योंकि वे ईश्वर की प्रेरणा से किए हुए हैं।

४५ **यहूदिया में उपदेश**
(अप्रैल महीने में)

इसके बाद येसु और उनके चेले यहूदिया देश में गए ; और येसु उनके साथ ठहरकर बपतिस्मा देने लगे। योहन भी सालीम के निकट एनोन में बपतिस्मा दे रहा था क्योंकि वहाँ अधिक जल था और लोग जाकर बपतिस्मा पाते थे। क्योंकि योहन अब तक क़ैदखाने में नहीं डाला गया था।

४६ **योहन बपतिस्ता का अन्तिम साक्ष्य**

योहन के चेलों और यहूदियों के बीच शुद्धीकरण के विषय में विवाद उठा। उन्होंने योहन के पास आकर उससे कहा: "हे गुरु, जो यर्दन के उस पार आपके साथ था, जिसके विषय में आपने साक्ष्य दिया था, देखिए, वह बपतिस्मा दे रहा है और सब उसके पास जाते हैं।" योहन ने उत्तर दिया: "जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाए, किसी को कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता। तुम आपही इस बात के साक्षी हो कि मैंने कहा: मैं तो ख्रीस्त नहीं हूँ पर उनके आगे भेजा गया हूँ। जिसके दुलहिन है वही दुलहा है ; पर दुलहे का मित्र, जो उसकी सेवा करता और उसकी सुनता है, वह दुलहे की आवाज़ सुनकर आनन्द से हर्षित होता है। इसलिए मेरे आनन्द की सीमा नहीं रही। यह आवश्यक है कि वे बढ़ते जाएँ और मैं घटता जाता रहूँ।"

४७ जो ऊपर से आता है वह सब के ऊपर है। जो संसार से है वह संसार का है और संसार की बातें कहता है। जो स्वर्ग से आता है वह सब के ऊपर है। जो कुछ उसने देखा और सुना है उसीका साक्ष्य देता है, परन्तु कोई उसका साक्ष्य नहीं मानता। जिसने उसका साक्ष्य माना वह इस बात पर छाप दे चुका कि ईश्वर सत्य है। क्योंकि जिसे ईश्वर ने भेजा है वह ईश्वर के वचन कहता है, क्योंकि ईश्वर नाप-तौलकर पवित्र आत्मा को नहीं देता।

पिता पुत्र को प्यार करता है और उसके हाथ में उसने सब कुछ दे दिया है। जो पुत्र पर विश्वास करता है, उसने अनन्त जीवन प्राप्त किया है। परन्तु जो पुत्र पर विश्वास नहीं करता वह जीवन नहीं प्राप्त करेगा ; उसपर ईश्वर का क्रोध बना रहता है।

४८ **योहन की गिरफ्तारी**

अपने भाई फ़िलिप की पत्नी हेरोदियस के कारण, जिसे वह ब्याह लाया था, हेरोद ने योहन को पकड़वाया और क़ैदखाने में बाँध रखा। योहन ने हेरोद

से कहा था: "अपने भाई की पत्नी को रखना आपके लिए उचित नहीं है।" इसपर हेरोदियस उसके लिए जाल रचने लगी और वह उसे मार डालना चाहती थी। परन्तु वह ऐसा न कर सकी। क्योंकि हेरोद योहन को धार्मिक और सन्त जानकर उससे डरता था और उसको सुरक्षित रखता था। हेरोद बहुत से मामलों में योहन के परामर्श पर चलते थे और प्रसन्नता से उसकी बात सुनता था।

समारिया से गलीलिया यात्रा ४९
(मई महीने में)

योहन के क़ैदी होने के बाद, जब येसु को मालूम हुआ कि फ़रीसियों ने सुना है कि येसु योहन से अधिक चेले बनाते और बपतिस्मा देते हैं, (यद्यपि येसु आप नहीं परन्तु उनके चेले बपतिस्मा देते थे) तब वे यहूदिया को छोड़ फिर गलीलिया चले गए। उनके लिए समारिया से होकर जाना आवश्यक था।

समारितानी स्त्री ५०

अतः वे सिकार नामक समारिया के एक नगर में उस खेत के पास पहुँचे जिसे याकूब ने अपने बेटे योसेफ़ को दिया था। वहाँ याकूब का कूआँ था। इसलिए येसु रास्ते के थके-माँदे योंही कूएँ पर बैठे थे। समय छठे घंटे के लगभग था।

इतने में एक समारितानी स्त्री पानी भरने आई। येसु ने उससे कहा: "मुझे पानी पिला दे।" उनके चेले भोजन की सामग्री खरीदने नगर में गए थे। उस समारितानी स्त्री ने उनसे कहा: "आप यहूदी होकर मुझसे पीने के लिए पानी कैसे माँगते हैं, मैं तो समारितानी स्त्री हूँ?"* क्योंकि यहूदी लोग समारितानियों से कोई सम्बंध नहीं रखते थे। येसु ने उसे उत्तर दिया: "यदि तू ईश्वर का वरदान पहचानती और यह जानती कि यह कौन है जो तुझसे कहता है: मुझे पानी पिला दे, तो तू उसी से माँग लेती और वह तुझे संजीवन जल देता।" स्त्री ने उनसे कहा: "हे प्रभु, आपके पास पानी भरने को कुछ भी नहीं है और कूआँ गहरा है; तो संजीवन जल आपको

---

*यहूदियों का समारितानियों से पुराना बैर था। यहूदी उनको बिलकुल अपवित्र और विधर्मी समझते थे।

कहाँ से मिला? क्या आप हमारे पिता याकूब से भी बड़े हैं जिसने हमें यह कूआँ दिया है; और वह स्वयं तथा उसकी सन्तान और उसके ढोर उसमें से पीते थे?"

येसु ने उसे उत्तर दिया: "जो कोई यह पानी पीता है वह फिर प्यासा होगा; जो मेरे दिए हुए जल का पान करेगा वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा, पर जो जल मैं उसे दूँगा वह उसमें एक जलस्रोत हो जाएगा जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता है।" स्त्री ने उनसे कहा: "हे प्रभु, उस जल को मुझे दीजिए जिससे मैं फिर प्यासी न होऊँ, न यहाँ पानी भरने आऊँ।"

येसु ने उससे कहा: "जाकर अपने पति को यहाँ बुला ला।" स्त्री ने उन्हें उत्तर दिया: "मेरा कोई पति नहीं है।" येसु ने उससे कहा: "तूने ठीक कहा कि मेरा कोई पति नहीं है। क्योंकि तेरे पाँच पति हुए और जो अब तेरे साथ है वह तेरा पति नहीं है। यह तो तूने सच ही कहा है।"

स्त्री ने उनसे कहा: "हे प्रभु, मैं देखती हूँ कि आप नबी हैं। हमारे पूर्वजों ने इस पहाड़ पर आराधना की और आप लोग कहते हैं कि जिस स्थान पर आराधना करनी चाहिए वह येरुसलेम में है।" येसु ने उससे कहा: "हे स्त्री, मेरी बात मान ले; वह समय आता है जब तुम लोग न तो इस पहाड़ पर और न येरुसलेम में पिता की आराधना करोगे। जिसकी आराधना तुम लोग करते हो इसको तुम नहीं जानते, और जिसकी आराधना हम लोग करते हैं इसको हम जानते हैं; क्योंकि मुक्ति यहूदियों से आती है। पर वह समय आता है और आ ही गया है जब सच्चे आराधक आत्मा और सच्चाई से पिता की आराधना करेंगे क्योंकि पिता निश्चय ऐसे आराधकों को चाहता है। ईश्वर आत्मा है और उसके आराधकों को चाहिए कि आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करें।"

स्त्री ने उनसे कहा: "मैं जानती हूँ कि मसीह, जो ख्रीस्त कहलाता है, आनेवाला है। जब वह आएगा, तब हमारे लिए सभी बातें प्रकट करेगा।" येसु ने उससे कहा: "मैं, जो तुझसे बोल रहा हूँ, वही हूँ।"

५१ चेलों का आना

इतने में उनके चेले आ गए और अचम्भा करने लगे कि वे एक स्त्री से बातें कर रहे हैं। तब भी किसी ने नहीं कहा: "आप उससे क्या पूछते हैं?" या "आप उससे क्यों

बोलते हैं?" तब वह स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई और वहाँ के लोगों से कहने लगी: "आओ तो, एक मनुष्य को देखो जिसने मेरे किए हुए सब कामों को मुझसे कह दिया है। कहीं यही ख्रीस्त तो नहीं है?" अतः वे लोग नगर से निकलकर येसु के पास आने लगे। इतने में उनके चेले उनसे यों निवेदन कर रहे थे: "हे गुरु, खाइए।" पर येसु ने उनसे कहा: "खाने के लिए मेरे पास ऐसा भोजन है जो तुम नहीं जानते।" इसपर चेले आपस में बोले: "क्या कोई उन्हें खाने के लिए कुछ लाया है?" येसु ने उनसे कहा: "मेरा भोजन यह है कि मैं अपने भेजनेवाले की इच्छा पर चलूँ और उसका काम पूरा करूँ। क्या तुम नहीं कहते: चार महीने बाकी हैं और कटनी होगी? देखो, मैं तुमसे कहता हूँ: अपनी आँखें उठाकर खेतों को देखो; वे अब कटनी के लिए पक चुके हैं। काटनेवाला मज़दूरी पाता और अनन्त जीवन के लिए फल बटोरता है; जिससे बोनेवाला और काटनेवाला दोनों एक साथ आनन्द मनाएँ। क्योंकि इसमें यह कहावत सच्ची ठहरी है: बोनेवाला और है, काटनेवाला और। मैंने तुम्हें ऐसा खेत काटने को भेजा जिसमें तुमने परिश्रम नहीं किया; दूसरों ने परिश्रम किया है और तुम उनके परिश्रम के फल में भागी हुए हो।"

बहुत से समारितानियों का विश्वास ५२

और स्त्री के इस साक्ष्य पर कि उन्होंने मेरे किए हुए सब कामों को मुझसे कह दिया है, उस नगर के बहुत से समारितानियों ने येसु पर विश्वास किया। अतः जब समारितानी उनके पास आए, उन्होंने इस प्रकार निवेदन किया: "हमारे यहाँ ठहरिए।" और वे दो दिन वहीं ठहरे। येसु के उपदेश के कारण और बहुतेरों ने उनपर विश्वास किया; और वे उस स्त्री से कहते थे: "अब हम विश्वास करते हैं, केवल तेरे कहने से नहीं, परन्तु हमने स्वयं सुन लिया है, और हम जान गए हैं कि सचमुच येही संसार के मुक्तिदाता हैं।"

द्वितीय भाग
गलीलिया में उपदेश

७—गलीलिया में उपदेशों का आरंभ

(मई महीने में)

५३ **गलीलिया में लौट आना** दो दिनों के बाद येसु वहाँ से विदा हुए और गलीलिया को गए। येसु ने तो स्वयं ही कहा: "नबी अपने देश में आदर नहीं पाता।" * इसलिए जब वे गलीलिया आए तो गलीलियों ने उनका स्वागत किया क्योंकि उन्होंने उन सब कामों को देखा था जो येसु पर्व के दिन येरुसलेम में कर चुके थे क्योंकि वे भी पर्व के दिन वहाँ गए थे।

५४ **सूबेदार का बेटा** अत: येसु फिर गलीलिया के काना नगर में आए जहाँ उन्होंने पानी को दाखरस बनाया था। वहाँ एक सूबेदार था जिसका बेटा कफ़रनाहूम में बीमार था। यह सुनकर कि येसु यहूदिया से गलीलिया में आ रहे हैं वह सूबेदार उनके पास जाकर इस प्रकार विनती करने लगा: "आइए और मेरे पुत्र को चंगा कीजिए क्योंकि वह मरने पर है।" इसलिए येसु ने उससे कहा: "जब तक तुम चिह्नों और अचरज के कामों को न देखते हो तो विश्वास नहीं करते।" सूबेदार ने उनसे कहा: "हे प्रभु, मेरे पुत्र के मरने के पहले आइए।" येसु ने उससे कहा: "जा, तेरा पुत्र जीवित रहेगा।" यह मनुष्य येसु के वचन पर विश्वास करके चला गया। वह जा ही रहा था कि उसके दास उससे आ मिले और कहने लगे: "आपका बेटा जीता है।" उसने उनसे पूछा: "किस घड़ी वह अच्छा होने लगा?" उन्होंने उससे कहा: "कल सातवीं

---

*येसु का जन्म बथलेहेम में हुआ, अत: यहूदिया उनका देश कहला सकता है। प्रभु ने उसी कहावत को (नबी अपने देश में आदर नहीं पाता) दोहराया जब नासरेत में उनका स्वागत नहीं हुआ था।

घड़ी बुखार ने उसे छोड़ा।" अतः पिता ने जान लिया कि यह ठीक वही घड़ी है जब येसु ने मुझसे कहा था: "तेरा पुत्र जीवित रहेगा।" तब उसने तथा उसके सारे परिवार ने विश्वास किया।

यह दूसरा अचरज का काम था जिसे येसु ने यहूदिया से गलीलिया में आकर किया।

उपदेशों का आरंभ ५५

येसु, नासरेत नगर को छोड़कर, ज़बुलोन और नेफ़थलीम के देश में, समुद्र के किनारे स्थित कफ़रनाहूम नगर में जा बसे; जिससे यह वचन जो इसायस नबी ने कहा था पूरा हो: "हे ज़बुलोन के देश और नेफ़थलीम के देश, हे यर्दन के पार के समुद्रपथ, हे अन्यजातियों के गलीलिया, जो लोग अन्धकार में बैठे थे उन्होंने विशाल ज्योति देखी है और जो मृत्युच्छाया के देश में बैठे थे उनपर ज्योति का उदय हुआ है।"

उस समय से येसु ईश्वर के राज्य का सुसमाचार का प्रचार करते हुए, यह कहने लगे: "समय पूरा हुआ और ईश्वर का राज्य निकट आया है, पछतावा करो और सुसमाचार पर विश्वास करो।" उनका नाम सारे देश में फैल गया। वे उनके सभाघरों में शिक्षा दिया करते थे और सब उसकी प्रशंसा करते थे।

चार मछुवों का बुलावा ५६

फिर ऐसा हुआ* कि जब येसु गेनेसरेत झील के पास खड़े थे, और भीड़ ईश्वर का वचन सुनने के लिए उनपर टूट पड़ती थी, तब उन्होंने झील के किनारे लगी दो नावों को देखा। मछुए उनपर से उतरकर जाल धो रहे थे।

---

*सन्त मरकुस, अचरज के काम का उल्लेख न करके, यों लिखते हैं: "फिर गलीलिया के समुद्र के किनारे से होकर चलते हुए येसु ने सिमोन और उसके भाई अन्द्रेयस को समुद्र में जाल फेंकते देखा (क्योंकि वे मछुए थे)। येसु ने उनसे कहा: "मेरे पीछे चले आओ और मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुए बनाऊँगा।" तुरन्त ही वे जालों को छोड़कर उनके पीछे हो लिए।

वहाँ से कुछ आगे बढ़ने पर, येसु ने ज़ेबेदी के बेटे याकूब और उसके भाई योहन को नौका पर जालों को मरम्मत करते देखा। तुरन्त उन्होंने उनको बुलाया। तब वे अपने बाप ज़ेबेदी को मज़दूरों के साथ नौका पर छोड़कर येसु के पीछे हो लिए।"

येसु एक नाव पर – जो सिमोन की थी – चढ़े और उसने उसे किनारे से कुछ दूर तक हटा ले जाने के लिए कहा; तब वे नाव पर बैठकर जनता को शिक्षा देने लगे। उपदेश समाप्त करते ही उन्होंने सिमोन से कहा: "गहरे पानी में नाव ले चल और मछलियाँ पकड़ने के लिए अपने जाल फेंक।" सिमोन ने उत्तर दिया: "हे गुरु, हमने सारी रात मेहनत की पर पकड़ा कुछ भी नहीं। परन्तु आपके कहने पर मैं जाल फेकूँगा।" जब उन्होंने ऐसा किया, तो मछलियों का भारी झुंड फँसा और उनका जाल टूटने पर था। सो उन्होंने अपने साथियों को, जो दूसरी नाव पर थे, इशारा किया, कि आकर हमारी मदद करो। वे आए और दोनों नावों को भर लिया, यहाँ तक कि नावें डूबने पर थीं।

यह देखकर सिमोन ने येसु के पैरों पर गिरकर कहा: "हे प्रभु, मुझे छोड़ दीजिए, क्योंकि मैं पापी हूँ।" मछलियों के जाल में फँसने के कारण वह अपने साथियों सहित भौचक हो गया था। वैसे ही ज़ेबेदी के बेटे याकूब और योहन, जो सिमोन के साथी थे, भौचक हो रहे थे। परन्तु येसु ने सिमोन से कहा: "मत डर, अब से तू मनुष्यों को पकड़ेगा।" वे नावों को किनारे लाए और सब कुछ छोड़कर येसु के पीछे हो लिए।

५७ **कफ़रनाहूम** इसके बाद वे कफ़रनाहूम पहुँचे। विश्राम का दिन आने पर येसु सभाघर में प्रवेशकर उन्हें शिक्षा देने लगे। लोग उनकी शिक्षा पर चकित होते थे क्योंकि उनके वचन अधिकारपूर्ण थे।

सभाघर में एक मनुष्य था जो अशुद्ध आत्मा के वश में था; वह बड़े ज़ोर से चिल्ला उठा: "हे येसु नासरी, आपसे हमारा क्या संबंध? क्या आप हमें नष्ट करने आए हैं? मैं जानता हूँ कि आप कौन हैं: ईश्वर के पवित्र जन।" पर येसु ने उसे इस प्रकार डाँटा: "चुप रह और इस मनुष्य में से निकल जा।" आत्मा उस मनुष्य को भीड़ के बीच में पटककर उसमें से निकल गया, पर उसकी कुछ भी हानि न कर सका। तब सब लोगों पर भय छा गया और वे आपस में कहने लगे: "यह क्या बात है? शक्ति और अधिकार के साथ वे अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देते हैं और अशुद्ध आत्मा निकल जाते हैं।" इस कारण येसु की चर्चा देश के प्रत्येक कोने में फैल गई।

फिर सभाघर से निकलकर वे याकूब और योहन के साथ सीधे सिमोन और अन्द्रेयस के घर गए। सिमोन की सास बुख़ार में पड़ी हुई थी और वे तुरन्त उसका हाल येसु को बतलाने लगे। तब येसु ने उसके पास जाकर और उसका हाथ पकड़कर उसे उठाया। उसी दम उसका बुख़ार छूट गया और वह उनका सेवा-सत्कार करने लगी। ५८

सूरज डूबने के बाद सब लोग अपने यहाँ के रोगियों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों से पीड़ित थे, येसु के पास लाने लगे। येसु एक-एक पर हाथ रखकर उनको चंगा कर देते थे। इस प्रकार वह वचन पूरा हुआ जो इसायस नबी ने कहा था: उसने हमारी दुर्वलताएँ ले लीं और हमारे रोगों को स्वीकार कर लिया। बहुतों में से आत्मा यह चिल्लाते हुए निकलते थे: "आप ईश्वर के पुत्र हैं।" येसु उनको डाँटते और बोलने नहीं देते थे क्योंकि अपदूत जानते थे कि वे ख्रीस्त हैं। ५९

गलीलिया में दौरा ६०

प्रातःकाल, सूर्य निकलने के पूर्व वे उठकर बाहर निकले और एकान्त स्थान में गए। वहाँ वे प्रार्थना करने लगे। तब सिमोन और उसके साथी उनकी खोज में निकले। येसु को पाकर उन्होंने उनसे कहा: "सब लोग आपको खोज रहे हैं।" येसु ने उनसे कहा: "हम आसपास की बस्तियों और नगरों में चलें जिससे मैं वहाँ भी उपदेश दूँ क्योंकि मैं इसीलिए आया हूँ।"

येसु सारे गलीलिया में घूम-घूमकर उनके सभाघरों में शिक्षा देते, स्वर्ग-राज्य के सुसमाचार का प्रचार करते और लोगों के हर एक रोग और निर्बलता को दूर करते रहे।

एक कोढ़ी को चंगा करना ६१

तब एक कोढ़ी गिड़गिड़ाता हुआ येसु के पास आया और घुटने टेककर उनसे कहने लगा: "आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं।" येसु ने उसपर दया करके अपना हाथ बढ़ाया और उसे छूकर कहा: "मैं चाहता हूँ, शुद्ध हो जा।" उनके यह कहने पर उसी दम उसका कोढ़ जाता रहा और वह शुद्ध हो गया। येसु ने उसको इस प्रकार डाँटकर तुरन्त विदा किया: "सावधान, किसी से कुछ न कहना, पर जा अपने को याजक को दिखा, और अपने शुद्धीकरण के लिए जो कुछ मूसा ने ठहराया है उसे चढ़ा जिससे यह उनके लिए साक्ष्य हो।"

परन्तु वह वहाँ से निकलते ही इसका प्रचार करने लगा और इस बात को सब जगह फैलाने लगा। यहाँ तक कि येसु नगर में खुल्लमखुल्ला न जा सके, वह बाहर ही निर्जन स्थानों में रहने लगे और लोग चारों ओर से उनके पास आने लगे।

८—फरीसियों का विरोध

(जून महीने में)

६२ **अर्द्धांगी** कुछ दिनों के बाद येसु फिर कफ़रनाहूम पहुँचे। जब यह मालूम हुआ कि वे घर में हैं तो बहुत से लोग एकत्र हुए, यहाँ तक कि द्वार पर जगह न रही। येसु उन्हें वचन सुना रहे थे। फ़रीसी तथा शास्त्री भी, जो सारे गलीलिया तथा यहूदिया के हर एक गाँव से और येरुसलेम से आए थे, पास ही बैठे थे। और लोगों को चंगा करने के लिए प्रभु की शक्ति येसु में थी।

और देखो, लोग खाट पर पड़े हुए एक अर्द्धांगी को लाए। वे उसे अन्दर लाने और येसु के सामने रखने का उपाय ढूँढ़ने लगे। जब भीड़ के कारण अर्द्धांगी को भीतर लाने की एक भी राह उन्हें न सूझी तो वे छत पर चढ़ गए और खपड़े हटाकर खाट समेत अर्द्धांगी को नीचे भीड़ के बीच में येसु के सामने उतार दिया। उनका विश्वास देखकर येसु ने कहा: "ऐ मनुष्य, तेरे पाप क्षमा हुए हैं।" इसपर शास्त्री और फ़रीसी यों विचार करने लगे: "यह कौन है जो ईशनिन्दा कर रहा है। एक ईश्वर को छोड़ कौन पाप क्षमा कर सकता है?" उनके विचारों को जानकर, येसु ने उन्हें उत्तर दिया: "अपने-अपने मन में क्या सोच रहे हो? अधिक सहज क्या है: यह कहना: तेरे पाप क्षमा हुए हैं; अथवा यह कहना: उठ और चल? पर जिससे तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है, (उन्होंने अर्द्धांगी से कहा) मैं तुमसे कहता हूँ: उठ, अपनी खाट उठा ले और

अपने घर चला जा।" तुरन्त उनके सामने ही उठकर उसने अपनी खाट उठा ली और ईश्वर की महिमा गाता हुआ अपने घर चला गया।

तब के सब चकित होकर ईश्वर की महिमा करने लगे; वे डर से भर गए और बोले: "हमने आज अद्भुत कार्य देखे हैं।"

लेवी (मत्ती) का बुलाना ६३

फिर येसु समुद्र के किनारे निकल गए और सारी भीड़ उनके पास आने लगी और वे उन्हें शिक्षा देते थे। चलते-चलते उन्होंने लेवी नामक एक नाकेदार को चुंगीघर में बैठे देखा और उससे कहा: "मेरा अनुसरण करो।" और वह अपना सब कुछ छोड़कर उठ खड़ा हुआ और येसु के पीछे हो लिया।

लेवी ने अपने घर में येसु के लिए एक बड़ा भोज किया। वहाँ नाकेदारों और मेहमानों की भारी भीड़ थी जो उनके साथ भोजन कर रहे थे। पर फ़रीसियों और शास्त्रियों ने कुड़कुड़ाकर उनके चेलों से कहा: "नाकेदारों और पापियों के संग तुम क्यों खाते-पीते हो?" येसु ने उत्तर दिया: "रोगियों को ही वैद्य की आवश्यकता होती है, नीरोगों को नहीं। मैं अधर्मियों को पछतावे के लिए बुलाने आया हूँ, धर्मियों को नहीं।" ६४

पर उन्होंने येसु से कहा: "योहन के चेले बार-बार उपवास और विनतियाँ किया करते हैं; और फ़रीसियों के चेले भी वैसा ही करते हैं; तो आपके चेले खाते-पीते क्यों हैं?" येसु ने उनसे कहा: "क्या तुम बरातियों से उपवास करा सकते हो, जब तक दुलहा उनके साथ है? वे दिन आएँगे जब दुलहा उनसे छीन लिया जाएगा। उन दिनों में वे उपवास करेंगे।" ६५

येसु ने उनसे एक दृष्टान्त भी कहा: "कोई भी नया कपड़ा फाड़कर पुराने कपड़े में पैवंद नहीं लगाता है; नहीं तो वह नया कपड़ा भी फाड़ डालता है और नए कपड़े का पैवंद पुराने कपड़े के साथ मेल भी नहीं खाता। और पुरानी मशकों में कोई नया दाखरस नहीं डालता; नहीं तो नया दाखरस पुरानी मशकों को फाड़ देगा, दाखरस भी बह जाएगा और मशकें भी नष्ट हो जाएँगी। पर नया दाखरस नई मशकों में ही डालना चाहिए, जिसमें दोनों ६६

बचे रहें।* कोई भी पुराना दाखरस पीकर, नया नहीं चाहता; क्योंकि वह कहता है: 'पुराना ही अच्छा है'।"

६७ **विश्राम के दिन बालें तोड़ना** उस समय येसु विश्राम के दिन खेतों से होकर जा रहे थे; उनके चेले भूखे थे, इसलिए वे बालें तोड़-तोड़कर खाने लगे। फ़रीसियों ने यह देखकर येसु से कहा: "देखिए, जो काम विश्राम के दिन करने का नहीं है वह आपके चेले कर रहे हैं।" पर येसु ने उनसे कहा: "क्या तुमने नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब वह खुद भूखा था और उसके साथी भी? उसने ईश-मन्दिर में प्रवेश कर भेंट की रोटियाँ खाईं; याजकों को छोड़ न तो उसको न उसके साथियों को उन्हें खाने की छुट्टी थी। या तुमने नियम में नहीं पढ़ा है कि याजक विश्राम के दिनों में मन्दिर में विश्राम का दिन तोड़ते तो हैं पर दोषी नहीं होते? परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ: यहाँ एक है जो मन्दिर से भी महान् है। यदि तुम लोगों ने इसका अर्थ समझ लिया होता: मैं दया चाहता हूँ, बलिदान नहीं; तो निर्दोषों को दोषी नहीं ठहराया होता।" तब येसु ने उनसे कहा: "विश्राम का दिन मनुष्य के लिए बनाया गया, न कि विश्राम-दिन के लिए मनुष्य। इसलिए मनुष्य का पुत्र विश्राम के दिन का भी प्रभु है।"

६८ **सूखा हाथवाला** किसी दूसरे विश्राम के दिन ऐसा हुआ कि येसु सभाघर में प्रवेश करके शिक्षा देने लगे। और वहाँ एक आदमी था जिसका दायाँ हाथ सूख गया था।

शास्त्री और फ़रीसी येसु की ताक में थे कि कहीं वे विश्राम के दिन उसे चंगा करें तो हम उनपर दोष लगाएँ। पर येसु ने उनके विचार को जानकर उस सूखे हाथवाले आदमी से कहा: "उठ और बीच में खड़ा हो जा।" वह उठ

---

* इस दृष्टान्त का अर्थ यह है: येसु यहूदियों के धर्म का सुधार करने के लिए अर्थात् पुरानी पोशाक पर पैवन्द लगाने के लिए नहीं आए। परन्तु एक नई संस्था को चलाने के लिए अर्थात् पवित्र धर्ममंडली की स्थापना करने के लिए आए हैं।

खड़ा हुआ। इसपर येसु ने उनसे कहा: "तुम्हारे बीच कौन ऐसा मनुष्य है जिसकी एक ही भेड़ हो, और यदि वह विश्राम के दिन गड्ढे में गिर पड़े तो उसे ऊपर न खींच निकाले? भेड़ से मनुष्य कितना बढ़कर है। इसलिए विश्राम के दिन भला करना उचित है।" तब चारों ओर लोगों पर क्रोधभरी दृष्टि डाल और उनके हृदयों की कठोरता पर उदास होकर येसु ने उस मनुष्य से कहा: "अपना हाथ पसार।" उसने हाथ पसार दिया और उसका हाथ चंगा हो गया।

६९ इसपर फ़रीसी बाहर निकलकर तुरन्त हेरोदियों के साथ येसु के विरुद्ध सलाह करने लगे कि वे उसका नाश किस उपाय से करें। पर येसु यह बात जानकर वहाँ से चले गये।

मसीह की नम्रता ७०

बहुत लोग उनके पीछे हो लिए और उन्होंने उन सबों को चंगा किया। येसु ने उन्हें यों आज्ञा दी: "मुझे प्रकट न करना", जिससे वह वचन पूरा हो जो इसायस नबी ने कहा था: "मेरे सेवक को देखो जिसे मैंने चुन लिया है, मेरा प्यारा जिससे मेरी आत्मा अति प्रसन्न है। मैं अपना आत्मा उसमें डालूँगा, और वह अन्यजातियों में न्याय का प्रचार करेगा। वह न विवाद करेगा, न हल्ला मचाएगा और न बाज़ारों में कोई उसकी आवाज़ सुनेगा, वह न कुचले हुए सरकंडे को तोड़ेगा और न धुआँती हुई बत्ती को बुझाएगा, जब तक कि न्याय की विजय न हो, और अन्य-जातियाँ उसके नाम पर भरोसा रखेंगी।"

९—पहाड़ पर का उपदेश

प्रेरितों का चुनाव ७१

उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ कि येसु एक पहाड़ पर प्रार्थना करने गए और सारी रात ईश्वर की प्रार्थना में व्यतीत की। जब दिन हुआ, उन्होंने अपने चेलों को अपने पास बुलाकर उनमें से बारह को चुना, इनका नाम प्रेरित रखा और उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर शक्ति दी कि वे उन्हें निकालें और सब रोगों और दुर्बलताओं

को चंगा करें। बारह प्रेरितों के नाम इस प्रकार हैं: पहला, सिमोन, जो पेत्रुस कहलाता है, और उसका भाई अन्द्रेयस ; ज़ेबेदी का बेटा याकूब और उसका भाई योहन, जिनका नाम येसु ने बोअनेर्गेस रखा अर्थात् गर्जन के बेटे ; फ़िलिप और बार्थोलोमी ; थोमस और नाकेदार मत्ती ; अलफ़ई का बेटा याकूब और थद्देयुस ; सिमोन कनानी और यूदस इसकारियोती, जिसने येसु को पकड़वा दिया।

७२ **भीड़ की भीड़** उनके साथ नीचे उतरकर येसु एक मैदान में खड़े हुए। वहाँ उनके चेलों का समूह था और तमाम यहूदिया और येरुसलेम से तथा समुद्र के किनारे तीरुस और सिदोन से भीड़ की भीड़, जो उनका उपदेश सुनने और अपने रोगों से चंगा होने के लिए आई थी। और अपदूतग्रस्त लोग चंगे हो गए। सभी लोग येसु को छूना चाहते थे क्योंकि शक्ति उनसे निकलती और सब को चंगा करती थी। और अशुद्ध आत्मा उनको देखते ही उनके सामने गिर पड़ते और यों चिल्लाते थे: "आप ईश्वर के पुत्र हैं।" पर येसु ने उन्हें कठोरतापूर्वक अपने को प्रकट करने से मना किया।

७३ **पहाड़ पर का उपदेश**
(क) आठ आशीर्वचन येसु उस बड़ी भीड़ को देखकर पहाड़ पर चढ़े ; और उनके बैठ जाने पर उनके चेले उनके पास आए। और येसु मुँह खोलकर उन्हें इस प्रकार उपदेश देने लगे:

"धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं क्योंकि स्वर्गराज्य उन्हीं का है।"
"धन्य हैं वे जो नम्र हैं क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।"
"धन्य हैं वे जो शोक करते हैं क्योंकि वे सान्त्वना पाएँगे।"
"धन्य हैं वे जो न्याय के भूखे और प्यासे हैं क्योंकि वे तृप्त किए जाएँग।"
"धन्य हैं वे जो दयालु हैं क्योंकि वे दया प्राप्त करेंगे।"
"धन्य हैं वे जो हृदय के शुद्ध हैं क्योंकि वे ईश्वर के दर्शन करेंगे।"
"धन्य हैं वे जो मेल-मिलाप करानेवाले हैं क्योंकि वे ईश्वर के पुत्र कहलाएँगे।"
"धन्य हैं वे जो न्याय के लिए सताए जाते हैं क्योंकि स्वर्गराज्य उन्हीं का है।"
"धन्य हो तुम जब लोग मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करेंगे, तुम्हें सताएँगे और

झूठमूठ तुमपर सब प्रकार के दोष लगाएँगे। खुश हो और आनन्द मनाओ क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारा इनाम बड़ा है। इसी रीति से तो उन्होंने उन नबियों को, जो तुमसे पहले हुए हैं, सताया है।"

७४ "परन्तु तुमपर शोक, जो धनी हो, क्योंकि तुम अपना सुख-चैन पा चुके हो। तुमपर शोक, जो तृप्त हुए हो, क्योंकि तुम भूखे होगे। तुमपर शोक, जो अभी हँसते हो, क्योंकि तुम हाय-हाय करोगे और रोओगे। जब लोग तुम्हारी प्रशंसा करेंगे, तो तुमपर शोक, क्योंकि उनके पूर्वज झूठे नबियों के साथ ऐसा ही किया करते थे।"

(ख) येसु नियम पूरा करने आए हैं

७५ "यह न समझो कि मैं नियम या नबियों के लेखों को टालने आया हूँ: उनको रद्द करने नहीं परन्तु पूरा करने आया हूँ। क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूँ: जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएँ जब तक नियम से एक मात्रा या एक विन्दु भी बिना पूरा हुए न टलेगा। इसलिए जो कोई नियम की इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को टाले और दूसरों को ऐसा सिखाए वह स्वर्गराज्य में सब से छोटा कहलाएगा ; पर जिसने उनका पालन किया और उनकी शिक्षा दी वही स्वर्गराज्य में बड़ा कहलाएगा। क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ: यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फ़रीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो तो तुम स्वर्गराज्य में प्रवेश न करोगे।"

अपने भाई से मेल कर

७६ "तुमने सुना है कि पूर्वजों से यह कहा गया था: हत्या मत कर, जो कोई हत्या करे वह कचहरी में दण्ड के योग्य ठहराया जाएगा। पर मैं तुमसे कहता हूँ: जो कोई अपने भाई पर क्रोधित हो, वह कचहरी में दण्ड के योग्य ठहराया जाएगा ; और जो कोई अपने भाई से कहे 'रे निकम्मे', वह महासभा में दण्ड के योग्य ठहराया जाएगा ; और जो कोई कहे 'रे मूर्ख', वह नरक की आग के योग्य ठहराया जाएगा। इसलिए यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए और वहाँ तुझे याद आए कि मेरा भाई किसी कारण से मुझपर रुष्ट है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे और पहले अपने भाई से मेल करने जा ; और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।"

७७ **शुद्धता** "तुमने सुना है कि पूर्वजों से यह कहा गया था: व्यभिचार मत कर। पर मैं तुमसे कहता हूँ: जो कोई लालच से किसी स्त्री पर आँख लगाए वह अपने हृदय में उसके साथ व्यभिचार कर चुका। यदि तेरी दाहिनी आँख तेरे लिए पाप का कारण बने तो उसे निकालकर अपने से दूर फेंक दे; क्योंकि यह तेरे लिए कहीं भला है कि तेरे अंगों में से एक नष्ट हो जाए पर तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए। और यदि तेरा दाहिना हाथ तेरे लिए पाप का कारण बने तो उसे काट डाल और अपने से दूर फेंक दे; क्योंकि तेरे लिए यह कहीं भला है कि तेरे अंगों में से एक नष्ट हो जाए पर तेरा सारा शरीर नरक में न जाए।"

७८ **विवाह का बन्धन** "फिर यह कहा गया था: जो कोई अपनी पत्नी को त्यागे वह उसे त्यागपत्र दे। पर मैं तुमसे कहता हूँ: जो कोई व्यभिचार को छोड़ किसी और कारण से अपनी पत्नी को त्याग दे वह उससे व्यभिचार कराता है; और जो त्यागी हुई से विवाह करे वह व्यभिचार करता है।"

७९ **बातचीत में सादगी** "फिर तुमने सुना है कि पूर्वजों से यह कहा गया था: झूठी सौगंध मत खा, परन्तु प्रभु के सामने खाई हुई सौगंध को पूरा कर। पर मैं तुमसे कहता हूँ: सौगंध कभी न खानी चाहिए, न तो स्वर्ग की, क्योंकि वह ईश्वर का सिंहासन है, और न पृथ्वी की, क्योंकि वह उसका पावँदान है, और न येरुसलेम की, क्योंकि वह राजाधिराज का नगर है, और न अपने सिर की ही, क्योंकि तू एक बाल को भी उजला या काला नहीं बना सकता। तुम्हारी बात इतनी हो: हाँ की हाँ, और नहीं की नहीं; और जो कुछ इससे अधिक है वह बुराई से उत्पन्न होता है।"

८० **दीनता और नम्रता** *"तुमने सुना है कि यह कहा गया था: आँख के बदले आँख, और दाँत के बदले दाँत। परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ: दुष्टता का सामना न कर; पर यदि कोई

*ये आदेश नहीं लेकिन धर्म की उच्चतम सिद्धता तक पहुँचने के उपाय और निमंत्रण हैं।

तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे तो उसकी ओर दूसरा भी फेर दे। और यदि कोई तेरे साथ कचहरी में लड़ना और तेरा कुरता छीन लेना चाहे तो उसे अपनी चादर भी दे दे। और यदि कोई तुझे आध कोस बेगार में ले जाए तो उसके साथ कोस भर चला जा। जो कोई तुझसे माँगे उसे दे, और जो कोई तुझसे उधार लेना चाहे उससे मुँह न मोड़।"

"जो कुछ तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे लिए करें उसे तुम भी उनके लिए करो क्योंकि यही नियम और नबियों की शिक्षा है।"

बैरियों से प्रेम ८१

"तुमने सुना है कि यह कहा गया था: अपने पड़ोसी से प्रेम रख और अपने वैरी से वैर। पर मैं तुमसे कहता हूँ: अपने वैरियों से प्रेम रखो, जो तुमसे वैर रखते हैं उनका उपकार करो, और जो तुम्हें सताते और तुमपर झूठा दोष लगाते हैं उनके लिए प्रार्थना करो। इससे तुम अपने स्वर्ग के पिता की सन्तान हो जाओगे, जो अपना सूर्य भले और बुरे दोनों पर उगाता, और धर्मियों तथा अधर्मियों दोनों पर पानी बरसाता है। यदि तुम केवल उन्हीं से प्रेम रखो जो तुमसे प्रेम रखते हैं तो कौन-सा इनाम पाओगे? क्या नाकेदार भी यह नहीं करते? और यदि तुम केवल अपने भाइयों को नमस्कार करते हो तो यह कौन-सी बड़ी बात है? क्या अन्यजातियाँ भी यह नहीं करतीं? यदि तुम भलाई करनेवालों के साथ भलाई करते हो तो इसमें तुम्हारा क्या पुण्य है? पापी भी ऐसा करते हैं। यदि तुम उन्हें उधार दो जिनसे वापस पाने की आशा करते हो, तो इसम तुम्हारा क्या पुण्य है? पापी भी पापियों को उतना ही वापस पाने की आशा में उधार देते हैं।"

"परन्तु अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, भलाई करो और वापस पाने की आशा न रखकर उधार दो; तब तुम्हारा इनाम बड़ा होगा और तुम सर्वोच्च के पुत्र बनोगे, क्योंकि वह भी कृतघ्नों और बुरों पर दया करता है। अतः सिद्ध और दयालु बनो जैसे तुम्हारा स्वर्ग का पिता सिद्ध और दयालु है।"

(ग) दिखावे से बचना ८२

"चौकस रहो: तुम मनुष्यों के सामने अपने धार्मिक काम इसलिए मत करो कि लोग उन्हें देखें; नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता के यहाँ इनाम नहीं पाओगे।

इसलिए जब तू दान करे तब अपने आगे तुरही मत बजवा जैसा कपटी सभाघरों में और सड़कों पर करते हैं जिससे लोग उनकी बड़ाई करें। मैं तुमसे सच कहता हूँ: वे अपना इनाम पा चुके हैं। पर जब तू दान करे तब तेरा बायाँ हाथ न जाने कि तेरा दायाँ हाथ क्या करता है; तेरा दान गुप्त रहे और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है तुझे इनाम देगा।"

८३ "जब तुम प्रार्थना करो तब उन कपटियों के समान न बनो जो सभाघरों और सड़कों के नुक्कड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना पसन्द करते हैं; जिससे लोग उन्हें देख सकें; मैं तुमसे सच कहता हूँ: वे अपना इनाम पा चुके हैं। पर जब तू प्रार्थना करे तो अपनी कोठरी में जा और द्वार बन्द कर गुप्त रूप से पिता से प्रार्थना कर; और तेरा पिता जो गुप्त भी देखता है तुझे इनाम देगा।"

८४ "जब तुम उपवास करो तब कपटियों के समान अपना मुख उदास न करो क्योंकि वे अपना मुँह मलीन कर लेते हैं जिससे लोग देख सकें कि वे उपवास कर रहे हैं। मैं तुमसे सच कहता हूँ: वे अपना इनाम पा चुके। पर जब तू उपवास करे तब अपने सिर में तेल लगा और अपना मुँह धो ले जिससे तेरा उपवास लोगों को मालूम न पड़े, पर केवल अपने पिता को, जो हर एक गुप्त स्थान में है; और तेरा पिता जो गुप्त भी देखता है तुझे इनाम देगा।"

८५ **(घ) विविध सलाह**

"दोष न लगाओ जिससे तुमपर भी दोष न लगाया जाए। क्योंकि जिस प्रकार तुम न्याय करते हो उसी प्रकार तुम्हारा भी न्याय किया जाएगा; क्षमा करो और तुम भी क्षमा किए जाओगे। दो और तुम्हें दिया जाएगा: पूरा नाप, दबा-दबाकर, हिला-हिलाकर और उभरता हुआ, तुम्हारी गोद में डाला जाएगा; क्योंकि जिस नाप से तुम नापोगे, उसी नाप से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा।"

"अपने भाई की आँख का तिनका तू क्यों देखता है जब अपनी आँख में की धरन नहीं देखता? या तू अपने भाई से क्योंकर कह सकता है: हे भाई, अपनी आँख से तिनका निकालने दे; और देख, तेरी निज आँख में धरन है? हे कपटी, पहले अपनी ही आँख से धरन निकाल ले और तब अपने भाई की आँख का तिनका निकालने के लिए तू साफ़-साफ़ देख सकेगा।"

"पवित्र वस्तुएँ कुत्तों को न दो और न अपने मोतियों को सूअरों के सामने डालो, ऐसा न हो कि वे उन्हें अपने पावँ तले रौंदें और फिरकर तुमको फाड़ डालें।" ८६

"संकीर्ण द्वार से प्रवेश करो ; विनाश की ओर जानेवाला मार्ग चौरस है, द्वार चौड़ा है, और जो उससे प्रवेश करते हैं उनकी संख्या बड़ी है। कितना संकीर्ण है वह द्वार, और कितना संकरा है वह रास्ता जो जीवन की ओर ले जाता है और वे थोड़े ही हैं जो उसे पाते हैं।" ८७

"झूठे नबियों से बचे रहो ; वे भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, पर भीतर से खूँखार भेड़िए हैं। उनके फलों से ही तुम उन्हें पहचानोगे। क्या लोग काँटों से अँगूर या ऊँटकटारों से अँजीर बटोरते हैं ? इस प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छे फल, और बुरा पेड़ बुरे फल लाता है। अच्छा पेड़ बुरे फल नहीं ला सकता है, और न बुरा पेड़ अच्छे फल। जो पेड़ अच्छे फल नहीं लाता वह काटा और आग में डाला जाएगा। इस तरह उनके फलों से ही तुम उन्हें पहचानोगे।" ८८

(ङ) उपसंहार ८९

चट्टान पर बनाया घर

"जो-जो मुझसे : हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हैं, वे सब के सब स्वर्गराज्य में प्रवेश नहीं करेंगे ; परन्तु जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पूरी करता है वही स्वर्ग में प्रवेश करेगा। इसलिए जो कोई मेरी ये बातें सुनता और मानता है वह उस बुद्धिमान् मनुष्य के समान है जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया है। पानी बरसा, बाढ़ें आईं, आँधियाँ चलीं और उस घर से टकराईं, तब भी घर नहीं गिरा क्योंकि उसकी नीव चट्टान पर थी। परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता तो है पर मानता नहीं, वह उस मूर्ख के समान होगा जिसने अपना घर बालू पर बनाया। पानी गिरा, बाढ़ें आईं, आँधियाँ चलीं और उस घर से टकराईं, और वह घर गिर पड़ा और उसका सर्वनाश हुआ।"

अपना यह उपदेश समाप्त करने के बाद येसु ने कफ़रनाहूम में प्रवेश किया। जनता उनकी शिक्षा पर चकित थी ; क्योंकि वे उनके शास्त्रियों और फ़रीसियों के समान नहीं वरन् अधिकार के साथ उन्हें शिक्षा देते थे।

१०—समुद्र के आसपास उपदेश

(जुलाई से अक्तूबर तक)

६० **कफ़रनाहूम का शतपति** किसी शतपति का नौकर जो उसे बहुत प्रिय था, रोग के कारण मरने पर था। येसु की चर्चा सुनकर उसने यहूदियों के प्राचीनों को येसु के पास यह प्रार्थना करने को भेजा: "आकर मेरे दास को स्वस्थ कीजिए।" वे येसु के पास आकर उनसे अनुरोध करने लगे: "वह शतपति इस योग्य है कि आप उसके लिए यह करें। क्योंकि वह हमारी जाति से प्रेम रखता है और उसी ने हमारे लिए सभाघर बनवाया है।" सो येसु उनके साथ गए। वे घर से बहुत दूर न थे कि शतपति ने अपने मित्रों के द्वारा येसु के पास यह संदेश भेजा: "हे प्रभु, कष्ट न कीजिए क्योंकि मैं इस योग्य नहीं हूँ कि आप मेरे यहाँ आएँ; इसी कारण मैंने अपने को इस योग्य नहीं समझा कि आपके पास जाऊँ। आप एक ही शब्द कह दीजिए और मेरा नौकर चंगा हो जाएगा। क्योंकि मैं भी सत्ता के अधीन हूँ, और मेरे अधीन सिपाही रहते हैं; जब मैं एक से कहता हूँ: जा, तो वह जाता है; और दूसरे से: आ, तो वह आता है; और अपने नौकर से: यह कर, तो वह यह कर देता है।" यह सुनकर येसु अचम्भित हुए और अपने पीछे आती हुई भीड़ की ओर मुड़कर कहा: "मैं तुमसे सच कहता हूँ: मैंने इस्राएल में भी इतना दृढ़ विश्वास नहीं पाया।" और भेजे हुए लोगों ने घर लौटकर रोगी दास को चंगा पाया।

६१ **नाइम का युवक** इसके बाद ऐसा हुआ कि येसु नाइम नगर गए। उनके साथ-साथ उनके चेले और बहुत-से लोग भी जा रहे थे। जब वे नगर के फाटक के निकट पहुँचे तो लोग एक मुरदे को बाहर ले जा रहे थे; वह अपनी माँ का एकलौता बेटा था और वह विधवा थी। नगर की एक भारी भीड़ उसके साथ थी। माँ को देखकर प्रभु को उसपर दया आ गई और उन्होंने उससे कहा: "मत रोना।" और पास आकर अर्थी का स्पर्श किया। इसपर ढोनेवाले ठहर गए। और येसु ने कहा: "हे

युवक ! मैं तुझसे कहता हूँ : उठ।" मुरदा उठ बैठा और बोलने लगा। और येसु ने उसे उसकी माँ को सौंप दिया। सब लोगों पर भय छा गया और वे ईश्वर की महिमा इस प्रकार करने लगे: "हमारे बीच महान् नबी उत्पन्न हुआ है और ईश्वर ने अपनी जाति का स्मरण किया है।" और येसु के बारे में यह बात सारे यहूदिया और आसपास के सारे देश में फैल गई।

योहन बपतिस्ता के चेलों का आना

९२

योहन के चेलों ने योहन को इन सब बातों की खबर सुनाई और योहन ने दो चेलों को बुलाकर येसु के पास यह पूछने के लिए भेजा: "क्या आपही वे हैं जो आनेवाले हैं या हम दूसरे की प्रतीक्षा करें ?" इन दो चेलों ने येसु के पास आकर कहा: "योहन बपतिस्ता ने हमें आपके पास यह कहकर भेजा है: क्या आपही वे हैं जो आनेवाले हैं या हम दूसरे का मार्ग देखें ?"

उसी समय येसु बहुतों को बीमारियों, दुःखों और अपदूतों से मुक्त करते थ और बहुतेरे अंधों को दृष्टि प्रदान करते थे। उसने उन्हें उत्तर दिया: "जो कुछ तुमने सुना और देखा है वह सब योहन से जाकर कहो: अर्थात्, अंधे देखते हैं, लँगड़े चलते, कोढ़ी शुद्ध होते, बहरे सुनते, मुरदे जिलाए जाते हैं और दीनों को सुसमाचार सुनाया जाता है। और धन्य है वह जिसका विश्वास मुझपर से न उठ जाय।"

९३

जब योहन के चेले सन्देश लेकर विदा हुए तब येसु योहन के विषय में भीड़ से कहने लगे: "तुम उजाड़ स्थान में क्या देखने गए थे ? हवा से हिलते हुए सरकंडे को ? तो तुम क्या देखने गए थे ? रेशमी कपड़े पहने मनुष्य को ? देखो, जो कीमती वस्त्र पहनते और सुख-विलास में जीवन बिताते हैं वे राजमहलों में रहते हैं। तो तुम क्या देखने निकले थे ? किसी नबी को ? हाँ, ठीक, मैं तुमसे कहता हूँ, नबी से भी बड़े को। यह वही है जिसके विषय में लिखा है: देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूँ, जो तेरे आगे तेरा रास्ता तैयार करे। क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ: स्त्री की सन्तानों में योहन बपतिस्ता से बड़ा कोई नबी नहीं। परन्तु जो ईश्वर के राज्य में छोटे से छोटा है वह उससे बड़ा है। योहन बपतिस्ता के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य पर आक्रमण होता है, और बलवान् ही उसे छीन लेते हैं।

लेकिन योहन के पूर्व तक सब नबी और नियम केवल भविष्यद्वाणी करते रहे। और यदि तुम सुनना चाहते हो तो वही आनेवाला एलियस है। सुनने को जिसके कान हों वह सुन ले।"

९४ सारी जनता और नाकेदारों ने भी योहन की बात सुनकर उसका बपतिस्मा लेने से ईश्वर को सच्चा मान लिया, परन्तु फ़रीसियों और शास्त्रियों ने उससे बपतिस्मा न लेने से अपने विषय में ईश्वर के आयोजन को तुच्छ जाना। अतः प्रभु ने कहा: "मैं इस पीढ़ी के लोगों की तुलना किससे करूँ? वे किसके समान हैं? वे बाज़ारों में बैठे हुए छोकरों के समान हैं, जो एक दूसरे से कहते हैं: हमने तो तुम्हारे लिए बाँसुरी बजाई पर तुम नहीं नाचे; हमने विलाप किया पर तुम नहीं रोए। क्योंकि योहन बपतिस्ता आया, वह न रोटी खाता और न शराब पीता है। और तुम कहते हो: उसमें शैतान है। मनुष्य का पुत्र आया जो खाता-पीता है। और इसको तुम कहते हो: देखो यह पेटू और पियक्कड़ है, नाकेदारों और पापियों का मित्र। पर ज्ञान अपनी सब सन्तानों में सच्चा ठहराया गया है।"

९५ **पापिनी स्त्री** किसी फ़रीसी ने येसु को अपने यहाँ भोजन करने का न्योता दिया; अतः वे उस फ़रीसी के घर में आकर भोजन की मेज़ पर बैठे। नगर की एक पापिनी स्त्री यह जानकर कि येसु फ़रीसी के घर में भोजन पर बैठे हैं, संगमरमर की कुप्पी में इत्र लाई। वह येसु के चरणों के पास खड़ी होकर रोने लगी और वह अपने आँसुओं से उनके चरण धोने और अपने सिर के बालों से उन्हें पोंछने लगी, और उनके चरणों को चूम-चूमकर उसने उनपर इत्र मला। वह फ़रीसी, जिसने येसु को न्योता दिया था, यह देखकर अपने मन में कहने लगा: "यह आदमी यदि नबी होता तो ज़रूर जान लेता कि जो स्त्री उसे छू रही है, वह कौन और कैसी है, क्योंकि वह तो पापिनी है।" इसपर येसु ने उससे कहा: "हे सिमोन, मुझे तुझसे कुछ कहना है।" उसने उत्तर दिया: "हे गुरु, कहिए।" "किसी महाजन के दो कर्ज़दार थे: एक पाँच सौ दीनार का ऋणी था, और दूसरा पचास का। और चूँकि उनके पास कर्ज़ अदा करने को कुछ न था, महाजन ने दोनों को माफ़ कर दिया। इन दोनों में से कौन उसे अधिक प्यार करेगा?" सिमोन ने उत्तर दिया: "मेरी समझ म तो वही, जिसका अधिक ऋण क्षमा हुआ।" येसु

ने उससे कहा: "तूने ठीक विचार किया है।" तब उन्होंने उस स्त्री की ओर फिरकर सिमोन से कहा: "क्या तू इस स्त्री को देखता है? जब मैं तेरे घर में आया तब तूने मेरे पावों के लिए पानी नहीं दिया, पर इसने मेरे पावँ आँसुओं से धोए और उन्हें अपने बालों से पोंछा: तूने मुझे चुम्बन नहीं दिया, पर इसने, जिस समय से आई है, मेरे पावों को चूमना नहीं छोड़ा। तूने मेरे सिर में तेल नहीं मला, पर इसने मेरे पावों पर इत्र मला है। इसलिए मैं तुझसे कहता हूँ: इसके बहुत से पाप क्षमा हुए हैं क्योंकि इसने बहुत प्यार दिखाया है। पर जिसे कम क्षमा हुआ वह कम प्यार करता है।" तब येसु ने स्त्री से कहा: "तेरे पाप क्षमा हुए हैं।" और जो येसु के साथ भोजन पर बैठे थे, वे मन-ही-मन कहने लगे, "यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है?" पर येसु ने उस स्त्री से कहा: "तेरे विश्वास ने तुझे बचाया है; शान्ति ग्रहणकर चली जा।"

पवित्र स्त्रियों की सेवा ६६

इसके बाद ऐसा हुआ कि येसु नगर-नगर और गाँव-गाँव घूम-घूमकर उपदेश देते और ईश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करते रहे। बारहों प्रेरित उनके साथ थे और कई एक स्त्रियाँ भी, जो दुष्ट आत्माओं और रोगों से मुक्त की गई थीं: मगदलेना नामक मरिया जिसमें से सात अपदूत निकले थे और हेरोद के भंडारी खूसा की पत्नी योहन्ना और सुसन्ना और बहुत-सी दूसरी स्त्रियाँ भी, जो अपनी-अपनी सम्पत्ति से येसु की सेवा करती थीं।

प्रभु येसु के स्वजन ६७

इसके अनन्तर येसु अपने घर आए। और फिर ऐसी भीड़ लग गई कि येसु और उनके चेले भोजन तक न कर पाते थे। यह सुनकर उनके स्वजन उनको पकड़ लाने के लिए निकले क्योंकि वे कहते थे: "वह अपने आपे में नहीं है।"

एक भूतग्रस्त का चंगा होना ६८

तब एक अंधा-गूँगा अपदूत-ग्रस्त मनुष्य येसु के पास लाया गया; उन्होंने उसे चंगा किया, और वह बोलने और देखने लगा। सारी भीड़ अचम्भित होकर यों कहने लगी: "क्या यह दाऊद का बेटा नहीं

है ?" पर फ़रीसियों ने यह सुनकर कहा: "यह मनुष्य नरकदूतों के प्रधान बेलज़ेबब की सहायता से अपदूतों को निकालता है।"

९९ पर येसु ने यह जानकर उनसे कहा: "जिस राज्य में फूट पड़ जाएगी वह उजड़ जाएगा और घर के घर ढह जाएँगे। यदि शैतान शैतान के विरुद्ध लड़े तो उसका राज्य क्योंकर खड़ा रहेगा? तुम तो कहते हो कि मैं बेलज़ेबब की सहायता से अपदूतों को निकालता हूँ। भला यदि मैं नरकदूतों को बेलज़ेबब की सहायता से निकालता हूँ तो तुम्हारे बेटे किसकी सहायता से निकालते हैं? इसलिए वे ही तुम्हारा विचार करेंगे।

"पर यदि मैं ईश्वर के बल से नरकदूतों को निकालता हूँ तो निस्सन्देह ईश्वर का राज्य तुम्हारे बीच आ गया है। यदि एक बलवान् मनुष्य हथियार बाँधकर अपने घर की रखवाली करता है तो उसका कमाया हुआ धन सुरक्षित रहता है। पर यदि कोई उससे भी बलवान् उसपर टूट पड़े और उसे हरा दे तो जिन हथियारों पर उसको भरोसा था उन्हें वह उससे छीन लेगा और उसका माल लूटकर बाँट देगा। जो मेरे संग नहीं वह मेरे विरुद्ध है, और जो मेरे साथ नहीं बटोरता वह बिखेरता है।

१०० "इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ: मनुष्यों के सभी पाप और ईशनिन्दा क्षमा की जाएगी; पर जो पवित्र आत्मा की निन्दा करता है उसका अपराध क्षमा नहीं किया जाएगा। जो कोई मनुष्य के पुत्र की निन्दा करे तो उसका अपराध क्षमा किया जाएगा; पर जो कोई पवित्र आतमा की निन्दा करे तो उसका अपराध न इस लोक में और न परलोक में क्षमा किया जाएगा।"

"तुम या तो पेड़ को अच्छा मानो और उसके फल को भी अच्छा मानो, या पेड़ को बुरा मानो और उसके फल को भी बुरा मानो; पेड़ तो अपने फल ही से पहचाना जाता है। ऐ साँप के बच्चो, तुम बुरे होकर अच्छी बातें कैसे बोल सकते हो? क्योंकि जो हृदय में भरा है वही तो मुँह से निकलता है। भला मनुष्य अपने अच्छे भंडार से अच्छी चीज़ें निकालता है, पर बुरा मनुष्य अपने बुरे भंडार से बुरी चीज़ें निकालता है। मैं तुमसे कहता हूँ: जो-जो निकम्मी बातें मनुष्य बोलेंगे, विचार के दिन वे उनका हिसाब देंगे; क्योंकि तू अपनी ही बातों से या तो निर्दोष या दोषी ठहराया जाएगा।"

प्रभु के यथार्थ भाई-बन्धु १०१

तब येसु की माँ और उनके भाई आए और बाहर खड़े रहकर उन्होंने उनको बुला भेजा। भीड़ उनको घेरे बैठी थी; तब लोगों ने येसु से कहा: "देखिए, आपकी माँ और आपके भाई आपको बाहर खोज रहे हैं।" येसु ने उत्तर दिया: "कौन हैं मेरी माँ, कौन हैं मेरे भाई?" और जो उन्हें घेरे बैठे थे उनपर दृष्टि डालकर येसु ने कहा: "ये ही हैं मेरी माँ और मेरे भाई। जो कोई ईश्वर की इच्छा पूरी करे, वही है मेरा भाई और मेरी बहन और मेरी माँ।"

११—स्वर्ग के राज्य के दृष्टान्त

(नवंबर में)

बोनेवाले का दृष्टान्त १०२

येसु फिर समुद्र के तट पर शिक्षा देने लगे, और एक बड़ी भीड़ उनके पास इकट्ठी हो गई। यहाँ तक कि वे एक नौका पर समुद्र में जा बैठे और सारी भीड़ समुद्र के पास भूमि पर खड़ी रही। तब वे दृष्टान्तों में उन्हें बहुत-सी बातें सिखाने लगे और शिक्षा देते हुए इस प्रकार कहने लगे:

"सुनो: एक बोनेवाला बीज बोने निकला। बोते समय कुछ बीज रास्ते के किनारे गिरे और आकाश के पक्षियों ने आकर उन्हें चुग लिया। फिर कुछ पथरीली भमि पर गिरे जहाँ उन्हें अधिक मिट्टी न मिली; वे जल्दी ही पनप उठे, क्योंकि उनकी मिट्टी गहरी न थी। पर जब सूर्य उगा तब वे झुलस गए; और जड़ न पकड़ने के कारण वे सूख गए। फिर कुछ काँटों में गिरे; और काँटों ने बढ़कर उन्हें दबा लिया, अतः उनमें फल नहीं आया। फिर कुछ अच्छी भूमि में गिरे; और वे उगकर फले फूले, और कुछ तीस गुना, कुछ साठ गसना, कुछ सौ गुना फल लाए।"

और उन्होंने कहा: "सुनने को जिसके कान हों वह सुन ले।"

१०३ उनके चेलों ने आकर येसु से पूछा: "आप उनसे दृष्टान्तों में क्यों बोलते हैं?" उन्होंने उत्तर दिया: "इसलिए कि स्वर्गराज्य का भेद जानना

तुम्हें दिया गया है पर उन्हें नहीं। इसलिए मैं उनसे दृष्टान्तों में बोलता हूँ कि देखते हुए भी वे न देखें, और सुनते हुए भी न सुनें और न समझें। इसायस की यह भविष्यद्वाणी इन लोगों पर पूरी उतरती है: सुनते हुए तुम सुनोगे पर समझोगे नहीं, और देखते हुए तुम देखोगे पर तुम्हें सूझेगा नहीं। क्योंकि उन लोगों का हृदय कठोर हो गया है, वे कानों से ऊँचा सुनते हैं और उन्होंने अपनी आँखें बन्द कर ली हैं; ऐसा न हो कि कहीं वे आँखों से देखें और कानों से सुनें और मन से समझें, और मेरी ओर फिरें और मैं उन्हें चँगा कर दूँ।"

१०४ येसु ने उनसे पूछा: "क्या तुम इस दृष्टान्त को नहीं समझते हो? तो सब दृष्टान्तों को कैसे समझोगे? बोनेवाला वचन बोता है। जो रास्ते के किनारे हैं, जहाँ वचन बोया जाता है, वे हैं जिन्होंने सुना तो है; पर तुरन्त ही शैतान आकर उस वचन को, जो उनके हृदयों में बोया गया था, छीन ले जाता है। वैसे ही उनके विषय में जो पथरीली भूमि पर बोए जाते हैं वे हैं, जो वचन सुनते ही उसको तुरन्त आनन्द से ग्रहण करते हैं; परन्तु वह उनमें जड़ नहीं पकड़ता और वे थोड़े ही दिन रहते हैं; बाद में वचन के कारण दुःख और संकट पड़ने पर, वे तुरन्त विचलित हो जाते हैं। और दूसरे जो काँटों में बोए जाते हैं वे हैं जो वचन सुनते तो हैं; परन्तु उनमें संसार की चिन्ताएँ, धन का धोखा और अन्य विषय-वासनाऐं घुसकर वचन को दबा देती हैं और वह निष्फल रह जाता है। जो अच्छी भूमि में बोए गए हैं वे हैं जो वचन सुनते, उसे ग्रहण करते, और फल लाते हैं, कोई तीस गुना, कोई साठ गुना, कोई सौ गुना।"

१०५ **दीपक**

"कोई भी दीपक जलाकर उसे बरतन से नहीं ढाँकता और न पलंग के नीचे ही रखता है, वरन् दीवट के ऊपर रखता है जिससे भीतर आनेवाले रोशनी देखें। क्योंकि कुछ भी छिपा हुआ नहीं है जो प्रकट न किया जाएगा, और कुछ भी गुप्त नहीं है जो खुल न जाएगा। यदि किसी के सुनने को कान हों, तो वह सुन ले। इसलिए चौकस रहो कि तुम किस तरह सुनते हो।"

१०६ **बढ़नेवाला बीज**

फिर वे कहते थे: "ईश्वर का राज्य ऐसा है मानो कोई मनुष्य भूमि में बीज बोकर रात और दिन सोए और जागे; और उसके जाने बिना बीज उगकर बढ़ने लगे। क्योंकि

भूमि अपने आप फल लाती है, पहले अँकुर, फिर बाल, तब बाल में दाना भर आता है। और फल पक चुकने पर, वह तुरन्त हँसिया चलाता है क्योंकि कटनी आ पहुँची है।"

जंगली बीज १०७

येसु ने उन्हें एक दूसरा दृष्टान्त भी कह सुनाया:
"स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के समान है जिसने
अपने खेत में अच्छा बीज वोया। पर जब लोग सो रहे थे तब उसका वैरी आया और गेहूँ में जंगली बीज बोकर चला गया। जब अँकुर फूटा और बालें लगीं तब जंगली दाने भी दिखाई पड़े। इसपर नौकरों ने आकर स्वामी से कहा: "मालिक, क्या आपने अपने खेत में अच्छा बीज नहीं वोया था? इसमें जंगली दाने कहाँ से आ पड़े?" स्वामी ने उनसे कहा: "यह किसी बैरी का काम है।" तब नौकरों ने उससे पूछा: "क्या आप चाहते हैं कि हम जाकर जंगली दाने बटोर लें?" पर स्वामी ने उत्तर दिया: "नहीं, ऐसा न हो कि जंगली दाने बटोरते समय तुम गेहूँ भी उखाड़ डालो। कटनी तक दोनों को साथ-साथ बढ़ने दो; परन्तु कटनी के समय मैं काटनेवालों से कहूँगा: पहले जंगली दानों को बटोर लो और उन्हें जलाने के लिए गट्ठे बाँध दो; और गेहूँ को मेरे वखार में जमा करो।"

कई एक दृष्टान्त १०८

येसु ने उन्हें एक और दृष्टान्त कह सुनाया:
"स्वर्ग का राज्य राई के दाने के समान है
जिसे एक मनुष्य ने अपने खेत में वो दिया। यह तो सब वीजों से छोटा है परन्तु बढ़कर सब पौधों से बड़ा हो जाता है; हाँ एसा पेड़ वन जाता है कि आकाश के पक्षी आकर उसकी डालियों में वसेरा करते हैं।"

१०९ येसु ने फिर कहा: "ईश्वर के राज्य की उपमा मैं किससे दूँ? यह ख़मीर के समान है जिसे किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी मैंदे में मिलाया और होते-होते सारा मैदा ख़मीरा हो गया।"

११० ये सब बातें येसु ने भीड़ को दृष्टान्तों में सुनाईं; दृष्टान्तों के बिना वे उनसे कुछ नहीं कहते थे जिससे जो वचन नवी ने कहा था वह पूरा हो: मैं दृष्टान्त में अपना मुँह खोलगा, पृथ्वी के आरम्भ से जो छिपा है उसे मैं प्रकट करूँगा।

१११ तब भीड़ को विदा कर येसु घर आए। उनके चेलों ने उनके पास आकर कहा: "खेत में जंगली बीजों का दृष्टान्त हमें समझा दीजिए।" येसु ने उनको उत्तर दिया: "अच्छे बीज का बोनेवाला है मनुष्य का पुत्र। खेत है संसार; अच्छे बीज हैं राज्य की संतान; जंगली बीज दुष्ट आत्मा की संतान; बोनेवाला वैरी है शैतान; कटनी संसार का अन्त; काटनेवाले हैं स्वर्गदूत। जिस तरह जंगली बीज बटोरकर आग में जलाए जाते हैं उसी तरह संसार के अन्त में होगा। मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा और वे उसके राज्य से सब बाधाओं और कुकर्मियों को बटोरकर आग के कुंड में झोंक देंगे। वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा। तब धर्मी अपने पिता के राज्य में सूरज के समान चमकेंगे। सुनने को जिसके कान हों वह सुन ले।"

११२ "स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए खज़ाने के समान है जिसे कोई मनुष्य पाकर छिपाता है; और खुशी के मारे वह जाकर अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल लेता है।"

११३ "फिर स्वर्ग का राज्य एक व्यापारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में था। एक बहुमूल्य मोती मिल जाने पर उसने जाकर अपना सब कुछ बेच दिया और उस मोती को मोल लिया।"

११४ "फिर स्वर्ग का राज्य समुद्र में फेंके हुए जाल के समान है जो हर तरह की मछलियाँ बटोर लाता है। भर जाने पर मछुए जाल बाहर खींच लाते हैं; तब किनारे बैठकर अच्छी मछलियों को चुन-चुनकर बरतनों में रखते और बुरी मछलियों को दूर फेंक देते हैं। संसार के अन्त में ऐसा ही होगा: स्वर्गदूत आकर धर्मियों के बीच से दुष्टों को अलग करेंगे और आग के कुंड में झोंक देंगे। वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।"

११५ "क्या तुम ये सब बातें समझ गए?" चेलों ने येसु से कहा: "जी हाँ।" येसु ने कहा: "इसलिए हर एक शास्त्री, जो स्वर्ग के राज्य के विषय में शिक्षा पा चुका है, उस गृहस्थ के समान है जो अपने खज़ाने से नई और पुरानी चीज़ें निकालता है।"

ये सब दृष्टान्त समाप्त कर चुकने के बाद येसु वहाँ से चले गए।

१२—महान् चमत्कार, प्रेरितों का प्रेषण

(दिसम्बर से मार्च तक)

आँधी को शान्त करना ११६

उसी दिन संध्या होने पर येसु ने उनसे कहा: "आओ हम उस पार चलें।" और भीड़ को विदा कर वे येसु को, जैसे नौका पर थे, वैसे ही ले चले। अन्य नौकाएँ भी साथ-साथ थीं। फिर एक भारी आँधी उठी और लहरें नौका से टकराने लगीं; यहाँ तक कि नौका पानी से भरी जा रही थी। येसु नौका में पीछे की ओर तकिया लगाए सो रहे थे। चेलों ने उनको जगाकर कहा: "हे गुरु, क्या आपको चिन्ता नहीं कि हम डूब रहे हैं?" तब उठकर येसु ने वायु को डाँटा और समुद्र से कहा: "शान्त हो, थम जा।" वायु थम गई और पूर्ण शान्ति छा गई। फिर उन्होंने उनसे कहा: "क्यों डरते हो? क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं?" और वे अत्यधिक डर से डर गए और आपस में कहने लगे: "तुम्हारे विचार में ये कौन हैं, वायु और समुद्र भी जिनकी आज्ञा मानते हैं?"

गेरासा का अपदूतग्रस्त ११७

नौका से उतरकर वे गेरासेनियों के देश में जा पहुँचे जो गलीलिया के उस पार है। ज्योंही येसु भूमि पर उतरे, एक मनुष्य उनसे मिला जो बहुत दिनों से अपदूतग्रस्त था। वह न कपड़ा पहनता और न घर में रहता था; वरन् क़ब्रों में रहा करता था।

येसु को देखते ही वह उनके सामने गिर पड़ा और उसने ऊँची आवाज़ से चिल्लाकर कहा: "हे येसु, सर्वोच्च के पुत्र, मेरा आपसे क्या संबंध? मैं आपसे विनती करता हूँ: मुझे न सताइए।" क्योंकि येसु अशुद्ध आत्मा को उस मनुष्य से निकल जाने का आदेश दे रहे थे। अशुद्ध आत्मा उसे बार-बार पकड़ा करता था; और यद्यपि लोग उसे जंजीरों से बाँधते और बेड़ियों से जकड़ देते थे तथापि वह इन बंधनों को तोड़ देता और अपदूत उसे उजाड़ स्थानों में ले जाता था।

येसु ने अपदूत से पूछा : "तेरा नाम क्या है ?" उसने कहा : "सेना", क्योंकि उस आदमी में बहुत-से नरकदूत घुसे हुए थे। और वे येसु से यह विनती करने लगे : "हमें अथाह गर्त्त में न भेजिए।" वहाँ पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुंड चर रहा था। उन्होंने येसु से विनती की : "इनके भीतर हमको पैठने दीजिए।" और येसु ने उन्हें जाने दिया। तब अपदूत उस आदमी से निकलकर सूअरों में जा घुसे और लगभग दो हजार का झुंड तेजी के साथ ढाल पर से झील में दौड़ पड़ा और डूब मरा। यह देखकर चरवाहे भागे और उन्होंने नगर तथा बस्तियों में इसकी खबर फैलाई। जो कुछ हुआ था लोग उसे देखने निकले तथा येसु के पास आए; और जब उन्होंने देखा कि वह आदमी जिससे अपदूत निकले थे कपड़े पहने और शान्त मन से येसु के चरणों में बैठा है तो डर गए। जिन्होंने सब देखा था वे उन्हें बताने लगे कि वह अपदूतग्रस्त कैसे मुक्त हुआ। और गेरासेनी देश की सारी जनता ने येसु से यह विनती की : "हमारे यहाँ से चले जाइए।" क्योंकि उनपर भारी भय छा गया था। अत: येसु नौका पर चढ़कर लौट आए। जिस आदमी से अपदूत निकले थे उसने येसु से यह विनती की : "मैं आपके साथ रहूँ।" पर येसु ने उसे विदा करते हुए कहा : "अपने यहाँ लौटकर लोगों को बता कि ईश्वर ने तेरे लिए क्या-क्या किया है।" और वह सारे नगर में यह सुनाता फिरता था कि येसु ने मेरे लिए कितना किया है।

११८ **जैरुस की बेटी रक्तस्रावी स्त्री**

जब येसु फिर नौका से उस पार गए तो एक बड़ी भीड़ उनके पास इकट्ठी हो गई। वे समुद्र के निकट ही थे कि सभाघर के प्रधानों में से जैरुस नामक एक मनुष्य आया और येसु को देखते ही उनके चरणों में गिर पड़ा। वह येसु से गिड़गिड़ाकर विनती करने लगा : "मेरी बेटी मरने पर है। आइए, उसपर हाथ रखिए जिससे वह स्वस्थ हो जाय और जीती रहे।"

११९ अत: वे उसके साथ चले। एक बड़ी भीड़ उनके पीछे हो ली और लोग उनपर गिरे पड़ते थे। वहाँ एक स्त्री थी जो बारह बरस से रक्तस्राव से पीड़ित थी; इसने अनेक वैद्यों से बहुत कष्ट पाया था और अपना सब कुछ खर्च करके

भी कुछ लाभ नहीं उठाया था बल्कि और भी बीमार हो गई थी। उस स्त्री ने येसु के विषय में सुना और भीड़ में पीछे से आकर येसु के कपड़े का स्पर्श किया। क्योंकि वह मन ही मन कहती थी: "यदि मैं केवल उनका कपड़ा भर छूने पाऊँ तो स्वस्थ हो जाऊँगी।" उसी क्षण उसका रक्तस्राव सूख गया और उसने अपने शरीर में अनुभव किया कि मेरा रोग दूर हो गया है। तुरंत येसु ने मन में यह जानकर कि मुझमें से गुण निकला है, भीड़ में मुड़कर पूछा: "किसने मेरे कपड़े का स्पर्श किया है?" उनके चेलों ने उनसे कहा: "आप देखते हैं कि भीड़ आपपर गिरी पड़ती है; तब भी आप पूछते हैं: किसने मुझे छुआ है?" पर जिसने यह किया था उसको देखने के लिए येसु चारों ओर दृष्टि दौड़ाने लगे। तब अपने में जो कुछ हुआ था उसे जानकर स्त्री डरती-काँपती आई, उनके सामने गिर पड़ी और उन्हें सारा हाल कह सुनाया। इसपर उन्होंने उससे कहा: "हे बेटी, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है, शान्ति ग्रहण कर जा और अपने रोग से मुक्त रह।"

वे यह कह ही रहे थे कि सभाघर के प्रधान के यहाँ से लोगों ने आकर कहा: १२० "आपकी बेटी मर गई, अब आप गुरु को कष्ट क्यों देते हैं?" पर येसु ने उनकी यह बात सुनकर सभाघर के प्रधान से कहा: "मत डरिए, केवल विश्वास कीजिए।" तब उन्होंने पेत्रुस, याकूब और याकूब के भाई योहन के सिवा और किसी को अपने साथ न आने दिया। वे सभाघर के प्रधान के यहाँ पहुँचे। येसु ने देखा कि हलचल मच रही है और लोग अत्यधिक रोते-विलपते हैं। तब भीतर जाकर उन्होंने उनसे कहा: "तुम क्यों धूम मचाते और रोते हो? लड़की मरी नहीं वरन् सो रही है।" इसपर वे येसु की हँसी उड़ाने लगे। परन्तु उन्होंने सब को बाहर करके लड़की के माँ-बाप और अपने साथियों को साथ लेकर, जिस स्थान पर लड़की पड़ी थी, वहाँ प्रवेश किया। और लड़की का हाथ पकड़कर उससे कहा: "तालिथा कुमी", जिसका अर्थ है: "लड़की! मैं तुझसे कहता हूँ: उठ।" और उसी क्षण लड़की उठ बैठी और चलने-फिरने लगी; वह बारह बरस की थी। देखनेवाले बड़े चकित हुए। येसु ने उन्हें बहुत समझाकर आज्ञा दी कि कोई यह बात न जानने पाए। और उन्होंने उसे कुछ खिलाने का आदेश दिया।

१२१ दो अन्धों का चंगा होना

येसु वहाँ से आगे बढ़े, और दो अन्धे उनके पीछे-पीछे चलते हुए इस प्रकार पुकारने लगे: "हे दाऊद के पुत्र, हमपर दया कीजिए।" जब येसु ने घर में प्रवेश किया तब ये अंधे उनके पास आए। येसु ने उनसे पूछा: "क्या तुम विश्वास करते हो कि मैं तुम्हारे लिए यह कर सकता हूँ?" उन्होंने कहा: "हाँ, प्रभु।" तब येसु ने उनकी आँखें छूकर कहा: "तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हें लाभ हो।" और उनकी आँखें खुल गईं। फिर येसु ने उन्हें समझा कर कहा: "सावधान! यह बात कोई न जाने।" पर उन्होंने निकलकर उस सारे देश में येसु का नाम फैला दिया।

१२२ नासरेत में अत्याचार

येसु नासरेत आए जहाँ उनका पालन-पोषण हुआ था। विश्राम के दिन वे अपने दस्तूर के अनुसार सभाघर में गए और पढ़ने को उठे। लोगों ने उन्हें नबी इसायस की पुस्तक दी। पुस्तक खोलकर येसु ने वह स्थान निकाला जहाँ लिखा है: "प्रभु का आत्मा मुझपर है, क्योंकि उसने मेरा अभिषेक किया है। उसने मुझे भेजा है कि मैं दीनों को सुसमाचार सुनाऊँ, दुःखियों का साहस बँधाऊँ, बन्दियों को छुटकारे और अंधों को दृष्टि का सन्देश दूँ, कुचले हुओं को स्वाधीन करूँ और प्रभु के अनुग्रह का वर्ष और प्रतिकार का दिन घोषित करूँ।"

येसु ने पुस्तक बन्द कर दी और उसे सेवक को देकर बैठ गए। सभाघर के सब लोगों की आँखें उनपर लगी हुई थीं। तब येसु उनसे कहने लगे: "धर्म-ग्रंथ का यह कथन आज तुम्हारे सामने पूर्ण हुआ है।" सब येसु की प्रशंसा करते थे और उनके मनोहर शब्दों को सुनकर उनपर अचम्भा करते हुए कहने लगे: "यह सब इसको कहाँ से मिला? यह कौन-सा ज्ञान है जो इसे दिया गया है? और ये अचरज के काम जो इसके द्वारा हो रहे हैं? क्या यह वही बढ़ई नहीं है, मरिया का बेटा और याकूब, योसेफ, यूदा और सिमोन का भाई*? क्या इसकी बहनें हमारे साथ नहीं रहतीं?" और येसु ने उनसे कहा: "निस्सन्देह तुम मुझे यह कहावत सुनाओगे: हे वैद्य, अपने ही को स्वस्थ

---

*यहूदी लोग दूर के संबंधियों को भी भाई और बहन कहते थे।

कर। कफ़रनाहूम में किए हुए जिन महान् कार्यों के विषय में हमने सुना हैं उन्हें अपने देश में भी कर दिखा।"

येसु ने कहा: "मैं तुमसे सच कहता हूँ: कोई भी नबी अपने देश में आदर नहीं पाता। मैं तुमसे सच ही कहता हूँ: एलियस के दिनों में जब तीन बरस और छः महीने तक पानी नहीं बरसा और सारे देश में भारी अकाल पड़ा, तब इस्राएल में बहुत-सी विधवाएँ थीं; फिर भी उनमें से सिदोन के सरेप्ता की एक विधवा को छोड़, और किसी के पास एलियस नहीं भेजा गया। और एलिसेयुस नबी के समय इस्राएल में बहुत-से कोढ़ी थे, तब भी सीरी नामन को छोड़, इसमें से कोई भी शुद्ध नहीं हुआ।"

इन बातों को सुनकर सभाघर के सब लोग क्रोध से भर गए; उन्होंने उठकर येसु को नगर से बाहर निकाल दिया और जिस पहाड़ी पर उनका नगर बसा था उसकी चोटी तक वे येसु को ले गए जिससे उन्हें नीचे गिरा दें। पर येसु उनके बीच से निकलकर चले गए।

येसु वहाँ कोई अचरज का काम नहीं कर सके परन्तु केवल थोड़े से रोगियों पर हाथ रखकर उनको स्वस्थ किया। और उनके अविश्वास पर येसु को अचंभा होता था।

येसु सभाघरों में शिक्षा देते, राज्य के सुसमाचार का प्रचार करते, सभी रोगों और दुर्बलताओं को दूर करते, और सब नगरों और गाँवों में घूमा करते थे।

प्रेरितों का प्रेषण १२३

(मार्च में)

तब येसु ने बारहों प्रेरितों को बुलाकर उन्हें सब अपदूतों और रोगों को दूर करने की शक्ति और अधिकार दिया, तथा उन्हें ईश्वर के राज्य का प्रचार करने और बीमारों को स्वस्थ करने के लिए दो-दो करके भेजा।

येसु ने उनसे कहा: "अन्यजातियों के मार्ग में मत जाओ और समारितानियों के नगरों में प्रवेश मत करो; परन्तु इस्राएल घराने की खोई हुई भेड़ों के यहाँ जाओ। चलते-चलते यह उपदेश दो: स्वर्ग का राज्य निकट आ पहुँचा है। रोगियों को चंगा करो, मुरदों को जिलाओ, कोढ़ियों को शुद्ध करो, नरकदूतों को निकालो। तुमने मुफ़्त में पाया है, मुफ़्त में ही दे दो। अपनी थैलियों में सोना या चाँदी या पैसा मत रखो, न यात्रा के लिए झोली, न दो कुरते,

न जूते, न लाठी ; क्योंकि मज़दूर अपने भोजन का अधिकारी है। जिस किसी नगर या गाँव में तुम प्रवेश करो, पूछो कि वहाँ कौन योग्य है और जब तक तुम वहाँ से प्रस्थान न करो तब तक उसके यहाँ ठहरो। घर में प्रवेश करते समय उसे प्रणाम करके कहो: इस घर को शांति मिले। और यदि वह घर योग्य है तो तुम्हारी शांति उसपर उतरेगी ; परन्तु यदि वह योग्य नहीं है तो तुम्हारी शांति तुम्हारे पास लौट आएगी। यदि कोई तुम्हें डेरा न देना चाहे और तुम्हारी न सुने, तो उस घर या उस नगर से निकलकर अपने पावों की धूल झाड़ डालो। मैं तुमसे सच कहता हूँ: विचार के दिन उस नगर की दशा से सोदोम और गोमोरा के देश की दशा कहीं अधिक सह्य होगी।"

१२४ अपने बारह चेलों को ये आदेश देने के बाद येसु नगरों में शिक्षा और उपदेश देने के लिए वहाँ से चल पड़े। प्रेरित जाकर पछतावे का उपदेश देने लगे। उन्होंने बहुत से नरकदूतों को निकाला और बहुत से रोगियों पर तेल मलकर उन्हें स्वस्थ किया।

१२५ योहन बपतिस्ता की रक्त-साक्षी

हेरोद ने अपने जन्म-दिन के उत्सव में सामन्तों, सेनापतियों और गलीलियों के मुखियों को भोज दिया। इसी अवसर पर हेरोदियस की बेटी भीतर आकर नाची और हेरोद को तथा मेहमानों को मुग्ध कर लिया। तब राजा ने लड़की से कहा: "जो मन चाहे मुझसे माँग और मैं तुझे दूँगा।" और उसने शपथ खाई: "जो कुछ तू माँग, चाहे मेरा आधा राज्य ही क्यों न हो, मैं तुझे दे दूँगा।" उसने बाहर जाकर अपनी माँ से कहा: "मैं क्या माँगूँ?" वह बोली: "योहन बपतिस्ता का सिर।" लड़की तुरन्त राजा के पास दौड़ती हुई आई और बोली: "मैं चाहती हूँ कि आप मुझे अभी एक थाली में योहन बपतिस्ता का सिर दे दें।" राजा पर उदासी छा गई, परन्तु अपनी शपथ और अपने मेहमानों के कारण उसने लड़की को अप्रसन्न करना न चाहा। एक जल्लाद को भेजकर राजा ने आज्ञा दी कि योहन का सिर एक थाली में लाया जाए। जल्लाद ने क़ैदखाने में उसका सिर काट डाला और एक थाली में लाकर लड़की को सौंपा और लड़की ने उसे अपनी माँ को दे दिया।

यह सुनकर योहन के चेले आए और उन्होंने लाश ले जाकर उसे क़ब्र में रखा।

हेरोद की घबराहट १२६

जब राजा हेरोद ने येसु के सब कामों की ख़बर सुनी तो वह घबराया क्योंकि कुछ लोग कहते थे कि योहन मुरदों में से फिर जी उठा है, कुछ कहते थे कि एलियस दिखाई दिया है, तथा अन्य लोग कहते थे कि पुराने नबियों में से एक फिर जी उठा है। हेरोद ने अपने मन में कहा: "योहन का तो मैंने सिर कटवा डाला। फिर यह कौन है जिसके विषय में मैं ऐसी बातें सुनता हूँ?" और वह येसु को देखना चाहता था।

१३—पवित्र साक्रमेन्त की प्रतिज्ञा

(अप्रैल महीने में)

प्रेरितों का लौटना १२७

प्रेरित येसु के पास लौटे; उन्होंने जो कुछ किया और सिखाया था, यह सब उनसे कह सुनाया। और येसु ने उनसे कहा: "किसी निर्जन स्थान में चले आओ और कुछ विश्राम करो।" क्योंकि बहुत से लोग आते-जाते थे और उन्हें खाने का भी अवकाश नहीं मिलता था। और वे नौका पर चढ़कर बेथसैदा के पास एक निर्जन स्थान में चले गए।

रोटियों की पहली बार संख्या बढ़ाना १२८

पर बहुतों ने उन्हें जाते देखा और जान लिया कि वे कहाँ जाते हैं; सब नगरों से निकलकर वे पैदल ही दौड़कर येसु के पहले वहाँ पहुँच गए; क्योंकि उन्होंने उन चमत्कारों को देखा था, जिन्हें येसु बीमारों पर करते थे। येसु एक पहाड़ पर चढ़कर वहाँ अपने चेलों के साथ बैठे। यहूदियों का पास्का पर्व निकट था।

इसलिए जब येसु ने आँख उठाकर देखा कि बहुत भीड़ मेरे पास आ रही है तो उन्हें उनपर दया आई क्योंकि वे बिना चरवाहे की भेड़ों के समान थे। वे उन्हें बहुत-सी बातों की शिक्षा देने लगे और बीमारों को स्वस्थ किया।

अब दिन ढलने लगा था; उन्होंने फ़िलिप से कहा: "इनके भोजन के लिए हम कहाँ से रोटियाँ खरीदें?" परन्तु उन्होंने फ़िलिप की जाँच करने के लिए यह बात कही थी। क्योंकि वे तो जानते ही थे कि मैं क्या करूँगा। फ़िलिप ने उन्हें उत्तर दिया: "दो सौ दीनार की रोटियाँ भी इतनी न होंगी कि भीड़ में से हर एक जन को थोड़ी-थोड़ी सी भी मिल सके।" उनके चेलों में से सिमोन पेत्रुस के भाई अन्द्रेयस ने येसु से कहा: "यहाँ एक लड़का है जिसके पास जौ की पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं; पर इतने लोगों के लिए यह क्या है?" तब येसु ने कहा: "पचास-पचास करके उन्हें बैठा दो।" उस स्थान पर बहुत घास थी। स्त्रियों और बच्चों के अतिरिक्त पाँच हजार की भीड़ वहाँ बैठ गई।

तब येसु ने रोटियाँ ले लीं, और धन्यवाद देकर उन्हें अपने चेलों को देने लगे कि वे उन्हें बैठे हुए लोगों में बाँट दें; उसी भाँति मछलियों में से भी जितनी वे चाहते थे। उनके तृप्त हो जाने पर येसु ने अपने चेलों से कहा: "बचे हुए टुकड़े बटोर लो, जिससे कुछ भी नष्ट न होने पाय।" अत: इसलिए उन्होंने टुकड़े बटोरे और जौ की पाँच रोटियों के बचे हुए टुकड़ों से बारह टोकरियाँ भरीं।

१२९ येसु का यह चमत्कार देखकर लोग बोल उठे: "निश्चय ही ये वे नबी हैं जो जगत् में आनेवाले हैं।" परन्तु येसु ने यह जानकर कि लोग मुझे ले जाने और राजा बनाने आएँगे, तुरन्त अपने चेलों को नौका में चढ़ने और अपने आगे समुद्र पार करने का आदेश दिया जब तक वे स्वयं लोगों को विदा कर दें। भीड़ को विदा करने के बाद येसु पहाड़ पर अकेले प्रार्थना करने गए।

१३० **प्रभु का समुद्र पर चलना** साँझ होने पर नौका समुद्र के बीच में थी और येसु स्थल पर अकेले। लगभग पहर भर रात रहे जब उन्होंन देखा कि वायु चेलों के विरुद्ध है और वे बड़े परिश्रम से नाव खे रहे हैं, तो वे समुद्र पर चलते हुए उनकी ओर आए और उनसे आगे बढ़ जानेवाले थे। चेलों ने येसु को समुद्र पर चलते देखकर समझा कि कोई प्रेत है और चिल्ला उठे; क्योंकि सब ने उनको देखा और सब के सब घबरा उठे। परन्तु येसु तुरन्त उनसे कहने लगे: "धीरज धरो, मैं हूँ, डरो मत।" पेत्रुस ने उत्तर दिया: "हे प्रभु, यदि आप ही हैं तो मुझे पानी

के ऊपर अपने पास आने की आज्ञा दीजिए।" और उन्होंने कहा: "आ।" तब पेत्रुस नौका से उतरकर येसु के पास जाने के लिए पानी पर चलने लगा। पर आँधी को प्रबल होते देख वह डर गया और डूबने लगा। इसपर वह चिल्ला उठा: "हे प्रभु, मुझे बचाइए।" येसु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया और कहा: "हे अल्पविश्वासी, तूने क्यों सन्देह किया।" वे नौका पर चढ़ गए और आँधी शांत हुई। जो-जो नौका में थे वे आकर येसु की आराधना करने लगे और बोले: "सचमुच आप ईश्वर के पुत्र हैं।"

वे अत्यधिक चकित हुए क्योंकि अपने हृदयों की कठोरता के कारण उन्होंने रोटियों के विषय में कुछ न समझा। और तुरन्त नौका उस किनारे लग गई जहाँ वे जा रहे थे।

गेनेसरेत १३१

उस पार उतरकर वे गेनेसरेत देश में पहुँचे। ज्योंही वे नौका से उतरे, लोगों ने येसु को पहचान लिया। और लोग सारे देश में दौड़-दौड़कर जहाँ कहीं येसु का पता चलता था, वहाँ रोगियों को चारपाइयों पर लाने लगे। जहाँ कहीं येसु बस्तियों, गाँवों या नगरों में प्रवेश करते थे, लोग रोगियों को रास्तों में निकालकर रखते और उनसे यों विनती करते थे: "हमें आपके वस्त्र का पल्ला भर छूने दीजिए।" और जितनों ने येसु को छुआ, सब के सब चंगे हो गए।

कफ़रनाहूम में भाषण १३२

समुद्र के उस पार खड़ी हुई भीड़ ने देखा था कि वहाँ एक नौका को छोड़ दूसरी कोई नहीं थी, और येसु अपने चेलों के साथ नौका पर नहीं चढ़े थे पर उनके चेले अकेले ही चले गए थे। दूसरे दिन कुछ नौकाएँ तिबेरियस से उस स्थान के निकट आईं जहाँ येसु के धन्यवाद देने के बाद उन्होंने रोटी खाई थी। इसलिए जब लोगों ने देखा कि यहाँ न तो येसु हैं और न उनके चेले, तो वे उन नौकाओं पर चढ़कर येसु की खोज में कफ़रनाहूम पहुँचे।

स्वर्गीय रोटी की प्रतिज्ञा १३३

समुद्र के उस पार येसु को पाकर, लोगों ने उनसे कहा: "हे गुरु, आप यहाँ कब आए?" येसु ने उन्हें उत्तर दिया: "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ: तुम लोग मुझे इसलिए नहीं ढूँढ़ते हो कि तुमने चमत्कार देखे हैं, परन्तु

इसलिए कि तुम रोटियाँ खाकर तृप्त हुए हो। नश्वर भोजन के लिए परिश्रम मत करो, वरन् उस भोजन के लिए जो अनन्त जीवन तक बना रहता है, जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा; क्योंकि इसी पर पिता परमेश्वर ने अपनी छाप लगा दी है।"

इसपर लोगों ने उनसे कहा: "हमें क्या करना चाहिए कि ईश्वर के कार्य कर सकें?" येसु ने उनको उत्तर दिया: "ईश्वर का कार्य यह है कि जिसे उसने भेजा है उसी पर तुम विश्वास करो।" तब उन्होंने येसु से कहा: "तो आप कौन-सा चिह्न दिखाते हैं जिसे देखकर हम आपपर विश्वास करें? आप क्या कर सकते हैं? हमारे पूर्वजों ने मरुभूमि में मन्ना खाया था जैसा कि लिखा है: उसने उन्हें खाने के लिए स्वर्ग से रोटी दी।" इसपर येसु ने उनसे कहा: "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ: मूसा ने तुम्हें स्वर्ग से रोटी नहीं दी परंतु मेरा पिता तुम्हें स्वर्ग से सच्ची रोटी देता है; क्योंकि ईश्वर की रोटी तो वह है, जो स्वर्ग से उतरकर संसार को जीवन प्रदान करती है।" तब उन्होंने येसु से कहा: "हे प्रभु आप हमें सदा यही रोटी दिया करें।"

१३४ प्रभु आपही जीवन की रोटी

येसु ने उनसे कहा: "जीवन की रोटी मैं ही हूँ; जो मेरे पास आता है वह कभी भूखा न होगा, और जो मुझपर विश्वास करता है वह कभी प्यासा न होगा। पर मैं तुमसे कह चुका हूँ: तुम मुझे देखकर भी मुझपर विश्वास नहीं करते। जिन्हें पिता मुझे देता है वे मेरे पास आएँगे, और जो कोई मेरे पास आता है उसको मैं कभी निकाल नहीं दूँगा, क्योंकि मैं स्वर्ग से इसलिए नहीं उतरा कि अपनी इच्छा पूरी करूँ, पर इसलिए कि अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करूँ। मेरे भेजनेवाले पिता की इच्छा है कि जिन्हें उसने मुझे दिया है उनमें से एक भी न खोऊँ, पर उन्हें अन्तिम दिन फिर जिलाऊँ। क्योंकि मेरे भेजनेवाले पिता की यह इच्छा है कि जो कोई पुत्र को देखे और उसपर विश्वास करे उसी को अनन्त जीवन प्राप्त हो; और मैं उसको अन्तिम दिन फिर जिलाऊँगा।"

इसपर यहूदी कुड़कुड़ाने लगे क्योंकि उन्होंने कहा था: जीवन की रोटी मैं ही हूँ जो स्वर्ग से उतरा हूँ। और उन्होंने कहा: "क्या यह योसेफ़ का

पुत्र येसु नहीं है जिसके माँ-बाप को हम जानते हैं? तब वह क्योंकर कहता है: मैं स्वर्ग से उतरा हूँ?" इसलिए येसु ने उन्हें उत्तर दिया: "आपस में मत कुड़कुड़ाओ। कोई भी मेरे पास नहीं आ सकता जब तक मेरा भेजनेवाला पिता उसको न खींचे; और मैं उसे अन्तिम दिन में फिर जिलाऊँगा। नबियों ने लिखा है: वे सब के सब ईश्वर से शिक्षा पाएँगे। जिस किसी ने पिता से सुना है और सीखा है वह मेरे पास आता है। यह न समझो कि किसी ने पिता को देखा है; उसीने पिता को देखा है जो पिता के यहाँ से आया है।"

"मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ: जो कोई मुझपर विश्वास करता है उसमें अनन्त जीवन है।"

प्रभु का शरीर जीवन की रोटी है १३५

"मैं ही जीवन की रोटी हूँ। तुम्हारे पूर्वजों ने मरुभूमि में मन्ना खाया और मर गए। यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरी है, और जो कोई उसमें से खाए वह मरेगा नहीं। जीवित रोटी मैं ही हूँ जो स्वर्ग से उतरा हूँ। यदि कोई इस रोटी में से खाए तो वह सदा जीता रहेगा; और जो रोटी मैं दूँगा वह संसार के जीवन के लिए मेरा मांस है।"

इसपर यहूदी लोग आपस में यों वाद-विवाद करने लगे: "यह मनुष्य हमें अपना मांस खाने को कैसे दे सकता है?" तब येसु ने उनसे कहा: "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ: यदि तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खाते और उसका लोहू न पीते तो तुममें जीवन नहीं होगा। जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है उसे अनन्त जीवन प्राप्त है, और मैं अन्तिम दिन उसको फिर जिलाऊँगा। क्योंकि मेरा मांस सचमुच भोजन और मेरा लोहू सचमुच एक पेय है। जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है वह मुझमें बना रहता है, और मैं उसमें। जैसे जीवित पिता ने मुझे भेजा और मैं पिता से जीता हूँ, वैसे ही जो मुझे खाता है वह भी मुझसे जीएगा। यही है वह रोटी जो स्वर्ग से उतरी है। तुम्हारे पूर्वजों जैसे नहीं, जिन्होंने मन्ना खाया और मर गए हैं। जो यह रोटी खाता है वह सदा जीवित रहेगा।"

उन्होंने यह सब कफ़रनाहूम के सभाघर में शिक्षा देते समय कहा।

१३६ **बहुत से चेलों का चला जाना**

यह सुनकर उनके चेलों में से बहुतों ने कहा: "यह तो कठोर शिक्षा है। इसे कौन मान सकता है?" परन्तु येसु ने यह जानकर कि मेरे चेले इस बात पर कुड़कुड़ाते हैं, उनसे कहा: "क्या यह तुम्हें डिगा देती है? यदि तुम मनुष्य के पुत्र को वहाँ चढ़ते देखोगे जहाँ वह पहले था, तब क्या करोगे? आत्मा ही जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं। जो बातें मैंने तुमसे कही हैं, वे आत्मा और जीवन हैं। पर तुममें से कितने ही ऐसे हैं जो विश्वास नहीं करते।" येसु तो शुरू ही से जानते थे कि वे कौन हैं जो विश्वास नहीं करते, और वह कौन है जो मेरे साथ विश्वासघात करेगा। और उन्होंने कहा: "इसलिए मैंने तुमसे कहा है: कोई भी मेरे पास नहीं आ सकता जब तक यह वरदान उसको मेरे पिता की ओर से न मिले।"

इसके बाद बहुत से चेलों ने उनसे अलग होकर इनका साथ छोड़ दिया। इसपर येसु ने बारहों से कहा: "क्या तुम भी मुझे छोड़कर जाना चाहते हो?" सिमोन पेत्रुस ने उन्हें उत्तर दिया: "हे प्रभु, हम किसके पास जाएँ? आपही के पास तो अनन्त जीवन के वचन हैं। हम लोगों ने विश्वास किया और जान लिया है कि आपही ख्रीस्त हैं, ईश्वर के पुत्र।" येसु ने उन्हें उत्तर दिया: "क्या मैंने ही तुम बारहों को नहीं चुना है? तब भी तुममें से एक शैतान है।" उन्होंने सिमोन के बेटे यूदस इसकारियोती के विषय में यह कहा, क्योंकि वह बारहों में से एक होकर भी येसु से विश्वासघात करनेवाला था।

१४—गलीलिया के निकटवर्त्ती देशों में यात्राएँ

(जून और जुलाई में)

पेन्तेकोस्त का पर्व १३७
अर्द्धांगी को चंगा करना

इसके बाद यहूदियों का एक पर्व पड़ा और येसु येरुसलेम गए। येरुसलेम में भेड़-फाटक के पास एक कुंड है जो इबरानी भाषा में बेथसाइदा कहलाता है; इसके पाँच मंडप हैं। इनमें बहुत से रोगी, अंधे, लँगड़े और अर्द्धांगी पानी के हिलने की बाट जोहते हुए पड़े थे। क्योंकि प्रभु का दूत समय-समय पर कुंड में उतरकर पानी हिला देता था; और पानी हिलाने के बाद जो कोई सबसे पहले कुंड में उतरता था तो वह जिस किसी भी रोग से पीड़ित रहता स्वस्थ हो जाता था। यहाँ एक मनुष्य अड़तीस वर्ष से बीमार पड़ा था। येसु ने उसको पड़ा हुआ देख और यह जानकर कि वह बहुत समय से इस दशा में है, उससे कहा: "क्या तू चंगा होना चाहता है?" रोगी ने उत्तर दिया: "हे प्रभु, मेरा कोई नहीं है जो पानी के हिलते ही मुझे कुंड में उतार दे। मेरे जाते-जाते कोई दूसरा मुझसे पहले उतर पड़ता है।" येसु ने उससे कहा: "उठकर, अपनी खाट उठा ले और चल।" वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया और अपनी खाट उठाकर चलने-फिरने लगा।

उस दिन विश्राम का दिन था। इसलिए यहूदी उससे, जो चंगा हुआ था, कहने लगे: "आज विश्राम का दिन है, तेरे लिए अपनी खाट उठाना उचित नहीं था।" *उसने उन्हें उत्तर दिया: "जिसने मुझे चंगा किया उसीने मुझसे कहा: अपनी खाट उठा ले और चल।" अतः उन्होंने उससे पूछा: "वह कौन मनुष्य है जिसने तुझसे कहा: अपनी खाट उठा ले और चल?" पर जो चंगा किया गया था उसको मालूम नहीं था कि वह कौन है,

---

*फ़रीसियों का बनाया हुआ एक नियम यह था कि विश्राम के दिन कोई भी चीज़ न ढोई जाए।

क्योंकि येसु उस जगह लगी हुई भीड़ से निकल चुके थे। बाद में मंदिर में मिलने पर येसु ने उससे कहा: "देख, तू चंगा हो गया है; अब पाप न करना, ऐसा न हो कि इससे भी भारी संकट तुझपर आ पड़े।" तब उस मनुष्य ने जाकर यहूदियों से कह दिया: "जिन्होंने मुझे चंगा किया वे येसु हैं।"

यहूदी येसु को इस कारण सताने लगे कि वे विश्राम के दिन ऐसे काम करते थे। पर येसु ने उन्हें उत्तर दिया: "मेरा पिता अब तक काम करता जाता है, और मैं भी काम करता हूँ।"* इस कारण यहूदी उनको मार डालने की धुन में लगे, क्योंकि येसु न केवल विश्राम के दिन का नियम भंग करते थे, पर ईश्वर को अपना निज का पिता कहकर अपने को ईश्वर के बराबर ठहराते थे।

१३८ **प्रभु येसु का भाषण**

तब येसु ने उनसे कहा: "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ: पुत्र अपने से कुछ भी नहीं कर सकता, पर जो कुछ पिता को करते देखता है वही कर सकता है; क्योंकि जो कुछ वह करता है, उसे पुत्र भी उसी प्रकार करता है। पिता पुत्र को प्यार करता है और जो कुछ वह आप करता है वह सब पुत्र को दिखाता है; इससे भी महान् कार्य वह उसे दिखाएगा यहाँ तक कि तुम अचम्भा करोगे। क्योंकि जैसे पिता मुरदों को उठाता और जिलाता है, वैसे ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है। पिता किसी मनुष्य का विचार नहीं करता, उसने विचार करने का सारा भार पुत्र को दे दिया है; जिससे सब लोग पुत्र का आदर करें जैसे वे पिता का आदर करते हैं। जो पुत्र का आदर नहीं करता वह पुत्र को भेजनेवाले पिता का भी आदर नहीं करता।

"मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ: जो मेरी शिक्षा सुनकर मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है उसे अनन्त जीवन प्राप्त है, इसका विचार नहीं किया जाएगा, वह मरण को पार कर जीवन में पहुँच गया है। मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ: वह समय आ रहा है, आ ही गया है जब मुरदे ईश्वर के पुत्र की आवाज़ सुनेंगे;

---

*ईश्वर सदा संसार का अस्तित्व बनाए रखने का कार्य करता है। यदि वह एक क्षण के लिए भी अपने सर्वशक्तिशाली कार्य को बन्द कर दे तो सारी सृष्टि नष्ट-भ्रष्ट हो जाए। इसलिए ईश्वर होने के कारण येसु भी कार्य में लगे रहते हैं यहाँ तक कि विश्राम के दिन भी कार्य करते हैं।

और जो सुनेंगे, वे जीएँगे। क्योंकि जैसे पिता अपने आपमें जीवन रखता है वैसे ही उसने पुत्र को भी अपने आपमें जीवन रखने का वरदान दिया है; और उसे विचार करने का अधिकार भी दिया है क्योंकि वह मनुष्य का पुत्र है। इसपर अचम्भा मत करो; क्योंकि वह समय आ रहा है जब वे सब जो कब्रों में हैं ईश्वर के पुत्र की आवाज़ सुनकर निकलेंगे; जिन्होंने भले काम किए हैं वे नये जीवन के लिए, परन्तु जिन्होंने बुरे काम किए हैं वे विचार के लिए फिर जी उठेंगे। मैं स्वयं कुछ नहीं कर सकता: जैसा मैं सुनता हूँ वैसाही विचार करता हूँ; और मेरा विचार ठीक है क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं वरन् अपने भेजनेवाले ही की इच्छा पूरी करना चाहता हूँ।

"यदि मैं ही अपने विषय में साक्ष्य दूँ तो मेरा साक्ष्य सच्चा नहीं है। १३९ एक और है जो मेरा साक्षी है और मैं जानता हूँ कि मेरे विषय में जो साक्ष्य वह देता है सो सत्य है। तुम लोगों ने तो योहन के पास संदेश भेजा और उसने सत्य का साक्ष्य दिया है। मैं तो मनुष्य की ओर से साक्ष्य नहीं चाहता; पर तुमसे ये बातें कहता हूँ जिससे तुम मुक्ति पा सको। योहन एक जलता और चमकता हुआ दीपक था, और थोड़ी देर तक उसकी ज्योति में आनन्द मनाना तुम्हें अच्छा लगा।

"पर योहन के साक्ष्य से भी महान् साक्ष्य मेरे पास है; क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरा करने को भेजा है, जो काम मैं करता हूँ, वेही मेरे विषय में साक्ष्य देते हैं कि पिता ने मुझे भेजा है। और जिसने मुझे भेजा है वह पिता भी स्वयं मेरे विषय में साक्ष्य दे चुका है। तुमने न कभी उसकी आवाज़ सुनी, न उसका रूप देखा, न तुम उसका वचन अपने मन में ठहरने देते हो; क्योंकि जिसे उसने भेजा है, उसपर तुम विश्वास नहीं करते।

"तुम तो यह समझकर धर्मग्रंथ की छान-बीन करते हो कि इसमें हमें अनन्त जीवन मिलता है; वही तो मेरे विषय में साक्ष्य देता है; परन्तु तुम जीवन प्राप्त करने के लिए मेरे पास आना नहीं चाहते। मैं मनुष्यों से सम्मान नहीं चाहता, पर मैं तुमको पहचानता हूँ, और जानता हूँ, कि तुममें ईश्वर का प्रेम नहीं है।

"मैं तो अपने पिता के नाम पर आया हूँ, पर तुम मुझे ग्रहण नहीं करते; यदि कोई दूसरा अपने ही नाम पर आए तो उसे ग्रहण करोगे। तुम एक दूसरे

से प्रशंसा चाहते हो और उस प्रशंसा को नहीं चाहते जो केवल ईश्वर से है; तो क्योंकर विश्वास कर सकते हो? यह न समझो कि मैं पिता के सामने तुमपर दोष लगाऊँगा; एक है जो तुम्हें दोषी ठहराता है अर्थात् मूसा, जिसपर तुम भरोसा रखते हो। क्योंकि यदि तुमने मूसा पर विश्वास किया होता तो मुझपर भी विश्वास करते; उसने तो मेरे विषय में लिखा है। परन्तु यदि तुम उसके लेखों पर विश्वास ही नहीं करते तो मेरी शिक्षा पर क्योंकर विश्वास करोगे।"

१४० इसके बाद येसु गलीलिया में ही दौरा करते रहे; वे यहूदिया में भ्रमण करना नहीं चाहते थे, क्योंकि यहूदी लोग उनको मार डालने की धुन में लगे थे।

१४१ पुरानी रीतियों के विषय में विवाद

इसके बाद फ़रीसी और कई शास्त्री जो येरुसलेम से आए थे, उनके पास इकट्ठे हुए और उनके कुछ चेलों को जूठे अर्थात् बिना धोए हाथों से रोटी खाते देखकर टिप्पणी करने लगे। क्योंकि फ़रीसी और सब यहूदी, प्राचीनों की परम्परा के अनुसार, बिना बार-बार हाथ धोए भोजन नहीं करते। बाजार से आकर वे अपने ऊपर पानी छिड़के बिना नहीं खाते; और वे बहुत-से अन्य परम्परागत रिवाजों का भी पालन करते हैं, जैसे प्यालों, बरतनों और पीतल के घड़ों का धोना। इसलिए फ़रीसियों और शास्त्रियों ने येसु से पूछा: "आपके चेले पुरखों की परम्परा के अनुसार क्यों नहीं चलते; वे जूठे हाथों भोजन करते हैं?" येसु ने उत्तर दिया: "इसायस ने तुम कपटियों के विषय में जो भविष्यद्वाणी की है, वह ठीक ही है; उन्होंने लिखा है—यह जाति मेरा आदर होठों से ही करती है पर उनका हृदय मुझसे दूर है; वे मनुष्य के बनाए हुए नियमों को सिखा-सिखाकर व्यर्थ ही मेरी पूजा करते हैं। क्योंकि तुम ईश्वर की आज्ञा छोड़ देते हो और मनुष्य की चलाई हुई परम्परा बनाए रखते हो: प्यालों और बरतनों को धोना-माँजना और इस प्रकार के बहुत से दूसरे रिवाज़ भी।"

फिर येसु ने उनसे कहा: "तुम अपनी परम्परा बनाए रखने के लिए ईश्वर की आज्ञा टाल देते हो। क्योंकि मूसा न कहा: अपने पिता और अपनी माँ का आदर कर, और: जो कोई अपने पिता या अपनी माँ को शाप दे उसे प्राणदंड दिया जाय। परन्तु तुम कहते हो: यदि कोई अपने पिता या

अपनी माँ से कहे कि जो कुछ मेरी ओर से तुझे लाभ हो सके वह कुरबान हो (अर्थात् ईश्वर को अर्पित है), तो फिर तुम उसे उसके पिता या माँ के लिए कुछ करने नहीं देते हो। यों अपनी ही परम्परा के नाम पर, जिसे तुमने चलाया है, ईश्वर का वचन टाल देते हो। और ऐसे ही अनेक काम करते हो।"

तब भीड़ को अपने पास बुलाकर येसु ने कहा: "सुनो और समझो। जो मुँह में जाता है वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता, परन्तु जो मुँह से निकलता है वही मनुष्य को अशुद्ध करता है।"*

१४२ इसके बाद उनके चेले पास आकर उनसे कहने लगे: "क्या आप जानते हैं कि आपका यह कथन फ़रीसियों के विश्वास में बाधा बन गई है?" येसु ने उत्तर दिया: "जो पौधा मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं रोपा है वह उखाड़ा जाएगा। उन्हें छोड़ दो: वे अंधे हैं और अंधों के नेता हैं। यदि अंधा अंधे को ले जाए तो दोनों ही गड्ढे में गिर पड़ेंगे।"

इसपर पेत्रुस ने उत्तर देते हुए कहा: "यह दृष्टान्त हमें समझा दीजिए।" येसु ने कहा: "क्या तुम भी अब तक नासमझ हो? क्या तुम समझते नहीं कि जो मुँह में जाता है वह पेट में चला जाता है और संडास में निकल जाता है? परन्तु जो मुँह से निकलता है वह हृदय से ही आता है और यही मनुष्य को अशुद्ध करता है। क्योंकि बुरे विचार, हत्या, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही, ईशनिन्दा ये सब हृदय से ही निकलते हैं। ये ही मनुष्य को अशुद्ध कर देते हैं; परन्तु बिना हाथ धोए खाना मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता।"

कनानी स्त्री १४३

वहाँ से विदा होकर येसु तीरुस और सिदोन के प्रान्तों में चले गए। और उस देश की एक कनानी स्त्री आकर चिल्लाने लगी: "हे प्रभु, दाऊद के पुत्र! मुझपर दया कीजिए: मेरी बेटी एक नरकदूत द्वारा बुरी तरह से सताई जाती है।" पर येसु ने उसे

*मनुष्य को केवल पाप ही अपवित्र करता है। ईश्वरीय नियमों को जानबूझकर तोड़ना ही पाप है। छुआछूत और जात-पाँत संबंधी नियम मनुष्यों के ठहराए हुए हैं।

कुछ भी उत्तर नहीं दिया। तब उनके चेले पास आकर उनसे इस प्रकार निवेदन करने लगे: "उस स्त्री को विदा कर दीजिए। क्योंकि वह चिल्लाती हुई हमारे पीछे-पीछे आ रही है।" पर येसु ने उत्तर दिया: "मैं केवल इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास भेजा गया हूँ।" तब इस स्त्री ने आकर येसु को दण्डवत् करते हुए कहा: "हे प्रभु, मेरी सहायता कीजिए।" येसु ने उत्तर दिया: "बच्चों की रोटी लेकर पिल्लों के आगे डाल देना ठीक नहीं।" उसने कहा: "जी हाँ, प्रभु, तब भी जो चूर-चार स्वामी की मेज़ से गिरता है उसे पिल्ले भी खाते हैं।" तब येसु ने उत्तर दिया: "हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है। जो तू चाहती है वही तेरे लिए होगा।" और उसी घड़ी उसकी बेटी चंगी हो गई।

१४४ **देकापोलिस में** इसके बाद येसु तीरुस के प्रान्त से चले गए और सिदोन से होकर देकापोलिस के बीचोबीच गलीलिया के समुद्र के पास आ पहुँचे।

तब लोग उनके पास एक बहरे-गूँगे को लाकर उनसे इस प्रकार विनती करने लगे: "आप इसपर हाथ रखिए।" उसे भीड़ में से अलग ले जाकर येसु ने अपनी उँगलियाँ उसके कानों में डालीं और अपनी थूक लेकर उसकी जीभ छुई; आकाश की ओर आँख उठाकर उन्होंने आह भरी और उससे कहा: "एफ़ेता", अर्थात् "खुल जा"। उसी क्षण बहरे के कान खुल गए, उसकी जीभ का बन्धन छूट गया और वह ठीक-ठीक बोलने लगा। येसु ने उन्हें किसी से कुछ नहीं कहने की आज्ञा दी; परन्तु जितना ही येसु उन्हें मना करते थे उतना ही अधिक लोग यह बात फैलाते थे।

किसी दिन उनके पास बहुत से लोग इकट्ठे हो गए। उन्होंने अपने साथ गूँगे, अंधे, लँगड़े, लूले और बहुत से दूसरों को भी ला-लाकर येसु के चरणों में रख दिया और उन्होंने उनको चंगा कर दिया; यह देखकर कि गूँगे बोलते, लँगड़ चलते और अंधे देखते हैं, भीड़ अचम्भे में आकर इस्राएल के ईश्वर का गुणगान इस प्रकार करने लगी: "इन्होंने सब कुछ अच्छा किया है। इन्होंने बहरों को कान और गूँगों को वाणी दी है।"

रोटियों की संख्या दूसरी बार बढ़ाना १४६

तब येसु ने अपने चेलों को अपने पास बुलाकर कहा: "मुझे लोगों पर दया आती है; ये अब तीन दिन से मेरे साथ रहे हैं और उनके पास खाने को कुछ नहीं है; मैं उनको भूखे ही घर नहीं भेजना चाहता, ऐसा न हो कि वे रास्ते में थककर शिथिल पड़ जाएँ।" चेलों ने उनसे कहा: "इस उजाड़ स्थान में हमें इतनी रोटियाँ कहाँ से मिलेंगी कि हम इतनी बड़ी भीड़ को तृप्त कर सकें? येसु ने उनसे पूछा: "तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?" उन्होंने कहा: "सात, और कुछ छोटी मछलियाँ।" इसपर येसु ने भीड़ को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी; तब येसु ने सात रोटियों और मछलियों को लेकर धन्यवाद दिया, और तोड़-तोड़कर अपने चेलों को देते गए, और चेलों ने लोगों को परोस दिया। सब खाकर तृप्त हुए; और उन्होंने बचे-खुचे टुकड़ों से सात टोकरे भरे। खानेवाले, स्त्रियों और बच्चों को छोड़, कोई चार हज़ार थे।

भीड़ को विदा करके येसु एक नौका पर चढ़कर मगेदन के प्रान्त में आए।

फ़रीसियों का चिह्न माँगना १४७

वहाँ फ़रीसी आकर उनसे विवाद करने लगे और उनकी परीक्षा लेते हुए उनसे स्वर्ग की ओर से एक चिह्न माँगने लगे। येसु ने मन-ही-मन आह भरकर कहा: "यह पीढ़ी चिह्न क्यों माँगती है? मैं तुमसे सच कहता हूँ: इस पीढ़ी को कोई भी चिह्न नहीं दिया जाएगा।" और येसु उनको छोड़कर फिर नौका पर चढ़े और झील के उस पार गए।

फ़रीसियों का ख़मीर १४८

चेले रोटी लेना भूल गए और नौका में उनके पास केवल एक रोटी थी। येसु उन्हें इस प्रकार समझाने लगे: "सावधान हो, फ़रीसियों के ख़मीर और हेरोद के ख़मीर से बचते रहो", इसपर वे आपस में कहने लगे: "हमारे पास रोटी नहीं है।" यह जानकर येसु ने उनसे कहा: "तुम क्यों चिन्ता करते हो कि हमारे पास रोटी नहीं है? क्या तुम अभी तक जानते नहीं और समझते नहीं? क्या तुम्हारा हृदय अब तक अंधा बना हुआ है? क्या आँखें रहते भी तुम देखते नहीं?

और कान रहते भी सुनते नहीं? क्या तुम्हें याद नहीं है? जब मैंने पाँच हज़ार लोगों के लिए पाँच रोटियाँ तोड़ीं, तुमने टुकड़ों से भरी कितनी टोकरियाँ उठाई थीं?" चेलों ने उत्तर दिया: "बारह।" "फिर जब मैंने चार हज़ार लोगों के लिए सात रोटियाँ तोड़ीं, तुमने बचे टुकड़ों की कितनी टोकरियाँ उठाईं?" चेलों ने उनसे कहा: "सात।" तब येसु ने उनसे कहा: "तुम क्यों नहीं समझते हो कि रोटी के विषय में मैंने तुमसे यह नहीं कहा है कि फ़रीसियों और सदूसियों के ख़मीर से बचते रहो?" तब चेले समझ गए कि येसु ने यह नहीं कहा था कि वे ख़मीरी रोटी से बचते रहें परन्तु फ़रीसियों और सदूसियों की शिक्षा से।

१४९ बेथसैदा का अंधा

वे बेथसैदा में आए, और लोगों ने येसु के पास एक अंधे को लाकर उनसे यों विनती की: "इसपर हाथ रखिए।" येसु अंधे का हाथ पकड़कर उसको गाँव के बाहर ले चले। फिर उन्होंने उसकी आँखों पर थूक मलकर और उसपर हाथ रखकर उससे पूछा: "क्या तू कुछ देखता है?" उसने आँखें उठाकर कहा: "मैं मनुष्यों को देखता हूँ; मैं उनको पेड़ों के समान देखता हूँ पर वे चलते हैं।" इसपर येसु ने फिर उसकी आँखों पर हाथ रखा और वह देखने लगा; और वह शीघ्र ही चंगा हो गया, यहाँ तक कि वह सब कुछ साफ़-साफ़ देख सकता था। तब येसु ने उसको यह कहकर घर भेजा: "अपने यहाँ जा और गाँव में प्रवेश करने पर किसी से कुछ न कहना।"

१५० कैसरिया के देश में पेत्रुस को परम अधिकार

इसके बाद येसु अपने चेलों के साथ कैसरिया फिलिपी के गाँवों में गए। ऐसा हुआ कि जब येसु एकान्त में जाकर विनती कर रहे थे और उनके चेले भी उनके साथ थे, उन्होंने उनसे पूछा: "लोग क्या कहते हैं कि मैं कौन हूँ?" चेलों ने कहा: "कोई-कोई आपको योहन बपतिस्ता कहते हैं, कोई-कोई एलियस और कोई-कोई येरेमियस या नबियों में से एक।" येसु ने उनसे पूछा: "बल्कि तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?" सिमोन पेत्रुस ने उत्तर दिया: "आप ख्रीस्त हैं, जीवित ईश्वर के पुत्र।" येसु ने उत्तर दिया: "धन्य है तू, सिमोन, योनस के पुत्र, मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे स्वर्गीय पिता ने तुझे यह प्रकट किया है। मैं तुझसे कहता हूँ: तू पेत्रुस है और मैं

इसी पत्थर पर अपनी धर्ममंडली स्थापित करूँगा * और नरक की शक्तियाँ इसपर विजय नहीं प्राप्त कर सकेंगी। मैं तुझे स्वर्ग-राज्य की चाभियाँ दूँगा: जो कुछ तू पृथ्वी पर बाँधेगा वह स्वर्ग में भी बँधा रहेगा और जो कुछ तू पृथ्वी पर मुक्त कर देगा वह स्वर्ग में भी मुक्त रहेगा।" तब उन्होंने अपने चेलों को आज्ञा दी: "किसी से मत कहो कि मैं ही ख्रीस्त हूँ।"

दुःखभोग की पहली भविष्यद्वाणी १५१

उस समय से येसु अपने चेलों को समझाने लगे: "मेरे लिए येरुसलेम जाना, प्राचीनों, शास्त्रियों और महायाजकों से बहुत कष्ट सहना, मार डाला जाना और तीसरे दिन पुनर्जीवित होना आवश्यक है।" तब पेत्रुस येसु को अलग ले जाकर इस प्रकार झिड़कने लगा: "हे प्रभु, यह आपसे दूर ही रहे; आपको ऐसा कभी न होगा।" पर येसु ने मुड़कर पेत्रुस से कहा: "मेरे सामने से हट जा, शैतान; तू मेरे लिए बाधा हो रहा है, क्योंकि तेरे ये विचार ईश्वर के नहीं, मनुष्य के हैं।"

स्वार्थत्याग की ज़रूरत १५२

तब उन्होंने अपने चेलों के साथ लोगों को पास बुलाकर उनसे कहा: "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने को त्यागे और अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपने जीवन की रक्षा करना चाहेगा वह उसे खो देगा; पर जो कोई मेरे लिए और सुसमाचार के लिए अपने जीवन का उत्सर्ग करेगा वही उसकी रक्षा कर सकेगा। क्योंकि मनुष्य को क्या लाभ यदि सारी दुनिया प्राप्त कर ले पर अपनी आत्मा को खो दे? मनुष्य अपनी आत्मा के बदले में क्या दे सकता है?

"यदि कोई इस अधर्मी तथा पापिनी पीढ़ी के सामने मुझे और मेरे वचनों को ग्रहण करने में लजाएगा, तो मनुष्य का पुत्र भी, जब वह अपने पिता की महिमा सहित पवित्र स्वर्गदूतों के साथ आएगा, उसको ग्रहण करने में लजाएगा।"

---

*इन शब्दों से ख्रीस्त पेत्रुस को अपनी गिरजा (धर्ममंडली) का प्रधान बनाने की प्रतिज्ञा करते हैं। येसु उससे कहते हैं: "तू एक चट्टान है और इस चट्टान पर मैं अपनी गिरजा स्थापित करूँगा।" पेत्रुस एक इबरानी (यहूदी) शब्द का अनुवाद है जिसका अर्थ है: चट्टान।

फिर येसु ने उनसे कहा: "मैं तुमसे सच कहता हूँ: यहाँ खड़े हुए लोगों में से कई एक हैं जो नहीं मरेंगे जब तक वे ईश्वर के राज्य को अपनी सामर्थ्य में आते न देख लें।"

१५—गलीलिया में अन्तिम उपदेश

(अगस्त और सितंबर में)

१५३ **प्रभु येसु का रूपान्तरण** करीब आठ दिन बाद येसु पेत्रुस, योहन और याकूब को अपने साथ लेकर प्रार्थना के लिए पहाड़ पर चढ़े। प्रार्थना करते समय येसु का दिव्य रूप हो गया, उनका चेहरा सूर्य के समान चमक उठा और उनके वस्त्र उज्ज्वल और हिम जैसे नितान्त उजले हो गए यहाँ तक कि संसार का कोई भी धोबी इतना उजला नहीं कर सकता। और दो पुरुष उनके साथ बातें कर रहे थे: वे थे मूसा और एलियस, जो महिमा सहित दिखाई देकर उनके मरण के विषय में बता रहे थे जो येरुसलेम में पूरा होनेवाला था।

पेत्रुस और उसके साथी नींद में डूबे थे। जागने पर उन्होंने येसु की महिमा और उन दो पुरुषों को देखा जो उनके साथ खड़े थे। ये येसु से विदा होने लगे कि पेत्रुस ने येसु से कहा: "हे गुरु, हमारे लिए यहाँ रहना अच्छा है। इसलिए हम यहाँ तीन तम्बू खड़े करें: एक आपके लिए, एक मूसा के लिए, एक एलियस के लिए।" उसे मालूम न था कि वह क्या कह रहा है। वह बोल ही रहा था कि बादल आकर उनपर छा गया और वे बादल से घिर जाने के कारण डर गए। बादल में से यह आवाज़ सुनाई दी: "यह मेरा प्रिय पुत्र है, इससे मैं प्रसन्न हूँ; इसको सुनो।" चेले यह आवाज़ सुनकर मुँह के बल गिरे और बहुत ही डर गए। तब येसु पास आए और उन्हें छूकर बोले: "उठो, डरो मत।" उन्होंने अपनी आँखें उठाकर येसु के सिवा और किसी को नहीं देखा।

पहाड़ से उतरते समय येसु ने उन्हें इस प्रकार आज्ञा दी: "जब तक मनुष्य का पुत्र मुरदों में से फिर न जी उठे, जो कुछ तुमने देखा है उसे किसी को न बताना।" वे यह बात मन में रखकर आपस में पूछने लगे: "मुरदों में से फिर जी उठने का क्या अर्थ हो सकता है?" १५४

उनके चेलों ने उनसे पूछा: "शास्त्री क्यों कहते हैं कि पहले एलियस का आना आवश्यक है?" येसु ने उन्हें उत्तर दिया: "एलियस को ज़रूर आना और सब कुछ का सुधार करना है। पर मैं तुमसे कहता हूँ: एलियस आ ही गया है; उन्होंने उसे नहीं पहचाना है और अपनी इच्छा के अनुसार उसके साथ व्यवहार किया है। उसी प्रकार मनुष्य का पुत्र भी उनके द्वारा दुःख उठाएगा।" **चेलों ने समझ** लिया कि येसु ने योहन बपतिस्ता के विषय में उनसे यह कहा है।

भूतग्रस्त लड़का १५५

अपने चेलों के पास आकर येसु ने देखा कि एक बड़ी भीड़ उनके चारों ओर लगी है और शास्त्री चेलों से विवाद कर रहे हैं। येसु को देखते ही सब लोग चकित हो गए, और पास दौड़कर उनको प्रणाम किया। येसु ने पूछा: "तुम आपस में क्या वाद-विवाद कर रहे हो?" भीड़ में से एक ने उत्तर दिया: "हे गुरु, मैं अपने बेटे को, जिसमें गूँगा आत्मा है, आपके पास लाया हूँ। जहाँ कहीं यह इसको पकड़ता है, वहीं पटक देता है और लड़का फेन उगलने तथा दाँत पीसने लगता है और इसके अंग-अंग खिच जाते हैं। मैंने आपके चेलों से उसे निकाल देने का निवेदन किया परन्तु यह उनसे न बन पड़ा।" येसु ने उनसे कहा: "हे अविश्वासी पीढ़ी, मैं तेरे साथ कब तक रहूँगा? कब तक तुम लोगों को सहन करूँ? उस लड़के को मेरे पास लाओ।" वे उसे लाए। येसु को देखते ही अपदूत लड़के को सताने लगा और वह लड़का गिरकर, फेन उगलता हुआ भूमि पर लोटने लगा। येसु ने उसके बाप से पूछा: "कितने समय से उसे ऐसा होता है?" वह बोला: "बचपन ही से। अपदूत ने उसका नाश करने के लिए इसे बार-बार आग और पानी में डाल दिया। यदि आप कुछ कर सकें तो हमपर तरस खाकर हमारी सहायता कीजिए।" येसु ने उससे कहा: "यदि तू विश्वास कर सके तो विश्वासी के लिए सब कुछ सम्भव है।" इसपर लड़के का बाप आँसू बहाते हुए कहने लगा: "हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ। मेरे

अल्प-विश्वास की कमी पूरी कीजिए।" येसु ने भीड़ को बढ़ते आते देखकर अशुद्ध आत्मा को इस प्रकार धमकाया: "रे बहरे-गूँगे आत्मा, मैं तुझे आदेश देता हूँ: इस लड़के से निकल जा और फिर इसमें प्रवेश न कर।" अपदूत चिल्लाता और लड़के को बहुत मरोड़ता हुआ उसमें से निकल गया। लड़का मुरदा-सा पड़ा रहा, यहाँ तक कि बहुत से लोग कहने लगे: "वह मर गया।" पर येसु ने उसका हाथ पकड़कर उसे उठाया और वह खड़ा हुआ।

१५६ बाद में चेलों ने एकान्त में येसु के पास आकर कहा: "हम लोग उसे क्यों नहीं निकाल सके?" येसु ने उनसे कहा: "अपने अविश्वास के कारण। मैं तुमसे सच कहता हूँ: यदि सरसों के दाने के बराबर भी तुम्हारा विश्वास हो और तुम इस पहाड़ से कहो: यहाँ से वहाँ तक हट जा, तो हट जाएगा, और तुम्हारे लिए कुछ भी असम्भव न होगा। पर अपदूतों की यह जाति, प्रार्थना तथा उपवास के सिवा किसी और उपाय से नहीं निकाली जा सकती।"

१५७ दुःखभोग की दूसरी भविष्यद्वाणी

उस स्थान को छोड़ने के बाद, वे गलीलिया होकर जा रहे थे; येसु यह नहीं चाहते थे कि किसी को मालूम हो; वे अपने चेलों को यह कहकर सिखाते थे: "मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ सौंपा जाएगा और वे उसे मार डालेंगे और मारे जाने के बाद वह तीसरे दिन फिर जी उठेगा।"

पर यह बात उनकी समझ में न आ सकी; यह उनसे छिपी ही रही, और वे इसका अर्थ नहीं समझ सकते थे; और इस बात के विषय में येसु से पूछने में उन्हें डर लगता था।

१५८ प्रभु का चेलों को शिक्षा देना: बालकों का-सा भोलापन

वे कफ़रनाहूम पहुँचे। जब वे घर में आए हुए थे, येसु ने उनसे पूछा: "रास्ते में तुम किस विषय पर बातें करते थे?" परन्तु वे चुप रह गए, क्योंकि रास्ते में उन्होंने आपस में यह विवाद किया था: "हममें से बड़ा कौन है?" तब येसु बैठ गए और बारहों को बुलाकर उनसे कहा: "यदि कोई बड़ा होना चाहे तो वह सब से छोटा और सब का सेवक बने।"

और उन्होंने एक बालक को चेलों के बीच खड़ा कर दिया; वे उसको छाती से लगाकर उनसे कहने लगे: मैं तुमसे सच कहता हूँ: यदि तुम मन फेरकर छोटे बालकों के समान नहीं बनते तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न कर सकोगे। इसलिए जो कोई अपने को इस बालक के समान छोटा समझता है, वही स्वर्ग के राज्य में सब से बड़ा है। जो कोई मेरा नाम लेकर एक ऐसे बच्चे को ग्रहण करे वह मुझे ही ग्रहण करता है। और जो कोई मुझे ग्रहण करे वह मुझे नहीं, परन्तु उसी को ग्रहण करता है जिसने मुझे भेजा है।"

सहनशीलता १५९

योहन ने उनसे कहा: "हे गुरु, हमने एक आदमी को जो हमारे साथ नहीं चलता है आपका नाम लेकर भूतों को निकालते देखा और हमने उसको मना कर दिया।" पर येसु ने कहा: "उसको मना मत करो क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो मेरा नाम लेकर चमत्कार करे और शीघ्र ही मेरी निन्दा कर सके। क्योंकि जो तुम्हारे विरुद्ध नहीं वह तुम्हारी ओर है।"

सेवा का पुरस्कार १६०

"जो नबी को नबी मानकर उनका स्वागत करता है वह नबी का इनाम पाएगा; और जो धर्मी को धर्मी मानकर उसका स्वागत करता है वह धर्मी का इनाम पाएगा। जो कोई तुमको मेरा नाम लेकर एक कटोरा पानी पिलाए, इसलिए कि तुम ख्रीस्त के हो, मैं तुमसे सच कहता हूँ कि वह अपना इनाम न खोएगा।"

बाधाएँ १६१

"जो कोई इन नन्हे बालकों में से, जो मुझपर विश्वास करते हैं, किसी एक के विश्वास में बाधा डालता है, उसके लिए यह कहीं भला है कि उसके गले में चक्की का पाट लटकाया जाए और वह समुद्र की गहराई में डाल दिया जाए। बाधाओं के लिए संसार को धिक्कार! बाधाएँ आएँगी ही; पर उस मनुष्य को धिक्कार, जिसके द्वारा ये बाधाएँ आती हैं।

"चौकस रहो जिससे कि तुम इन नन्हों में से एक को भी तुच्छ न समझो; मैं तुमसे कहता हूँ: उनके दूत स्वर्ग में सदा मेरे स्वर्गीय पिता के दर्शन करते हैं।"

१६२ **पाप से बचना** "यदि तेरा हाथ तेरे लिए पाप का कारण बने तो उसे काट डाल। दोनों हाथों के रहते नरक की न बुझनेवाली आग में–जहाँ उनमें पड़ा हुआ कीड़ा नहीं मरता और न आग बुझती है–जाने की अपेक्षा, जीवन में लूला ही प्रवेश करना तेरे लिए कहीं भला है। यदि तेरा पावँ तेरे लिए पाप का कारण बने तो उसे काट डाल। दोनों पावों के रहते न बुझनेवाली आग के जहन्नुम में–जहाँ उनमें पड़ा हुआ कीड़ा नहीं मरता और न आग बुझती है–फेंके जाने की अपेक्षा, लँगड़ा ही अनन्त जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए कहीं भला है। यदि तेरी आँख तेरे लिए पाप का कारण बने तो उसे निकाल डाल। दोनों आँखों के रहते आग के जहन्नुम में–जहाँ उनमें पड़ा हुआ कीड़ा नहीं मरता और न आग बुझती है–डाले जाने की अपेक्षा, काना ही ईश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिए कहीं भला है। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति आग से नमकीन किया जाएगा और प्रत्येक वलि नमक से नमकीन किया जाएगा।"

१६३ **पृथ्वी का नमक** "तुम पृथ्वी का नमक हो। यदि नमक फीका पड़ जाए तो उसे फिर कैसे नमकीन किया जाएगा? बाहर फेंके जाने और मनुष्यों के पावँ तले रौंदे जाने के सिवा वह और किसी काम का नहीं रहेगा। अपने में नमक रखो और आपस में शान्ति से रहो।"

१६४ **संसार की ज्योति** "तुम संसार की ज्योति हो। पहाड़ पर बसा हुआ नगर छिप नहीं सकता; लोग दीपक जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, जिससे वह घर के लोगों को प्रकाश दे। उसी प्रकार तुम्हारी ज्योति मनुष्यों के सामने चमकती रहे जिससे वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे स्वर्गीय पिता की महिमा करें।

१६५ **भाई का सुधार** "यदि तेरा भाई अपराध करे तो जाकर अकेले में उसको समझा दे; यदि वह तेरी बात सुन ले तो तूने इस प्रकार अपने भाई को बचा लिया। पर यदि वह तेरी बात न सुने तो और दो-एक व्यक्तियों को साथ ले जा जिससे दो या तीन गवाहों के सहारे फैसला किया जाय। यदि वह उनकी भी न सुने तो धर्ममंडली से कह;

और यदि वह धर्ममंडली की भी न सुने तो उसको गैरयहूदी और नाकेदार के समान ही समझ ले। मैं तुम लोगों से सच कहता हूँ: जो कुछ तुम पृथ्वी पर बाँधोगे वह स्वर्ग में भी बँधा रहेगा, और जो कुछ तुम पृथ्वी पर मुक्त करोगे वह स्वर्ग में भी मुक्त रहेगा।

"मैं तुमसे सच कहता हूँ: यदि तुममें से दो कुछ भी माँगने के लिए पृथ्वी पर एकमन हो जाएँ, यह उन्हें मेरे पिता की ओर से मिलेगी जो स्वर्ग में है। क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं वहाँ मैं उनके बीच में उपस्थित रहता हूँ।"

अपराधों की क्षमा १६६

तब पेत्रुस ने येसु के पास आकर कहा: "हे प्रभु, जब मेरा भाई मेरे विरुद्ध अपराध करता रहे तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूँ? क्या सात बार तक?" येसु ने उससे कहा: "मैं तुझसे नहीं कहता, कि सात बार वरन् सात का सत्तर गुना बार।"

निर्दय सेवक का दृष्टान्त १६७

इसलिए स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है जो अपने सेवकों से लेखा लेना चाहता था। जब वह लेखा लेने लगा तब उसके पास एक लाया गया जो उसका दस हज़ार तोड़ों* का कर्जदार था। उसके पास अदा करने को कुछ नहीं था; इसलिए उसके स्वामी ने आज्ञा दी कि उसको, उसकी स्त्री को, उसके बच्चों को और जो कुछ भी उसका है यह सब बेच दिया जाए और इस प्रकार ऋण चुकाया जाए। इसपर वह सेवक गिड़गिड़ाकर राजा से इस प्रकार विनती करने लगा: "धीरज धरिए, मैं आपको सब का सब अदा कर दूँगा।" उसके स्वामी ने दया करके उसे जाने दिया और उसका ऋण भी क्षमा कर दिया। वही सेवक बाहर निकलकर अपने एक साथी सेवक से मिला जो उसका एक सौ दीनार का कर्जदार था; उसने उसे पकड़ लिया और उसका गला घोंटकर कहने लगा: 'अपना कर्ज चुका दे।' उसका संगी सेवक गिड़गिड़ाकर यों विनती करने लगा: 'धीरज धरिए, मैं आपको सब का सब अदा कर दूँगा।' पर उसने नहीं माना, और जाकर उसे क़ैदखाने में डाल दिया जब तक कि वह अपना ऋण न चुका दे। यह सब देखकर उसके साथी सेवक बहुत

* एक तोड़े में करीब ३०००) होते हैं।

दु:खी हुए और जाकर अपने स्वामी से सारी बातें कह सुनाईं। तब स्वामी ने उसे बुलाकर कहा: 'रे दुष्ट सेवक, मैंने तेरा सारा ऋण क्षमा कर दिया क्योंकि तूने मुझसे विनती की; तो क्या तुझे भी अपने साथी सेवक पर दया करना उचित न था जैसे मैंने तुझपर दया की है?' स्वामी ने क्रोध में आकर उसे जल्लादों के हाथ सौंप दिया जब तक कि वह कौड़ी-कौड़ी अदा न कर दे। उसी तरह मेरा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे साथ करेगा यदि तुममें से कोई अपने भाई को हृदय से क्षमा नहीं करता।"

१६८ मन्दिर का कर जब वे कफ़रनाहूम पहुँचे तो नाकेदारों ने पेत्रुस के पास आकर कहा: "क्या तुम्हारे गुरु मन्दिर का कर नहीं देते?" उसने कहा: "देते तो हैं।" और ज्योंही वह घर में आया येसु ने उसके पूछने के पहले ही कहा: "हे सिमोन, तेरी क्या राय है? पृथ्वी के राजा किन-किन लोगों से चुंगी या कर लेते हैं? अपने ही बेटों से या परायों से?" पेत्रुस ने कहा: "परायों से।" येसु ने उत्तर दिया: "तब तो बेटे कर से बरी हैं; फिर भी हम उन्हें बुरा उदाहरण न दें; तू समुद्र के पास जाकर बँसी डाल और जो मछली सबसे पहले निकलेगी उसे पकड़ लेना; और उसका मुँह खोलने पर तू एक सिक्का* पाएगा। उसे लेकर मेरे और अपने लिए उन्हें दे देना।"

१६९ अविश्वासी नगरों को शाप तब येसु उन नगरों को दोषी ठहराने लगे, जिनमें उनके अधिकांश चमत्कार हुए थे, क्योंकि उन्होंने पछतावा नहीं किया: "रे कोरोज़ेन, तुझे धिक्कार! रे बेथसैदा, तुझे धिक्कार! जो चमत्कार तुममें किए गए यदि वे ही तीरुस और सिदोन में किए गए होते तो वे टाट ओढ़े और भस्म रमाए कब के पछतावा करते होते। इसलिए मैं तुमसे सच कहता हूँ: अंतिम विचार के दिन तुम्हारी दशा की अपेक्षा तीरुस और सिदोन की दशा कहीं सहनीय होगी।

---

*बीस वर्ष से ऊपर के प्रत्येक यहूदी को प्रति वर्ष मंदिर के लिए दो "ड्राक्मा" कर में देने पड़ते थे। जो सिक्का पेत्रुस ने पाया वह एक 'स्तेतर' था; एक स्तेतर में ४ "ड्राक्मा" होते थे।

"और तू, रे कफ़रनाहूम, क्या तू स्वर्ग तक उठाया जाएगा? तू नरक तक नीचे गिरा दिया जाएगा; क्योंकि जो चमत्कार तुझमें किए गए हैं वे यदि सिदोन में किए गए होते तो वह आज तक बना रहता। इसलिए मैं तुमसे सच कहता हूँ: विचार के दिन तेरी दशा की अपेक्षा सिदोन देश की दशा कहीं सहनीय होगी।"

तृतीय भाग

यहूदिया और पेरेआ में उपदेश

१६—मण्डपों का पर्व

(अक्तूबर में)

येरुसलेम की यात्रा १७०

यहूदियों के मण्डपों का पर्व निकट आया था; इसलिए उनके भाइयों ने येसु से कहा: यहाँ से निकलकर यहूदिया चले जाइए, जिससे जो काम आप करते हैं उन्हें आपके चेले भी देखें। क्योंकि कौन ऐसा है जो प्रसिद्ध होना चाहे और गुप्त रहकर काम करे? यदि आप ऐसे काम करते हैं, तो अपने को जगत् के सामने प्रकट कीजिए।" क्योंकि उनके भाई भी उनपर विश्वास नहीं करते थे। तब येसु ने उनसे कहा: "मेरा समय अब तक नहीं आया, पर तुम्हारा समय सदा तैयार है। संसार तुमसे बैर नहीं रख सकता; परन्तु वह मुझसे बैर रखता है क्योंकि मैं उसके विषय में साक्ष्य देता हूँ कि उसके काम बुरे हैं। तुम पर्व के लिए जाओ; मैं इस पर्व के लिए नहीं जाता, क्योंकि मेरा समय अब तक पूरा नहीं हुआ है।" इतना कहकर वे गलीलिया में रह गए। परन्तु अपने भाइयों के चले जाने के बाद वे भी प्रकट रूप से नहीं पर गुप्त रूप से पर्व के लिए गए।

यहूदी लोग पर्व में उनको ढूँढ़कर कहते थे: "वे कहाँ हैं?" जनता में येसु के विषय में चुपके-चुपके बड़ी चर्चा चल रही थी; कितने तो कहते

थे: "वे भले मनुष्य हैं, पर दूसरे कहते थे: "वह लोगों को बहकाता है।" फिर भी यहूदियों के डर के मारे कोई भी उनके विषय में खुलकर नहीं बोलता था।

१७१ **प्रभु का पहला भाषण** पर्व के आधा बीत जाने पर येसु मन्दिर में जाकर शिक्षा देने लगे। यहूदियों ने अचम्भे में आकर कहा: "इसे बिना पढ़े विद्या कैसे आ गई?" येसु ने उन्हें उत्तर दिया: "मेरी शिक्षा मेरी नहीं, मेरे भेजनेवाले की है। यदि कोई उसकी इच्छा पूरी करना चाहे तो वह मेरी शिक्षा के विषय में जानेगा कि यह ईश्वर की ओर से है या मैं अपनी ओर से बोलता हूँ। जो कोई अपनी ओर से बोलता है वह अपनी महिमा चाहता है; पर जो अपने भेजनेवाले की महिमा चाहता है, वही सच्चा है और उसमें कोई अधर्म का नाम नहीं।

"क्या मूसा ने तुम्हें नियम नहीं दिया? पर तुममें से कोई भी नियम का पालन नहीं करता। तुम मुझे मार डालने की धुन में क्यों लगे हो?" भीड़ ने उत्तर दिया: "तुझे शैतान लगा है। कौन तुझे मार डालने की धुन में लगा है?" येसु ने उत्तर दिया: "एकही काम मैंने किया और तुम सब के सब अचम्भा करते हो। मूसा ने तुम्हें ख़तने की आज्ञा दी (यह नहीं कि यह आज्ञा मूसा की ओर से है पर पूर्वजों से चली आई है) और तुम विश्राम के दिन मनुष्य का ख़तना करते हो। यदि विश्राम के दिन मनुष्य का ख़तना किया जाता है जिससे मूसा का नियम न टल जाए, तो तुम इसको क्यों बुरा मानते हो कि मैंने विश्राम के दिन मनुष्य को पूर्णरूप से स्वस्थ किया है? रंग-ढंग देखकर नहीं बल्कि न्यायपूर्वक विचार करो।"

तब कई येरुसलेमीय कहने लगे: "क्या यह वही नहीं, जिसे वे मार डालने की धुन में हैं? और देखो वह प्रकट में बातें करता है, और कोई भी उसे कुछ नहीं कहता। क्या मुखियों ने सचमुच जान लिया है कि यही ख्रीस्त है? फिर भी हम जानते हैं कि यह मनुष्य कहाँ का है। परन्तु जब ख्रीस्त आएँगे तो कोई नहीं जानेगा कि वे कहाँ के हैं।"

मन्दिर में शिक्षा देते समय येसु पुकारकर कहने लगे "तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि मैं कहाँ का हूँ; मैं अपने से नहीं आया, पर मेरा

भेजनेवाला कोई है जिसे तुम नहीं जानते। मैं उसे जानता हूँ क्योंकि मैं उसकी ओर से आया हूँ और उसने मुझे भेजा है।"

इसपर वे येसु को पकड़ने की चेष्टा करने लगे; परन्तु किसी ने भी उनपर हाथ न लगाया क्योंकि उनका समय अब तक नहीं आया था। परन्तु भीड़ में से बहुतों ने उनपर विश्वास किया। वे कहते थे: "जब ख्रीस्त आएँगे तो क्या वे इस मनुष्य से भी अधिक चमत्कार करेंगे?" १७२

फ़रीसियों ने लोगों को येसु के विषय में ये बातें चुपके-चुपके करते सुना; और महायाजकों तथा फ़रीसियों ने येसु को पकड़ने के लिए प्यादों को भेजा। येसु ने उनसे कहा: "अब थोड़ी देर तक मैं तुम्हारे साथ हूँ; मैं उसके पास जाता हूँ जिसने मुझे भेजा है। तुम मुझे ढूँढ़ोगे पर पाओगे नहीं; जहाँ मैं जाता हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते।" इसपर यहूदियों ने आपस में कहा: "यह कहाँ चला जाएगा कि हम इसे नहीं पा सकेंगे? क्या यह अन्यजातियों में बिखरे हुए यहूदियों के पास जाएगा और अन्यजातियों को शिक्षा देंगे? यह क्या बात है जिसे उसने कही है: तुम मुझे ढूँढ़ोगे पर पाओगे नहीं? और जहाँ मैं जाता हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते?"

दूसरा भाषण १७३

पर्व के अन्तिम दिन, जो सब से बड़ा दिन था, येसु खड़े हुए और उन्होंने पुकारकर कहा: "यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पिए। जो मुझपर विश्वास करता है, जैसे धर्मग्रंथ कहता है: उसके हृदय से जीवनप्रद जल की नदियाँ बह निकलेंगी।" उन्होंने यह बात उस पवित्र आत्मा के विषय में कही जिसे उनपर विश्वास करनेवाले ग्रहण करने को थे। अब तक पवित्र आत्मा नहीं प्रकट था क्योंकि येसु अब तक महिमा से भूषित नहीं हुए थे।

येसु की ये बातें सुनकर भीड़ में से कितनों ने कहा: "ये सचमुच नबी हैं।" दूसरे कहते थे: "ये ख्रीस्त हैं।" परन्तु कुछ लोगों ने कहा: "क्या ख्रीस्त गलीलिया से आते हैं? क्या धर्मग्रंथ यह नहीं कहता है कि ख्रीस्त दाऊद के वंश से आते हैं, बेथलेहेम गाँव से जहाँ दाऊद ने निवास किया था?" इस प्रकार येसु के विषय में लोगों में मतभेद था। कुछ लोग येसु को पकड़ना चाहते थे परन्तु किसी ने भी उसपर हाथ नहीं लगाया। १७४

१७५ जब प्यादे प्रधानयाजकों और फ़रीसियों के पास लौट आए तो उन्होंने उनसे कहा: "तुम येसु को क्यों नहीं लाए?" प्यादों ने उत्तर दिया: "इस मनुष्य की तरह कोई भी कभी नहीं बोला।" फ़रीसियों ने उन्हें उत्तर दिया: "क्या तुम भी उसके बहकावे में आ गए हो? क्या शासकों और फ़रीसियों में से भी किसी ने उसपर विश्वास किया है? पर यह भीड़, जो नियम नहीं जानती, शापित है।" उनमें से निकोदेमुस ने, जो रात को येसु के पास आया था, उनसे कहा: "क्या हमारा नियम किसी को दोषी ठहराता है जब तक सुनवाई नहीं हुई और यह मालूम नहीं हुआ है कि उसने क्या किया है?" उन्होंने उत्तर दिया: "क्या तू भी गलीली है? विचार कर समझ ले कि गलीलिया से कोई नबी उत्पन्न नहीं होता।" तब सभी अपने-अपने घर लौट गए। और येसु जैतून पहाड़ पर चले गए।

१७६ **व्यभिचारिणी**

बड़े सवेरे वे फिर मन्दिर में आए; सारी जनता उनके पास इकट्ठी हो गई और वे बैठकर उनको शिक्षा देने लगे।

तब शास्त्री और फ़रीसी उनके पास व्यभिचार में पकड़ी हुई एक स्त्री को लाए; और उसे बीच में खड़ा करके येसु से कहने लगे: "हे गुरु, यह स्त्री व्यभिचार में पकड़ी गई है। नियम में मूसा ने हमें आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियों को पत्थरवाह कर दिया जाए; आप क्या कहते हैं?" उन्होंने येसु की परीक्षा लेते हुए यह कहा ताकि वे उनपर दोष लगा सकें। येसु तो झुककर उँगली से भूमि पर लिखने लगे। परन्तु वे उनसे आग्रह करते जाते थे; तब येसु ने आँख उठाकर उनसे कहा: "तुममें से जो निष्पाप हो वही सब से पहले स्त्री पर पत्थर मारे।" और फिर झुककर भूमि पर लिखने लगे।

यह सुनकर बूढ़ों से लेकर सब के सब एक-एक करके खिसक गए। येसु अकेले ही रह गए और वह स्त्री बीच में खड़ी रही। तब येसु ने आँख उठाकर उससे कहा: "हे स्त्री, जो तुझपर दोष लगाते थे वे कहाँ हैं? क्या किसी ने तुझे दंड की आज्ञा नहीं दी?" उसने कहा: "हे प्रभु, किसी ने नहीं।" येसु ने कहा: "मैं भी तुझे दंड की आज्ञा नहीं दूँगा; चली जा और अब से लेकर फिर पाप न कर।"

यहूदियों के साथ वाद-विवाद १७७

तब येसु ने उनसे फिर कहा : "मैं संसार की ज्योति हूँ; जो मेरा अनुसरण करता है वह अंधेरे में नहीं चलेगा वरन् जीवन की ज्योति प्राप्त करेगा।" इसपर फ़रीसियों ने उनसे कहा : "आप अपना ही साक्ष्य देते हैं; आपका साक्ष्य मान्य नहीं है।" येसु ने उन्हें उत्तर दिया : "यद्यपि मैं स्वयं अपना साक्ष्य देता हूँ तब भी मेरा साक्ष्य मान्य है; क्योंकि मैं जानता हूँ कि कहाँ से आया और किधर जा रहा हूँ; पर तुम नहीं जानते कि मैं कहाँ से आया और कहाँ जाता हूँ। तुम मनुष्य जैसा विचार करते हो; पर मैं किसी का विचार नहीं करता। और यदि मैं विचार करता हूँ तो मेरा विचार सच्चा है, क्योंकि मैं अकेला नहीं हूँ; मेरे साथ है पिता, मेरा भेजनेवाला; और तुम्हारे नियम में भी तो यह लिखा है कि दो व्यक्तियों का साक्ष्य मान्य है। मैं स्वयं अपना साक्ष्य देता हूँ, और मेरा भेजनेवाला पिता भी मेरा साक्ष्य देता है।" इसलिए उन्होंने येसु से कहा : "कहाँ है आपका पिता?" येसु ने उत्तर दिया : "तुम न तो मुझे और न मेरे पिता को जानते हो; यदि तुम मुझे जानते, तो अवश्य ही मेरे पिता को भी जानते।"

येसु ने मन्दिर में शिक्षा देते समय ये बातें ख़ज़ाने के पास सुनाईं; और किसी ने उनपर हाथ न लगाया क्योंकि उनका समय अभी नहीं आया था।

येसु ने फिर यहूदियों से कहा : "मैं जाता हूँ और तुम मुझे ढूँढ़ोगे और अपने पाप में मर जाओगे। जहाँ मैं जाता हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते।" इसलिए यहूदियों ने कहा : "क्या वह अपने आपको मार डालेगा? क्योंकि वह कहता है : जहाँ मैं जाता हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते।" येसु ने उनसे कहा : "तुम इस पृथ्वी के हो परन्तु मैं स्वर्ग का हूँ। तुम इस संसार के हो परन्तु मैं इस संसार का नहीं हूँ। इसीलिए मैंने तुमसे कहा कि तुम अपने पापों में मर जाओगे; क्योंकि यदि तुम विश्वास नहीं करते कि मैं वही हूँ, जो मैं तुमसे कहता हूँ, तो तुम अपने पाप में मर जाओगे।" १७८

उन्होंने येसु से पूछा : "आप कौन हैं?" येसु ने उनसे कहा : "सचमुच मैं वही हूँ जिसे मैं तुम लोगों से कहता आया हूँ। तुम्हारे विषय में मैं बहुत कुछ कह सकता हूँ, और बहुत-सी बातों के कारण तुम्हारा विचार भी कर सकता हूँ। पर जिसने मुझे भेजा है वह सच्चा है, और जो बातें मैंने उससे सुनी हैं वेही मैं

संसार को कहता हूँ।" वे नहीं समझ सके कि वे पिता (ईश्वर) के विषय में बोल रहे हैं। तब येसु ने उनसे कहा: "जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊपर पर चढ़ा दोगे * तब जानोगे कि मैं कौन हूँ और मैं अपने आप कुछ नहीं करता; परन्तु जैसे पिता ने मुझे सिखाया है वैसेही कहता हूँ। जिसने मुझे भेजा है वह मेरे साथ है और उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा है। इसलिए मैं सदा वही करता हूँ जो उसे पसंद आता है।" यह सुनकर बहुतों ने उनपर विश्वास किया।

१७९ जो उनपर विश्वास करते थे, उन यहूदियों से येसु ने कहा: "यदि तुम मेरे वचन पर दृढ़ रहोगे तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे; और तुम सत्य को पहचानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र बना देगा।" उन्होंने येसु को उत्तर दिया: "हम अब्रहाम की संतान हैं और कभी किसी के दास नहीं हुए; तो आप क्यों कहते हैं: तुम स्वतंत्र हो जाओगे?" येसु ने उन्हें उत्तर दिया: "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ: जो कोई पाप करता है वह पाप का दास है। दास सदा घर में नहीं रहता पर पुत्र सदा रहता है। इसलिए यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र बना देगा तो तुम सचमुच स्वतंत्र हो जाओगे। मुझे मालम है कि तुम अब्रहाम की सन्तान हो; परन्तु तुम मुझे मार डालने की धुन में हो क्योंकि तुम्हारे मन में मेरे वचन के लिए स्थान नहीं है। जो कुछ मैंने अपने पिता के यहाँ देखा है वही कहता हूँ, तुम भी वही करते हो जो तुमने अपने पिता से सुना है।" उन्होंने येसु को उत्तर दिया: "हमारा पिता अब्रहाम है।" येसु ने उनसे कहा: "यदि तुम अब्रहाम की सन्तान हो तो अब्रहाम के काम करो। परन्तु अब तुम मुझे मार डालने की धुन में हो, मुझ जैसे मनुष्य को, जिसने तुमको वह सत्य बताया जिसे उसने ईश्वर से सुना है। अब्रहाम ने तो ऐसा नहीं किया। तुम तो अपने ही पिता के काम करते हो।" इसपर उन्होंने येसु से कहा: "हम व्यभिचार से नहीं जन्मे हैं; हमारा एकही पिता है: ईश्वर।"

१८० येसु ने उनसे कहा: "यदि तुम्हारा पिता ईश्वर होता तो अवश्य ही तुम मुझे प्यार करते; क्योंकि मैं ईश्वर से निकला और ईश्वर से आया हूँ; मैं अपने आप नहीं आया पर उसीने मुझे भेजा है। तुम मेरी बातें क्यों नहीं

---

* अर्थात् क्रूस पर—

समझते हो? इसका कारण यह है कि मेरी शिक्षा तुमसे सुनी नहीं जाती। तुम अपने पिता शैतान की ओर से हो और अपने पिता की इच्छाएँ पूरी करना चाहते हो। वह तो आरम्भ ही से हत्यारा था और उसने सत्य का साथ नहीं दिया क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं। जब वह झूठ बोलता है तो निज स्वभाव के अनुसार ही बोलता है क्योंकि वह झूठा ही है और झूठ का पिता है। पर जब मैं तुमसे सच बोलता हूँ तो तुम मेरा विश्वास नहीं करते हो। तुममें से कौन मुझे पापी ठहराएगा? यदि मैं सच कहता हूँ तो तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं करते? जो ईश्वर की ओर से है वह ईश्वर की बातें सुनता है। तुम इसलिए नहीं सुनते कि ईश्वर की ओर से नहीं हो।"

१८१ तब यहूदियों ने येसु को उत्तर दिया: "हमारा यह कहना ठीक ही है कि तू समारितानी है और तुझे अपदूत लगा है!" येसु ने उत्तर दिया: "मुझे अपदूत नहीं लगा है; मैं अपने पिता का आदर करता हूँ और तुम मेरा अनादर करते हो। मैं अपनी बड़ाई नहीं चाहता; एक है जो मेरी बड़ाई चाहता है और जो मेरा न्याय करता है। मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ: यदि कोई मेरे वचन का पालन करे तो वह कभी मरेगा नहीं।" यहूदियों ने येसु से कहा: "अब हम जानते हैं कि तुझे अपदूत लगा है। अब्रहाम मर गया और नबी भी मर गए; परन्तु तू कहता है: यदि कोई मेरे वचन का पालन करे, तो वह कभी मरेगा नहीं। क्या तू हमारे पिता अब्रहाम से भी महान् है जो मर गए? और नबी भी तो मर गए। तू अपने को क्या समझता है?" येसु ने उत्तर दिया: "यदि मैं स्वयं अपनी बड़ाई करूँ तो मेरी बड़ाई कुछ नहीं है। मेरा पिता मेरी बड़ाई करता है जिसके विषय में तुम कहते हो कि हमारा ईश्वर है। पर तुम उसे नहीं जानते; मैं उसे जानता हूँ; यदि मैं कहूँ कि उसे नहीं जानता हूँ तो तुम्हारे ही समान झूठा ठहरूँगा। पर मैं उसे जानता हूँ और उसकी बात मानता हूँ। अब्रहाम तुम्हारा पिता मेरा दिन देखने की आशा से बहुत आनन्दित हुआ; उसने देखा और आनन्द मनाया।" तब यहूदियों ने येसु से कहा: "तेरी उम्र पचास वर्ष की नहीं हुई है; तोभी तूने अब्रहाम को देख लिया?" येसु ने उनसे कहा: "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ: अब्रहाम के होने के पहले से ही मैं हूँ।" इसपर उन्होंने येसु को मारने के लिए पत्थर उठाए। परन्तु येसु छिपकर मन्दिर से निकल गए।

१८२ **जन्मान्ध** जाते-जाते येसु ने एक मनुष्य को देखा जो जन्म से ही अन्धा था। उनके चेलों ने उनसे पूछा: "हे गुरु, किसने पाप किया कि यह मनुष्य अंधा जन्मा? इस मनुष्य ने या इसके माँ-बाप ने?" येसु ने उत्तर दिया: "न तो इस मनुष्य ने पाप किया और न इसके माँ-बाप ने; पर यह अंधा इसलिए हुआ कि ईश्वर के कार्य इसमें प्रकट हों। मुझे दिन रहते ही अपने भेजनेवाले का काम करना है; रात आ रही है जब कोई भी काम नहीं कर सकता। जब तक मैं संसार में हूँ तब तक संसार की ज्योति हूँ।" यह कहकर उन्होंने भूमि पर थूका, थूक से मिट्टी सानी और वह मिट्टी अंधे की आँखों पर लगाकर उससे कहा: "जा, सीलो (जिसका अर्थ है भेजा हुआ) के कुंड में धो ले।" अतः उसने जाकर आँखें धोईं और देखता हुआ लौट आया।

तब पड़ोसी, और जो उसे भीख माँगते देखा करते थे, कहने लगे: "क्या यह वही नहीं है जो बैठा भीख माँगा करता था?" कितनों ने कहा: "वही तो है"; औरों ने कहा: "नहीं, नहीं, पर यह उस अंधे के समान ही दीखता है।" किन्तु उसने कहा: "मैं वही हूँ।" इसपर वे उससे पूछने लगे: "तेरी आँखें कैसे खुल गईं?" उसने उत्तर दिया: "जो मनुष्य येसु कहलाते हैं उन्होंने मिट्टी सानी और मेरी आँखों पर मलकर मुझसे कहा: सीलो के कुंड में जा और धो ले। इसलिए मैं गया, धोया और देखने लगा।" उन्होंने उससे पूछा: "वह कहाँ हैं?" उसने कहा: "मैं यह नहीं जानता।"

१८३ लोग उसको, जो पहले अंधा था, फ़रीसियों के पास ले गए। जिस दिन येसु ने मिट्टी सानी और उसकी आँखें खोली थीं वह विश्राम का दिन था। फ़रीसी भी उससे पूछने लगे कि वह कैसे देखने लगा। उसने उनसे कहा: "उन्होंने मेरी आँखों पर मिट्टी लगाई, मैंने धोया और अब देखता हूँ।" इसपर कई फ़रीसियों ने कहा: "यह मनुष्य ईश्वर की ओर से नहीं है; वह विश्राम का दिन नहीं मानता।" पर दूसरों ने कहा: "पापी मनुष्य ऐसे चमत्कार कैसे कर सकता है?" अतः उनमें मतभेद हो गया। इसलिए उन्होंने अंधे से फिर पूछा: "जिसने तेरी आँखें खोली हैं, उसके विषय में तू क्या कहता है?" अंधे ने कहा: "वे नबी हैं।"

यहूदियों ने तब तक विश्वास नहीं किया कि वह मनुष्य अंधा था और अब देखने लगा है जब तक उन्होंने उसके माँ-बाप को बुलाकर उनसे न पूछा:

"क्या यह तुम्हारा ही बेटा है, जिसके विषय में तुम कहते हो कि यह जन्म का अन्धा था? तो फिर वह अब कैसे देखता है?" उसके माँ-बाप ने उन्हें उत्तर दिया: "हम जानते हैं कि यह हमारा बेटा है और जन्म का अन्धा था। पर वह अब कैसे देखता है यह तो हमें मालूम नहीं; और हम यह भी नहीं जानते कि किसने उसकी आँखें खोली हैं; उसीसे पूछिए, वह सयाना है; वह अपनी बात आपही कहेगा।" उसके माँ-बाप ने यह इसलिए कहा कि वे यहूदियों से डरते थे; क्योंकि यहूदियों ने यह निश्चय किया था कि यदि कोई स्वीकार करे कि वे ख्रीस्त हैं तो वह सभाघर से निकाल दिया जाएगा। इसलिए उसके माँ-बाप ने कहा: "वह सयाना है, उसीसे पूछ लीजिए।"

इसपर उन्होंने इस मनुष्य को जो अंधा था फिर बुलाया और उनसे कहा: "ईश्वर की स्तुति कर। हम जानते हैं कि वह मनुष्य पापी है।" उसने उत्तर दिया: "वे पापी हैं या नहीं, यह मुझे मालूम नहीं; एक बात मैं जानता हूँ कि मैं, जो अन्धा था, अब देखता हूँ।" वे फिर उससे पूछने लगे: "उसने तेरे लिए क्या किया! उसने तेरी आँखें कैसे खोलीं?" अंधे ने उन्हें उत्तर दिया: "मैं तो आप लोगों से कह चुका हूँ, लेकिन आप लोगों ने ध्यान नहीं दिया। आप क्यों फिर सुनना चाहते हैं? क्या आप भी उनके चेले बनना चाहते हैं?" इसपर वे उसको बुरा-भला कहकर बोले: "अबे, उसका चेला तू बन जा; हम तो मूसा के चेले हैं। हम जानते हैं कि ईश्वर ने मूसा से बातें कीं; पर इस मनुष्य के विषय में हम नहीं जानते कि यह कहाँ का है।" अंधे ने उत्तर दिया: "यह तो अचम्भे की बात है कि आपको पता नहीं कि वे कहाँ के हैं जब कि उन्होंने मेरी आँखें खोल दीं। हम जानते हैं कि ईश्वर पापियों की नहीं सुनता है; परन्तु यदि कोई ईश्वर का भक्त हो और उसकी इच्छा पूरी करे तो ईश्वर उसकी सुनता है। जगत् के शुरू से यह कभी सुनने में नहीं आया कि किसीने जन्मांध की आँखें खोली हों। यदि ये ईश्वर की ओर से नहीं होते तो कुछ भी नहीं कर सकते।" उन्होंने उसे उत्तर दिया: "जन्म से ही तुझमें पाप कूटकूटकर भरा है और तू हमको सिखलाता है?" इसपर उन्होंने उसको बाहर निकाल दिया।

येसु ने सुना कि उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया है। अतः उससे १८४ मिलकर उन्होंने उससे कहा: "क्या तू ईश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है?"

उसने उत्तर दिया: "वह कौन है, हे प्रभु, जिससे मैं उसपर विश्वास करूँ?" येसु ने उससे कहा: "तूने उसे देखा है और जो तुझसे बातें करता है वही है।" तब उसने कहा: "हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ", और दण्डवत् करके उसने येसु की आराधना की।

१८५ फिर येसु ने कहा: "विचार के लिए मैं इस जगत् में आया हूँ कि जो नहीं देखते हैं वे देखने लगें, और जो देखते हैं वे अंधे हो जाएँ।" जो फ़रीसी उनके साथ थे यह सुनकर बोले: "क्या हम भी अंधे हैं?" येसु ने उनसे कहा: "यदि तुम अंधे होते, तो तुम्हें पाप नहीं होता। परन्तु अब तुम कहते हो: हम देखते हैं; और तुम्हारा पाप बना रहता है।"

१८६ **भला गड़ेरिया** "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ: जो द्वार से होकर भेड़शाला में प्रवेश नहीं करता, पर दूसरी ओर से चढ़कर आता है, वह चोर और डाकू है; परन्तु जो द्वार से होकर प्रवेश करता है वह भेड़ों का चरवाहा है। उसके लिए दरवान द्वार खोल देता है और भेड़ें उसकी आवाज़ सुनती हैं; वह नाम ले-लेकर अपनी भेड़ों को पुकारता और बाहर ले जाता है। अपनी भेड़ों को बाहर निकाल लेने पर वह उनके आगे-आगे चलता है: और भेड़ें उसके पीछे-पीछे चलती हैं क्योंकि वे उसकी आवाज़ पहचानती हैं। परन्तु वे अपरिचित के पीछे-पीछे नहीं चलतीं वरन् उससे भाग जाती हैं क्योंकि वे अपरिचित की आवाज़ नहीं पहचानतीं।"

येसु ने उनसे यह दृष्टान्त कहा, पर उन्होंने नहीं समझा कि वे उनसे क्या कहते हैं।

१८७ इसलिए येसु ने उनसे फिर कहा: "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ: भेड़ों का द्वार मैं ही हूँ। जितने आए हैं सब के सब चोर और डाकू हैं। पर भेड़ों ने उनकी नहीं सुनी। द्वार मैं ही हूँ। मेरे द्वारा जो भीतर जाएगा वह मुक्ति पाएगा; और वह भीतर बाहर आया-जाया करेगा और चरागाह पाएगा।

"चोर केवल चुराने, मारने और नष्ट करने आता है। मैं आया हूँ कि वे जीवन पाएँ और उसे पूर्णता से प्राप्त करें।"

१८८ "मैं भला गड़ेरिया हूँ। भला गड़ेरिया अपनी भेड़ों के लिए अपने प्राण देता है। परन्तु जो मज़दूर है और गड़ेरिया नहीं है, जिनके निज की

भेड़ें नहीं हैं, वह भेड़िए को आते देख भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है; और भेड़िया भेड़ों को पकड़ता और तितर-बितर कर देता है। मज़दूर भाग जाता है क्योंकि वह तो मज़दूर है और उसे भेड़ों की कोई चिन्ता नहीं है।

"मैं भला गड़ेरिया हूँ: और जैसे पिता मुझे जानता है और मैं पिता को जानता हूँ वैसे ही मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं, और अपनी भेड़ों के लिए मैं अपना जीवन देता हूँ। मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस भेड़शाला की नहीं हैं; मुझे उनको भी लाना है, वे मेरी आवाज़ सुनेंगी और केवल एकही भेड़शाला और एकही गड़ेरिया होगा।

"पिता इसीलिए मुझे प्यार करता है: क्योंकि मैं अपना जीवन देता हूँ कि उसे फिर ग्रहण करूँ। कोई भी मेरा जीवन मुझसे नहीं ले सकता, परन्तु मैं आपही अपना जीवन देता हूँ। मुझे अपना जीवन देने की शक्ति और उसे फिर ग्रहण करने की भी शक्ति है। यह आज्ञा मैंने अपने पिता से पाई है।"

इन बातों के कारण यहूदियों के बीच फिर फूट पड़ गई। बहुतेरे कहते थे: १८६
"उसे शैतान लगा है और उसकी बुद्धि ठिकाने नहीं; तुम उसकी क्यों सुनते हो?" दूसरे कहते थे: "ये बातें नरकदूत की नहीं हैं; क्या नरकदूत अंधों की आँखें खोल सकता है?"

१७—समारिया और यहूदिया में दौरा

१९० प्रभु का अस्वागत फिर ऐसा हुआ कि जब उनके स्वर्गारोहण के दिन पूरे होने लगे, येसु ने येरुसलेम जाने का इरादा किया।

येसु ने सन्देश देनेवालों को अपने आगे भेजा। और उन्होंने जाकर समारितानियों के एक नगर में प्रवेश किया कि येसु के लिए जगह तैयार करें। पर लोगों ने येसु का स्वागत नहीं किया क्योंकि वे येरुसलेम जा रहे थे। यह देखकर उनके चेले याकूब और योहन ने कहा: "हे प्रभु, आप चाहें तो हम कह दें कि आकाश से आग बरसे और उन्हें भस्म कर दे।" पर येसु ने फिरकर उनको यों डाँटा: "तुम नहीं जानते कि तुम किस आत्मा से प्रेरित हो। मनुष्य का पुत्र मनुष्यों को नष्ट करने नहीं वल्कि बचाने आया है।" और वे दूसरी वस्ती में चले गए।

१९१ प्रभु के अनुकरण की शर्त्तें जब वे रास्ते में जा रहे थे, किसी ने येसु से कहा: "जहाँ कहीं आप जाएँगे मैं आपके पीछे हो लूँगा।" येसु ने उसे उत्तर दिया: "लोमड़ियों को माँदें हैं और आकाश के पक्षियों को घोंसले, पर मनुष्य के पुत्र को सिर धरने की भी जगह नहीं है।"

उन्होंने दूसरे से कहा: "मेरे पीछे हो ले।" परन्तु उसने उत्तर दिया: "हे प्रभु, मुझे पहले अपने बाप को दफ़नाने के लिए जाने दीजिए।" येसु ने उससे कहा: "मुरदों को अपने मुरदे दफ़नाने दे; तू जाकर ईश्वर के राज्य का प्रचार कर।"

फिर एक दूसरे ने कहा: "हे प्रभु, मैं आपके पीछे हो लूँगा परन्तु अपने घरवालों से मुझे विदा लेने दीजिए।" येसु ने उससे कहा: "जो हल की मूठ पकड़ने के वाद मुड़कर पीछे को देखता है वह ईश्वर के राज्य के योग्य नहीं।"

१९२ बहत्तर चेलों का प्रेषण इसके वाद प्रभु ने दूसरे बहत्तर चेलों को नियुक्त किया और जिस-जिस नगर और स्थान में वे स्वयं जानेवाले थे वहाँ दो-दो करके उन्हें अपने आगे भेज

दिया। और उन्होंने उनसे कहा: "कटनी तो बहुत है, पर बनिहार थोड़े। इसलिए कटनी के स्वामी से विनती करो कि वह अपनी कटनी में बनिहारों को भेजे। जाओ। मैं तुम्हें भेड़ों के समान भेड़ियों के बीच भेजता हूँ। न थैली लो, न झोली, न जूते और रास्ते में किसी को नमस्कार न करो। पर जिस किसी घर में तुम प्रवेश करो, पहले कहो: इस घर को शांति मिले। यदि वहाँ कोई शांति के योग्य होगा, तो तुम्हारी शान्ति उसपर ठहरेगी, नहीं तो तुम्हारे पास लौट आएगी। उस घर में ठहरे रहो और जो कुछ उनके पास हो, खाओ-पिओ: क्योंकि मज़दूर अपनी मज़दूरी के अधिकारी हैं। घर-घर मत फिरो। जिस नगर में प्रवेश करो यदि वे तुम्हारा स्वागत करें, तो जो कुछ तुम्हें परोसा जाय उसे खा लो। वहाँ के रोगियों को चंगा करके उनसे कहो: ईश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुँचा है। पर यदि किसी नगर में प्रवेश करो और वे तुम्हारा स्वागत न करें, तो वहाँ के बाज़ारों में जाकर कहो: तुम्हारे नगर की धूल तक, जो हममें लगी है, हम तुम्हारे विरुद्ध झाड़े डालते हैं। तब भी यह जान लो कि ईश्वर का राज्य निकट है। मैं तुमसे कहे देता हूँ: विचार के दिन उस नगर की दशा की अपेक्षा सोदोम की दशा कहीं सह्य होगी।

"जो तुम्हें डेरा देता है वह मुझे डेरा देता है और जो मुझे डेरा देता वह मेरे भेजनेवाले को डेरा देता है। जो तुम्हारी सुनता वह मेरी सुनता है, और जो तुम्हारा तिरस्कार करता वह मेरा तिरस्कार करता है, और जो मेरा तिरस्कार करता है वह मेरे भेजनेवाले का तिरस्कार करता है।"

१९३ बहत्तरों ने सानन्द लौटकर कहा: "हे प्रभु, अपदूत भी आपके नाम से हमारे अधीन हैं।" येसु ने उन्हें उत्तर दिया: "मैंने शैतान को बिजली की तरह स्वर्ग से गिरते देखा। देखो, मैंने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को कुचलने का और वैरी की सारी शक्ति पर भी अधिकार दिया है। कुछ भी तुम्हें हानि न पहुँचा सकेगा। लेकिन इस कारण आनन्दित न हो कि अपदूत तुम्हारे अधीन हैं; बल्कि इस कारण आनन्द मनाओ कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं।"

१९४ उसी घड़ी पवित्र आत्मा के आनन्द से पूर्ण होकर येसु ने कहा: "हे पिता, हे स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरी प्रशंसा करता हूँ, क्योंकि तूने ये बातें ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखीं पर शिशुओं पर प्रकट की हैं; हाँ, पिता, क्योंकि

यही तुझे पसन्द आया। मेरे पिता द्वारा मुझे सब कुछ सौंपा गया है; पुत्र कौन है, पिता के अतिरिक्त यह कोई नहीं जानता, और पिता कौन है, पुत्र के अतिरिक्त यह कोई नहीं जानता और वेही जिनपर पुत्र उसको प्रकट करना चाहे।"

"हे थके-मांदे और बोझ से दबे हुए लोगो, तुम सब मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो और मुझसे सीखो क्योंकि मैं हृदय का नम्र और विनीत हूँ; तभी तुम अपनी आत्मा के लिए शांति पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज है और मेरा बोझ हलका।"

तब अपने चेलों की ओर फिरकर उन्होंने कहा: "धन्य हैं वे आँखें, जो ये बातें देखती हैं, जिन्हें तुम देखते हो। क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ: बहुतेरे नबियों और राजाओं ने चाहा कि जो बातें तुम देखते हो वे देखें, पर न देख सके और जो बातें तुम सुनते हो वे सुनें, पर न सुन सके।"

१९५ **भले समारितानी का दृष्टान्त** किसी समय एक शास्त्री उठ खड़ा हुआ और इस प्रकार उनकी परीक्षा करने लगा: "हे गुरु, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?" येसु ने उससे कहा: "नियम में क्या लिखा है? तू इसमें क्या पढ़ता है?" उसने उत्तर दिया: "प्रभु अपने ईश्वर को अपने सारे हृदय से, अपनी सारी आत्मा से, अपनी सारी शक्ति से और अपनी सारी बुद्धि से प्यार कर और अपने पड़ोसी को अपने समान प्यार कर।" येसु ने उससे कहा: "तूने ठीक उत्तर दिया। यही कर और तू जीवन प्राप्त करेगा।" इसपर उसने अपनी सफाई देने की इच्छा से येसु से पूछा: "लेकिन मेरा पड़ोसी कौन है?"

१९६ येसु ने उसे उत्तर दिया: "एक मनुष्य येरुसलेम से येरिको जा रहा था और डाकुओं के हाथों पड़ गया। उन्होंने उसे लूट लिया और घायल करके अधमरा छोड़कर चले गए। संयोग से एक याजक उसी राह से जा रहा था; उसने उसे देख लिया और कतराकर चला गया। इसी प्रकार एक लेवी उसी जगह आया, उसे देख लिया और कतराकर चला गया। इसके बाद एक समारितानी यात्री उसके निकट आया और उसे देखकर दया से पिघल गया। उसके पास जाकर उसने उसके घावों पर तेल और दाखरस उँडेलकर पट्टी बाँध

दी और उसे अपनी ही सवारी पर बिठाकर एक सराय में ले गया और उसकी देखभाल की। दूसरे दिन उसने दो दीनार निकालकर भठियारे को दिए और उससे कहा: 'इसकी सेवा-शुश्रूषा कर; यदि कुछ और खर्च हो मैं लौटते समय तुझे चुका दूँगा।' तेरी राय में इन तीनों में से कौन उस मनुष्य का पड़ोसी निकला, जो डाकुओं के हाथों पड़ गया था?" उसने कहा: "वही जिसने उसपर दया दिखाई।" तब येसु ने उससे कहा: "तू जाकर ऐसा भी कर।"

मरथा और मरिया १९७

ऐसा हुआ कि यात्रा करते समय येसु ने एक गाँव में प्रवेश किया और मरथा नामक एक स्त्री ने उनका अपने घर में स्वागत किया। उसके मरिया नामक एक बहन थी जो प्रभु के चरणों में बैठकर उनकी शिक्षा सुन रही थी। परन्तु मरथा सेवा की अनेक बातों में व्यस्त थी; उसने पास आकर कहा: "हे प्रभु, आपको कुछ भी चिन्ता नहीं कि मेरी बहन ने सेवा करने के लिए मुझे अकेली ही छोड़ दिया है? उससे कहिए कि वह मेरी सहायता करे।" पर प्रभु ने उसे उत्तर दिया: "मरथा, मरथा, तू बहुत-सी बातों के विषय में चिन्तित और व्याकुल है, जब कि केवल एक बात आवश्यक है। मरिया ने सबसे उत्तम भाग चुन लिया है, जो उससे नहीं छीना जाएगा।"

प्रार्थना करने की शिक्षा १९८
प्रभु की विनती

किसी समय येसु एक स्थान में प्रार्थना कर रहे थे; प्रार्थना समाप्त होने पर उनके एक चेले ने कहा: "हे प्रभु, हमें प्रार्थना करना सिखाइए, जैसे योहन ने भी अपने चेलों को सिखाया।" और येसु ने उनसे कहा: "प्रार्थना करते समय अन्यजातियों के समान बहुत-सी बातें मत कहो क्योंकि वे सोचते हैं कि हमारे बहुत बोलने से हमारी सुनवाई होती है। इसलिए तुम उनके समान मत बनो क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे माँगने के पहले ही जानता है कि तुम्हें क्या-क्या आवश्यक है। इसलिए तुम इस रीति से प्रार्थना करोगे:

हे हमारे पिता, तू स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र किया जाए; तेरा राज्य आवे; तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में वैसे पृथ्वी पर भी पूरी हो। हमारे प्रतिदिन का आहार

आज हमें दे ; और हमारे अपराध क्षमा कर जैसे हम भी अपने अपराधियों को क्षमा करते हैं ; और हमको परीक्षा में न डाल परन्तु बुराई से बचा। आमेन।

"जव तुम प्रार्थना करने के लिए खड़े हो, और तुम्हारे मन में किसी के विरुद्ध कुछ हो, तो क्षमा करो, जिससे तुम्हारा पिता भी, जो स्वर्ग में है, तुम्हारे अपराध क्षमा करे ; पर यदि तुम क्षमा नहीं करोगे तो तुम्हारा पिता भी, जो स्वर्ग में है, तुम्हारे अपराध क्षमा नहीं करेगा।"

१९९ **दृढ़ता** फिर येसु ने उनसे कहा: "यदि तुममें से किसी के एक मित्र हो और वह आधी रात को उसके पास जाकर कहता हो: 'दोस्त, मुझे तीन रोटियाँ उधार दे, क्योंकि मेरा मित्र यात्रा से लौटकर मेरे यहाँ पहुँचा है और मेरे पास कुछ भी नहीं है जो उसके सामने रखूँ'; और वह भीतर से उत्तर दे: 'मुझे कष्ट मत दे; अब तो द्वार वन्द है और मेरे बाल-बच्चे मेरे साथ विस्तरे पर हैं ; मैं उठकर तुझे कुछ नहीं दे सकता।' मैं तुमसे कहता हूँ: यद्यपि वह उसका मित्र होने के कारण उसे उठकर न दे, तव भी उसके दुराग्रह के कारण वह उठेगा और जितनी उसे आवश्यक है दे देगा।"

२०० **भरोसा** "मैं तुमसे कहता हूँ: माँगो और तुम्हें दिया जाएगा, ढूँढ़ो और तुम पाओगे, खटखटाओ और तुम्हारे लिए खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई माँगता है उसे मिलता है, जो कोई ढूँढ़ता है वह पाता है, और जो खटखटाता है उसके लिए द्वार खुलता है। तुममें से ऐसा कौन बाप है, कि जव उसका वेटा रोटी माँगे तो उसे पत्थर दे, या मछली माँगे तो मछली के वदले उसे साँप दे? या अंडा माँगे तो उसे बिच्छू बढ़ा दे? अतः यदि तुम वुरे होकर भी अपने वच्चों को अच्छे दान देना जानते हो तो तुम्हारा पिता जो स्वर्ग में है अपने माँगनेवालों को अच्छी वस्तुएँ क्यों न देगा।"

२०१ **योनस नबी का चिह्न** तव कईएक शास्त्री और फ़रीसी येसु से कहने लगे: "हे गुरु, हम आपसे एक चिह्न देखना चाहते हैं।" येसु ने उन्हें यह उत्तर दिया: "यह दुष्ट और

अधर्मी पीढ़ी एक चिह्न माँगती है परन्तु योनस नबी के चिह्न को छोड़ और कोई चिह्न इसे नहीं दिया जाएगा : जिस प्रकार योनस तीन दिन और तीन रात मच्छ के पेट में रहा उसी प्रकार मनुष्य का पुत्र भी तीन दिन और तीन रात पृथ्वी की गोद में रहेगा। विचार के दिन निनिवे के लोग इस पीढ़ी के साथ खड़े होकर इसे दोषी ठहराएँगे क्योंकि उन्होंने योनस का उपदेश सुनकर पछतावा किया था ; और देखो, यहाँ एक है जो योनस से भी महान् है। विचार के दिन दक्षिण की रानी इस पीढ़ी के साथ खड़ी होकर इसे दोषी ठहराएगी क्योंकि वह सुलेमान का ज्ञान सुनने के लिए पृथ्वी के सीमान्तों से आई थी ; और देखो, यहाँ एक है जो सुलेमान से भी महान् है।"

दोहराए हुए पापों से दुर्दशा २०२

"जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य से निकला है, तब विश्राम की खोज में उजाड़स्थानों में घूमता है, किंतु विश्राम नहीं पाता। तब कहता है: मैं अपने घर लौट जाऊँगा जहाँ से आया हूँ। और लौटकर उस घर को खाली, बुहारा और सजाया हुआ पाता है। तब वह जाकर अपने से और बुरे सात आत्माओं को साथ ले आता है और वे घुसकर इस घर में निवास करते हैं; और उस मनुष्य की पिछली दशा पहली से भी बुरी हो जाती है। वैसे ही इस दुष्ट पीढ़ी के साथ होगा।"

मरिया की महिमा २०३

जब येसु ये बातें कह रहे थे भीड़ में से किसी स्त्री ने ऊँची आवाज़ में उनसे कहा: "धन्य वह गर्भ जिसने आपको वहन किया और वे स्तन जिनका आपने पान किया।" परन्तु येसु ने कहा: "हाँ, पर वे कहीं अधिक धन्य हैं जो ईश्वर का वचन सुनते और उसका पालन करते हैं।"

मनुष्य की ज्योति २०४

"कोई भी मनुष्य दीपक जलाकर गुप्त स्थान में नहीं रखता और न पैमाने के नीचे ही रखता है वरन् दीवट पर जिससे भीतर आनेवाले उसका प्रकाश देख सकें।

"तेरे शरीर की ज्योति तेरी आँख है। यदि तेरी आँख अच्छी है तो तेरा सारा शरीर प्रकाशमय होगा ; पर यदि तेरी आँख बुरी है तो तेरा सारा शरीर अंधकारमय होगा। इसलिए जो ज्योति तुझमें है यदि वही अंधेरी हो तो वह अंधकार कितना बड़ा होगा! यदि तेरा शरीर प्रकाशमय है और

उसमें अंधकार का कोई अंश नहीं है तो सारा का सारा वैसे ही प्रकाशमय होगा, जैसे कि जब दीपक अपने प्रकाश से तुझे ज्योति देता है।"

२०५ **एक फ़रीसी के घर में भोजन** येसु यह सब कह ही रहे थे कि किसी फ़रीसी ने उनसे इस प्रकार विनती की: "मेरे यहाँ भोजन कीजिए।" इसपर वे उनके यहाँ जाकर भोजन करने बैठे। फ़रीसी अपने मन में विचारने और आश्चर्य करने लगा कि इन्होंने भोजन करने के पहले हाथ क्यों नहीं धोए। परन्तु प्रभु ने उससे कहा: "हे फ़रीसियो, तुम प्याले और थाली को ऊपर से तो माँजते हो परन्तु अन्दर लालच और दुष्टता से भरे हो। ऐ मूर्खो, जिसने बाह्य बनाया क्या उसीने अन्दर नहीं बनाया? तो फिर अपनी सम्पत्ति में से दान कर दो; और देखो, सब कुछ तुम्हारे लिए शुद्ध हो जाता है।"

२०६ "हे फ़रीसियो, तुमपर शोक; क्योंकि तुम पुदीने, रास्ने और हर प्रकार के साग का दसांश देते हो परन्तु न्याय और ईश्वर के प्रेम को टाल देते हो। उचित था कि तुम ये बातें करते रहते और उन्हें भी न छोड़ते। हे फ़रीसियो, तुमपर शोक; क्योंकि तुम सभाघरों में प्रथम आसन और बाज़ारों में प्रणाम पाना चाहते हो। तुमपर शोक; क्योंकि तुम उन कब्रों के समान हो जो दीख नहीं पड़तीं, और जिनपर लोग चलते हैं पर जानते नहीं।"*

२०७ तब एक शास्त्री ने येसु को इस प्रकार उत्तर दिया: "हे गुरु, इन बातों के कहने से आप हमारा भी अपमान करते हैं।" येसु ने कहा: "हे शास्त्रियो, तुमपर भी शोक; क्योंकि तुम मनुष्यों पर असह्य बोझ लादते हो जब कि तुम स्वयं उन बोझों को अपनी एक उँगली से भी नहीं छूते। तुमपर शोक; क्योंकि तुम नबियों के लिए क़ब्रें बनाते हो जब कि तुम्हारे बाप-दादों ने उनको मारा है। सचमुच तुम गवाह होते हो कि तुम अपने बाप-दादों के कर्मों से सहमत हो क्योंकि उन्होंने तो उनको मार डाला और तुम उनकी कब्रें बनाते हो। इस कारण ईश्वर की प्रज्ञा कहती है: मैं उनके पास नबियों और प्रेरितों को भेजूँगा और

---

*जो क़ब्र छू लेता वह नियम के अनुसार आठ दिन तक अशुद्ध रहता था। इसीलिए क़ब्रें पुती हुई थीं कि लोग उनका स्पर्श न करें। फ़रीसी छिपी हुई कब्रों के समान हैं क्योंकि यहूदी उनका पाखण्ड नहीं जानते।

वे उनमें से कितनों को मार डालेंगे, कितनों को सताएँगे, जिससे जितने नबियों का जितना लोहू संसार के आरम्भ से बहाया गया है उसका लेखा इसी पीढ़ी से माँगा जाएगा ; हाँ, हाबिल के लोहू से लेकर ज़करियस के लोहू तक जो वेदी और मन्दिर के बीच मारा गया, मैं तुमसे कहे देता हूँ : उसका लेखा इस पीढ़ी से माँगा जाएगा।

"हे शास्त्रियो, तुमपर शोक ; क्योंकि तुमने ज्ञान की कुँजी हटा ली है ; तुमने स्वयं प्रवेश नहीं किया और प्रवेश करनेवालों को भी रोक लिया है।"

येसु के वहाँ से निकलने के बाद शास्त्री और फ़रीसी उनसे बैर रखकर बहुत-से विषयों के सम्बन्ध में उनको छेड़ने लगे ; वे ताक लगाए हुए थे कि येसु के मुँह से कोई ऐसी बात निकले जिससे वे उनको दोषी ठहरा सकें। २०८

१८—ख्रीस्तीय धर्म और मनोभाव के लक्षण

अत्याचार सहकर प्रभु की शिक्षा स्वीकार करना २०९

उस समय भीड़ यहाँ तक बढ़ गई कि लोग एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे ; और येसु (विशेष कर अपने चेलों से) कहने लगे : "चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं और न नौकर अपने मालिक से ही। चेले के लिए अपने गुरु के और नौकर के लिए अपने मालिक के बराबर ही होना बहुत है। यदि लोगों ने घर के मालिक को बेलज़ेबब कहा है तो उसके घरवालों को क्यों न कहेंगे?

"फ़रीसियों के कपटरूपी ख़मीर से सावधान रहो। कुछ भी गुप्त नहीं जो प्रकट न किया जाएगा, और छिपा हुआ नहीं है जो जाना न जाएगा। क्योंकि जो कुछ तुम अंधेरे में कहते हो वह प्रकाश में कहा जाएगा, और जो तुमने कोठरियों के भीतर फुसफुसाकर कहा है वह छतों पर से प्रकट किया जाएगा।

"मैं तुमसे, अपने मित्रों से कहता हूँ : जो लोग शरीर नष्ट करते हैं, परन्तु उसके बाद और कुछ नहीं कर सकते, उनसे मत डरो। पर मैं तुम्हें बताऊँगा

किससे डरना चाहिए: उससे डरो जो मार डालने के बाद नरक में भी डालने की शक्ति रखता है। हाँ, मैं तुमसे कहता हूँ: उसी से डरो।

"क्या दो पैसे में पाँच गौरैयाँ नहीं बिकतीं? तब भी ईश्वर के सामने उनमें से एक भी नहीं भुलाई जाती है। हाँ, तुम्हारे सिर के बाल भी सब के सब गिने हुए हैं। इसलिए डरो मत। तुम बहुतेरी गौरैयों से बढ़कर हो।

"मैं तुमसे कहता हूँ: जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे स्वीकार करे, उसको मनुष्य का पुत्र भी ईश्वर के दूतों के सामने स्वीकार करेगा। परन्तु जो मनुष्यों के सामने मुझे अस्वीकार करे, वह ईश्वर के दूतों के सामने अस्वीकार किया जाएगा।

"जब वे तुम्हें सभाघरों में न्यायाधीशों और अधिकारियों के सामने ले जाएँगे तब इस चिन्ता में न पड़ो कि हम कैसे या क्या उत्तर दें या क्या कहें; क्योंकि जो कुछ तुम्हें कहना चाहिए पवित्र आत्मा इसे तुम्हें उसी घड़ी सिखाएगा।"

२१० लोभ से बचना मूर्ख धनी का दृष्टान्त

भीड़ में से किसी ने येसु से कहा: "हे गुरु, मेरे भाई से कहिए कि वह बपौती मेरे साथ बाँटे।" पर उन्होंने उससे कहा: "हे मनुष्य, किसने मुझे तुम्हारा हाकिम या बाँटनेवाला ठहराया है?"

तब येसु ने उनसे कहा: "चौकस रहो और हर प्रकार के लोभ से बचे रहो। क्योंकि चाहे किसी के पास कितनी भी संपत्ति क्यों न हो उसी संपत्ति से उसका जीवन नहीं होता।" फिर येसु ने उनको यह दृष्टान्त सुनाया: "किसी धनवान् की ज़मीन में बहुत फ़सल हुई थी। वह अपने मन में यों विचार करने लगा: 'मैं क्या करूँ? मेरे यहाँ जगह नहीं जहाँ अपनी फ़सल जमा करूँ।' तब उसने कहा: 'मैं यह करूँगा: अपने भण्डारों को तोड़कर उनसे बड़े बनवाऊँगा और वहाँ अपनी सारी उपज और अपना माल इकट्ठा करूँगा: और अपनी आत्मा से कहूँगा: हे मेरी आत्मा, तेरे पास बरसों के लिए बहुत-सा माल इकट्ठा रखा है; इसलिए विश्राम कर, और खा-पीकर सुख-विलास भोग।' परन्तु ईश्वर ने उससे कहा: 'ऐ मूर्ख, इसी रात को तेरी आत्मा तुझसे माँगी जाएगी; और जो कुछ तूने इकट्ठा किया

है वह अब किसका होगा ?' यह उसकी हालत है जो अपने लिए तो धन बटोरता है किंतु ईश्वर के सामने धनी नहीं है।"

परमेश्वर पर भरोसा २११

"इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ: अपने जीवन के लिए चिन्ता मत करो, कि हम क्या खाएँ ; न अपने शरीर के लिए कि हम क्या पहनें। क्या भोजन से जीवन अधिक मूल्यवान् नहीं ? और कपड़े से शरीर अधिक मूल्यवान् नहीं ? आकाश के पक्षियों को देखो: वे न तो बोते, न काटते, न भण्डारों में बटोरते हैं, और तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको पालता है। क्या तुम उनसे अधिक मूल्यवान् नहीं ? तुममें से कौन चिंता करने से अपना कद एक हाथ और बढ़ा सकता है ? फिर कपड़े के लिए क्यों चिन्ता करते हो ? मैदान के सोसन के फूलों पर ध्यान दो: वे कैसे बढ़ते हैं ; वे न तो श्रम करते, न कातते हैं, परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ: सुलेमान भी अपनी महिमा में इनमें से एक के समान भी वस्त्र धारण किए नहीं था। यदि ईश्वर मैदान की घास को, जो आज है और कल चूल्हे में झोंकी जाती है, इस प्रकार पहनाता है, तो, हे अल्पविश्वासियो, वह तुमको क्यों न पहनाएगा।

"इसलिए यह कहकर चिन्ता न करो: हम क्या खाएँगे या क्या पिएँगे या क्या पहनेंगे ? इन सब वस्तुओं की खोज तो अन्यजातियाँ करती हैं ; तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें ये सब वस्तुएँ आवश्यक हैं। इसलिए पहले ईश्वर के राज्य और धर्म की खोज करो और ये सब वस्तुएँ भी तुम्हारे लिए तुम्हें मिल जाएँगी। अतः कल के लिए चिन्ता न करो क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप ही कर लेगा: आज का दुःख आज के लिए ही बहुत है।"

स्वर्ग में धन बटोरना २१२

"हे नन्हे झुण्ड, डरो मत। क्योंकि तुम्हारे पिता को तुम्हें राज्य देना पसन्द आया है। जो कुछ तुम्हारा है बेच डालो और दान कर दो। पृथ्वी पर अपने लिए धन मत बटोरो, जहाँ मोरचा लगता और कीड़े नष्ट करते हैं और जहाँ चोर सेंध लगाते और चुराते हैं ; पर अपने लिए स्वर्ग में धन बटोरो, जहाँ न तो मोरचा लगता न कीड़े नष्ट करते और जहाँ चोर न तो सेंध लगाते और न चुराते हैं। क्योंकि जहाँ तेरा धन है वहीं तेरा हृदय भी है।"

२१३ **चौकसी** "तुम कमर कसे रहो और तुम्हारे हाथों में दीपक जलते रहें। तुम उन लोगों के समान हो जो अपने स्वामी की बाट देख रहे हैं कि वह बारात से कब लौटेगा ; जिससे कि जब स्वामी आकर द्वार खटखटाए तो तुरन्त ही उसके लिए खोल दें। धन्य हैं वे दास, जिनको स्वामी आकर जागते पाता है। मैं तुमसे सच कहता हूँ: वह अपनी फेंट बाँधेगा, उन्हें भोजन के लिए बिठाएगा और खाना परोसेगा। और यदि वह दूसरे पहर या तीसरे पहर आकर उनको ऐसा ही पाए, तो वे दास धन्य हैं।

२१४ "पर यह जान लो कि यदि घर का स्वामी यह जानता कि किस घड़ी चोर आएगा तो वह अवश्य ही सजग रहता और अपने घर में सेंध लगने न देता। इसी कारण तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस घड़ी तुम नहीं सोचते, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आएगा।"

२१५ पेत्रुस ने उनसे कहा: "हे प्रभु, क्या आप यह दृष्टान्त हमारे ही लिए या सब के लिए समान रूप से कहते हैं?" और प्रभु ने कहा: "तेरी समझ में विश्वसनीय और बुद्धिमान् भंडारी कौन है जिसे उसका स्वामी अपने नौकर-चाकरों पर नियुक्त करे कि वह समय पर उन्हें खुराकी बाँटे? धन्य है वह दास, जिसका स्वामी आने पर उसको वैसा ही करता हुआ पाए। मैं तुमसे सच कहता हूँ: वह उसे अपनी सारी सम्पत्ति पर नियुक्त कर देगा। पर यदि वह दास अपने मन में कहे: 'मेरा स्वामी आने में देर करता है', और वह दास-दासियों को पीटने लगे, खाए-पिए और मतवाला हो जाए, तब उस दास का स्वामी ऐसे दिन आएगा जब वह उसकी बाट नहीं जोहता, और उस घड़ी जिसे वह नहीं जानता; तब स्वामी दास को दण्ड देगा तथा उसको विश्वासघातियों की दशा को पहुँचा देगा। वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।

"जिस दास ने अपने स्वामी की इच्छा जानकर भी कुछ तैयार नहीं किया, और न उसकी इच्छा पूरी की, वह बहुत मार खाएगा। जिसने अनजान में मार खाने का काम किया, वह थोड़ी मार खाएगा। जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत माँगा जाएगा ; और जिसे बहुत सौंपा गया है, उससे अधिक चाहा जाएगा।"

२१६ "मैं पृथ्वी पर आग लेकर आया हूँ, और मेरी कितनी अभिलाषा है कि यह अभी से धधक उठे! पर मुझे एक बपतिस्मा लेना है, और जब तक वह पूरा न हो जाए मैं कितना व्याकुल हूँ!

"यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर शान्ति लेकर आया हूँ। मैं शांति नहीं, वरन् तलवार देने आया हूँ। क्योंकि अब से यदि एक घर में पाँच व्यक्ति हों, तो वे बँट जाएँगे, दो के विरुद्ध तीन और तीन के विरुद्ध दो: बाप बेटे से और बेटा बाप से भेद रखेगा, माँ बेटी से, और बेटी माँ से, सास अपनी बहू से, और बहू अपनी सास से। मनुष्य के वैरी उसके घराने ही के लोग हैं।"

पछतावा २१७

येसु ने भीड़ से कहा: "यदि तुम पश्चिम से बादल उठते हुए देखते हो तो तुरन्त कहते हो: 'वर्षा आ रही है'; और ऐसा ही होता है। जब दक्खिन की हवा चलती है तो कहते हो: 'लू चलेगी'; और ऐसा ही होता है। हे कपटियो, यदि तुम आकाश और पृथ्वी का रूप पहचान सकते हो, तब इस समय को क्यों नहीं पहचानते? और स्वयं क्यों नहीं विचार कर लेते कि उचित क्या है?"

२१८ "जब तू अपने विरोधी के साथ मुखिया के पास जा रहा है तो रास्ते में ही उससे छूटने की चेष्टा कर, ऐसा न हो कि वह तुझे न्यायाधीश के पास खींच ले जाए और वह तुझे प्यादे के हवाले कर दे और प्यादा तुझे क़ैदखाने में डाल दे। मैं तुझसे कहे देता हूँ: जब तक तू कौड़ी-कौड़ी न चुका दे, वहाँ से नहीं निकलेगा।"

२१९ उसी समय कुछ लोग आकर येसु से उन गलीलियों की चर्चा करने लगे जिनका लोहू पिलातुस ने उनके बलियों के साथ-साथ बहाया था। और येसु ने उन्हें उत्तर दिया: "क्या तुम सोचते हो कि ये गलीली सब गलीलियों से अधिक पापी थे क्योंकि उन्हीं पर ऐसी आपत्ति पड़ी? मैं तुमसे कहता हूँ: ऐसा नहीं है; परन्तु यदि तुम पछतावा न करोगे तो सब के सब उसी तरह नष्ट हो जाओगे। जो अठारह व्यक्ति सीलोए की गिरती मीनार के नीचे दबकर मर गए; क्या तुम सोचते हो कि वे भी येरुसलेम के सब निवासियों से अधिक अपराधी थे? मैं तुमसे कहता हूँ; ऐसा नहीं है; परन्तु यदि तुम पछतावा न करोगे तो सब के सब उसी तरह नष्ट हो जाओगे।"

२२० फिर येसु ने यह दृष्टान्त सुनाया: "किसी मनुष्य ने अपनी दाखबारी में एक अंजीर का पेड़ लगवाया था; वह उसपर फल खोजने आया पर एक भी न पा सका। तब उसने दाखबारी के माली से कहा: 'देख, मैं तीन वर्षों से इस अंजीर पर फल खोजने आता हूँ पर एक भी नहीं पाता हूँ। अतः इसे

काट डाल। यह भूमि को क्यों छेंके रहे ?' पर माली ने उत्तर दिया: 'हे मालिक, इस वर्ष भी इसको रहने दीजिए, और मैं चारों ओर से खोदकर खाद देता हूँ। यदि वह फल दे तो भला ; नहीं तो पीछे इसे काट डालिएगा'।"

२२१ **दुर्बल स्त्री** येसु विश्राम के दिन उनके सभाघर में शिक्षा दे रहे थे। वहाँ एक स्त्री थी जिसे अठारह बरस से एक अपदूत लगा था, जिसने उसे दुर्बल कर दिया था। वह स्त्री झुकी हुई थी और किसी प्रकार सिर नहीं उठा सकती थी। येसु ने उसे देखकर अपने पास बुलाया और उससे कहा: "हे स्त्री, तू अपनी दुर्बलता से मुक्त हो गई है।" और उन्होंने उसपर हाथ रख दिया। उसी घड़ी वह सीधी हो गई और ईश्वर की महिमा गाने लगी। परन्तु येसु ने विश्राम के दिन उस स्त्री को चंगा किया था, इसी कारण सभाघर का शासक क्रुद्ध होकर लोगों से कहने लगा: "छः दिन हैं जिनमें काम करना उचित है ; इसलिए उन्हीं दिनों में आकर चंगे हो जाओ, विश्राम के दिन नहीं।" परन्तु प्रभु ने उसे उत्तर दिया: "हे कपटियो, क्या तुममें से हर एक विश्राम के दिन अपना बैल या गधा नाँद से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जाता? शैतान ने इस स्त्री, अब्रहाम की बेटी को, इन अठारह बरसों से बाँध रखा है ; तो क्या उसको विश्राम के दिन इस बंधन से छुड़ाना उचित नहीं था?" येसु के इन शब्दों से उनके सब विरोधी लज्जित हो गए ; पर सारी जनता उनके चमत्कारों पर आनन्दमग्न हो गई।

२२२ और येसु नगर-नगर और गाँव-गाँव उपदेश देते हुए येरुसलेम की ओर जा रहे थे।

१९ — प्रतिष्ठान-पर्व। पेरेआ में उपदेश

(दिसंवर में)

उसी समय येरुसलेम में प्रतिष्ठान-पर्व था। **येरुसलेम में प्रतिष्ठान-पर्व** २२३
जाड़े का समय था, और येसु सुलेमान
के मंडप में टहल रहे थे। यहूदियों ने उनको आ घेरा और पूछा: "आप हमारा मन कब तक दुविधा में डाले रहेंगे? यदि आप ख्रीस्त हैं तो हमसे स्पष्ट कह दीजिए।" येसु ने उत्तर दिया: "मैंने तुमसे कह दिया है पर तुम विश्वास नहीं करते। जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूँ वे ही मेरे साक्षी हैं; पर तुम लोग विश्वास नहीं करते क्योंकि तुम मेरी भेड़ों में से नहीं हो। मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं और मैं उन्हें पहचानता हूँ; और वे मेरे पीछे-पीछे चलती हैं। मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ जिससे वे कभी नष्ट नहीं होंगी; और उन्हें कोई भी मेरे हाथ से नहीं छीन सकेगा। मेरे पिता ने जो कुछ मुझे दिया है, सबसे महान् है, और कोई भी मेरे पिता के हाथ से उसे नहीं छीन सकता। मैं और पिता एक हैं।"

यहूदियों ने येसु को मार डालने के लिए फिर पत्थर उठाए। येसु ने उन्हें उत्तर दिया: "मैंने तुम्हें अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम दिखाए हैं; उनमें से किस काम के लिए मुझे पत्थरों से मारना चाहते हो?" यहूदियों ने उन्हें उत्तर दिया: "हम किसी भले काम के लिए तुझे पत्थरों से मारना नहीं चाहते परन्तु ईशनिन्दा के लिए; क्योंकि तू मनुष्य होकर अपने को ईश्वर मानता है।" २२४

येसु ने उन्हें उत्तर दिया: "क्या तुम्हारे नियम में नहीं लिखा है: 'मैंने कहा कि तुम देवता हो'? यदि नियम ने उनको देवता कहा, जिनके लिए ईश्वर का वचन बोला गया, और धर्मग्रंथ की बात टल नहीं सकती, तो जिसको पिता ने पवित्र ठहराकर जगत् में भेजा है, तुम उससे किस प्रकार कहते हो: 'तू ईशनिन्दा करता है', क्योंकि मैंने कहा: 'मैं ईश्वर का पुत्र हूँ'? यदि मैं अपने पिता के कार्य नहीं करता तो मुझपर विश्वास मत करो। पर यदि मैं उन्हें करता हूँ, तो यद्यपि तुम मुझपर विश्वास करना नहीं चाहते, तब भी

मेरे कामों पर विश्वास करो, जिससे तुम जानो और समझो कि पिता मुझमें है और मैं पिता में।" इसपर उन्होंने येसु को पकड़ना चाहा परन्तु वे उनके हाथ से निकल गए।

२२५ येसु फिर यर्दन के पार उस स्थान में गए जहाँ योहन पहले बपतिस्मा देता था; और वहीं रहने लगे। बहुतेरे उनके पास आकर कहते थे: "योहन ने तो कोई चमत्कार नहीं किया, पर जो कुछ योहन ने उनके विषय में कहा वह सब सच निकला।" और बहुतों ने येसु पर विश्वास किया।

२२६ **मुक्ति की कठिनता** किसी ने उनसे पूछा: "हे प्रभु, क्या मुक्ति पानेवाले थोड़े ही हैं?" इसपर येसु ने उनसे कहा: "तंग द्वार से प्रवेश करने का प्रयत्न करो, क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ: बहुतेरे प्रवेश करना चाहेंगे पर नहीं कर सकेंगे। जब घर का स्वामी भीतर जाकर द्वार बन्द कर चुका होगा तब तुम बाहर खड़े होकर द्वार खटखटाने और कहने लगोगे: 'हे प्रभु, हमारे लिए खोल दीजिए।' पर वह तुम्हें उत्तर देगा: 'मैं नहीं जानता कि तुम कहाँ से आए हो।' तब तुम कहने लगोगे: 'हमने आपके सामने खाया-पिया और आपने हमारे बाज़ारों में उपदेश दिया। हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने आपका नाम लेकर भविष्यद्वाणी नहीं की? आपका नाम लेकर नरकदूतों को नहीं निकाला? आपका नाम लेकर बहुत-से चमत्कार नहीं किए?' पर वह तुमसे कहेगा: 'मैं नहीं जानता कि तुम कहाँ से आए हो। हे सब कुकर्म करनेवालो, तुम मुझसे दूर हो।'

"वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा, जब तुम अब्रहाम, इसाक, याकूब और सभी नबियों को ईश्वर के राज्य के अन्दर देखोगे परन्तु अपने आपको बाहर निकाले हुए पाओगे। पूर्व और पश्चिम तथा उत्तर और दक्षिण से लोग आएँगे और ईश्वर के राज्य में भोजन पर बैठेंगे। और देखो, जो पीछे हैं वे आगे किए जाएँगे और जो आगे हैं वे पीछे हटा दिए जाएँगे।"

२२७ **हेरोद का कपट** उसी दिन कई फ़रीसियों ने पास आकर उनसे कहा: "विदा लीजिए और यहाँ से चले जाइए क्योंकि हेरोद आपको मार डालना चाहता है।" परन्तु येसु ने उनसे कहा: "जाकर

उस लोमड़ी से कह दो: आज और कल मैं नरकदूतों को निकालता और रोगों को चंगा करता हूँ और तीसरे दिन मुझे अपना कार्य पूरा करना है। मुझे आज, कल और परसों यात्रा करनी है क्योंकि यह नहीं हो सकता कि कोई नबी येरुसलेम के बाहर नष्ट हो।"

विश्राम के दिन मेहमानी २२८

फिर ऐसा हुआ कि जब येसु विश्राम के दिन फ़रीसियों के किसी मुखिए के यहाँ रोटी खाने गए तो फ़रीसी उनकी ताक में लगे हुए थे। येसु के सामने जलोदर से पीड़ित एक मनुष्य था। येसु ने शास्त्रियों और फ़रीसियों से कहा: 'विश्राम के दिन चंगा करना उचित है या नहीं?' वे चुप रहे। इसपर येसु ने जलोदर-पीड़ित का हाथ पकड़कर उसको चंगा करके विदा कर दिया। तब येसु ने उनसे कहा: "तुममें कौन है जिसका गधा या बैल कुएँ में गिर पड़े और वह तुरन्त विश्राम के दिन ही उसे बाहर न खींच निकाले?" और वे येसु को इन बातों का उत्तर न दे सके।

२२९ यह देखकर कि मेहमान किस प्रकार प्रथम स्थान चुन रहे हैं, येसु ने उन्हें एक दृष्टान्त सुनाकर कहा: "ब्याह में निमंत्रित होने पर पहली जगह पर मत बैठ, ऐसा न हो कि तुझसे प्रतिष्ठित कोई दूसरा मेहमान आ जाए; और जिसने तुझे और उसे दोनों को न्योता दिया है वह आकर तुझसे कहे: 'इसे अपनी जगह दे।' तब तुझे लज्जा के मारे सब से पिछली जगह में बैठना पड़ेगा। परन्तु जब तुझे न्योता मिल जाए तो जाकर सबसे पिछली जगह पर बैठ, जिससे जब वह आएगा, जिसने तुझे न्योता दिया है और तुझसे कहेगा: 'हे मित्र, आगे बढ़कर बैठिए', तो साथ बैठनेवालों के सामने तेरी बड़ाई होगी। क्योंकि जो अपने को बड़ा मानता है वह छोटा किया जाएगा, और जो अपने को छोटा मानता है वह बड़ा किया जाएगा।"

२३० फिर येसु ने अपने न्योता देनेवाले से कहा: "जब तू दावत या ब्यारी कराए तो न अपने मित्रों, न अपने भाइयों, न कुटुंबियों, न धनी पड़ोसियों को बुला, ऐसा न हो कि वे भी तुझे न्योता देकर तेरा बदला चुका दें। पर जब तू भोज दे तब कंगालों, लूलों, लँगड़ों और अंधों को बुला। तू आनन्दित होगा कि तेरा बदला चुकाने को उनके पास कुछ नहीं है, क्योंकि धर्मियों के फिर जी उठने पर तेरा बदला चुकाया जाएगा।"

२३१ महाभोज का दृष्टान्त साथ भोजन करनेवालों में से किसी ने ये बातें सुनकर येसु से कहा: "धन्य है वह जो ईश्वर के राज्य में भोजन करेगा।" इसपर येसु ने उससे कहा: "किसी मनुष्य ने एक बड़ा भोज तैयार कर बहुतों को न्योता दिया, और भोजन के समय उसने अपने दास द्वारा मेहमानों को इस प्रकार कहला भेजा: 'आइए क्योंकि अब सारा सामान तैयार है।' पर वे सब के सब एकमत होकर बहाना करने लगे। पहले ने कहा: 'मैंने खेत मोल लिया है, और मुझे उसको देखने जाना है; मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ: मुझे क्षमा करा देना।' दूसरे ने कहा: 'मैंने पाँच जोड़े बैल खरीदे हैं और उन्हें साधने जा रहा हूँ; मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ: मुझे क्षमा करा देना।' और एक ने कहा: 'मैंने विवाह किया है; इसलिए मैं नहीं जा सकता।' दास ने लौटकर ये बातें स्वामी से कह सुनाईं।

"तब घर के स्वामी ने क्रोध में आकर अपने दास से कहा: 'शीघ्र ही नगर के बाज़ारों और गलियों में जाकर कंगालों, लूलों, अंधों और लँगड़ों को यहाँ बुला ला।' और दास ने कहा: 'हे प्रभु, आपकी आज्ञा का पालन किया गया है; तब भी जगह है।' और स्वामी ने दास से कहा: 'सड़कों में और हातों के आसपास जाकर लोगों को बरबस भीतर लाओ जिससे मेरा घर भर जाए। क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ: उन मेहमानों में से कोई भी मेरा भोजन नहीं चखेगा।"

२३२ प्रभु का यथार्थ चेला येसु के साथ-साथ बड़ी भीड़ चल रही थी। घूमकर येसु ने उनसे कहा: "यदि कोई मेरे पास आए और अपने माँ-बाप, पत्नी, बेटे-बेटियों, भाइयों-बहनों से और अपने प्राण से भी बैर न रखे* तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता। जो अपने माँ या बाप को मुझसे अधिक प्यार करे वह मेरे योग्य नहीं, और जो अपने बेटे

---

* "बैर न रखे"। येसु के नियम तो शत्रुओं से भी बैर रखने की अनुमति नहीं देते। माँ-बाप से बैर रखने की तो बात ही क्या है? इन शब्दों का अर्थ है कि हमें ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को छोड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए जो हमें येसु पर विश्वास करने और उनका अनुसरण करने से रोकते हैं, चाहे वे हमारे कितने ही नजदीकी और प्यारे क्यों न हों।

या बेटी को मुझसे अधिक प्यार करे वह मेरे योग्य नहीं। और जो कोई अपना क्रूस न उठाए और मेरे पीछे न हो ले, वह मेरा चेला नहीं हो सकता।

"क्योंकि तुममें से कौन है, जो एक मीनार बनवाना चाहे और पहले बैठकर आवश्यक खर्च न जोड़े कि पूरा करने की पूँजी मेरे पास है या नहीं ; ऐसा न हो कि नीव डाल चुकने पर पूरा न कर सके और देखनेवाले यह कहकर उसकी हँसी उड़ाने लगें : इस मनुष्य ने बनवाने में हाथ तो लगाया पर पूरा न कर सका। २३३

"या कौन ऐसा राजा है, जो दूसरे राजा से युद्ध करने जाता हो और पहले बैठकर यह विचार न करे कि क्या मैं दस हज़ार फ़ौज लेकर उसका सामना कर सकता हूँ, जो बीस हज़ार फ़ौज लिए मुझपर चढ़ा आता है? नहीं तो दूसरे राजा के दूर रहते ही वह राजदूतों को भेजकर संधि की प्रार्थना करेगा। उसी तरह तुममें से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे वह मेरा चेला नहीं हो सकता।" २३४

ईश्वरीय दया के दृष्टान्त : खोई हुई भेड़ २३५

उनका उपदेश सुनने के लिए नाकेदार और पापी येसु के पास आया करते थे। पर फ़रीसी और शास्त्री आपस में यों भुनभुनाते थे : "यह मनुष्य पापियों का स्वागत करता है और उनके साथ खाता-पीता है।" इसपर येसु ने उनसे यह दृष्टान्त सुनाया : "तुममें से कौन है जिसे एक सौ भेड़ हों और यदि उनमें से एक भटक जाए, तो क्या वह निनानबे भेड़ों को उजाड़ स्थान में छोड़कर भटकी हुई को खोजने न जाएगा, जब तक उसे न पाए? भेड़ को पाने पर वह आनन्द के मारे उसको अपने कंधों पर उठा लेता है ; और घर में आकर अपने मित्रों और पड़ोसियों को इकट्ठा करके कहता है : 'मेरे साथ आनन्द मनाओ, क्योंकि मैंने अपनी भटकी हुई भेड़ को पा लिया है।' मैं तुमसे कहता हूँ : उसी प्रकार निनानवे धर्मियों की अपेक्षा, जिन्हें पछतावे की आवश्यकता नहीं है, एक पश्चात्तापी पापी के लिए स्वर्ग में अधिक आनन्द मनाया जाएगा।

खोई हुई अठन्नी २३६

"या कौन ऐसी स्त्री है जो दस अठन्नियों में से एक खो देने पर बत्ती जलाकर और घर बहारकर उसे न पाने तक जी लगाकर न खोजती रहे? और पा लेने पर वह अपनी सखियों और पड़ोसिनों को इकट्ठा करके कहे : 'मेरे साथ आनन्द मनाओ

क्योंकि मैंने खोई हुई अठन्नी पाई है।' मैं तुमसे कहता हूँ: उसी प्रकार स्वर्ग में एक पश्चात्तापी पापी के लिए दूतगण आनन्द मनाएँगे।"

२३७ **उड़ाऊ लड़का** फिर येसु ने कहा: "किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। छोटे ने अपने पिता से कहा: 'पिताजी, सम्पत्ति का जो भाग मेरा है, मुझे दे दीजिए।' और पिता ने उनके बीच अपनी सम्पत्ति बाँट दी। थोड़े दिनों के बाद छोटा बेटा अपनी समस्त सम्पत्ति एकत्र करके दूर देश चला गया, और वहाँ भोग-विलास में अपनी सम्पत्ति उड़ा दी। जब वह सब कुछ खर्च कर चुका था, तो उस देश में भारी अकाल पड़ा और उसकी हालत तंग हो गई। इसलिए वह उस देश के एक निवासी से जा मिला जिसने उसको अपने खेत में सूअर चराने को भेजा। और जो छिलके सूअर खाते थे उन्हीं से वह अपने पेट भरना चाहता था पर कोई भी उसे कुछ न देता था। तब होश में आकर वह सोचने लगा: 'मेरे पिता के घर में कितने मज़दूरों को आवश्यकता से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहाँ भूखों मरता हूँ। मैं यहाँ से प्रस्थान करूँगा, अपने पिता के पास जाऊँगा और उनसे कहूँगा: पिताजी, मैंने स्वर्ग के विरुद्ध और आपके सम्मुख पाप किया है; मैं फिर आपका बेटा कहलाने योग्य नहीं हूँ। मुझे अपने एक मज़दूर के समान रख लीजिए।'

"तब वह वहाँ से अपने बाप के पास चल पड़ा। वह दूर ही था कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया और दौड़कर उसे गले लगा लिया और चूमने लगा। तब बेटे ने उससे कहा: 'पिताजी, मैंने स्वर्ग के विरुद्ध और आपके सम्मुख पाप किया है; मैं फिर आपका बेटा कहलाने के योग्य नहीं हूँ।' परन्तु पिता ने अपने नौकरों से कहा: 'जल्दी अच्छे से अच्छे कपड़े लाकर उसे पहनाओ और उसकी उँगली में अँगूठी और उसके पावों में जूते पहनाओ। पला हुआ बछड़ा भी लाकर मारो; हम खाएँ तथा आनन्द मनाएँ: क्योंकि मेरा यह बेटा मर गया था और फिर जी उठा है, खो गया था और फिर मिल गया है।' तब वे आनन्द मनाने लगे।

"उसका जेठा पुत्र खेत में था। जब वह लौटकर घर के निकट पहुँचा, तो उसने गाने-बजाने की आवाज़ सुनी; और एक नौकर को बुलाकर उससे इस विषय में पूछा। इसने उससे कहा: 'आपका भाई आया है और आपके

बाप ने पला हुआ बछड़ा मारा है, क्योंकि उन्होंने फिर उसे भला-चंगा वापस पाया है।' इसपर वह जल उठा और घर में नहीं गया। तव उसका पिता बाहर आकर उसे मनाने लगा। पर उसने अपने पिता को उत्तर दिया: 'देखिए, मैं इतने बरसों से आपकी सेवा करता आया हूँ और कभी आपकी आज्ञा न टाली; तव भी आपने मुझे वकरी का वच्चा भी न दिया जिससे मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द मनाऊँ। पर जैसे ही आपका यह वेटा आया, जिसने वेश्याओं के साथ आपकी सम्पत्ति उड़ा दी है, आपने उसके लिए पला हुआ वछड़ा मारा है।' इसपर पिता ने उससे कहा: 'हे वेटा, तू तो सदा मेरे साथ रहता है और जो कुछ मेरा है वह तेरा है। परन्तु उचित था कि हम आनन्द मनाएँ और खुश होएँ, क्योंकि यह तेरा भाई मर गया था और फिर जी गया है, खो गया था और फिर मिल गया है'।"

बेईमान भंडारी २३८

फिर येसु ने अपने चेलों से यह दृष्टान्त कह सुनाया: "किसी धनवान् का एक भंडारी था; लोगों ने उसके पास जाकर भंडारी पर यह दोष लगाया कि यह आपकी सम्पत्ति उड़ा रहा है। इसपर स्वामी ने उसको बुलाकर कहा: 'तेरे विषय में मैं क्या सुनता हूँ? अपने भंडार का हिसाब दे, क्योंकि अव से तू भंडारी नहीं रह सकेगा।' तव भंडारी ने अपने मन में कहा: 'मैं क्या करूँ, क्योंकि मेरा स्वामी मुझे भंडारीपन से हटाना चाहता है? मिट्टी खोदना तो मुझे आता नहीं। भीख माँगने में शर्म आती है। हाँ, मालूम हुआ क्या करूँगा जिससे भंडारीपन से हटाए जाने के बाद लोग अपने घरों में मेरा स्वागत करें।' उसने अपने मालिक के कर्ज़दारों को एक-एक करके बुलाकर पहले से कहा: 'मेरे स्वामी का तुझे कितना देना है?' उसने उत्तर दिया: 'सौ मन तेल।' भंडारी ने उससे कहा: 'अपना तमस्सुक ले और बैठकर झट पचास लिख दे।' फिर दूसरे से पूछा: 'तुझे कितना देना है?' उसने कहा: 'सौ मन गेहूँ।' भंडारी ने उससे कहा: 'अपना तमस्सुक ले और अस्सी लिख दे।' स्वामी ने वेईमान भंडारी को सराहा कि उसने चतुराई से काम किया है। क्योंकि इस संसार की सन्तान अपने कामों में ज्योति की सन्तान से कहीं चतुर है।"

"और मैं तुमसे कहता हूँ: अधर्म के धन से अपने लिए मित्र वना लो २३९ जिससे, जब वह जाता रहे, वे अनन्त निवास में तुम्हारा स्वागत करें।

"जो छोटी से छोटी बात में ईमानदार है वह बड़ी बात में भी ईमानदार है, और जो छोटी से छोटी बात में बेईमान है वह बड़ी में भी बेईमान है। तब यदि तुम अधर्म के धन में ईमानदार नहीं ठहरे तो असली धन तुम्हें कौन सौंपेगा? और यदि तुम पराए धन में ईमानदार न ठहरे तो तुम्हारा तुम्हें कौन देगा?

"कोई दास दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता: क्योंकि वह या तो एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, या एक से मिला रहेगा और दूसरे का तिरस्कार करेगा। तुम ईश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।"

२४० फ़रीसी, जो लोभी थे, ये बातें सुनकर येसु की हँसी उड़ाते थे। इसपर येसु ने उनसे कहा: "तुम तो मनुष्यों के सामने अपने आपको धर्मी ठहराते हो परन्तु ईश्वर तुम्हारा हृदय जानता है, क्योंकि जो मनुष्यों के सामने महान् है वह ईश्वर के सामने घृणित है।"

२४१ **धनी और लाज़रुस का दृष्टान्त**

"एक धनी मनुष्य था; वह बैंगनी वस्त्र और मलमल पहनता और प्रतिदिन उत्तम-उत्तम भोजन किया करता था। और लाज़रुस नामक एक कंगाल मनुष्य घावों से भरा उसके फाटक पर पड़ा रहता था। यह चाहता था कि धनवान् की मेज़ पर से गिरे हुए चूरचार से अपना पेट भरे; परन्तु कोई भी उसे न देता था; और कुत्ते आकर उसके घाव चाटते थे।

"फिर ऐसा हुआ कि कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे ले जाकर अब्रहाम की गोद में पहुँचाया; धनवान् भी मरा और नरक में डाला गया। जब वह पीड़ाओं में पड़ा था, तो उसने आँखें उठाकर दूर पर अब्रहाम और उसकी गोद में लाज़रुस को देखा, और चिल्ला उठा: 'हे पिता अब्रहाम, मुझपर दया करके लाज़रुस को भेजिए जिससे वह अपनी उँगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूँ।' अब्रहाम ने उससे कहा: 'हे बेटा, याद कर कि जीवन में तुझे सुख ही सुख मिला था और उसी प्रकार लाज़रुस को दुःख ही दुःख; अब वह आराम पा रहा है और तू पीड़ा सहता है। इन सबके अतिरिक्त हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गर्त्त स्थित है, जिससे जो यहाँ से तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें, और न कोई वहाँ से इस पार ही आ सके।'

"उसने उत्तर दिया: 'हे पिता अब्रहाम, मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप लाज़रुस को मेरे पिता के घर भेजिए; क्योंकि मेरे पाँच भाई हैं। लाज़रुस उन्हें चितावनी दे; कहीं ऐसा न हो कि वे भी पीड़ाओं के इस स्थान में आ जाएँ।' पर अब्रहाम ने उससे कहा: 'मूसा और नबी उनके पास हैं, वे उनकी सुनें।' परन्तु धनवान् ने कहा: 'नहीं, हे पिता अब्रहाम, यदि मुरदों में से एक उनके पास जाए तो वे पछतावा करेंगे।' पर अब्रहाम ने उससे कहा: 'यदि वे मूसा और नबियों की नहीं सुनते, तो यदि मुरदों में से भी कोई जी उठे, वे उसका भी विश्वास नहीं करेंगे'।"

दीनता २४२

"तुममें से कौन है जिसका दास हल जोतता या ढोर चराता हो और उसके खेत से लौटने पर वह उससे कहेगा: 'आकर तुरन्त भोजन करने बैठ जा'? क्या उससे यह नहीं कहेगा: 'मेरी ब्यारी तैयार कर, जब तक मैं खा-पी न चुकँ अपनी कमर कसकर मुझे परोस, इसके बाद तू भी खा-पी लेना'? क्या स्वामी उस दास को इसीलिए धन्यवाद देगा कि उसने उसकी आज्ञा का पालन किया है? मेरी राय में तो नहीं। वैसे ही तुम भी हो: जब तुम कहे हुए सब काम कर चुके हो, तो कहो: हम नौकर भर हैं, अयोग्य हैं; जो हमें करना चाहिए था वही हमने किया है।"

२०—प्रभु येसु का अन्तिम दौरा

दस कोढ़ी २४३

येरुसलेम की यात्रा करते हुए येसु समारिया और गलीलिया से होकर गुज़रे। जैसे ही उन्होंने एक गाँव में प्रवेश किया, दस कोढ़ी उनसे मिले। वे दूर पर खड़े होकर ऊँचे स्वर से पुकारने लगे: "हे येसु, हे गुरु, हमपर दया कीजिए।"

उनको देखकर येसु ने कहा: "जाओ और अपने को याजकों को दिखाओ।" और ऐसा हुआ कि जाते समय वे शुद्ध हो गए। तब उनमें से एक, यह देखकर कि मैं शुद्ध हो गया हूँ, ऊँची आवाज़ से ईश्वर की महिमा गाता हुआ लौटा।

येसु के चरणों में मुँह के वल गिरकर वह धन्यवाद देने लगा; और यह समारितानी था। येसु ने कहा: "क्या दसों शुद्ध नहीं हुए? तो बाकी नौ कहाँ हैं? क्या इस परदेशी के सिवा और कोई नहीं मिला जो लौटकर ईश्वर की महिमा गावे?" इसपर येसु ने उससे कहा: "उठ, अपनी राह जा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है।"

२४४ **ईश्वर का राज्य कब आएगा** जब फ़रीसियों ने पूछा: "ईश्वर का राज्य कब आएगा", तो येसु ने उन्हें उत्तर दिया: "ईश्वर का राज्य प्रकट रूप से नहीं आता; लोग नहीं कह सकेंगे: देखो, यहाँ है; या: देखो, वहाँ है। क्योंकि ईश्वर का राज्य तुम्हारे ही अन्दर है।"

२४५ **प्रभु येसु का दूसरा आगमन** और येसु ने अपने चेलों से कहा: "वे दिन आएँगे जब तुम मनुष्य के पुत्र का एक दिन भी देखना चाहोगे, पर नहीं देख पाओगे। लोग तुमसे कहेंगे: देखो, यहाँ है; या: देखो, वहाँ है। पर तुम उधर मत जाओ, उनके पीछे मत दौड़ो। क्योंकि जैसे विजली आकाश की एक ओर से कौंधकर दूसरी ओर तक चमक उठती है, वैसेही मनुष्य का पुत्र अपने दिन में प्रकट होगा। परन्तु पहले उसे वहुत दुःख सहना और इस पीढ़ी के द्वारा अस्वीकृत होना है।

"जैसे नोवा के दिनों में हुआ वैसेही मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा: जिस दिन तक नोवा जहाज पर न चढ़ा उस दिन तक लोग खाते-पीते और ब्याह-शादी करते रहे। तव जलप्रलय आया और सव को नष्ट कर डाला। जैसे लोत के दिनों में भी हुआ: लोग खाते-पीते, लेन-देन करते, पेड़ लगाते और घर वनाते रहे। पर जब लोत सोदोम से निकल गया तब ईश्वर ने स्वर्ग से आग और गंधक वरसायी और उसने सब को नष्ट कर डाला। जब मनुष्य का पुत्र प्रकट किया जाएगा तब वैसा ही होगा। उस दिन जो छत पर हो और सामान घर में हो तो उसे उठाने के लिए वह न उतरे। और जो खेत में हो वह भी न लौटे। लोत की पत्नी को याद करो। जो कोई अपने प्राण बचाने का प्रयत्न करेगा वह उसे खो देगा, और जो कोई उसे खो देगा वह उसे बचा लेगा। मैं तुमसे कहता हूँ: उस रात को दो मनुष्यों में से जो एक ही खाट पर होंगे एक लिया

जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। दो स्त्रियों में से जो साथ-साथ चक्की पीस रही होंगी एक तो ली जाएगी पर दूसरी छोड़ दी जाएगी। दो मनुष्यों में से जो खेत में होंगे एक ले लिया जाएगा दूसरा छोड़ दिया जाएगा।"

चेलों ने उनसे पूछा: "हे प्रभु, कहाँ?" तब येसु ने उनसे कहा: "जहाँ कहीं लाश होगी वहीं गिद्ध भी इकट्ठे होंगे।"

न्यायाधीश और विधवा का दृष्टान्त २४६

फिर येसु ने उन्हें यह समझाने के लिए कि नित्य प्रार्थना करनी चाहिए और कभी हिम्मत न हारनी चाहिए, एक दृष्टान्त सुनाया: "किसी नगर में एक न्यायाधीश था जो न तो ईश्वर से डरता था और न किसी मनुष्य की परवाह करता था। उसी नगर में एक विधवा भी थी। वह उसके पास आकर कहा करती थी: 'मेरे विरोधी से मेरा न्याय चुका दीजिए।' बहुत समय तक न्यायाधीश अनमना-सा रहा। पर पीछे उसने मन-ही-मन कहा: 'मैं तो न ईश्वर से डरता हूँ और न किसी मनुष्य की परवाह करता हूँ। तब भी चूँकि यह विधवा मुझे दिक किया करती है, मैं उसका न्याय कर दूँगा, ऐसा न हो कि वह घड़ी-घड़ी आकर मेरी नाक में दम करती रहे'।" और प्रभु ने कहा: "सुनो कि इस अधर्मी न्यायाधीश ने क्या कहा है। क्या ईश्वर अपने चुने हुओं का, जो रात-दिन उसकी दुहाई देते रहते हैं, न्याय नहीं करेगा? क्या वह उनके विषय में देर करेगा? मैं तुमसे कहता हूँ: वह जल्द ही उनका न्याय करेगा। पर जब मनुष्य का पुत्र आएगा तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?

फ़रीसी और नाकेदार का दृष्टान्त २४७

कुछ लोग थे जिनका यह पक्का विश्वास था कि हम धर्मी हैं और वे दूसरों को तुच्छ समझते थे; ऐसों को येसु ने यह दृष्टान्त सुनाया: "दो मनुष्य प्रार्थना करने को मन्दिर में गए: एक फ़रीसी और दूसरा नाकेदार। फ़रीसी खड़ा होकर मन-ही-मन इस प्रकार प्रार्थना करने लगा: 'हे ईश्वर, मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ कि मैं दूसरे लोगों के समान लालची, अन्यायी, व्यभिचारी नहीं हूँ, और न इस नाकेदार के समान। मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूँ, और अपनी सारी आय का दसवाँ अंश देता हूँ।'

"नाकेदार दूर खड़ा होकर स्वर्ग की ओर आँख उठाने तक का साहस न करता था ; परन्तु अपनी छाती पीटकर कहने लगा : 'हे ईश्वर, मुझ पापी पर दया कर।' मैं तुमसे कहता हूँ : यही मनुष्य धर्मी बनकर अपने घर चला गया, पर वह नहीं। क्योंकि जो कोई अपने को बड़ा मानता है, वह छोटा किया जाएगा; और जो अपने को छोटा मानता है, वह बड़ा किया जाएगा।"

२४८ विवाह का बन्धन फ़रीसियों ने पास आकर उनकी परीक्षा करने के लिए उनसे पूछा : "क्या अपनी पत्नी को त्याग देना पुरुष के लिए उचित है ?" येसु ने उन्हें उत्तर दिया : "मूसा ने तुम्हें क्या आज्ञा दी है ?" उन्होंने कहा : "मूसा ने तो त्यागपत्र लिखकर पत्नी को त्याग देने की अनुमति दी है।" येसु ने उन्हें उत्तर दिया : "तुम्हारे हृदय की कठोरता के कारण उसने तुम्हारे लिए यह आज्ञा लिखी है। पर सृष्टि के आरम्भ ही से ईश्वर ने उनको नर-नारी बनाया। इस कारण पुरुष अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा। और वे दोनों एक ही शरीर होंगे। अतः वे अब दो नहीं परन्तु एक ही शरीर हैं। जिसे ईश्वर ने जोड़ रखा है, उसे कोई मनुष्य अलग न करे।"

घर में उनके चेलों ने फिर इसी बात के विषय में उनसे पूछा। और येसु ने कहा : "जो कोई अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से विवाह करे वह उसके विरुद्ध व्यभिचार करता है। और यदि पत्नी अपने पति को त्यागकर दूसरे से विवाह करे तो वह व्यभिचार करती है।"

२४९ कुँवारपन चेलों ने येसु से कहा : "यदि पति-पत्नी के संबंध की ऐसी बात है तो विवाह न करना ही अच्छा है।" येसु ने उनसे कहा : "सब लोग यह वचन नहीं समझते पर केवल वे जिन्हें दिया गया है। क्योंकि कोई-कोई* नपुंसक हैं जो अपनी माँ के गर्भ से ही वैसे जन्मे हैं ; और कोई-कोई नपुंसक हैं जो मनुष्यों के द्वारा वैसे बनाए गए हैं ; और

---

*स्वर्ग-राज्य के लिए बनाए हुए नपुंसक वे हैं जो कुँवारपन की मन्नत के द्वारा अपने को विवाहित जीवन से अलग रखते हैं जिससे वे अपनी सारी भावना और विचार केवल परमेश्वर को अर्पण करें।

कोई-कोई नपुंसक हैं जिन्होंने स्वर्ग के राज्य के लिए अपने को वैसा बनाया है। जो समझ सकता है वह समझे।"

बच्चों को आशिष २५०

लोग येसु के पास बालकों को लाने लगे जिससे वे उनपर हाथ रखकर प्रार्थना करें। पर चेले लानेवालों को डाँटने लगे। येसु यह देखकर बहुत अप्रसन्न हुए और उन्होंने अपने चेलों से कहा: "छोटे बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मत रोको, क्योंकि ईश्वर का राज्य ऐसों का ही है। मैं तुमसे सच कहता हूँ: जो कोई ईश्वर के राज्य को छोटे बालक के समान ग्रहण न करे वह उसमें प्रवेश नहीं कर सकेगा।" और येसु ने बालकों को छाती से लगाया तथा उनपर हाथ रखकर उन्हें आशीर्वाद दिया।

धनी युवक २५१

जब येसु निकलकर रास्ते में जा रहे थे तब एक मनुष्य दौड़ता हुआ आया और उनके सामने घुटने टेककर उनसे पूछने लगा: "हे भले गुरु, अनन्त जीवन पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?" येसु ने उससे कहा: "तू मुझे भला क्यों कहता है? ईश्वर के सिवा और कोई भला नहीं। तू नियमों को जानता है अर्थात् व्यभिचार मत कर, हत्या मत कर, चोरी मत कर, झूठी गवाही मत दे, छल-कपट मत कर, अपने माँ-बाप का आदर कर।" परन्तु उसने येसु को उत्तर दिया: "हे गुरु, यह सब तो मैं अपनी लड़कपन से ही मानता आया हूँ।" येसु ने उसपर दृष्टि डालकर उसको प्यार किया और कहा: "तुझमें एक बात की कमी है: यदि तू सिद्ध होना चाहे तो जा, जो कुछ तेरा है उसे बेच कर गरीबों को बाँट दे और स्वर्ग में तेरे लिए पूँजी रखी रहेगी। तब आ और मेरे पीछे हो ले।" पर इस कथन से उसका चेहरा फीका पड़ गया और वह उदास मन चला गया क्योंकि वह बड़ा धनी था।

२५२ येसु ने चारों ओर दृष्टि डालकर अपने चेलों से कहा: "धनी ईश्वर के राज्य में कितनी कठिनाई से प्रवेश करेंगे!" चेले उनकी बातों से अचम्भे में पड़ गए। पर येसु ने उन्हें फिर उत्तर दिया: "बच्चो! धन पर भरोसा रखनेवालों के लिए ईश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है। *ईश्वर

* जब कोई यहूदी किसी काम को कठिन बतलाना चाहता था तो वह इस कहावत का प्रयोग करता था: सपने में भी किसी ने ऊँट को सूई के नाके से निकलते नहीं देखा है।

के राज्य में धनी के प्रवेश की अपेक्षा ऊँट का सूई के नाके से होकर निकल जाना कहीं आसान है।" चेले और भी अचम्भित हुए और आपस में कहने लगे: "तो फिर कौन बच सकता है?" येसु ने उनकी ओर देखकर कहा: "मनुष्यों के लिए तो यह असम्भव है, पर ईश्वर के लिए नहीं। क्योंकि ईश्वर के लिए सब कुछ सम्भव है।"

२५३ इसपर पेत्रुस ने येसु से कहा: "देखिए, हमने सब कुछ छोड़ दिया और आपके पीछे हो लिए हैं; तो हमें क्या मिलेगा?" येसु ने उनसे कहा: "मैं तुमसे सच कहता हूँ: पुनरुत्थान में जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा, तब तुम भी, जो मेरे पीछे हो लिए हो, इस्राएल के बारह वंशों का न्याय करते हुए बारह सिंहासनों पर बैठोगे। ऐसा कोई भी नहीं है, जिसने मेरे लिए और सुसमाचार के लिए घर या भाइयों या बहनों या माँ-बाप या लड़कों या खेतों को छोड़ दिया है और जो अभी इसी लोक में सौगुना न पाए, अर्थात् घर और भाई और बहनें और माताएँ और लड़के और खेत, साथ-साथ अत्याचार भी, और परलोक में अनन्त जीवन।"

२५४ दाखबारी के मज़दूरों का दृष्टान्त

"बहुतेरे जो प्रथम हैं वे अंतिम होंगे और जो अंतिम हैं वे प्रथम होंगे। स्वर्ग का राज्य उस गृहस्थ के समान है जो बड़े भोर ही अपनी दाखबारी में मज़दूरों को लगाने निकला था। एक दीनार रोज़ पर तय करके उसने मज़दूरों को अपनी दाखबारी में भेज दिया। लगभग एक पहर दिन चढ़ आने पर उसने निकलकर दूसरों को बाज़ार में बेकार खड़े देखा और उनसे कहा: 'तुम भी मेरी दाखबारी में जाओ और जो उचित होगा सो मैं तुम्हें दूँगा', और वे चले गए। लगभग दूसरे और तीसरे पहर भी स्वामी ने फिर निकलकर वैसा ही किया। एक घड़ी दिन रहे अंतिम बार जाकर उसने वहाँ दूसरों को खड़े पाया और उनसे कहा: 'तुम यहाँ क्यों दिनभर से बेकार खड़े हो?' उन्होंने उससे कहा: 'इसलिए कि किसी ने हमें मज़दूरी पर नहीं लगाया।' स्वामी ने उनसे कहा: 'तुम भी मेरी दाखबारी में जाओ।'

"जब संध्या हुई दाखबारी के स्वामी ने अपने भंडारी से कहा: 'मज़दूरों को बुलाकर पिछलों से लेकर पहलों तक मजदूरी दे।' जब वे आए, जो लगभग

घड़ीभर दिन रहे काम पर आए थे, तो हर एक मज़दूर ने एक दीनार पाया। पहलों ने आकर समझा कि हम अधिक पाएँगे परन्तु उन्होंने भी एक ही दीनार पाया। इसे पाकर वे गृहस्थ पर भुनभुनाने और उससे कहने लगे: 'इन पिछले मज़दूरों ने केवल घड़ीभर काम किया; तब भी आपने इन्हें हमारे बराबर बना दिया जिन्होंने दिनभर की धूप सही है।' परन्तु स्वामी ने एक मज़दूर को उत्तर दिया: 'हे मित्र, मैं तेरी कोई हानि नहीं करता। क्या तूने मेरे साथ एक दीनार पर तय नहीं किया था? जो तेरा है वह ले और अपनी राह जा। मैं इस पिछले मज़दूर को भी तेरे जितना ही देना चाहता हूँ। क्या मैं अपनी इच्छा के अनुसार नहीं चल सकता? मेरी उदारता तेरी आँखों में क्यों खटकती है?' इस प्रकार जो अंतिम हैं वे प्रथम होंगे और जो प्रथम हैं वे अंतिम होंगे।"

२१—प्रभु येसु का लाज़रुस को जिलाना

(मार्च महीने में)

लाज़रुस नामक मनुष्य बीमार हो गया; वह बेथानिया, मरिया और उसकी बहन मरथा के गाँव का रहनेवाला था। मरिया वही थी जिसने प्रभु पर इत्र मलकर उनके पावँ अपने बालों से पोंछे थे; इसी का भाई लाज़रुस बीमार था। बहनों ने येसु को कहला भेजा: "हे प्रभु, देखिए, जिसे आप प्यार करते हैं वह बीमार है।" येसु ने यह सुनकर उनसे कहा: "यह बीमारी मरण के लिए नहीं पर ईश्वर की महिमा के लिए है, जिससे इसके द्वारा ईश्वर के पुत्र की महिमा हो।" २५५

येसु मरथा, उसकी बहन मरिया और लाज़रुस को प्यार करते थे। जब उन्होंने सुना कि लाज़रुस बीमार है तो जिस स्थान में थे, वहीं और दो दिन रह गए; उसके बाद उन्होंने अपने चेलों से कहा: "आओ, हम फिर यहूदिया को चलें।" चेलों ने उनसे कहा: "हे गुरु, अभी तो यहूदी लोग आपको पत्थरों से मारना चाहते थे; और आप फिर वहीं जाते हैं?" येसु ने उत्तर दिया:

"क्या दिन के बारह घंटे नहीं होते हैं? यदि कोई दिन को चले तो उसे ठोकर नहीं लगती क्योंकि वह इस जगत् का प्रकाश देखता है; पर यदि कोई रात को चले तो उसे ठेस लगती है क्योंकि उसके अंदर प्रकाश नहीं है।"

इतना उन्होंने कहा और इसके बाद उनसे बोले: "लाज़रुस, हमारा मित्र, सोता है; पर मैं उसको नींद से जगाने जाता हूँ।" इसपर चेलों ने कहा: "हे प्रभु, यदि वह सो रहा है तो बच जाएगा।" पर येसु उसके मरण के विषय में कहते थे और चेलों ने सोचा कि वे नींद के विश्राम के बारे में कहते हैं। तब येसु ने उनसे स्पष्ट कह दिया: "लाज़रुस मर गया; और मैं तुम्हारे कारण प्रसन्न हूँ कि मैं वहाँ न था जिससे तुम विश्वास करो। आओ, हम उसके पास चलें।" तब थोमस ने जो दिदिमस कहलाता है अपने साथी चेलों से कहा: "आओ हम भी चलें और इन्हीं के साथ मरें।"

२५६ जब येसु पहुँचे तो पता चला कि लाज़रुस चार दिन से क़ब्र में है। बेथानिया येरुसलेम से लगभग एक कोस दूर था। और बहुतेरे यहूदी मरथा और मरिया को उनके भाई की मृत्यु पर संवेदना प्रकट करने आए थे।

जैसे ही मरथा ने सुना कि येसु आए हैं वह उनसे मिलने गई, पर मरिया घर में बैठी रही। मरथा ने येसु से कहा: "हे प्रभु, यदि आप यहाँ होते तो मेरा भाई नहीं मरता; पर अब भी मैं जानती हूँ कि जो कुछ आप ईश्वर से माँगेंगे, ईश्वर आपको देगा।" येसु ने उससे कहा: "तेरा भाई फिर जी उठेगा।" मरथा ने उनसे कहा: "मैं जानती हूँ कि अन्तिम दिन के पुनरुत्थान में वह फिर जी उठेगा।" येसु ने उससे कहा: "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ: जो मुझपर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तो जिएगा; और जो कोई मुझमें विश्वास करते हुए जीता है, वह कभी नहीं मरेगा। क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?" उसने उनसे कहा: "हाँ, प्रभु, मैं विश्वास करती हूँ कि आप ख्रीस्त हैं, जीवित ईश्वर के पुत्र, जो जगत् में आए हैं।"

इतना कहकर वह चली गई और अपनी बहन मरिया को चुपके से बुलाकर कहा: "स्वामी आए हैं और तुझे बुलाते हैं।" यह सुनते ही वह तुरंत उठी और येसु के पास आई; क्योंकि येसु अब तक गाँव में नहीं पहुँचे थे, वह उसी स्थान में थे, जहाँ मरथा उनसे मिली थी। इसपर यहूदी लोग, जो मरिया

के साथ घर में थे और उसे सान्त्वना दे रहे थे, यह देखकर कि मरिया जल्दी उठकर बाहर चली गई है और यह समझकर कि वह क़ब्र पर रोने जा रही है, उसके पीछे चल पड़े।

२५७ येसु के पास पहुँचकर मरिया ने उनको देखते ही उनके चरणों में गिरकर कहा: "हे प्रभु, यदि आप यहाँ होते तो मेरा भाई नहीं मरता।" उसे और उसके साथ आए यहूदियों को भी रोते देखकर येसु बहुत ही अधीर हो उठे और उन्होंने आह भरकर कहा: "तुमने उसको कहाँ रखा है?" उन्होंने येसु से कहा: "हे प्रभु, आइए और देखिए।" और येसु रो पड़े। इसपर यहूदियों ने कहा: "देखो, ये उसको कितना प्यार करते थे।" पर कुछ लोग बोले: "क्या ये उसे मृत्यु से नहीं बचा सकते थे जब कि उन्होंने अंधे की आँखों को खोल दिया है?"

येसु फिर आह भरकर क़ब्र के निकट आए। यह क़ब्र एक गुफा थी जिसपर एक पत्थर रखा हुआ था। येसु ने कहा: "पत्थर हटा दो।" मृत की बहन मरथा ने उनसे कहा: "हे प्रभु, उसमें से तो अब दुर्गन्ध निकलती है क्योंकि उसे मरे चार दिन हो गए।" येसु ने उससे कहा: "क्या मैंने तुझसे नहीं कहा: यदि तू विश्वास करेगी तो ईश्वर की महिमा देखेगी?" इसपर लोगों ने पत्थर हटा दिया। अब येसु ने आँखें उठाकर कहा: "हे पिता, मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ कि तूने मेरी सुन ली है। मैं तो जानता ही था कि तू मेरी सदा सुनता है; पर मैंने आसपास खड़े हुए लोगों के लिए यह कहा है जिससे वे विश्वास करें कि तूने मुझे भेजा है।" यह कहकर येसु ने ऊँचे स्वर से पुकारा: "हे लाज़रुस, निकल आ।" उसी क्षण, जो मृत था, वह बाहर निकल आया, उसके हाथ-पावँ कफ़न की पट्टियों से बंधे थे और उसका मुँह अँगोछे में लपेटा था। येसु ने लोगों से कहा: "उसको खोलो और चलने-फिरने दो।"

२५८ जो यहूदी मरिया और मरथा के पास आए थे, और जिन्होंने येसु का यह कार्य देखा, उनमें से बहुतों ने उनपर विश्वास किया। पर उनमें से कितनों ने फ़रीसियों के पास जाकर उन्हें बतलाया कि येसु ने क्या किया है।

इसपर महायाजकों और फ़रीसियों ने सभा बुलाकर कहा: "हम क्या करते हैं? यह मनुष्य तो बहुत से चमत्कार करता है। यदि हम इसको ऐसे ही छोड़ दें तो सब उसपर विश्वास करेंगे और रोमन आकर हमारा मंदिर

और जाति भी नष्ट करेंगे।" पर उनमें से कैफ़स नामक एक ने, जो उस वर्ष प्रधानयाजक था, उनसे कहा: "आप लोग कुछ नहीं जानते; और न यही सोचते हैं कि सारी जाति के नष्ट होने की अपेक्षा जाति के लिए एक ही मनुष्य का मरना कहीं अच्छा है।" यह बात उसने अपनी ओर से नहीं कही; परन्तु उस वर्ष का प्रधानयाजक होकर उसने भविष्यद्वाणी की कि येसु जाति के लिए मरेंगे; और न केवल जाति के लिए, पर इसलिए भी कि ईश्वर की बिखरी हुई सन्तान को एकत्र करें। अतः उसी दिन से उन्होंने येसु को मार डालने का निश्चय कर लिया।

२५९ इस कारण येसु उस समय से यहूदियों के बीच खुलकर नहीं जाते थे; वे मरुभूमि के निकटवर्त्ती देश के एफ़्रम नामक नगर में चले गए और वहीं अपने चेलों के साथ रहने लगे।

यहूदियों का पास्का पर्व निकट था और बहुत से लोग पास्का के पहले शुद्धीकरण के लिए देहात से येरुसलेम आए। वे येसु की खोज में थे और मन्दिर में खड़े होकर आपस में बातें कर रहे थे: "क्या सोचते हो? क्या वे पर्व के लिए आएँगे?" परन्तु महायाजकों और फ़रीसियों ने यह आज्ञा दी थी: "यदि किसी को मालूम हो जाए कि येसु कहाँ है तो बताए, जिससे हम उसको पकड़ लें।"

२२—येरुसलेम की यात्रा

२६० **दुःखभोग की तीसरी भविष्यद्वाणी** वे सब येरुसलेम की ओर बढ़ते जा रहे थे। येसु उनके आगे-आगे जाते थे। चेले पीछे चलते हुए चकित और भयभीत थे। फिर वे बारहों को लेकर, जो बातें अपने ऊपर घटनेवाली थीं, उन्हें बताने लगे: "देखो, हम येरुसलेम की ओर चढ़ रहे हैं और मनुष्य का पुत्र महायाजकों, शास्त्रियों और प्राचीनों के हाथ में सौंप दिया जाएगा; वे उसे प्राणदण्ड की आज्ञा सुनाएँगे और अन्यजातियों को सौंप देंगे, जो उसकी हँसी उड़ाएँगे,

उसपर थूकेंगे, उसे कोड़े मारेंगे और मार डालेंगे। लेकिन तीसरे दिन वह जी उठेगा।" चेलों ने कुछ भी न समझा ; यह सब उनसे छिपा रहा और उन्होंने येसु की कही हुई बातों को न समझा।

जेबेदी के बेटों का निवेदन २६१

तब ज़ेबेदी के बेटों की माँ, अपने बेटों के साथ, येसु के पास आकर और उनको दण्डवत् करके, उनसे कुछ माँगने लगी। येसु ने उससे कहा: "तू क्या चाहती है ?" उसने कहा: "यह कह दीजिए कि आपके राज्य में मेरे दोनों बेटे, एक आपकी दाईं ओर और एक बाईं ओर बैठेगा।" परन्तु येसु ने उनसे कहा: "तुम यह नहीं जानते कि क्या माँग रहे हो। क्या वह कटोरा जो मैं पीता हूँ तुम पी सकते हो या वह बपतिस्मा जिसे मैं लेता हूँ ले सकते हो ?" चेलों ने उन्हें उत्तर दिया: "ले सकते हैं।" येसु ने उनसे कहा: "जो कटोरा मैं पीता हूँ उसे तो तुम पिओगे, और जो बपतिस्मा मैं लेता हूँ उसे तुम लोगे तो सही ; परन्तु अपनी दाईं या बाईं ओर तुम्हें बैठाना मेरा काम नहीं ; यह जगह उनके लिए है जिनके लिए तैयार हुई है।"

२६२ दसों यह सुनकर याकूब और योहन पर क्रुद्ध होने लगे। पर येसु ने उनको बुलाकर उनसे कहा: "तुम जानते हो कि जो अन्यजातियों पर शासन करते हैं वे उनपर अपनी प्रभुता दिखलाते हैं और उनके मुखिए उनपर अपना अधिकार जताते हैं। परन्तु तुम्हारे बीच ऐसा नहीं है: जो कोई बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने, और जो कोई तुममें प्रधान होना चाहे वह सब का दास बने। क्योंकि मनुष्य का पुत्र भी अपनी सेवा कराने के लिए नहीं बल्कि सेवा करने के लिए और बहुतों के उद्धार के लिए अपने प्राण देने आया है।"

येरिको बरतिमेउस २६३

फिर ऐसा हुआ कि जब येसु येरिको के निकट आए तो तिमेउस का बेटा बरतिमेउस नामक अंधा भिखारी, रास्ते के किनारे बैठा, भिक्षा माँग रहा था। जब उसने सुना कि यह येसु नाजरी हैं तो वह चिल्लाकर कहने लगा: "हे येसु, दाऊद के पुत्र, मुझपर दया कीजिए।" बहुतों ने उसे यों डाँटा: "चुप रह", पर वह और भी ज़ोर से पुकारता रहा: "हे दाऊद के पुत्र, मुझपर दया कीजिए।" येसु ने रुककर उसे बुलाने की आज्ञा दी। लोगों ने उस अंधे को

यह कहकर बुलाया: "हिम्मत बाँध, उठ, वे तुझे बुलाते हैं।" वह अपना कपड़ा फेंककर कूद पड़ा और येसु के पास दौड़ा। तब येसु ने उससे पूछा: "तू क्या चाहता है; मैं तेरे लिए क्या करूँ?" अंधे ने उत्तर दिया: "हे गुरु, मैं दृष्टि चाहता हूँ।" येसु ने उससे कहा: "देख, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है।" उसी दम वह देखने लगा और ईश्वर की महिमा गाता हुआ येसु के पीछे हो लिया। और सारी जनता यह देखकर ईश्वर की महिमा गाने लगी।

२६४ **ज़केयुस**　येसु येरिको में प्रवेश कर आगे बढ़ रहे थे। वहाँ ज़केयुस नामक नाकेदारों का मुखिया और धनी यह देखना चाहता था कि येसु कौन-से हैं। परंतु वह छोटे कद का था और भीड़ में उन्हें नहीं देख सका। तब वह आगे दौड़कर उन्हें देखने के लिए एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया क्योंकि येसु उसी रास्ते से जानेवाले थे। जब येसु उस जगह पहुँचे तो ऊपर दृष्टि करके ज़केयुस से कहा: "हे ज़केयुस, शीघ्र उतर आ, क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना है।" उसने जल्दी से उतरकर आनन्द के साथ अपने यहाँ येसु का स्वागत किया। यह देखकर सब लोग इस प्रकार भुनभुनाने लगे: "उन्होंने एक पापी का आतिथ्य स्वीकार किया है।"

ज़केयुस ने खड़े होकर प्रभु से कहा: "हे प्रभु, देखिए, मैं अपनी आधी सम्पत्ति गरीबों को दे देता हूँ, और यदि मैंने किसी से किसी बात में बेईमानी की है तो उसे उसका चौगुना लौटा देता हूँ।" येसु ने उससे कहा: "आज इस घर में मुक्ति आई है क्योंकि वह भी अब्राहम का बेटा है। जो खो गया था उसी को खोजने और बचाने के लिए मनुष्य का पुत्र आया है।"

२६५ **अशर्फ़ियों का दृष्टान्त**　जब लोग ये बातें सुन रहे थे, येसु ने एक दृष्टान्त दिया; वे येरुसलेम के निकट थे और लोग समझते थे कि ईश्वर का राज्य तुरन्त प्रकट होनेवाला है। इसलिए उन्होंने कहा: "एक कुलीन मनुष्य दूर देश गया जिससे वह राजपद पाकर फिर लौट आए। अपने दस सेवकों को बुलाकर उसने उन्हें दस अशर्फ़ियाँ दीं और कहा: 'मेरे लौटने तक व्यापार करो।' पर उसके नगरवासी उससे वैर रखते थे और उसके पीछे राजदूतों से कहला भेजा कि 'हम नहीं चाहते कि यह मनुष्य हमपर राज्य करे'।

"जब वह राजपद पाकर लौटा तो उसने, जिन सेवकों को धन दिया था, उन्हें यह जानने के लिए बुला भेजा कि हर एक ने व्यापार से कितना कमाया है।

"पहले ने आकर कहा: 'हे स्वामी, आपकी एक अशर्फ़ी ने दस और अशर्फ़ियाँ कमाई हैं।' स्वामी ने उससे कहा: 'शाबाश, हे भले सेवक, क्योंकि तू थोड़े में ईमानदार रहा तू दस नगरों का अधिकारी होगा।' दूसरे ने आकर कहा: 'हे स्वामी, आपकी एक अशर्फ़ी ने पाँच अशर्फ़ियाँ कमाई हैं।' और स्वामी ने उससे कहा: 'तू भी पाँच नगरों का अधिकारी होगा।' अब तीसरे ने आकर कहा: 'हे स्वामी, देखिए यह है आपकी अशर्फ़ी, जिसे मैंने एक अँगोछे में बाँध रखा है; मैं आपसे डरता था क्योंकि आप कठोर मनुष्य हैं। जो आपने नहीं दिया उसे भी उगाह लेते हैं, और जो आपने नहीं बोया उसे भी काट लेते हैं।' स्वामी ने उससे कहा: 'हे दुष्ट सेवक, तेरे ही शब्दों से मैं तेरा न्याय करता हूँ। तू जानता था कि मैं कठोर मनुष्य हूँ: जो मैंने नहीं दिया उसे उगाह लेता हूँ, और जो मैंने नहीं बोया उसे काट लेता हूँ। तो तूने मेरा धन बैंक में क्यों नहीं रख दिया जिससे लौटकर मैं उसे सूद के साथ वसूल कर लूँ?' तब स्वामी ने पास खड़े लोगों से कहा: 'उससे अशर्फ़ी छीन लो और जिसके पास दस अशर्फ़ियाँ हैं उसे दे दो।' उन्होंने स्वामी से कहा: 'हे स्वामी, उसके पास तो दस अशर्फ़ियाँ हैं।' मैं तुमसे कहता हूँ: जिसके पास कुछ है उसी को दिया जाएगा और उसी की बढ़ती होगी; परन्तु जिसके पास कम है, जो कुछ भी उसके पास है वह उससे ले लिया जाएगा। परंतु मेरे वैरी जो नहीं चाहते थे कि मैं उनपर राज्य करूँ, उनको इधर लाकर मेरे सामने मार डालो।"

ये बातें कहने के बाद येसु येरुसलेम की ओर आगे बढ़ते हुए चले गए।

बेथानिया में भोजन २६६

पास्का के छः दिन पहले येसु बेथानिया आए जहाँ लाज़रुस था, जिसको उन्होंने मुरदों में से फिर जिलाया था। वहाँ लोगों ने येसु के लिए, सिमोन कोढ़ी के घर में, ब्यारी तैयार की; मरथा परोसती थी और लाज़रुस येसु के साथ भोजन करनेवालों में से एक था। मरिया आधा सेर असली जटामांसी का बहुमूल्य इत्र लेकर आई और संगमरमर का पात्र तोड़कर उसे येसु के सिर पर उँडेल दिया। उसने

येसु के चरणों पर भी इत्र लगाया और उन्हें अपने बालों से पोंछा। और सारा घर इत्र की गंध से सुगन्धित हो गया।

तब उन चेलों में से एक, यूदस इसकारियोती, जो उनके साथ विश्वासघात करनेवाला था, कहने लगा: "यह इत्र तीन सौ दीनार में बेचकर ग़रीबों को क्यों नहीं दिया गया?" उसने यह इसलिए नहीं कहा कि उसे ग़रीबों की चिन्ता थी, वरन् इसलिए कि वह चोर था; थैली उसके पास थी और जो उसमें डाला जाता था, उसे वह निकाल लेता था। कुछ दूसरे चेले भी आपस में कहने लगे, इत्र की यह फजूलखर्ची क्यों हो रही है?

पर येसु ने कहा: "इसे रहने दो। इसे क्यों सताते हो? इस स्त्री ने मेरे लिए भला काम किया है; क्योंकि कंगाल तो सदा तुम्हारे साथ रहते हैं, और तुम जब चाहो उनका उपकार कर सकते हो; पर मैं सदा तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा। यह जो कुछ कर सकी उसे उसने किया। इसने पहले ही से मेरे शरीर को दफ़न करने के लिए इत्र से मला है। मैं तुमसे सच कहता हूँ: सारे संसार में जहाँ कहीं इस सुसमाचार का प्रचार किया जाएगा, वहाँ इसका यह काम भी इसके स्मरण के लिए सुनाया जाएगा।"

२६७ यहूदियों की एक बड़ी भीड़ को मालूम हुआ कि येसु यहाँ हैं; और वे आए, केवल येसु के लिए नहीं, परन्तु लाज़रुस को भी देखने के लिए, जिसको उन्होंने मुरदों में से जिलाया था। तब महायाजकों ने मन में ठान लिया कि हम लाज़रुस को भी मार डालेंगे। उसीके कारण यहूदियों में से बहुतेरे अलग होकर येसु पर विश्वास करने लगे थे।

चतुर्थ भाग

दुःखभोग और पुनरुत्थान

२३—प्रभु येसु का येरुसलेम में प्रवेश

[इतवार को]

दूसरे दिन जब वे जैतून पहाड़ के पास बेथफ़गे और बेथानिया में पहुँचे २६८
तो उन्होंने दो चेलों को यह कहकर भेजा: "सामने के गाँव में जाओ; तुरन्त तुम एक गदही बंधी पाओगे और उसके साथ एक बछेड़ा, जिसपर अब तक कोई सवार नहीं हुआ है। उनको खोलकर मेरे पास लाओ। यदि कोई तुमसे कुछ कहे तो कहना: प्रभु को इनकी ज़रूरत है, और वह उन्हें तुरन्त आने देगा।"

जो भेजे गए थे उन्होंने येसु के कहे अनुसार बछेड़े को खड़ा पाया। जब वे बछेड़े को खोल रहे थे, उसके स्वामी उनसे कहने लगे: "बछेड़े को तुम क्यों खोलते हो?" उन्होंने उत्तर दिया: "प्रभु को उसकी ज़रूरत है"; और उन्होंने उनको जाने दिया।

और वे गदही और बछेड़े को येसु के पास लाए, और अपने कपड़े बछेड़े पर बिछाकर येसु को उसपर बिठाया।

और बहुत-से लोगों ने अपने-अपने कपड़े रास्ते में बिछा दिए; दूसरों २६९
ने पेड़ों की डालियाँ काट-काटकर रास्ते में फैला दीं। फिर जो लोग येसु के आगे-आगे चलते थे और उनके पीछे-पीछे चले आते थे वे पुकारने लगे:

"दाऊद के पुत्र को होसान्ना!
"धन्य हैं यह जो प्रभु के नाम पर आए हैं!
"सर्व्वोच्च में होसान्ना!"

यह इसलिए हुआ कि जो नबी ने कहा था वह पूरा हो जाए:

"सिओन की बेटी से कहो:

"देख, तेरा राजा तेरे पास आता है,
"नम्र और लद्दू गदही के बछेड़े पर बैठा हुआ।"

ये बातें येसु के चेले पहले नहीं समझते थे, पर येसु को महिमा प्राप्त होने के बाद उन्हें स्मरण आया कि ये बातें उनके विषय में लिखी हुई थीं और लोगों ने उनके साथ ऐसा ही किया था।

येसु ने जब लाज़रुस को क़ब्र से बाहर बुलाकर मुरदों में से जिलाया था, उस समय जो भीड़ उनके साथ थी वह भी उसके विषय में साक्ष्य दे रही थी। इसी कारण बहुत से लोग येसु से मिलने आए क्योंकि उन्होंने सुना था कि येसु ने यह चमत्कार किया है। इसपर फ़रीसियों ने आपस में कहा: "देखो तो, हमारी एक भी नहीं चलती ; सारा संसार उसीके पीछे चल पड़ा है।"

भीड़ में से कुछ फ़रीसियों ने येसु से कहा: "हे गुरु, अपने चेलों को डाँटिए।" पर उन्होंने उनसे कहा: "मैं तुमसे कहता हूँ: यदि ये चुप रहें तो पत्थर ही चिल्ला उठेंगे।"

२७० जब येसु निकट आए तो नगर को देखकर उसपर रो पड़े। और उन्होंने कहा: "यदि अपने इस शुभ दिन में तुझे भी सूझ पड़ता कि किन बातों से तेरी शान्ति है तो कितना अच्छा होता! परन्तु अभी ये बातें तेरी आँखों से छिपी हैं। क्योंकि तुझपर वे दिन आएँगे जब तेरे बैरी तेरे चारों ओर मोरचा बाँधकर तुझे घेर लेंगे, चारों ओर से तंग करेंगे, और तुझे तथा तेरे अन्दर रहनेवाली सन्तान को मटियामेट कर देंगे और तुझमें पत्थर पर पत्थर तक न छोड़ेंगे क्योंकि तूने अपनी शुभ घड़ी का समय नहीं पहचाना है।"*

२७१ जब येसु येरुसलेम में आ पहुँचे तो सारे नगर में हलचल मच गई और लोग कहने लगे: "ये कौन हैं? और जनता कहती थी: "ये हैं येसु, गलीलिया के नाजरेत के नबी।"

तब अंधे और लँगड़े मन्दिर में येसु के पास आए और उन्होंने उनको चंगा किया। पर महायाजक और शास्त्री उनके चमत्कारों को देखकर और मन्दिर में बालकों को "दाऊद के पुत्र को होसान्ना" चिल्लाते हुए सुनकर चिढ़ गए, और येसु से बोले: "आप सुन रहे हैं कि ये क्या बकते हैं?" येसु ने

*यह भविष्यद्वाणी ७० ई० में सच निकली, जब रोमन सेना ने येरुसलेम को नष्ट कर दिया।

उनसे कहा: "हाँ; क्या तुमने यह कभी नहीं पढ़ा: बालकों और दूधमुँहे बच्चों के मुँह से तूने अपनी स्तुति का गान कराया।"

प्रभु का अन्यजातियों को अपनी ओर खींचना २७२

जो लोग पर्व के दिन आराधना करने आए थे, उनमें से कई गैरयहूदी थे। ये फ़िलिप के पास, जो गलीलिया के बेथसैदा का था, जाकर उससे इस प्रकार विनती करने लगे: "महाशय, हम येसु से मिलना चाहते हैं।" फ़िलिप ने आकर अन्द्रेयस से कहा, फिर अन्द्रेयस और फ़िलिप ने येसु से कहा। येसु ने उन्हें उत्तर दिया: "वह समय आ पहुँचा है जब मनुष्य के पुत्र की महिमा प्रकट होगी। मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ: जब तक गेहूँ का दाना धरती में गिरकर मरता नहीं, तब तक वह अकेला ही रहता है; परन्तु जब मर जाता है तो बहुत फल लाता है। जो कोई अपने जीवन को प्यार करता है वह उसे खो देगा, और जो इस संसार में अपने जीवन से बैर रखता है वह उसे अनन्त जीवन के लिए बचा रखेगा। यदि कोई मेरी सेवा करता है तो वह मेरे पीछे हो ले; और जहाँ मैं हूँ वहीं मेरा सेवक भी होगा। यदि कोई मेरी सेवा करे तो मेरा पिता उसका सम्मान करेगा।

"अब मेरी आत्मा घबराती है; क्या मैं कहूँ – हे पिता, इस घड़ी से मुझे बचा। पर मैं इसी कारण इस घड़ी तक आ पहुँचा हूँ। हे पिता, अपने नाम की महिमा प्रकट कर।" इसपर यह स्वर्गवाणी हुई: "मैंने उसे महिमा से भूषित किया है और फिर ऐसा ही करूँगा।" जो भीड़ खड़ी हुई सुन रही थी, वह बोल उठी: "बादल गरजा"; दूसरे कहते थे: "एक दूत ने उनसे कुछ कहा है।" येसु ने उत्तर दिया: "यह वाणी मेरे लिए नहीं परन्तु तुम्हारे लिए आई है। अब इस संसार का विचार होता है; अब इस संसार का नायक निकाला जाएगा। और जब मैं पृथ्वी के ऊपर उठाया जाऊँगा, तो सब को अपने पास खींचूँगा।" यहाँ वे बतला रहे थे कि किस प्रकार मरनेवाले हैं।

तब भीड़ ने उनसे कहा: "हमने तो नियम का यह कथन सुना है कि ख्रीस्त सदा रहेंगे। फिर आप यह कैसे कहते हैं: आवश्यक है कि मनुष्य का पुत्र ऊपर उठाया जाए? यह मनुष्य का पुत्र कौन है?" इसपर येसु ने उनसे कहा:

"अब थोड़ी ही देर के लिए ज्योति तुम्हारे बीच है। चले चलो जब तक तुम्हारे साथ ज्योति है, ऐसा न हो कि अंधकार तुमको घेर ले। जो अंधकार में चलता है, वह नहीं जानता कि वह किधर जाता है। जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है, ज्योति पर विश्वास करो, जिससे ज्योति के पुत्र बन जाओ।" तब उन्हें छोड़कर और नगर से निकलकर येसु बेथानिया को गए और रात को वहीं रहे।

[सोमवार को]

२७३ **अंजीर को शाप** दूसरे दिन जब वे बेथानिया से निकले तो येसु को भूख लगी। दूर पर अंजीर का एक पत्तेदार पेड़ देखकर वे इस आशा से पास गए कि उसपर कुछ फल मिल जाएँ; परन्तु पास आने पर उन्होंने पत्तियों को छोड़ और कुछ नहीं पाया क्योंकि वह अंजीर की ऋतु न थी। इसपर उन्होंने पेड़ से कहा: "अब से अनन्तकाल तक कोई भी तेरा फल न खाए।" उनके चेले यह सुन रहे थे।

२७४ **मंदिर में उपदेश** वे प्रतिदिन मन्दिर में शिक्षा देते थे। महा-याजक, शास्त्री और शासक इस धुन में थे कि वे कैसे येसु का नाश करें; पर उन्हें कुछ सूझ न पड़ता था कि क्या करें, क्योंकि सारी जनता येसु की शिक्षा बड़े चाव से सुनती थी।

संध्या होने पर येसु और उनके चेले नगर से बाहर चले गए।

२४—मंदिर में यहूदी पंडितों से विवाद

[मंगल को]

सूखा हुआ अंजीर २७५

भोर को जब वे उधर से होकर जा रहे थे तो चेलों ने अंजीर के पेड़ को समूल सूखा देखा। तब पेत्रुस को याद आई और उसने येसु से कहा: "हे गुरु, देखिए, अंजीर का पेड़, जिसे आपने शाप दिया था, सूख गया है।" येसु ने उन्हें उत्तर दिया: "ईश्वर पर विश्वास करो। मैं तुमसे सच कहता हूँ: यदि कोई इस पहाड़ से कहे: हट जा और समुद्र में गिर पड़, और अपने हृदय में संदेह न रखे वरन् विश्वास करे कि जो कुछ वह कहता है वह पूरा हो जाएगा, तो उसके लिए वैसा ही होगा। इसीलिए मैं तुमसे कहता हूँ: जो कुछ तुम प्रार्थना करते समय माँगते हो, यदि विश्वास करोगे कि तुम्हें दिया जाएगा, तो वह तुम्हें प्राप्त होगा।"

प्रभु येसु का अधिकार २७६

वे फिर येरुसलेम में पहुँचे। जब येसु मन्दिर में टहल रहे थे तो महायाजकों, शास्त्रियों और प्राचीनों ने उनके पास आकर पूछा: "आप किस अधिकार से ये कार्य करते हैं? और किसने आपको ऐसे कार्य करने का अधिकार दिया है?" इसपर येसु ने उनसे कहा: "मैं भी तुमसे यह एक बात पूछूँगा। यदि तुम मुझे उत्तर दोगे तो मैं भी तुम्हें बता दूँगा कि किस अधिकार से मैं ये काम करता हूँ। योहन का बपतिस्मा स्वर्ग की ओर से था या मनुष्यों की ओर से? मुझे उत्तर दो।" इसपर वे मन-ही-मन यह सोच रहे थे: "यदि हम कहें: स्वर्ग की ओर से, तो वह कहेगा: तब तुमने उसपर विश्वास क्यों नहीं किया? यदि हम कहें: मनुष्यों की ओर से, तो हमें जनता का भय होता है।" क्योंकि सब लोग योहन को सचमुच नबी मानते थे। अतः उन्होंने येसु को उत्तर दिया: "हम नहीं जानते।" इसपर येसु ने उन्हें उत्तर दिया: "मैं भी तुम्हें नहीं बताऊँगा कि किस अधिकार से मैं ये कार्य करता हूँ।"

२७७ **दो बेटों का दृष्टान्त** "तुम्हारी क्या राय है? किसी आदमी के दो पुत्र थे। पहले के पास जाकर उसने कहा: 'बेटा, आज मेरी दाखबारी में जाकर काम कर।' उसने उत्तर दिया: 'मैं नहीं जाऊँगा।' परन्तु पीछे पछताकर गया। फिर दूसरे पुत्र के पास जाकर बाप ने उसी प्रकार कहा। उसने उत्तर दिया: 'जी हाँ, मैं जाता हूँ', पर गया नहीं। इन दोनों में से किसने बाप की इच्छा पूरी की?" उन्होंने येसु को उत्तर दिया: "पहले ने।" येसु ने उनसे कहा: "मैं तुमसे सच कहता हूँ: नाकेदार और वेश्याएँ तुमसे पहले ईश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगी क्योंकि योहन धर्म के मार्ग पर चलते हुए तुम्हारे पास आया और तुमने उसपर विश्वास नहीं किया, पर नाकेदारों और वेश्याओं ने उसपर विश्वास किया; यह देखते हुए तुमने पीछे भी पछतावा करके उसपर विश्वास नहीं किया।"

२७८ **हिंसक असामियों का दृष्टान्त** इसके बाद येसु उनसे दृष्टान्तों में कहने लगे: "किसी मनुष्य ने दाख की एक बारी लगाई, उसे घेरा, रस का कुंड खोदा और पक्का मचान बनाया। तब उसे असामियों को ठीके पर देकर परदेश चला गया। समय आने पर उसने असामियों के पास एक दास को भेजा जिससे वह दाखबारी की फसल का हिस्सा असामियों से वसूल करे। पर उन्होंने उसे पकड़कर मारा-पीटा और खाली हाथ लौटा दिया। फिर स्वामी ने एक दूसरे दास को उनके पास भेजा परन्तु उन्होंने उसे घायल करके उसका अपमान किया। फिर उसने एक और दास को भेजा पर उन्होंने उसको मार डाला; और बहुतेरे दूसरे दासों को भी पकड़कर कितनों को तो पीटा और कितनों को मार भी डाला। अब केवल एक बच रहा: उसका अति प्यारा पुत्र। अन्त में उसने इसको भी उनके पास यह सोचकर भेजा: 'वे मेरे बेटे का आदर करेंगे।' परन्तु असामियों ने आपस में कहा: 'यही उत्तराधिकारी है; आओ, हम इसको मार डालें, और उसकी बपौती हमारी ही हो जाएगी।' और उन्होंने उसको पकड़कर मार डाला और दाखबारी से बाहर फेंक दिया। अब दाखबारी का स्वामी क्या करेगा? वह आकर उन असामियों का नाश कर देगा और दाखबारी दूसरों को सौंप देगा जिससे वे समय पर उसे फसल का हिस्सा दें। यह सुनकर उन्होंने येसु से कहा: "ईश्वर करे ऐसा न हो।"

कोने का पत्थर २७९

येसु ने उनसे कहा: "क्या तुमने धर्मग्रंथ में यह बात कभी नहीं पढ़ी: जिस पत्थर को कारीगरों ने निकम्मा समझकर छोड़ दिया वही कोने का सिरा बन गया है; यह प्रभु द्वारा किया गया है और हमारे देखने में अनोखा है?

"इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ: स्वर्ग का राज्य तुमसे ले लिया जाएगा और ऐसी जाति को दिया जाएगा जो उसका फल उत्पन्न कर सके। और जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा वह चूर-चूर हो जाएगा, पर जिस किसी पर वह पत्थर गिरेगा उसे पीस डालेगा।"

२८० महायाजक और फ़रीसी येसु के दृष्टान्तों को सुनकर समझ गए कि वे हमारे ही विषय में कहते हैं; अतः उन्होंने उनको पकड़ना चाहा परन्तु जनता से डरते थे क्योंकि लोग येसु को नबी मानते थे।

विवाहभोज का दृष्टान्त २८१

फिर येसु उनसे दृष्टान्तों में कहने लगे: "स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है जिसने अपने पुत्र के विवाह में भोज दिया। राजा ने मेहमानों को विवाह में बुलाने के लिए अपने दासों को भेजा। पर उन्होंने आना नहीं चाहा। राजा ने अन्य दासों को दूसरी बार भेजकर कहा: 'मेहमानों से कहो: देखो, मैं अपना भोज तैयार कर चुका हूँ; मेरे बैल और पले हुए पशु मारे गए हैं; सब कुछ तैयार है; अतः विवाहभोज में पधारो।' पर मेहमान बेपरवाही से अपनी-अपनी राह चले गए, कोई अपने खेत को और कोई अपने व्यापार को; दूसरों ने राजा के दासों को पकड़कर और उनका अनादर करके मार डाला। यह सुनकर राजा क्रुद्ध हुआ और अपनी सेनाओं को भेजकर उन हत्यारों को नष्ट कर डाला और उनका नगर जला दिया।

"तब उसने अपने दासों से कहा: 'विवाहभोज तो तैयार है पर मेहमान इसके योग्य नहीं ठहरे। इसलिए चौराहों में जाकर जितने तुम्हें मिलें सब को विवाहभोज में बुला लाओ।' अतः दासों ने सड़कों पर जाकर जितने मिले, भले-बुरे, सब को इकट्ठा किया। और विवाह-मण्डप अतिथियों से भर गया।

विवाह का वस्त्र २८२

"जब राजा अतिथियों को देखने भीतर आया तब वहाँ उसने एक आदमी को देखा जो विवाह का वस्त्र नहीं पहने था, और उससे कहा: 'हे मित्र, बिना विवाह का वस्त्र पहने

तू यहाँ कैसे आया?' पर वह चुप रहा। तब राजा ने दासों से कहा: 'इसके हाथ-पाँव बाँधकर बाहर के अंधकार में डाल दो; वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।' क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं पर चुने हुए थोड़े ही हैं।"

२८३ **कैसर का कर**

वे येसु की ताक में रहे और उन्होंने गुप्तचरों को भेजा जिससे वे धर्मी होने का ढोंग रचकर येसु को किसी कथन के कारण फँसावें और उनको राज्यपाल की सत्ता तथा अधिकार में सौंप दें। उन्होंने येसु से पूछा: "हे गुरु, हम जानते हैं कि आप सत्य बोलते और सत्य ही सिखाते हैं, मुँह-देखी बात नहीं करते, बल्कि सच्चाई से ईश्वर का मार्ग दिखलाते हैं। हमको कैसर को कर देना उचित है या नहीं?" येसु ने उनकी चालाकी जानकर उनसे कहा: "तुम मेरी परीक्षा क्यों लेते हो? मुझे एक दीनार दिखलाओ। यह किसकी छाप और लेख है?" उन्होंने उत्तर दिया: "कैसर की।" तब येसु ने उनसे कहा: "तब जो कैसर का है उसे कैसर को दो, और जो ईश्वर का है उसे ईश्वर को।" वे लोगों के सामने येसु के शब्द दूषित न ठहरा सके, परंतु उनके उत्तर पर अचम्भित होकर चुप रह गए।

२८४ **मृतकों का पुनरुत्थान**

इसके बाद अनेक सदूसी, जो कहते हैं कि मुरदों का पुनरुत्थान होता ही नहीं, येसु के पास आकर उनसे पूछने लगे: "हे गुरु, मूसा ने हमारे लिए लिखा: यदि किसी का भाई, अपनी पत्नी के रहते हुए सन्तानहीन मर जाए, तो उसका भाई उसकी पत्नी को ब्याह कर अपने भाई के लिए सन्तान उत्पन्न करे। अब सात भाई थे, और पहला एक स्त्री को ब्याहकर सन्तानहीन मर गया। दूसरा भी उस स्त्री के साथ ब्याह करके सन्तानहीन ही मर गया। तब तीसरा उसे ब्याह लाया। इस प्रकार सातों भाई सन्तानहीन मर गए। सब के पीछे स्त्री भी चल बसी। तो पुनरुत्थान में वह उनमें से किसकी पत्नी होगी; वह तो सातों की पत्नी रह चुकी है?"

येसु ने उनसे कहा: "इस लोक में पुरुष ब्याह करते और स्त्रियाँ विवाह में दी जाती हैं। पर जो परलोक और मुरदों के पुनरुत्थान के योग्य ठहरेंगे उनमें न पुरुष ब्याह लाएँगे, न स्त्रियाँ विवाह में दी जाएँगी। वे फिर नहीं

मरेंगे ; क्योंकि वे स्वर्गदूतों के बराबर होंगे और पुनरुत्थान के पुत्र होने के कारण ईश्वर के पुत्र होंगे। मुरदे फिर जीवित होंगे, इस बात को मूसा ने भी झाड़ी की कथा में सिखलाया है, जहाँ वह प्रभु को अब्रहाम का ईश्वर, इसाक का ईश्वर और याकूब का ईश्वर कहकर पुकारता है। वह मुरदों का ईश्वर नहीं, जीवितों का ईश्वर है, क्योंकि उसके लिए सभी जीवित हैं। अतः यह तुम्हारी बड़ी भूल है।"

इसपर कुछ शास्त्रियों ने उत्तर दिया: "हे गुरु, आपने ठीक कहा है।" यह सुनकर जनता येसु की शिक्षा पर चकित रह गई।

सब से बड़ी आज्ञा २८५

किसी शास्त्री ने, जिसने उनको विवाद करते सुना था, यह देखकर कि येसु ने उन्हें ठीक उत्तर दिया है, वहाँ आकर उनसे पूछा: "सब से पहली आज्ञा कौन है?" येसु ने उत्तर दिया: "सब से पहली आज्ञा यह है: हे इस्राएल, सुन ; प्रभु, तेरा ईश्वर एक ही ईश्वर है ; प्रभु अपने ईश्वर को तू अपने सारे हृदय से, अपनी सारी आत्मा से, अपने सारे मन से, और अपने सारे बल से प्यार कर। यही पहली आज्ञा है। और दूसरी इसी के समान है: तू अपने पड़ोसी को अपने समान प्यार कर। इनसे बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।" शास्त्री ने उनसे कहा: "हे गुरु! आपने सच कहा है ; एक ही ईश्वर है, और उसके सिवा और कोई नहीं ; उसको सारे हृदय से, सारी बुद्धि से, सारी आत्मा से, और सारे बल से प्यार करना, और पड़ोसी को अपने समान प्यार करना, यह हर प्रकार के होम और यज्ञ से कहीं अधिक महत्त्व रखता है।" यह देखकर कि शास्त्री ने बुद्धिमानी से उत्तर दिया है, येसु ने उससे कहा: "तू ईश्वर के राज्य से दूर नहीं है।"

मसीह, दाऊद का प्रभु २८६

फ़रीसी अभी एकत्र ही थे कि येसु ने उनसे पूछा: "ख्रीस्त के विषय में तुम्हारा क्या विचार है? वह किसका पुत्र है?" उन्होंने उनसे कहा: "दाऊद का पुत्र।" येसु ने उनसे कहा: "तब पवित्र आत्मा की प्रेरणा से दाऊद क्यों उसे प्रभु कहकर इस प्रकार पुकारता है: प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा: जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पैरों तले न डालूँ तब तक मेरी दाहिनी ओर

बैठ जा? यदि दाऊद उसे प्रभु कहता है तो वह उसका पुत्र कैसे है?" उत्तर में एक शब्द भी कोई उनसे न कह सका, न उस दिन से किसी को उनसे और प्रश्न करने का साहस हुआ। और सारी जनता आनन्द से येसु की शिक्षा सुनती रही।

२५—शास्त्रियों और फ़रीसियों को डाँटना

२८७ **भाषण की भूमिका** तब येसु जनता तथा अपने चेलों से कहने लगे: "शास्त्री और फ़रीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं; इसलिए, जो कुछ वे तुमसे कहें, उसे करते और मानते रहो; पर उनके कार्यों के अनुसार मत करो। क्योंकि वे कहते हैं, पर करते नहीं। वे भारी और असह्य बोझ बाँधकर लोगों के कंधों पर लाद देते हैं; पर अपनी उँगली से भी उन्हें खिसकाना नहीं चाहते। वे लम्बी-लम्बी प्रार्थना के बहाने विधवाओं के घर चट कर जाते हैं। उनको कठोर से कठोर दण्ड मिलेगा। वे अपने सब काम लोगों को दिखाने के लिए करते हैं; इसलिए वे अपने ताबीज़ों* को चौड़े बनाते और अपनी झालरों को बढ़ाते हैं। जेवनारों में प्रथम स्थान और सभाघरों में मुख्य आसन और बाज़ारों में प्रणाम-प्रणाम उन्हें प्रिय है और लोगों से स्वामी पुकारा जाना उन्हें भाता है।

"पर तुम स्वामी कहलाना स्वीकार न करो क्योंकि तुम्हारा स्वामी एक है और तुम सब भाई-भाई हो और पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहो क्योंकि तुम्हारा पिता एक है जो स्वर्ग में है†। गुरु कहलाना स्वीकार न करो क्योंकि तुम्हारा गुरु एक है: ख्रीस्त। परन्तु जो तुममें सब से बड़ा है वह

---

* ये ताबीज़ चमड़े के छोटे टुकड़े थे, जिनपर धर्मशास्त्र के वाक्य लिखे हुए थे। धर्मशास्त्र पर अपना विश्वास दिखलाने के लिए फ़रीसी लोग यह चमड़े का टुकड़ा अपने मस्तक और बाएँ हाथ की कलाई पर बाँधते थे।

† हमारे स्वर्ग के पिता से बढ़कर पृथ्वी का कोई पिता नहीं है।

तुम्हारा सेवक होगा। जो अपने को बड़ा मानता है वह छोटा किया जाएगा और जो अपने को छोटा मानता है, वह बड़ा किया जाएगा।"

"कपटी शास्त्रियो और फ़रीसियो, तुमपर शोक! क्योंकि तुम मनुष्यों के लिए स्वर्ग का राज्य बन्द करते हो: न तो तुम ही स्वर्ग के भीतर जाते हो और न जानेवालों को ही भीतर जाने देते हो। **शाप** २८८

"हे कपटी शास्त्रियो और फ़रीसियो, तुमपर शोक! क्योंकि एक चेला बनाने के लिए तुम जल और थल पर भटकते फिरते हो; और जब कोई चेला बन जाता है, तो उसे अपने से दूना नारकी बना देते हो।

"हे अंधे अगुओ, तुमपर शोक! तुम कहते हो: यदि कोई मन्दिर की शपथ खाए तो कोई बात नहीं; परन्तु यदि कोई मन्दिर के सोने की शपथ खाए तो वह शपथ से बँधा रहेगा। हे मूर्खो और अंधो! कौन बड़ा है: सोना या मन्दिर जिससे सोना पवित्र होता है? और जो कोई वेदी की शपथ खाए तो कुछ नहीं है; परन्तु यदि कोई उस दान की शपथ खाए जो वेदी पर है वह शपथ से बँधा रहेगा। हे अंधो! कौन बड़ा है: दान या वेदी जिससे दान पवित्र होता है? इसलिए जो कोई वेदी की शपथ खाए वह वेदी की और जो कुछ उसपर है, उसकी शपथ खाता है; जो कोई मन्दिर की शपथ खाए वह मन्दिर की और उसमें निवास करनेवाले की शपथ खाता है; और जो स्वर्ग की शपथ खाता है वह ईश्वर के सिंहासन की और उसपर बैठनेवाले की शपथ खाता है।

"हे कपटी शास्त्रियो और फ़रीसियो, तुमपर शोक! क्योंकि तुम पुदीने, सौंफ़ और ज़ीरे का दसवाँ अंश तो देते हो पर न्याय, दया और विश्वास जैसी नियम की भारी बातों को छोड़ देते हो। उचित था कि तुम ये बातें करते रहते और उन्हें भी नहीं छोड़ते। हे अंधे अगुओ, मच्छर को तो छानते हो पर ऊँट को निगल जाते हो।

"हे कपटी शास्त्रियो और फ़रीसियो, तुमपर शोक! क्योंकि तुम प्याले और थाली को बाहर तो माँजते हो, परन्तु खुद भीतर अन्याय और व्यभिचार से भरे हो। हे अंधे फ़रीसियो, प्याले और थाली का भीतरी भाग पहिले साफ़ करो जिससे वे बाहर भी साफ़ हो जाएँ।

"हे कपटी शास्त्रियो और फ़रीसियो, तुमपर शोक! क्योंकि तुम पुती हुई क़ब्रों के समान हो जो बाहर से लोगों को सुन्दर दीख पड़ती हैं, पर भीतर

मुरदों की हड्डियों और सब प्रकार की गन्दगी से भरी हैं। इसी प्रकार तुम भी लोगों को बाहर से धार्मिक दीख पड़ते हो, पर भीतर कपट और अधर्म से भरे हो।

"हे कपटी शास्त्रियो और फ़रीसियो, तुमपर शोक! तुम नबियों के मकबरे बनाकर और धर्मात्माओं के स्मारकों को सँवारकर कहते हो: यदि हम अपने पूर्वजों के दिनों में जीते तो उनके साथ नबियों की हत्या के भागी न होते।* इससे तुम स्वयं नबियों के हत्यारों की सन्तान होने का साक्ष्य देते हो।"

२८९ उनका दण्ड "अपने पूर्वजों की कसर पूरी कर दो। ऐ साँपों, ऐ करैतों के बच्चो, तुम नरक के दण्ड से क्योंकर बचोगे। देखो, मैं तुम्हारे पास नबियों, धर्मपंडितों और शास्त्रियों को भेजता हूँ; उनमें से कितनों को तुम मार डालोगे तथा क्रूस पर चढ़ाओगे, कितनों को अपने सभाघरों में कोड़े मारोगे तथा नगर-नगर में सताते रहोगे; जिससे पृथ्वी पर धर्मात्माओं का जितना लोहू बहाया गया, वह सब तुम्हारे सिर पड़े, धर्मी हाबिल के लोहू से लेकर बरखीयस के बेटे ज़करियस के लोहू तक, जिसे तुमने मन्दिर और वेदी के बीच में मार डाला है। मैं तुमसे सच कहता हूँ: इन सब का परिणाम इसी पीढ़ी को भुगतना पड़ेगा।"

२९० येरुसलेम के नाश की भविष्यद्वाणी "हे येरुसलेम, हे येरुसलेम, जो अपने पास भेजे हुए नबियों को मारता और पत्थरवाह करता है! कितनी बार मैंने चाहा कि तेरे पुत्रों को एकत्र कर लूँ जैसे मुर्ग़ी अपने बच्चों को अपने डैनों के नीचे एकत्र करती है परन्तु तूने नहीं चाहा। देखो, तुम्हारा घर उजाड़ छोड़ दिया जाएगा; क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ: अब से तुम मुझको नहीं देखोगे जब तक न कहोगे: धन्य है वह, जो प्रभु के नाम पर आता है।"

२९१ विधवा की दमड़ी फिर येसु ख़ज़ाने के सामने बैठे देख रहे थे कि किस प्रकार जनसमुदाय ख़ज़ाने में सिक्के डाल

---

*जैसे तुम्हारे पूर्वजों ने नबियों को मार डाला वैसे ही तुम मुझे मार डालने की चेष्टा करते हो।

रहा है और अनेक धनी बहुत-सा धन डाल रहे थे। एक कंगाल विधवा ने आकर दो टुकड़े अर्थात् एक अधेला डाला। इसपर येसु ने अपने चेलों को पास बुलाकर उनसे कहा: "मैं तुमसे सच कहता हूँ: इस कंगाल विधवा ने खज़ाने में सिक्के डालनेवालों में सब से अधिक डाला है। क्योंकि सब ने अपनी बहुतायत से कुछ डाला, पर इसने अपनी कंगाली में से, जो कुछ उसके पास था, हाँ, अपनी सारी जीविका तक दे डाली है।"

दिन को येसु मन्दिर में शिक्षा देते थे, परन्तु रात को बाहर निकलकर जैतून नामक पहाड़ पर रहते थे। और सब लोग बड़े तड़के येसु का उपदेश सुनने को मन्दिर में उनके पास आया करते थे। २९२

२६—येरुसलेम के नाश और प्रभु के दूसरे आगमन के विषय में भाषण

भाषण का अवसर २९३

जब येसु मन्दिर से निकल रहे थे तो उनके चेलों में से एक ने उनसे कहा: "हे गुरु, देखिए तो कैसे विशाल पत्थर हैं और कितने भव्य भवन हैं।" येसु ने उत्तर दिया: "यह सब तू देखता है, न? यहाँ पत्थर पर एक पत्थर भी नहीं बचेगा, सब ढाया जाएगा।"

जब येसु मन्दिर के सामने जैतून पहाड़ पर बैठे थे तो पेत्रुस, याकूब, योहन और अंद्रेयस ने अलग जाकर उनसे पूछा: "हमसे कहिए कि यह कब होगा? और इन सब बातों के पूरे होने का कौन-सा लक्षण होगा?"

बड़ी विपत्तियों की भविष्यद्वाणी २९४

येसु ने उन्हें उत्तर दिया: "सावधान रहो कि कहीं कोई तुम्हें बहका न दे। क्योंकि बहुतेरे मेरा नाम लेकर आएँगे और कहेंगे: मैं वही (ख्रीस्त) हूँ, और वे बहुतों को बहकाएँगे। जब तुम युद्ध और उनकी अफवाहें

सुनोगे तो घबराओ मत: क्योंकि ऐसी बातों का होना आवश्यक है, परन्तु इतने में ही अन्त नहीं है। क्योंकि जाति के विरुद्ध जाति और राज्य के विरुद्ध राज्य उठ खड़ा होगा। स्थान-स्थान में भूकम्प होंगे, अकाल पड़ेंगे, और यह सब विपत्तियों का आरम्भमात्र है।

"इसके पहले वे मेरे नाम के कारण तुमपर हाथ उठाएँगे, तुम्हें सताएँगे, सभाघरों में सौंपेंगे, क़ैद करेंगे और राजाओं तथा सूबेदारों के सामने खींच लाएँगे। यह तुम्हारे लिए साक्ष्य देने का अवसर होगा। इसलिए अपने मन में निश्चय कर लो कि हम पहले से यह चिन्ता न करें कि हम क्या उत्तर देंगे ; क्योंकि मैं तुम्हें ऐसी वाणी और ज्ञान दूँगा जिसका सामना अथवा जिसका खंडन तुम्हारा कोई भी विरोधी नहीं कर सकेगा।

"तुम्हारे माँ-बाप, भाई, कुटुम्ब और मित्र भी तुम्हें पकड़वा देंगे ; लोग तुममें से कितनों को मार डालेंगे ; मेरे नाम के कारण सब लोग तुमसे बैर रखेंगे ; फिर भी तुम्हारे सिर का एक बाल भी बाँका न होगा। अपने धीरज से तुम अपनी आत्माओं को बचा लोगे। जब लोग तुम्हें इस नगर में सताएँ तब दूसरे में भाग जाओ। मैं तुमसे सच कहता हूँ: इस्राएल के सब नगरों का भ्रमण पूरा नहीं कर पाओगे कि मनुष्य का पुत्र आ जाएगा। तब बहुतेरों का विश्वास घट जाएगा ; वे एक दूसरे को पकड़वाएँगे, एक दूसरे से बैर रखेंगे। अनेक झूठे नबी उठेंगे और बहुतों को बहकाएँगे। अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठंढा पड़ जाएगा। पर जो अन्त तक दृढ़ रहेगा वही मुक्ति पाएगा। सारे संसार में राज्य के इस सुसमाचार का प्रचार किया जाएगा जिससे कि सब जातियों को उसका साक्ष्य मिले। और तब (संसार का) अन्त आएगा।

२९५ **येरुसलेम का नाश**

"जब तुम देखोगे कि येरुसलेम सेनाओं से घिर रहा है तो जानो कि उसका विनाश होना निकट है। तब जो लोग यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएँ, और जो येरुसलेम में हों वे बाहर निकल आएँ, और जो देहात में हों वे नगर में न जाएँ ; जो छत पर हो, वह अपने घर से कुछ लेने के लिए नीचे उतरकर भीतर न जाए ; और जो खेत में हो वह अपना कपड़ा लेने न लौटे ; क्योंकि ये दण्ड के दिन होंगे जिससे जो कुछ लिखा गया है वह पूरा हो जाए।

"उनपर शोक, जो उन दिनों में गर्भवती और दूध पिलाती होंगी। प्रार्थना करो कि तुम्हारा भागना जाड़े या विश्राम के दिन में न पड़े; क्योंकि देश में बड़ा संकट और इस जाति पर प्रकोप आ पड़ेगा। वे तलवार की धार उतारे जाएँगे, उनको बंदी बनाकर सब जातियों में ले जाया जाएगा और जब तक अन्यजातियों का समय पूरा नहीं होगा तब तक येरुसलेम अन्यजातियों से रौंदा जाएगा।

"उन दिनों में ऐसी घोर विपत्तियाँ आएँगी, जैसी ईश्वर की सृष्टि के आरम्भ से अब तक न हुई हैं और न होंगी। और यदि प्रभु ने उन दिनों को कम न कर दिया होता तो कोई भी प्राणी न बचता। पर उसने जिनको चुना है, उन चुने हुओं के कारण उन दिनों को घटा दिया है। और उस समय यदि कोई तुमसे कहे: देखो, ख्रीस्त यहाँ है! देखो, वह वहाँ है! तो विश्वास मत करो। क्योंकि झूठे ख्रीस्त तथा झूठे नबी उठेंगे और चिह्न तथा चमत्कार दिखाएँगे जिससे यदि हो सके तो चुने हुओं को भी बहकावें। पर तुम सावधान रहो: देखो, मैंने पहले ही से तुम्हें सब बतला दिया है।

यह कब होगा? २९६

"जब ये बातें होने लगेंगी तब सिर उठाकर देखना: तुम्हारी मुक्ति निकट है।"

येसु ने उनसे एक दृष्टान्त भी सुनाया: "अंजीर या किसी भी पेड़ को देखो: जब उनपर फल आने लगते हैं तब तुम जानते हो कि ग्रीष्मकाल निकट ही है। उसी तरह जब तुम इन बातों को होते देखोगे तो जान लेना कि ईश्वर का राज्य निकट है।

"मैं तुमसे सच कहता हूँ: जब तक ये सब बातें घटित न हों इस पीढ़ी का अन्त नहीं होगा। आकाश और पृथ्वी टल जाएगी पर मेरे शब्द नहीं टलेंगे।"

प्रभु येसु का दूसरा आगमन २९७

"उन दिनों के संकट के बाद सूर्य अंधकारमय हो जाएगा, चाँद प्रकाश न देगा, तारे आकाश से गिरेंगे और आकाश की शक्तियाँ हिल जाएँगी। तब आकाश में मनुष्य के पुत्र का चिह्न प्रकट होगा; पृथ्वी की जातियाँ शोक मनाएँगी, और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और महिमा के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगी। वह तुरही की तीव्र आवाज़ के साथ अपने दूतों

को भेजेगा ; वे चारों दिशाओं से, आकाश के कोने-कोने से उसके चुने हुओं को एकत्र करेंगे।

२९८ **यह कब होगा ?** "परन्तु उस दिन और घड़ी के विषय में कोई भी नहीं जानता, न तो स्वर्गवासी दूत और न पुत्र, पर केवल पिता।

२९९ **चौकसी** "सावधान रहो, ऐसा न हो कि तुम्हारे हृदय खुमारी और नशे तथा इस जीवन की चिन्ताओं से भारी हो जाएँ और वह दिन एकाएक तुमपर आ पड़े ; क्योंकि वह दिन एक फंदे की तरह सारी पृथ्वी के निवासियों पर आ गिरेगा। इसलिए जागते रहो और सब समय प्रार्थना करो कि तुम इन सब आनेवाली बातों से बच निकलने और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के योग्य समझे जाओ।"

३०० **दस कुँवारियों का दृष्टान्त** "तब स्वर्ग का राज्य उन दस कुँवारियों के समान होगा जो अपने दीपक लेकर दूलहे से मिलने निकलीं। उनमें से पाँच नासमझ थीं और पाँच समझदार। पाँच नासमझ कुँवारियाँ अपना-अपना दीपक लेकर अपने साथ तेल नहीं लाईं ; परन्तु समझदारों ने दीपक के साथ-साथ अपनी कुप्पियों में तेल भी ले लिया। दूलहे के देर करने पर सब ऊँघने लगीं और सो गईं। आधी रात को आवाज़ आई—'देखो, दूलहा आ रहा है, उससे मिलने जाओ'। तब सब कुँवारियाँ उठीं और अपना-अपना दीपक सँवारने लगीं। इसपर नासमझ कुँवारियों ने समझदारों से कहा: 'अपने तेल में से कुछ हमें दे दो क्योंकि हमारे दीपक बुझ रहे हैं।' समझदारों ने उत्तर दिया: 'क्या जाने कहीं हमारे और तुम्हारे लिए तेल पूरा न हो ; इसलिए दुकान जाकर अपने लिए खरीद लो।' पर ज्योंही वे खरीदने गईं, दूलहा आ पहुँचा: और जो तैयार थीं, उन्होंने उसके साथ विवाह-मंडप के भीतर प्रवेश किया और द्वार बंद हो गया। बाद में दूसरी कुँवारियाँ भी आकर कहने लगीं: 'हे प्रभु, हे प्रभु, हमारे लिए द्वार खोल दीजिए।' इसपर उन्होंने उत्तर दिया: 'मैं तुमसे सच कहता हूँ: मैं तुम्हें नहीं जानता।' इसलिए जागते रहो क्योंकि न तो तुम दिन जानते हो और न घड़ी ही।"

तोड़ों का दृष्टान्त ३०१

"क्योंकि (स्वर्ग का राज्य) उस मनुष्य के समान होगा जिसने दूर देश जाते समय अपने दासों को बुलाकर उन्हें हर एक की सामर्थ्य देखकर अपनी सम्पत्ति सौंप दी: एक को पाँच तोड़े, दूसरे को दो, तीसरे को एक। इसके बाद वह परदेश चला गया। जिसने पाँच तोड़े पाए थे वह जाकर तुरन्त लेन-देन करने लगा तथा उसने पाँच तोड़े और कमाए। जिसने दो पाए थे उसने भी उसी प्रकार दो और कमाए। पर जिसने एक तोड़ा पाया था वह चला गया और उसने मिट्टी खोदकर अपने स्वामी का धन छिपा दिया।

"बहुत समय के बाद उन दासों का स्वामी लौटकर उनसे लेखा लेने लगा। जिसने पाँच तोड़े पाए थे उसने और पाँच तोड़े लाकर कहा: 'हे स्वामी, आपने मुझे पाँच तोड़े सौंपे थे; देखिए, मैंने और पाँच कमाए हैं।' स्वामी ने उससे कहा: 'शाबाश, भले और विश्वसनीय दास, क्योंकि तू थोड़े में ईमानदार निकला है, तुझे बहुत पर अधिकार दूँगा; तू अपने स्वामी के आनन्द में भागी हो।' जिसने दो तोड़े पाए थे वह भी आकर बोला: 'हे स्वामी, आपने मुझे दो तोड़े सौंपे थे; देखिए, मैंने और दो कमाए हैं।' स्वामी ने उससे कहा: 'शाबाश, भले और विश्वसनीय दास, क्योंकि तू थोड़े में ईमानदार निकला है मैं तुझे बहुत पर अधिकार दूँगा; तू अपने स्वामी के आनन्द में भागी हो।' जिसने एक तोड़ा पाया था वह आकर बोला: 'हे स्वामी, मैं जानता हूँ कि आप कठोर हैं। जहाँ आपने नहीं बोया वहाँ काटते हैं, जहाँ नहीं ओसाया वहाँ बटोरते हैं। सो मैंने डर के मारे आपका तोड़ा छिपा रखा है; देखिए, यह आपका है उसे लीजिए।' परंतु स्वामी ने उसको उत्तर दिया: 'ऐ दुष्ट और आलसी दास, तू जानता था कि जहाँ मैं नहीं बोता वहाँ काटता हूँ, और जहाँ नहीं ओसाता वहाँ बटोरता हूँ। तो तेरे लिए उचित था कि तू मेरा रुपया महाजनों को दे देता, जिससे लौटने पर मैं उसे सूद के साथ वसूल कर लेता। इसलिए वह तोड़ा इससे ले लो और जिसके पास दस तोड़े हैं उसी को दे दो; क्योंकि जिसके पास कुछ है उसी को दिया जाएगा और उसकी बढ़ती होगी; परन्तु जिसके पास कुछ नहीं है उससे जो कुछ उसका जान पड़ता है वह भी ले लिया जाएगा। और इस निकम्मे दास को बाहर के अंधेरे में डाल दो। वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा'।"

३०२ **भलों और बुरों का पृथक्करण** "जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के साथ आएगा और उसके साथ सब स्वर्गदूत भी, तब वह अपने महिमा के सिंहासन पर बैठेगा। सब जातियाँ उसके सम्मुख एकत्र हो जाएँगी ; और जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरों से अलग करता है, वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा। वह भेड़ों को अपनी दाईं ओर और बकरों को अपनी बाईं ओर रखेगा।

"तब राजा अपनी दाईं ओर के लोगों से कहेगा : 'हे मेरे पिता के कृपा-पात्रो, आकर उस राज्य के अधिकारी बनो जो जगत् के आरम्भ से तुम्हारे लिए तैयार है। क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे खिलाया ; प्यासा था और तुमने मुझे पिलाया ; परदेशी था और तुमने मेरा सत्कार किया ; नंगा था और तुमने मुझे पहनाया ; रोगी था और तुम मुझे देखने आए ; क़ैदी था और तुम मुझसे मिलने आए।' तब धर्मी लोग उसे यह उत्तर देंगे : 'हे प्रभु, हमने आपको कब भूखा देखा और खिलाया ? कब प्यासा देखा और पिलाया ? हमने आपको कब परदेशी देखा और आपका स्वागत किया, नंगा देखा और आपको पहनाया ? हमने आपको कब रोगी या क़ैदी देखा और आपसे मिलने आए ?' इसपर राजा उन्हें यह उत्तर देगा ! 'मैं तुमसे सच कहता हूँ : जितनी बार तुमने मेरे इन छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ ऐसा किया, उसे तुमने मेरे ही साथ किया।'

"तब राजा अपनी बाईं ओर के लोगों से कहेगा : 'ऐ शापित लोगो, मुझसे दूर हो, उस अनन्त आग में जा पड़ो जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है। क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे नहीं खिलाया ; प्यासा था और तुमने मुझे नहीं पिलाया ; परदेशी था और तुमने मेरा सत्कार नहीं किया ; नंगा था और तुमने मुझे नहीं पहनाया ; रोगी तथा क़ैदी था और तुम मुझसे मिलने नहीं आए।' इसपर वे भी राजा को उत्तर देंगे : 'हे प्रभु, हमने आपको कब भूखा, प्यासा, परदेशी, नंगा, रोगी या क़ैदी देखा और आपकी सेवा नहीं की ?' इसपर राजा उन्हें यह उत्तर देगा : 'मैं तुमसे सच कहता हूँ : जितनी बार तुमने इन छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ नहीं किया, उसे तुमने मेरे साथ भी नहीं किया।' और ये अनन्त दंड में, और धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।"

यहूदियों का अविश्वास ३०३

यद्यपि येसु ने उनके सामने इतने चमत्कार किए थे तथापि उन्होंने येसु पर विश्वास नहीं किया; जिससे जो बात इसायस नबी ने कही वह पूरी हो जाए: "हे प्रभु, क्या कोई है जिसने हमारे सुनाए हुए संवाद पर विश्वास किया हो? जिसपर प्रभु का बाहुबल प्रकट हुआ हो?" इसीलिए वे विश्वास नहीं कर सके, क्योंकि इसायस ने फिर कहा था: "उसने उनकी आँखें अंधी और उनका हृदय कठोर कर दिया; ऐसा न हो कि वे अपनी आँखों से देखें, हृदय से समझें, उनका मन परिवर्तित हो और मैं उन्हें चंगा करूँ।"*

ये शब्द इसायस ने येसु के विषय में कहे थे, क्योंकि उसने उनकी महिमा देखी थी। तब भी मुखियों में से भी बहुतों ने उनपर विश्वास किया; परन्तु फ़रीसियों के कारण वे प्रकट में उन्हें नहीं मानते थे, इसलिए कि कहीं सभाघर से न निकाले जाएँ: क्योंकि ईश्वर की प्रशंसा की अपेक्षा मनुष्यों की प्रशंसा उन्हें अधिक प्रिय थी।

---

* इसायस ने भविष्यद्वाणी की थी कि यहूदी विश्वास नहीं करेंगे। ईश्वर अनादिकाल से यह जानता है। यहूदियों के अविश्वास का कारण उनके हृदय की कठोरता है। जैसे ईश्वर हर एक मनुष्य को पाप करने के लिए स्वतंत्रता देता है वैसे ही उसने यहूदियों को प्रभु येसु को ग्रहण करने या मार डालने के लिए स्वतंत्रता दी थी।

२७—विदा का पहला भाषण

(क) प्रभु येसु, जगत् की ज्योति

३०४ येसु ने पुकारकर कहा: "जो मुझपर विश्वास करता है, वह मुझपर नहीं परन्तु मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता हूँ; और जो मुझे देखता है, वह मेरे भेजनेवाले को देखता है। मैं ज्योति होकर जगत् में आया हूँ, जिससे जो मुझपर विश्वास करे वह अंधकार में न रहे। यदि कोई मेरी बातें सुने और न माने तो उसका विचार मैं नहीं करता हूँ; क्योंकि मैं संसार का विचार करने नहीं वरन् संसार को मुक्त करने आया हूँ। जो मुझे तुच्छ समझता है और मेरे शब्दों को ग्रहण नहीं करता उसका न्यायकर्त्ता एक है; और जो शब्द मैंने सुनाए हैं वेही अन्तिम दिन में उसका विचार करेंगे; क्योंकि मैं अपनी ओर से नहीं कहता पर मेरे भेजनेवाले पिता ने आज्ञा दी है कि मुझे क्या-क्या करना और क्या-क्या कहना चाहिए। मैं जानता हूँ कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन है। इसलिए जो कुछ मैं कहता हूँ वैसेही कहता हूँ जैसे कि पिता ने उसे मुझको बताया है।

(ख) "तुम मुझमें बने रहो और मैं तुममें"

३०५ **"मैं सच्ची दाखलता हूँ"** "मैं सच्ची दाखलता हूँ और मेरा पिता दाखबारी का स्वामी है। जो डाली मुझमें है पर फलती नहीं वह उसे काट देगा; और जो फलती है उसे छाँटेगा जिससे वह अधिक फले। अब तुम उस शिक्षा के कारण शुद्ध हो जिसे मैंने तुमको दिया है। तुम मुझमें बने रहो और मैं तुममें रहूँगा। जैसे डाली, दाखलता में रहे बिना, अपने आप फल नहीं सकती; वैसेही तुम भी मुझमें रहे बिना फलोगे नहीं। मैं दाखलता हूँ और तुम डालियाँ। जो मुझमें रहता है, और जिसमें मैं रहता हूँ, वही बहुत फलता है, क्योंकि मुझसे अलग रहकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। यदि कोई मुझमें न रहे, वह उस डाली के समान है जो फेंक

दी जाती और सूख जाती है; लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं और वे जल जाती हैं। यदि तुम मुझमें रहो और मेरे शब्द तुममें रहें तो जो कुछ चाहो माँगो और वह तुम्हें मिल जाएगा। इसी में पिता की महिमा होती है कि तुम बहुत फल लाओ और मेरे चेले बन जाओ।

भ्रातृ-प्रेम की आज्ञा ३०६

"जैसे पिता ने मुझे प्यार किया है वैसेही मैंने तुमको प्यार किया है। मेरे प्यार में बने रहो। यदि तुम मेरी आज्ञाएँ मानोगे तो मेरे प्यार में बने रहोगे; जिस प्रकार मैंने भी अपने पिता की आज्ञाएँ मानी हैं और उसके प्यार में बना रहता हूँ। ये बातें मैंने तुमसे कही हैं जिससे मेरा आनन्द तुममें हो और तुम्हारा आनन्द पूर्ण हो जाए।

"यह है मेरी आज्ञा: एक दूसरे को प्यार करो जिस प्रकार मैंने तुमको प्यार किया है। इससे बढ़कर किसी का प्रेम नहीं हो सकता, कि कोई अपने मित्रों के लिए अपने प्राण दे दे। यदि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे तो मेरे मित्र होगे। अब मैं तुमको दास न कहूँगा क्योंकि दास को क्या मालूम कि उसका स्वामी क्या करता है; परन्तु मैंने तुमको मित्र कहा है, इसलिए कि जो कुछ मैंने अपने पिता से सुना उसे तुमको बता दिया है। तुमने मुझे नहीं चुना पर मैंने तुमको चुना और नियुक्त किया है कि तुम जाकर फलो और तुम्हारा फल बना रहे, जिससे जो कुछ तुम मेरा नाम लेकर पिता से माँगोगे, वह तुम्हें मिल जाय। मैं तुम्हें यह आज्ञा देता हूँ: एक दूसरे को प्यार करो।

"संसार तुमसे बैर रखेगा" ३०७

"यदि संसार तुमसे बैर रखे तो समझो कि उसने पहले मुझसे बैर रखा है। यदि तुम संसार के होते तो संसार तुमको अपनों के समान प्यार करता; परन्तु तुम संसार के नहीं हो, संसार में से मैंने तुम्हें चुन लिया है, इस कारण संसार तुमसे बैर रखता है। जो बात मैंने तुमसे कही है, उसे स्मरण करो: दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं है; यदि वे मुझको सताते हों तो तुमको भी सताएँगे; यदि वे मेरी बात मानते हों तो तुम्हारी भी मानेंगे। वे यह सब मेरे नाम के कारण तुम्हारे साथ करेंगे, क्योंकि वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते। यदि मैं आया न होता और उनको उपदेश न दिया होता, तो उन्हें

दोष न लगता ; परन्तु अब उनके दोष के विषय में उनके पास कोई बहाना नहीं। जो मुझसे बैर रखता है वह मेरे पिता से भी बैर रखता है। यदि मैंने उनके बीच ऐसे कार्य न किए होते, जैसे किसी दूसरे ने कभी नहीं किए, तो उन्हें दोष न लगता ; परन्तु अब उन्होंने यह सब देखकर भी मुझसे और मेरे पिता से बैर रखा है। यह इसलिए हुआ कि जो उनके नियम में लिखा है यह पूरा हो : बिना कारण उन्होंने मुझसे बैर रखा है।

"जब वह धैर्यदाता आएगा, जिसको मैं तुम्हें पिता के पास से भेजूँगा, सत्य का आत्मा, जो पिता से आता है, वह मेरे विषय में साक्ष्य देगा। और तुम भी साक्ष्य दोगे क्योंकि तुम आरम्भ ही से मेरे साथ रहे हो।

"ये बातें मैंने तुमसे कह दी हैं जिससे कि तुम्हारा विश्वास न डिग जाय। वे तुमको सभाघरों से निकाल देंगे ; हाँ, वह समय आता है जब जो कोई तुम्हारी हत्या करेगा, वह समझेगा कि मैं ईश्वर की सेवा करता हूँ। और वे तुम्हारे साथ ऐसा करेंगे, क्योंकि उन्होंने न तो पिता को जाना है और न मुझको। पर ये बातें मैंने तुमसे कह दी हैं जिससे जब इनका समय आ पहुँचेगा तब तुम्हें स्मरण रहे कि मैंने तुमसे कह दिया था। आरम्भ से मैंने तुमसे ये बातें नहीं कहीं क्योंकि मैं तुम्हारे साथ ही था।

"अब मैं अपने भेजनेवाले के पास जाता हूँ और तुममें से कोई मुझसे नहीं पूछता : आप कहाँ जाते हैं? तुम्हारे हृदयों में तो शोक भर गया है, क्योंकि मैंने तुम्हें यह सब बता दिया है।

(ग) "पवित्र आत्मा तुम्हें सम्पूर्ण सत्य सिखाएगा"

३०८ "मैं तुमसे सच कहता हूँ : तुम्हारे लिए अच्छा है कि मैं जाऊँ, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो धैर्यदाता तुम्हारे पास नहीं आएगा ; पर यदि मैं जाऊँगा, तो उसको तुम्हारे पास भेज दूँगा। जब वह आएगा तो पाप, धार्मिकता और दण्डाज्ञा के विषय में संसार का भ्रम सिद्ध कर देगा – पाप के विषय में, क्योंकि उन्होंने मुझपर विश्वास नहीं किया ; धार्मिकता के विषय में, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ और तुम मुझको फिर न देखोगे ; दण्डाज्ञा के विषय में, क्योंकि इस संसार के शासक का न्याय हो ही चुका है।

"मुझे तुमसे और बहुत-सी बातें कहनी हैं पर अभी तुम उन्हें नहीं सह सकते। पर जब सत्य का आत्मा आएगा, तब वह तुम्हें सम्पूर्ण सत्य सिखाएगा ; क्योंकि वह अपनी ओर से नहीं कहेगा वरन् जो कुछ उसने सुना है, वही कहेगा और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। वह मुझे महिमा देगा क्योंकि जो मेरा है उसमें से लेकर वह तुम्हें समझा देगा। जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है : इसीलिए मैंने कहा कि जो मेरा है उसमें से लेकर वह तुम्हें समझा देगा।

"तुम मुझको फिर देखोगे" ३०९

"थोड़ी देर में तुम मुझको नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर बाद तुम मुझको देखोगे क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।" इसपर उनके कुछ चेले आपस में कहने लगे : "वे हमसे यह क्या कहते हैं : थोड़ी देर में तुम मुझको नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर बाद तुम मुझको देखोगे ; और यह कि मैं पिता के पास जाता हूँ ?" इसलिए वे पूछ रहे थे : "जो थोड़ी देर वे कहते हैं, इसका क्या अर्थ है? हम उनकी बात नहीं समझ पाते हैं।"

येसु ने यह जानकर कि वे मुझसे प्रश्न करना चाहते हैं, उनसे कहा : "तुम आपस में इस बात पर सोच-विचार कर रहे हो कि मैंने कहा है : थोड़ी देर में तुम मुझको नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर बाद तुम मुझको देखोगे। मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ : तुम विलाप करोगे और रोओगे, परन्तु संसार आनन्द मनाएगा ; तुम्हें शोक होगा, परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द में बदल जाएगा। प्रसव निकट आने पर स्त्री दुःखित होती है, क्योंकि उसका समय आ पहुँचा है ; परन्तु जब वह बालक जन्म दे चुकी है, तो संकट का स्मरण नहीं करती क्योंकि उसे आनन्द होता है कि जगत् में एक मनुष्य पैदा हुआ है। वैसेही तुम्हें अभी तो शोक होता है ; परन्तु मैं तुमको फिर देखूँगा, तुम्हारा हृदय आनन्द मनाएगा, और तुम्हारा आनन्द तुमसे कोई भी छीन नहीं सकेगा। उस दिन तुम मुझसे कुछ नहीं पूछोगे। मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ : यदि तुम मेरा नाम लेकर पिता से कुछ माँगोगे तो वह उसे तुम्हें दे देगा। अब तक तुमने मेरा नाम लेकर कुछ नहीं माँगा है ; माँगो और पाओगे, जिससे तुम्हारा आनन्द पूर्ण हो जाए।

३१० **"हिम्मत बाँधो"** "मैंने तुमसे यह सब दृष्टान्तों में कहा है। वह समय आता है, जब मैं तुमसे दृष्टान्तों में और नहीं कहूँगा, पर स्पष्ट रूप से पिता के विषय में बताऊँगा। उस दिन तुम मेरा नाम लेकर माँगोगे और मैं तुमसे नहीं कहता कि मैं तुम्हारे लिए पिता से विनती करूँगा; पिता स्वयं तुमको प्यार करता है, क्योंकि तुमने मुझको प्यार किया, और विश्वास किया है कि मैं ईश्वर की ओर से आया हूँ। मैं पिता की ओर से जगत् में आया हूँ; अब जगत् को छोड़कर पिता के पास जाता हूँ।"

उनके चेलों ने उनसे कहा: "देखिए, अब आप स्पष्ट रूप से बताते हैं, दृष्टान्त में नहीं बोलते। अब हमें मालूम हुआ है कि आप सब कुछ जानते हैं और आपके लिए यह आवश्यक नहीं कि कोई आपसे प्रश्न करे; इसी से हम विश्वास करते हैं कि आप ईश्वर की ओर से आए हैं।"

येसु ने उन्हें उत्तर दिया: "क्या तुम अब विश्वास करते हो? देखो, वह घड़ी आनेवाली है, हाँ, आ ही पहुँची है जब तुम तितर-बितर होकर अपना-अपना रास्ता लोगे और मुझको अकेला छोड़ दोगे; तब भी मैं अकेला नहीं हूँ क्योंकि पिता मेरे साथ है। ये बातें मैंने तुमसे कही हैं जिससे कि तुम मुझमें शान्ति पाओ। संसार में तुम्हें संकट होगा परन्तु हिम्मत बाँधो: मैंने संसार पर विजय पाई है।"

२८—अन्तिम ब्यारी

[बुधवार को]

३११ **यूदस का विश्वासघात** पास्का और बेख़मीर रोटी का पर्व दो दिन के बाद होनेवाला था। तब कैफ़स नामक प्रधानयाजक के आँगन में महायाजक और जाति के प्राचीन एकत्र होकर आपस में परामर्श करने लगे कि हम येसु को किस प्रकार छल से पकड़कर मार डालें। परन्तु वे कहते थे: "पर्व के दिन नहीं, ऐसा न हो कि लोगों में हुल्लड़ मच जाए।"

तब बारहों में से एक, यूदस इसकारियोती ने महायाजकों के पास जाकर कहा : "येसु को आपके हाथ सौंपने के बदले में आप मुझे क्या देंगे?" उन्होंने चाँदी के तीस सिक्के देने का निश्चय किया। उस समय से यूदस इस ताक में था कि येसु को पकड़वाने का अवसर हाथ आए। ३१२

[वृहस्पतिवार को]

ब्यारी की तैयारियाँ ३१३

वेख़मीर रोटी का दिन आया, जिसमें पास्का के मेमने का वलिदान चढ़ाना पड़ता है; येसु ने पेत्रुस और योहन को यह कहकर भेजा : "जाकर हमारे लिए पास्का का मेमना खाने की तैयारी करो।" दोनों ने कहा : "बताइए हम उसे कहाँ तैयार करें?" येसु ने उनसे कहा : "देखो, नगर में आने पर तुम्हें पानी का घड़ा ढोता हुआ एक मनुष्य मिलेगा; उसके पीछे जाओ और जिस घर में वह प्रवेश करे, उसी घर के स्वामी से कहो : गुरु ने तुम्हें कहला भेजा है – अतिथिशाला कहाँ है, जहाँ मैं अपने चेलों के साथ पास्का के मेमने का भोजन करूँ? तब वह तुम्हें एक सजा-सजाया वड़ा भोजनालय दिखा देगा; वहीं तैयार करना।" उन्होंने जाकर जैसा येसु ने कहा था वैसा ही पाया और पास्का का मेमना तैयार किया।

ब्यारी का आरंभ ३१४

पास्का पर्व के पहले यह जानकर कि मेरी वह घड़ी आ पहुँची है कि इस जगत् को छोड़कर पिता के पास जाऊँ, येसु ने अपने चेलों को जो जगत् में थे और जिनको वह प्यार करते आए थे उनको अन्त तक प्यार किया।

जब घड़ी पहुँची तब येसु बारहों प्रेरितों के साथ भोजन करने बैठे और उन्होंने उनसे कहा : "मैं बहुत ही चाहता था कि दुःख भोगने के पहले ही यह पास्का का मेमना तुम्हारे साथ खाऊँ; क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ : जब तक यह ईश्वर के राज्य में पूर्णता न पाए तब तक मैं उसे फिर नहीं खाऊँगा।" तब कटोरा लेकर येसु ने धन्यवाद दिया और कहा : "इसको लेकर आपस में बाँट लो; क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ : जब तक ईश्वर का राज्य न आए तब तक मैं दाख के रस में से और न पिऊँगा।"

३१५ चेलों में कौन बड़ा है?

उनमें यह झगड़ा भी उठा कि हममें से कौन श्रेष्ठ माना जाए। पर येसु ने उनसे कहा: "कौन बड़ा है: वह जो मेज़ पर बैठा है या वह जो सेवा करता है? क्या वह नहीं जो मेज़ पर बैठा है? पर मैं तुम्हारे बीच में एक सेवक ही हूँ।

"तुम्हीं हो जो मेरी परीक्षाओं में मेरा साथ देते रहे; और क्योंकि मेरे पिता ने मुझे राज्य प्रदान किया है, मैं तुमको यह प्रदान करता हूँ कि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज़ पर खाओ-पिओ।"

३१६ प्रभु का अपने चेलों के पैर धोना

व्यारी के समय, जब शैतान सिमोन के बेटे यूदस इसकारियोती के हृदय में यह विचार उत्पन्न कर चुका था कि वह येसु को पकड़वाए, तब येसु ने यह जानकर कि पिता ने मेरे हाथ में सब कुछ दे दिया है और मैं ईश्वर के पास से आया हूँ और ईश्वर के पास जाता हूँ, व्यारी से उठकर अपने कपड़े उतार दिए और एक अंगोछा अपनी कमर में बाँध लिया; तब बर्त्तन में पानी भरकर वे अपने चेलों के पावँ धोने और कमर में बँधे अंगोछे से उन्हें पोंछने लगे।

जब वे सिमोन पेत्रुस के पास आए तो पेत्रुस ने उनसे कहा: "हे प्रभु, क्या आप मेरे पैर धोते हैं?" येसु ने उसे उत्तर दिया: "जो मैं करता हूँ, तू अभी नहीं जानता, पर पीछे समझेगा?" पेत्रुस ने उनसे कहा: "आप मेरे पैर कभी न धोएँगे।" येसु ने उसे उत्तर दिया: "यदि मैं तुझे न धोऊँ तो मेरे साथ तेरा कुछ भी भाग न होगा।" सिमोन पेत्रुस ने उनसे कहा: "हे प्रभु, तब तो मेरे पैर ही नहीं वरन् मेरे हाथ और मेरा सिर भी धोइए।" येसु ने उससे कहा: "जो नहा चुका है, उसे पैर के सिवा और कुछ धोने की ज़रूरत नहीं, वह बिलकुल शुद्ध है। तुम शुद्ध हो परन्तु सब के सब नहीं।" उनको मालूम था कि जो उनके साथ विश्वासघात करेगा वह कौन है; इसलिए उन्होंने कहा: "तुम सब के सब शुद्ध नहीं हो।"

जब वे उनके पैर धो चुके और अपने कपड़े पहनकर फिर बैठ गए तब उनसे कहने लगे: "क्या तुम जानते हो कि मैंने तुम्हारे साथ क्या किया है? तुम मुझे गुरु और प्रभु कहते हो और ठीक ही कहते हो, क्योंकि मैं वही हूँ।

इसलिए यदि मैंने गुरु और प्रभु होकर तुम्हारे पैर धोए हैं तो तुम्हें भी एक दूसरे के पैर धोने चाहिए ; मैंने तो तुम्हें उदाहरण दिया है जिससे जैसे मैंने तुम्हारे साथ किया है वैसेही तुम भी किया करो। मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ: दास अपने प्रभु से बड़ा नहीं है और न भेजा हुआ अपने भेजनेवाले से। यदि तुम ये बातें जानकर उनके अनुसार आचरण करोगे तो धन्य होगे।

यूदस का विश्वासघात प्रकट करना ३१७

"मैं तुम सबके विषय में यह नहीं कहता हूँ ; मैं जानता हूँ कि किन-किन लोगों को मैंने चुना है, परन्तु यह इसलिए होगा कि धर्मग्रंथ का यह कथन पूरा हो: जो मेरे साथ रोटी खाता है वही मुझे गिराएगा। अभी, इसके होने के पहिले ही, मैं तुम्हें यह बता देता हूँ जिससे उसके घटित होने पर तुम विश्वास करो कि मैं कौन हूँ। मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ: जो मेरे भेजे हुए को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है, और जो मुझे ग्रहण करता है वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।"

यह कहते-कहते येसु का मन व्याकुल हो उठा और वे गंभीर होकर बोले — "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ: तुममें से एक मुझे पकड़वा देगा।" चेले एक दूसरे की ओर देखकर संदेह में पड़े कि वे किसके विषय में कहते हैं। इसपर वे बहुत उदास हो गए और एक-एक करके उनसे पूछने लगे: "हे प्रभु, क्या वह मैं हूँ?" परन्तु उन्होंने उत्तर दिया: "जो मेरे साथ थाली में से खाता है वही मुझे पकड़वाएगा। मनुष्य का पुत्र तो जाता है जैसा उसके विषय में लिखा है ; परन्तु उस मनुष्य पर शोक जो मनुष्य के पुत्र के साथ विश्वासघात करेगा। उसके लिए यह अच्छा होता कि वह पैदा न हुआ होता।" इसपर उनके विश्वासघातक यूदस ने उनसे कहा: "हे गुरु, क्या वह मैं हूँ?" उन्होंने उसे उत्तर दिया: "तूने स्वयं कह दिया है।"

पर चेलों में से एक, जिसे येसु प्यार करते थे, येसु की छाती की ओर मुँह किए हुए लेटा था। सो सिमोन पेत्रुस ने उसकी ओर इशारा करके कहा: "यह कौन है जिसके विषय में वे बोलते हैं?" तब उसने येसु की छाती पर झुककर उनसे कहा: "हे प्रभु, वह कौन है?" येसु ने उत्तर दिया: "जिसे मैं रोटी का टुकड़ा डुबोकर दूँगा, वही है।" और रोटी डुबोकर उन्होंने सिमोन ३१८

के बेटे यूदस इसकारियोती को दे दी। यूदस के रोटी लेते ही शैतान ने उसमें प्रवेश किया। तब येसु ने उससे कहा: "जो तू करनेवाला है, उसे शीघ्र ही कर।" परंतु भोजन करनेवालों में से कोई भी नहीं समझ पाया कि येसु ने उससे यह क्यों कहा। किसी-किसी ने सोचा कि यूदस के पास थैली है, इसलिए येसु ने उससे कहा होगा कि पर्व के लिए हमें जो आवश्यक है उसे ख़रीद लेना या गरीबों को कुछ दे देना। वह टुकड़ा लेकर तुरन्त ही बाहर चला गया। उस समय रात थी।

३१९ **परमप्रसाद की स्थापना** उनके भोजन करते समय येसु ने रोटी ली और उसे आशिष देकर तोड़ा तथा अपने चेलों को देकर कहा: "ले लो और खाओ, यह मेरा शरीर है जो तुम्हारे लिए दिया जाता है; यह मेरी स्मृति में किया करो।" इसके बाद उन्होंने कटोरा लेकर धन्यवाद दिया और यह कहते हुए उनको दिया: "तुम सब इसमें से पिओ। क्योंकि यह नूतन व्यवस्थान का मेरा लोहू है जो बहुतों की पाप-क्षमा के लिए बहाया जा रहा है।"

३२० **प्रभु येसु की नई आज्ञा** यूदस के बाहर चले जाने के बाद येसु ने कहा: "अब मनुष्य के पुत्र की महिमा हुई और उसके द्वारा ईश्वर की महिमा हुई है। यदि उसके द्वारा ईश्वर की महिमा हुई है तो ईश्वर उसे अपनी महिमा से विभूषित करेगा; और वह शीघ्र ही उसे महिमान्वित करेगा। मेरे बच्चो, और थोड़ी देर मैं तुम्हारे साथ हूँ। तुम मुझे ढूँढ़ोगे और जैसे मैंने यहूदियों से कहा वैसेही मैं अब तुमसे भी कहता हूँ: जहाँ मैं जाता हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते। मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ: तुम एक दूसरे को प्यार करो; जैसे मैंने तुम्हें प्यार किया, वैसेही तुम भी एक दूसरे को प्यार करो। यदि तुम एक दूसरे को प्यार करोगे, तो उसी से सब लोग जान लेंगे कि तुम मेरे चेले हो।"

३२१ **चेलों की भावी निर्बलता** तब येसु ने उनसे कहा: "इसी रात को तुम सब मेरे कारण विचलित होगे, क्योंकि लिखा है: मैं गड़ेरिये पर हाथ उठाऊँगा और झुंड की भेड़ें तितर-बितर हो

जाएँगी। पर पुनर्जीवित होने के बाद मैं तुमसे पहले ही गलीलिया में जाऊँगा।"

फिर प्रभु ने कहा: "सिमोन, सिमोन, देख, तुम लोगों को गेहूँ की तरह फटकने का अधिकार शैतान को मिला है। परन्तु मैंने तेरे लिए प्रार्थना की है कि तेरा विश्वास नष्ट न हो ; जब तेरा मन फिरे तो अपने भाइयों को सँभालना।" पेत्रुस ने येसु से कहा: "हे प्रभु, मैं आपके साथ क़ैदखाने में जाने और मरने को भी तैयार हूँ। चाहे सभी विचलित हो जाएँ, मैं तो कभी नहीं हूँगा।" येसु ने उसे उत्तर दिया: "मैं तुझसे सच कहता हूँ: आज इसी रात को मुर्ग़े के दो बार बाँग देने के पहले ही तू मुझे तीन बार अस्वीकार करेगा।" पर पेत्रुस और भी ज़ोर देकर कहने लगा: "चाहे मुझे आपके साथ मरना भी पड़े किंतु मैं आपको अस्वीकार नहीं करूँगा।" और सबने वैसेही कहा। ३२२

येसु ने उनसे कहा: "जब मैंने तुम्हें थैली, झोली और जूतों के बिना भेजा था, क्या तुम्हें किसी बात की कमी हुई थी?" उन्होंने कहा: "किसी बात की नहीं।" तब येसु ने उनसे कहा: "परन्तु अब जिसके पास थैली है वह उसे ले ले और अपनी झोली भी ; और जिसके पास थैली नहीं है वह अपना कपड़ा बेचकर तलवार खरीद ले। क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ: मेरे विषय में जो बात लिखी है – वह दुष्टों में गिना गया है ; यह मुझमें अवश्य ही पूरी होगी।" चेलों ने कहा: "हे प्रभु, देखिए, यहाँ दो तलवारें हैं।" परन्तु येसु ने कहा: "अब बहुत हुआ।" ३२३

२६—विदा का दूसरा भाषण

(क) प्रभु येसु का अपने चेलों से नया संबंध

३२४ "तुम्हारा हृदय न घबराय। तुम ईश्वर पर विश्वास करते हो, तो मुझपर भी विश्वास करो। मेरे पिता के यहाँ बहुतेरे निवासस्थान हैं। यदि नहीं होते, तो मैं तुमसे कह देता, क्योंकि मैं तुम्हारे लिए स्थान तैयार करने जाता हूँ। वहाँ जाकर तुम्हारे लिए स्थान तैयार करने के बाद मैं फिर आऊँगा और तुमको अपने पास ले जाऊँगा जिससे कि जहाँ मैं हूँ वहीं तुम भी रहो। और जहाँ मैं जाता हूँ वहाँ का मार्ग तुम जानते हो।"

थोमस ने उनसे कहा: "हे प्रभु, हम तो यह भी नहीं जानते कि आप कहाँ जाते हैं फिर वहाँ का मार्ग कैसे जान सकते हैं?" येसु ने उससे कहा: "मैं हूँ मार्ग, सत्य और जीवन; मेरे बिना कोई भी पिता के पास नहीं जा सकता। यदि तुमने मुझे जान लिया है, तो मेरे पिता को भी जानोगे; तुम लोग उसे जान ही चुके हो और तुमने उसे देख भी लिया है।"

फ़िलिप ने उनसे कहा: "हे प्रभु, हमें पिता को दिखा दीजिए; हमारे लिए इतना ही बहुत है।" येसु ने उनसे कहा: "इतने दिनों से मैं तुम्हारे साथ हूँ फिर भी तुम मुझे नहीं जानते? हे फ़िलिप, जो मुझे देखता वह पिता को भी देखता है। तू यह क्या कहता है: हमें पिता को दिखा दीजिए? क्या तुम विश्वास नहीं करते कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझमें है? जो बातें मैं तुमसे कहता हूँ, मैं अपनी ओर से नहीं कहता; पिता मुझमें रहकर मेरे द्वारा अपने कार्य कर दिखाता है। यदि तुम मेरे इस कथन पर विश्वास नहीं करते कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझमें, तो इन कार्यों ही के कारण विश्वास करो।

"मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ: जो मुझपर विश्वास करता है, वह स्वयं इन कार्यों को करेगा जिन्हें मैं करता हूँ, और इनसे भी महान् कार्य करेगा क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ। जो कुछ तुम मेरा नाम लेकर पिता से माँगोगे उसे मैं करूँगा, जिससे कि पुत्र में पिता की महिमा हो। जो कुछ भी तुम मेरा नाम लेकर मुझसे माँगोगे, उसे मैं पूरा करूँगा।"

(ख) पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा

"यदि तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरी आज्ञाएँ मानो। मैं पिता ३२५
से निवेदन करूँगा और वह तुम्हें एक दूसरा धैर्यदाता देगा जो सदा तुम्हारे साथ रहे: वह सत्य का आत्मा है, जिसको संसार ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि वह उसे न तो देखता और न जानता है। पर तुम उसको जानोगे क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहेगा और तुममें वास करेगा।

"मैं तुम्हें अनाथ छोड़कर न जाऊँगा, तुम्हारे पास आऊँगा। थोड़ी देर में संसार मुझे नहीं देख सकेगा; परन्तु तुम मुझे देखते हो; क्योंकि मैं जीता हूँ और तुम भी जिओगे। उस दिन तुम जानोगे कि मैं पिता में हूँ और तुम मुझमें हो और मैं तुममें। जो मेरी आज्ञाएँ जानकर उनका पालन करता है वही मुझे प्यार करता है; और जो मुझे प्यार करता है उसे मेरा पिता प्यार करेगा; और मैं भी उसको प्यार करूँगा और उसके लिए अपने आपको प्रकट करूँगा।"

यूदस ने, जो इसकारियोती नहीं था, उनसे कहा: "हे प्रभु, यह कैसे होगा कि आप हमारे लिए तो प्रकट होंगे लेकिन संसार के लिए नहीं?" येसु ने उसे उत्तर दिया: "यदि कोई मुझे प्यार करे तो वह मेरी शिक्षा मानेगा; और मेरा पिता उसको प्यार करेगा; तब हम उसके पास आएँगे और उसके साथ निवास करेंगे। जो मुझको प्यार नहीं करता, वह मेरी शिक्षा नहीं मानता; जो शिक्षा तुम सुनते हो, वह मेरी नहीं, वरन् मेरे भेजनेवाले पिता की है।

"तुम्हारे साथ रहते मैंने इतना ही कहा है। परंतु वह धैर्यदाता, वह पवित्र आत्मा जिसको पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें यह सब समझा देगा और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है इसका तुम्हें स्मरण कराएगा।

"तुम्हारा हृदय न घबराए" ३२६

"मैं तुम्हारे लिए शान्ति छोड़ जाता हूँ, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ; जैसी शान्ति संसार देता है, वैसी मैं तुम्हें नहीं देता हूँ। तुम्हारा हृदय न घबराए, न डरे। तुमने सुना है कि मैंने तुमसे कहा: मैं चला जाता हूँ और फिर तुम्हारे पास आता हूँ। यदि तुम मुझे प्यार करते तो इससे अवश्य ही आनन्दित होते कि मैं अपने पिता के पास जा रहा हूँ; क्योंकि पिता मुझसे महान् है। मैंने तुमसे यह पहले ही कह दिया है जिससे उसके घटित होने पर तुम विश्वास

करो। मैं अब तुमसे अधिक बातें नहीं करूँगा क्योंकि इस संसार का शासक आ रहा है। मुझपर उसका वश नहीं चलता। पर यह इसलिए होता है कि संसार जान ले कि मैं पिता को प्यार करता हूँ और जैसा पिता ने मुझे आदेश दिया है वैसाही करता हूँ। उठो, यहाँ से चलें।"

(ग) महापुरोहित ख्रीस्त की प्रार्थना

३२७ **"अपने पुत्र को महिमा दे"** यह सब कहने के बाद येसु स्वर्ग की ओर आँखें उठाकर बोले: "हे पिता, घड़ी आ पहुँची है ; अपने पुत्र को महिमा दे जिससे तेरा पुत्र तुझे महिमा दे ; तूने उसे सब प्राणियों पर अधिकार दिया है जिससे कि जिनको तूने उसे सौंपा है, उन्हें वह अनन्त जीवन प्रदान करे। अनन्त जीवन यही है कि वे तुझे, एक ही सच ईश्वर को जानें और जिसे तूने भेजा है, येसु ख्रीस्त को भी जानें। पृथ्वी पर मैंने तेरी महिमा की है ; जो कार्य तूने मुझे करने को दिया, उसे मैंने पूरा किया है ; हे पिता, अब अपने यहाँ मुझे महिमान्वित कर, वही महिमा देकर जो जगत् की सृष्टि के पहले तेरे यहाँ मेरी थी।

३२८ **"वे एक हों"** "मैंने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रकट किया है जिन्हें तूने संसार में से मुझे दिया है। वे तेरे ही थे और तूने मुझे उनको दिया ; और उन्होंने तेरी शिक्षा मानी है। अब वे जान गए कि जो कुछ तूने मुझे दिया है, वह सब तेरी ओर से है ; जो संदेश तूने मुझे दिया उसे मैंने उन्हें दे दिया ; और उन्होंने इसे ग्रहण किया और सचमुच जान लिया है कि मैं तुझसे आया हूँ, और उन्होंने विश्वास किया है कि तूने मुझे भेजा है।

"मैं इनके लिए विनती करता हूँ ; संसार के लिए मैं विनती नहीं करता, वल्कि उनके लिए जिनको तूने मुझे दिया, क्योंकि वे तेरे ही हैं और जो कुछ मेरा है वह तेरा है और जो तेरा है वह मेरा है ; इनमें मेरी महिमा पूर्ण हुई है। अब मैं संसार में और नहीं रहूँगा ; परन्तु वे संसार में रहते हैं और मैं तेरे पास आता हूँ।

"हे पवित्र पिता, जिनको तूने मुझे दिया है उनको अपने नाम के सामर्थ्य से सुरक्षित रख ; जिससे जैसे हम एक हैं वैसेही वे भी एक हों। जिनको तूने मुझे दिया है, उन्हें मैंने तेरे नाम के सामर्थ्य से सुरक्षित रखा है, जब तक मैं उनके

साथ रहा। मैंने उनकी रक्षा की है और विनाश के पुत्र को छोड़ उनमें से कोई नष्ट नहीं हुआ है, जिससे धर्मग्रंथ पूरा हो। पर अब मैं तेरे पास आता हूँ; संसार में रहते हुए मैं उन्हें यह सब बताता हूँ जिससे मेरा आनन्द उन्हें पूर्णतः प्राप्त हो।

"सत्य के द्वारा उनको पवित्र कर" ३२९

"मैंने उनके पास तेरा संदेश पहुँचा दिया है और संसार ने उनसे वैर रखा क्योंकि वे संसार के नहीं हैं; जैसे मैं भी संसार का नहीं हूँ। मैं यह विनती नहीं करता कि तू उनको जगत् से उठा ले, परन्तु यही कि तू उन्हें बुराई से बचा। वे संसार के नहीं हैं, जैसे मैं भी संसार का नहीं हूँ। सत्य के द्वारा उनको पवित्र कर। तेरी शिक्षा ही सत्य है। जैसे तूने मुझको संसार में भेजा, वैसेही मैंने भी उनको संसार में भेजा है। उन्हीं के लिए मैं अपने को पवित्र करता हूँ, जिससे वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किए जाएँ।

"मैं न केवल इन्हींके लिए प्रार्थना करता हूँ, वरन् उनके लिए भी जो इनकी शिक्षा मानकर मुझपर विश्वास करेंगे; सब के सब एक हों, हे पिता, जैसे कि तू मुझमें है और मैं तुझमें; वे भी हममें एक हो जाएँ, जिससे संसार विश्वास करे कि तूने मुझे भेजा है।

"मैं उनमें और तू मुझमें" ३३०

"जो महिमा तूने मुझे दी है उसे मैंने उन्हें दिया है जिससे वे एक हों जैसे हम भी एक हैं; मैं उनमें और तू मुझमें, जिससे वे पूर्ण रूप से एक हो जाएँ और संसार जान ले कि तूने मुझे भेजा है और उनको प्यार किया है जैसे तूने मुझे भी प्यार किया है।

"हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिनको तूने मुझे दिया है, जहाँ मैं हूँ वे भी मेरे साथ रहें जिससे वे मेरी महिमा देखें, जो तूने मुझे दी है; क्योंकि तूने जगत् की सृष्टि के पहले ही मुझको प्यार किया है। हे न्यायी पिता, संसार ने तुझको नहीं जाना, परन्तु मैंने तुझको जाना; और ये भी जान गए कि तूने मुझको भेजा है। मैंने तेरा नाम उनपर प्रकट किया है और उसे फिर प्रकट करूँगा जिससे कि तूने मुझको जो प्यार दिया है, वह उनमें रहे और मैं भी उनमें रहूँ।"

३०—यहूदियों के द्वारा प्राणदंड की आज्ञा

३३१ **गेतसेमनी में प्रभु येसु की प्राणपीड़ा**

येसु बाहर निकले और केद्रन का नाला पारकर अपनी रीति के अनुसार जैतून पहाड़ पर गए; उनके चेले भी उनके पीछे हो लिए। वे गेतसेमनी नामक एक बारी में आए और उन्होंने अपने चेलों से कहा: "तुम यहाँ बैठे रहो जब तक मैं प्रार्थना कर आऊँ।" और वे पेत्रुस, याकूब और योहन को अपने साथ ले गए। तब येसु भयभीत और व्याकुल होने लगे और उन्होंने उनसे कहा: "मेरी आत्मा इतनी उदास है कि मैं मरने पर हूँ। यहाँ ठहरो और जागते रहो।"

फिर येसु कुछ आगे बढ़कर भूमि पर गिर पड़े और इस प्रकार प्रार्थना करने लगे: "यदि हो सके तो यह घड़ी मुझसे टल जाए।" और उन्होंने कहा: "हे अब्बा (हे पिता), तुझसे सब कुछ हो सकता है; यह कटोरा मुझसे हटा ले; परन्तु जो मैं चाहता हूँ वही नहीं, वरन् जो तू चाहता है वही हो।" स्वर्ग से येसु को एक दूत दीख पड़ा जिसने उनको ढाढ़स बँधाया। तब प्राणपीड़ा में होने के कारण उन्होंने और भी एकाग्र होकर प्रार्थना की, और उनका पसीना रक्त की बूँदों की तरह धरती पर टपक रहा था।

फिर अपने चेलों के पास लौटकर येसु ने उनको सोते पाया; उसने पेत्रुस से कहा: "क्या तुम घड़ी-भर भी मेरे साथ न जाग सके? जागते रहो और प्रार्थना करो जिससे तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है परन्तु शरीर कमज़ोर है।" फिर दूसरी बार जाकर वे यह प्रार्थना करने लगे: "हे मेरे पिता, यदि यह कटोरा मेरे पिए बिना मुझसे न हट सके, तो तेरी इच्छा पूरी हो।" और लौटकर उन्होंने अपने चेलों को फिर सोते पाया क्योंकि उनकी आँखें भारी थीं। उनको जगाए बिना येसु चले आए और उन्होंने उसी बात को कहते हुए तीसरी बार प्रार्थना की। इसके बाद अपने चेलों के पास लौटकर उन्होंने उनसे कहा: "अब सोओ और आराम करो। देखो, घड़ी आ पहुँची है; मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ विश्वासघात से सौंपा जाएगा। उठो, चलें; जो मुझसे विश्वासघात करेगा वह निकट आ गया है।"

प्रभु येसु की गिरफ़्तारी ३३२

उनके विश्वासघाती यूदस को यह जगह मालूम थी, क्योंकि येसु अपने चेलों के साथ वहाँ जाया करते थे। अतः यूदस पलटन और महायाजकों तथा फ़रीसियों के प्यादों को लेकर दीपक, मशाल और हथियार के साथ वहाँ आया। उसने यह कहकर उन्हें संकेत दिया था: "जिसका मैं चुम्बन करूँ, वही है; उसे पकड़ लेना और सावधानी से ले जाना।" तुरन्त ही येसु के पास जाकर यूदस ने कहा: "प्रणाम गुरु", और उसने उनका चुम्बन किया। येसु ने उससे कहा: "मित्र, तू क्या करने आया है? यूदस, क्या तू चुम्बन देकर मनुष्य के पुत्र के साथ विश्वासघात करता है?"

तब येसु, अपने ऊपर गुज़रनेवाली सभी बातें जानकर, आगे बढ़े और उनसे कहा: "किसे ढूँढ़ते हो?" उन्होंने येसु को उत्तर दिया: "येसु नाजरी को।" येसु ने उनसे कहा: "मैं ही हूँ।" उनका विश्वासघाती यूदस भी प्यादों के साथ खड़ा था। जैसे ही येसु ने कहा: "मैं ही हूँ", लोग पीछे हटकर भूमि पर गिर पड़े। येसु ने फिर उनसे पूछा: "किसे ढूँढ़ते हो?" वे बोले: "येसु नाजरी को।" येसु ने उत्तर दिया: "मैं तो तुमसे कह चुका हूँ कि मैं ही हूँ; इसलिए यदि तुम मुझको ढूँढ़ते हो, तो इनको जाने दो।" यह इसलिए हुआ कि उनका यह कथन पूरा हो: "जिनको तूने मुझे दिया है, उनमें से मैंने एक को भी नहीं खो दिया है।"

तब उन्होंने हाथ बढ़ाकर येसु को पकड़ लिया। जो येसु के पास खड़े थे, वे यह देखकर कि क्या होनेवाला है, बोल उठे: "हे प्रभु, क्या हम तलवार चलाएँ?" और सिमोन पेत्रुस ने तलवार खींचकर उसे प्रधानयाजक के एक दास पर चलाया और उसका दाहिना कान काट डाला। उस दास का नाम मलकुस था। पर येसु ने कहा: "यहीं तक रहने दो", और उसका कान छूकर उसे चंगा कर दिया।

तब येसु ने पेत्रुस से कहा: "अपनी तलवार म्यान में रख ले; क्योंकि जो तलवार उठाएँगे वे सब तलवार ही से मरेंगे। जो कटोरा मुझे मेरे पिता ने दिया है क्या मैं उसे न पिऊँ? क्या तू सोचता है कि मैं अपने पिता से नहीं माँग सकता हूँ और वह इसी क्षण स्वर्गदूतों की बारह सेनाओं से अधिक मेरे पास भेज देगा? लेकिन तब धर्मग्रंथ कैसा पूरा होगा? इसमें तो लिखा है कि ऐसा होना आवश्यक है।"

इतने में महायाजक, मन्दिर के अधिकारी और प्राचीन येसु के पास आ गए थे ; उनसे येसु ने कहा : "क्या तुम मुझको डाकू समझकर तलवारें और लाठियाँ लिए निकले हो। मैं प्रतिदिन तुम्हारे सामने मन्दिर में शिक्षा दिया करता था और तुमने मुझपर हाथ नहीं उठाया ; परन्तु यह तुम्हारी घड़ी है और अंधेरे की सत्ता।"

तब पलटन, शतपति और यहूदियों के प्यादों ने येसु को पकड़कर बाँध लिया। यह सब इसलिए हुआ कि नबियों ने जो लिखा था वह पूरा हो। तब सभी चेले येसु को छोड़कर भाग गए।

एक युवक अपने नंगे वदन पर चादर ओढ़े, येसु के पीछे हो लिया ; सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया, पर वह चादर फेंककर नंगा ही उनके हाथ से भाग निकला।

३३३ **अन्नस और कैफ़स के सामने** वे येसु को पहले अन्नस के पास ले चले ; क्योंकि वह उस साल के प्रधानयाजक कैफ़स का ससुर था। अन्नस ने येसु को बंधे-बंधाए प्रधानयाजक कैफ़स के पास भेज दिया। कैफ़स वही था जिसने यहूदियों को यह सलाह दी थी : "यह अच्छा है कि जाति के लिए एक ही मनुष्य मर जाए।" वे येसु को प्रधानयाजक के पास ले गए ; जहाँ सब याजक, शास्त्री और प्राचीन इकट्ठे हुए।

३३४ सिमोन पेत्रुस और एक दूसरा चेला येसु के पीछे-पीछे चले। वह चेला प्रधानयाजक का परिचित होने के कारण येसु के साथ प्रधानयाजक के आँगन में चला गया ; पर पेत्रुस बाहर द्वार पर खड़ा रहा। बाद में वह दूसरा चेला, जो प्रधानयाजक का परिचित था, बाहर गया और द्वारपालिन से कहकर पेत्रुस को भीतर लाया।

जाड़े के कारण दास और प्यादे कोयले की आग सुलगाकर खड़े-खड़े ताप रहे थे। पेत्रुस भी उनके पास खड़ा हुआ ताप रहा था। इतने में प्रधान-याजक की एक दासी आई ; उसने पेत्रुस को आग तापते देखा और उसको ध्यान से देखकर कहने लगी : "तू भी येसु नाजरी के साथ था।" पर उसने यह कहकर इनकार किया : "मैं तो न जानता और न समझता हूँ कि तू क्या बक रही है।" इसके बाद वह बाहर निकलकर अलिंद में आया और मुर्ग़े ने बाँग दी।

प्रधानयाजक येसु से उनके चेलों और उनकी शिक्षा के विषय में पूछने लगा। येसु ने उसे उत्तर दिया: "मैं संसार के सामने प्रकट रूप से बोला हूँ, मैंने सदा सभाघर और मन्दिर में, जहाँ सब यहूदी एकत्र होते हैं, शिक्षा दी है और गुप्त रूप से मैंने कुछ नहीं कहा। आप मुझसे क्यों पूछते हैं? उन्हीं से पूछ लीजिए जिन्होंने मुझे सुना है। वे जानते हैं कि मैंने क्या-क्या कहा है।" इसपर पास के खड़े प्यादों में से एक ने येसु को थप्पड़ मारकर कहा: "तू प्रधानयाजक को इस प्रकार उत्तर देता है?" येसु ने उसे उत्तर दिया: "यदि मैंने गलत कहा है तो गलती बता; परन्तु यदि ठीक कहा है तो तू मुझे क्यों मारता है?" ३३५

फाटक से निकलते समय एक दूसरी दासी पेत्रुस को देखकर पास खड़े लोगों से कहने लगी: "यह भी येसु नाजरी के साथ था।" पेत्रुस ने शपथ खाकर इनकार किया: "मैं उस व्यक्ति को नहीं जानता।" ३३६

कुछ देर बाद आसपास खड़े लोगों ने पेत्रुस से कहा: "सचमुच तू भी उनमें से एक है क्योंकि तेरी बोली ही तुझे प्रकट किए देती है।" जिसका कान पेत्रुस ने काट डाला था, उसी के एक संबंधी ने, जो प्रधानयाजक के प्यादों में से एक था, पेत्रुस से कहा: "क्या मैंने तुझे बारी में उसके साथ नहीं देखा था?" परन्तु पेत्रुस अपने को धिक्कारने और शपथ खाने लगा: "जिस आदमी के विषय में तुम कहते हो मैं उसे जानता भी नहीं।" उसी क्षण मुर्गे ने फिर बाँग दी। तब प्रभु ने घूमकर पेत्रुस की ओर देखा, और पेत्रुस को येसु का यह कहना याद आया: "मुर्गे के दो बार बाँग देने के पहले ही तू मुझे तीन बार अस्वीकार करेगा।" और वह बाहर निकलकर फूट-फूटकर रोने लगा।

प्रभु येसु का अत्याचार सहना ३३७
[बृहस्पतिवार की रात को]

जो प्यादे येसु का पहरा करते थे, वे उनकी हँसी उड़ाकर उन्हें पीटने और उनपर थूकने लगे। वे उनकी आँखें ढँककर उनके मुँह पर मारते थे, और पूछ रहे थे: "भविष्यद्वाणी कर, किसने तुझे मारा है? वे और भी बहुत-सी निन्दा-भरी बातें उनके विरुद्ध कहते थे।

प्राणदंड की आज्ञा ३३८
[शुक्रवार]

भोर होते ही सब महायाजक और जाति के प्राचीन येसु को मार डालने के लिए परामर्श करने लगे।

महायाजक और सारी सभा* येसु के विरुद्ध साक्ष्य की खोज में थे कि उनको प्राणदण्ड दें, पर उनको कोई साक्ष्य न मिला। बहुतेरे येसु के विरुद्ध झूठी गवाही तो देते थे, परंतु उनकी गवाहियाँ मेल नहीं खाती थीं। अन्त में कई लोग उठकर येसु के विरुद्ध यह झूठी गवाही देने लगे: "हमने उसे यह कहते सुना है: मैं हाथ के बनाए हुए इस मन्दिर को तोड़ डालूँगा और तीन दिन में बिना हाथ के बनाए दूसरे को खड़ा करूँगा।" परन्तु, इसमें भी उनकी गवाहियाँ मेल नहीं खाती थीं।

तब प्रधानयाजक ने खड़े होकर येसु से पूछा: "ये लोग तेरे विरुद्ध जो कुछ कहते हैं क्या तेरे पास उसका कोई उत्तर नहीं है?" परन्तु येसु चुप रहे और उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। प्रधानयाजक ने फिर उनसे कहा: "तुझे जीवित ईश्वर की शपथ, हमें बता: क्या तू ख्रीस्त है, ईश्वर का पुत्र?" येसु ने उनसे कहा: "यदि मैं आपसे कहूँ तो आप मेरा विश्वास न करेंगे, और यदि मैं प्रश्न करूँ तो आप न तो उत्तर देंगे और न मुझे जाने देंगे। पर अब से मनुष्य का पुत्र सर्वशक्तिमान् ईश्वर की दाहिनी ओर बैठा रहेगा।" तब सब के सब बोल उठे: "तो क्या तू ईश्वर का पुत्र है?" येसु ने कहा: "आपही कहते हैं कि मैं हूँ। मैं आप लोगों से कहता हूँ: आप मनुष्य के पुत्र को ईश्वर के सामर्थ्य की दाहिनी ओर बैठे और आकाश के बादलों पर आते देखेंगे।"† इसपर प्रधानयाजक ने अपना वस्त्र फाड़कर कहा: "इसने ईशनिन्दा की है; हमें अब गवाहों की क्या ज़रूरत? अभी आप लोगों ने ईशनिन्दा सुनी है। आप लोगों का क्या विचार है?" उन्होंने उत्तर दिया: "यह प्राणदंड के योग्य है।"

३३९ यूदस की आत्महत्या तब येसु का विश्वासघाती यूदस, यह देखकर कि उन्हें प्राणदंड की आज्ञा मिली है, पछताने लगा; और महायाजकों और प्राचीनों को चाँदी के तीस सिक्के वापस देते

---

* यहूदियों की महासभा के ७१ सदस्य तीन प्रकार के थे: महायाजक, शास्त्री और जाति के प्राचीन।

† विचार के दिन (क़यामत) प्रभु येसु, सारी मनुष्यजाति के सर्वशक्तिमान् विचारकर्त्ता होकर आएँगे।

हुए कहा – "मैंने निर्दोष लोहू का सौदा करके पाप किया है।" परन्तु उन्होंने उत्तर दिया: "हमें इससे क्या? इसकी चिन्ता तू ही कर।" तब चाँदी के सिक्के मन्दिर में फेंककर यूदस ने जाकर फाँसी लगा ली। महायाजकों ने चाँदी के सिक्कों को लेकर कहा: "इन्हें खज़ाने में रखना उचित नहीं क्योंकि यह लोहू का दाम है।"

अतः आपस में सलाह करके उन्होंने सिक्कों से परदेशियों के क़ब्रस्तान के लिए कुम्हार की ज़मीन खरीदी। इस कारण वह ज़मीन आज तक हकेल्दमा अर्थात् लोहू की ज़मीन कहलाती है। तब नबी येरेमियस का वचन पूरा हुआ: "जिसका दाम इस्राएल के पुत्रों ने ठहराया था उन्होंने वही दाम अर्थात् उन तीस सिक्कों को ले लिया और कुम्हार की ज़मीन के लिए दिया, जैसा कि प्रभु ने आदेश दिया था।" ३४०

३१ — रोमन न्यायालय में प्राणदंड की आज्ञा

पिलातुस के सामने पहली पेशी ३४१

इसके बाद वे येसु को कैफ़स के यहाँ से राज्यपाल के भवन ले गए। वह भोर का समय था और उन्होंने भवन में प्रवेश नहीं किया जिससे वे अशुद्ध न हो जाएँ और पास्का का मेमना खा सकें। अतः पिलातुस ने उनके पास बाहर आकर पूछा: "इस मनुष्य पर कौन-सा दोष लगाते हो?" उन्होंने उसे उत्तर दिया: "यदि यह मनुष्य कुकर्मी न होता तो हम इसे आपके हाथों नहीं सौंपते।" पिलातुस ने उनसे कहा: "इसे ले जाकर तुम्हीं अपने नियम के अनुसार इसका न्याय करो।" इसपर यहूदियों ने उससे कहा: "हमें किसी को प्राणदण्ड देने का अधिकार नहीं।" ऐसा इसलिए हुआ कि अपनी मृत्यु के विषय में उनका कथन पूरा हो।*

*प्रभु येसु ने भविष्यद्वाणी की थी कि मैं क्रूस पर चढ़ाया जाऊँगा। यदि यहूदियों को प्राणदण्ड देने का अधिकार होता तो वे प्रभु को पत्थरों से मार डालते।

वे यह कहकर येसु पर दोषारोपण करने लगे: "हमने इसे हमारी जनता को उकसाते, कैसर को कर देने से मना करते और अपने आपको ख्रीस्त राजा कहते हुए पाया है।"

३४२ तब पिलातुस फिर भवन में गया और येसु को बुलाकर पूछा: "क्या तू यहूदियों का राजा है?" येसु ने उत्तर दिया: "क्या आप यह अपनी ओर से कहते हैं या दूसरों ने मेरे विषय में आपसे कहा है?" पिलातुस ने उत्तर दिया: "क्या मैं यहूदी हूँ? तेरी ही जाति और महायाजकों ने तुझे मेरे हाथों सौंप दिया है; तूने क्या किया है?" येसु ने उत्तर दिया: "मेरा राज्य इस संसार का नहीं है। यदि मेरा राज्य इस संसार का होता तो मेरे सेवक लड़ते, जिससे मैं यहूदियों के हाथ न पड़ूँ; परंतु मेरा राज्य यहाँ का नहीं है।" तब पिलातुस ने उनसे कहा: "तो तू राजा है?" येसु ने उत्तर दिया: "आप सच कहते हैं, मैं राजा ही हूँ; मैं इसीलिए जन्मा और इसीलिए संसार में आया हूँ, कि सत्य का साक्ष्य दूँ; जो कोई सत्य की ओर है वह मेरी वाणी सुनता है।" पिलातुस ने उनसे कहा: "सत्य क्या है?"

३४३ महायाजक और प्राचीन येसु पर अनेक दोष लगाते थे परंतु उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। इसपर पिलातुस ने उनसे पूछा: "क्या तू नहीं सुनता कि वे तेरे विरुद्ध कितनी गवाहियाँ दे रहे हैं?" परन्तु येसु ने उत्तर में एक शब्द भी नहीं कहा; इससे राज्यपाल को बहुत आश्चर्य हुआ।

तब पिलातुस ने महायाजकों और भीड़ से कहा: "मैं इस मनुष्य में कोई दोष नहीं पाता।" पर वे और भी ज़ोर से पुकारते रहे: "यह गलीलिया से लेकर यहाँ तक, सारे यहूदिया में घूमकर अपनी शिक्षा द्वारा जनता में विद्रोह फैला रहा है।"

पिलातुस ने गलीलिया का नाम सुनकर पूछा: "क्या यह आदमी गलीली है?" तब यह सुनकर कि वह हेरोद के राज्य का है उसने येसु को हेरोद के पास भेज दिया जो उन दिनों येरुसलेम में था।

३४४ **हेरोद के सामने**

येसु को देखकर हेरोद बहुत खुश हुआ; वह बहुत समय से उनको देखना चाहता था क्योंकि उसने येसु के विषय सुना था और उनका कोई चमत्कार देखने की आशा रखता था।

वह येसु से बहुत-से प्रश्न करने लगा परंतु उन्होंने उसे कोई भी उत्तर नहीं दिया। महायाजक और शास्त्री पास खड़े होकर जी जान से येसु पर दोष लगाते रहे। तब हेरोद ने अपने सरदारों के साथ येसु का अपमान किया और उनकी हँसी उड़ाई। तब उनको सफ़ेद कपड़ा पहनाकर पिलातुस के पास वापस भेज दिया। उसी दिन हेरोद और पिलातुस मित्र बन गए; इसके पहिले वे एक दूसरे के वैरी थे।

पिलातुस के सामने दूसरी पेशी ३४५

अब पिलातुस ने महायाजकों, अधिकारियों और जनता को बुलाकर उनसे कहा: "तुम इस आदमी को जाति का उभाड़नेवाला ठहराकर मेरे पास लाए हो; मैंने तुम्हारे सामने ही इसकी जाँच की, पर जिन बातों का तुम इस मनुष्य पर दोष लगाते हो, उनके विषय में मैंने उसका कोई दोष नहीं पाया। और न हेरोद ने दोष पाया, क्योंकि उन्होंने उसको मेरे पास वापस भेज दिया। तुम देखते हो: उसने ऐसा कुछ नहीं किया है जिससे वह प्राणदण्ड के योग्य ठहरे। इसलिए मैं उसे पिटवाकर छोड़ दूँगा।"

प्रभु येसु अथवा हत्यारा बराबस ३४६

पास्का पर्व के दिन पिलातुस जनता की इच्छानुसार किसी एक बंदी को रिहा किया करता था। उस समय बराबस नामक मनुष्य राजद्रोहियों के साथ बंदी था, जिन्होंने राजद्रोह में हत्या की थी। भीड़ एकत्र होकर कहने लगी: "आप जैसा सदा करते आए हैं वैसाही हमारे लिए कीजिए।" पिलातुस ने उन्हें उत्तर दिया: "किसको चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए रिहा करूँ: बराबस को या येसु को जो ख्रीस्त कहलाता है? क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को मुक्त करूँ?" क्योंकि वह जानता ही था कि महायाजकों ने येसु को ईर्ष्या के कारण बंदी किया है।

जब राज्यपाल न्यायासन पर बैठे थे, उनकी पत्नी ने उनसे कहला भेजा: "उस धर्मी मनुष्य के विषय में कुछ न करना क्योंकि उसी के कारण मैंने आज सपने में बहुत कष्ट सहा है।"

इधर महायाजकों और प्राचीनों ने लोगों को उभाड़ा कि वे बराबस को रिहा कराएँ और येसु को मरवा डालें। तब राज्यपाल ने उनसे पूछा: "दोनों

में से तुम किसको चाहते हो, मैं किसको छोड़ दूँ ?" इसपर सारी भीड़ एक साथ चिल्ला उठी: "उसे हटा दीजिए; हमारे लिए बराबस को छोड़िए।"

पिलातुस ने येसु को मुक्त करने की इच्छा से लोगों को फिर समझाया और कहा: "तब मैं येसु का क्या करूँ, जो ख्रीस्त कहलाता है?" सब के सब चिल्ला उठे: "उसे क्रूस दीजिए।" राज्यपाल ने उनसे कहा: "क्यों? उसने कौन-सी बुराई की है? मैं इसमें प्राणदंड के योग्य कोई भी बात नहीं पाता। इसलिए मैं इसे पिटवाकर छोड़ दूँगा।" परन्तु वे ज़ोर देकर चिल्ला रहे थे: "उसे क्रूस दिया जाए।" और उनका चिल्लाना प्रबल हुआ। अतः जो मनुष्य बलवे और हत्या के कारण क़ैदख़ाने में डाला गया था और जिसे वे चाहते थे, उसी मनुष्य को पिलातुस ने उनके लिए मुक्त किया।

३४७ कोड़ों की मार और काँटों का मुकुट

तब पिलातुस ने येसु को कोड़े लगवाए। इसके बाद राज्यपाल के सिपाही, येसु को भवन में ले जाकर, उनके पास सारी पलटन बुला लाए। उन्होंने येसु के कपड़े उतारकर उनको लाल चोगा पहनाया; फिर काँटों का मुकुट गूँथकर उनके सिर पर रखा और उनके दाहिने हाथ में एक सरकंडा थमाया; तब उनके आगे घुटने टेककर, उन्होंने यह कहकर उनकी हँसी उड़ाई: "यहूदियों के राजा! प्रणाम!"; और वे उनपर थूकने लगे और सरकंडा छीनकर उनके सिर पर मारते थे।

३४८ "इस मनुष्य को देखो"

इसके बाद पिलातुस ने फिर बाहर आकर कहा: "देखो, मैं उसे तुम्हारे पास बाहर लाता हूँ जिससे तुम जान लो कि मैं इसमें कोई भी दोष नहीं पाता।" तब येसु काँटों का मुकुट और लाल कपड़ा पहने बाहर निकले और पिलातुस ने यहूदियों से कहा: "इस मनुष्य को देखो।" उनको देखकर महायाजक और प्यादे चिल्ला उठे: "क्रूस दीजिए! इसे क्रूस दीजिए!" पिलातुस ने उनसे कहा: "तुम्हीं इसे ले जाओ और क्रूस पर चढ़ाओ; क्योंकि मैं तो इसमें कोई दोष नहीं पाता।" यहूदियों ने उत्तर दिया: "हमारा भी एक नियम है और उस नियम के अनुसार इसकी मृत्यु आवश्यक है, क्योंकि उसने ईश्वर का पुत्र होने का दावा किया है।"

पिलातुस यह बात सुनकर और अधिक भयभीत हुआ। उसने भवन में फिर प्रवेश करके येसु से कहा : "तू कहाँ का है ?" पर येसु ने उसे उत्तर नहीं दिया। इसपर पिलातुस ने उनसे कहा : "तू मुझसे क्यों नहीं बोलता ? क्या तू नहीं जानता कि मुझे तुझको छोड़ देने का अधिकार है और तुझको क्रूस पर चढ़ाने का अधिकार भी ? येसु ने उत्तर दिया : "मुझपर आपका कोई अधिकार न होता यदि आपको ऊपर से न दिया जाता। इसलिए जिसने मुझे आपके हाथों सौंपा है उसका पाप अधिक है।"

इसपर पिलातुस येसु को छोड़ देने का उपाय खोजने लगा, परन्तु यहूदी चिल्ला रहे थे : "यदि आप इसे छोड़ दें तो आप कैसर (सम्राट्) के मित्र नहीं ; क्योंकि जो कोई अपने को राजा बनाता है, वही कैसर का विरोध करता है।"

प्राणदण्ड की आज्ञा ३४९

यह सुनकर पिलातुस येसु को बाहर लाया और न्यायासन पर बैठ गया ; उस जगह जो लिथोस्त्रोतोस कहलाता है और इब्रानी में गव्वथा। पास्का की तैयारी का दिन था और लगभग छठी घड़ी थी। उसने यहूदियों से कहा : "देखो, यह तुम्हारा राजा है।" इसपर वे चिल्ला उठे : "हटा दीजिए, इसे हटा दीजिए ! क्रूस दीजिए !" पिलापुस ने उनसे कहा : "क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़वाऊँ ?" महायाजकों ने उत्तर दिया : "कैसर के सिवाय हमारा कोई राजा नहीं है।"

यह देखकर कि मेरी एक भी नहीं चलती, उल्टे हुल्लड़ बढ़ता ही जाता है, पिलातुस ने पानी लेकर लोगों के सामने हाथ धोए और कहा : "मैं इस धर्मी के लोहू से निर्दोष हूँ। तुम ही जानो।" और सारी जनता ने उत्तर दिया : "इसका लोहू हमपर और हमारी सन्तान पर हो।" इसपर पिलातुस ने लोगों का मन रखने के लिए येसु को उनके हवाले कर दिया कि वे क्रूस पर चढ़ा दिए जाएँ।

३२—प्रभु येसु का मरण

३५० **क्रूस का रास्ता** इसके बाद सिपाहियों ने येसु का लाल कपड़ा उतार लिया और उन्हें उनके अपने कपड़े पहनाकर क्रूस पर चढ़ाने के लिए बाहर ले चले। येसु अपना क्रूस ढोते हुए उस जगह को गए जो कलवारी कहलाती है और इब्रानी में गोलगोथा। जब वे येसु को ले जा रहे थे, तो उन्होंने देहात से आते हुए, सिकन्दर तथा रुफुस के बाप सिमोन नामक एक किरीनी को पकड़ा और क्रूस को उसपर लाद दिया जिससे वह उसे येसु के पीछे-पीछे ले चले।

उनके पीछे-पीछे लोगों की एक बड़ी भीड़ जा रही थी और स्त्रियाँ भी, जो उनके लिए बिलखती और विलाप कर रही थीं। येसु ने उनकी ओर फिरकर कहा: "येरुसलेम की बेटियो! मेरे लिए मत रोओ, पर अपने लिए और अपने बालकों के लिए रोओ। क्योंकि वे दिन आएँगे जब लोग कहेंगे: धन्य हैं वे स्त्रियाँ जो बाँझ हैं; और वे गर्भ जिन्होंने सन्तान उत्पन्न नहीं की, और वे स्तन जिन्होंने दूध नहीं पिलाया। तब लोग पहाड़ों से कहने लगेंगे: हमपर गिरो, और पहाड़ियों से: हमें ढक लो। क्योंकि यदि हरे पेड़ का यह हाल है, तो सूखे का क्या होगा?"

येसु के साथ दो कुकर्मी मनुष्य भी प्राणदण्ड के लिए ले जाए जाते थे।

३५१ **गोलगोथा** वे उस जगह में पहुँचे जो गोलगोथा याने खोपड़ीस्थान कहलाती है। वहाँ लोगों ने येसु को पित्त मिला हुआ दाखरस पीने को दिया; उन्होंने चख लिया किंतु पिया नहीं। तब उन्होंने येसु को क्रूस पर चढ़ाया।

येसु के साथ उन्होंने दो डाकुओं को क्रूस पर चढ़ाया, एक को उनकी दाहिनी ओर; दूसरे को उनकी बाईं ओर। इस तरह धर्मग्रंथ का यह कथन पूरा हुआ: "वे दुष्टों के साथ गिने गए।"

और येसु ने कहा: "हे पिता, उन्हें क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।"

पिलातुस ने दोषपत्र लिखवाकर क्रूस पर लगवा दिया। यह इस प्रकार था: "येसु नाजरी, यहूदियों का राजा।" **दोषपत्र** ३५२

यह दोषपत्र बहुत-से यहूदियों ने पढ़ा, क्योंकि वह स्थान, जहाँ येसु क्रूस पर चढ़ाए गए थे, नगर के पास ही था; और पत्र इब्रानी, यूनानी और लैटिन भाषा में लिखा था। तब यहूदियों के महायाजकों ने पिलातुस से कहा: "आप यह मत लिखिए: यहूदियों का राजा; वरन् लिखिए: उसने कहा कि मैं यहूदियों का राजा हूँ।" पिलातुस ने उत्तर दिया: "मैंने जो लिख दिया वह लिख दिया।"

येसु को क्रूस पर चढ़ाने के बाद सिपाहियों ने उनके कपड़े लेकर चार भागों में बाँटे, हर सिपाही के लिए एक भाग। **कपड़े बाँटना** ३५३ परन्तु उनका कुरता बिना सीवन ऊपर से नीचे तक समूचा बुना हुआ था। उन्होंने आपस में कहा: "हम इसे न फाड़ दें, चिट्ठियाँ डालकर देख लें कि यह किसे मिलेगा।" यह इसलिए हुआ कि धर्मग्रंथ पूरा हो, जो कहता है: "उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बाँट लिए और मेरे कुरते पर चिट्ठियाँ डालीं।" सिपाहियों ने ऐसा ही किया। और वे बैठकर येसु का पहरा देने लगे।

उधर से आने-जानेवाले लोग अपना सिर हिला-हिलाकर येसु की निन्दा करते हुए कहते थे: **प्रभु येसु की निन्दा** ३५४ "वाह रे तू! जो ईशमन्दिर को तोड़कर तीन दिन में फिर खड़ा कर देता है, अपने को बचा। यदि तू ईश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ।" महायाजक, शास्त्री और प्राचीन भी यह कहकर येसु की हँसी उड़ाते थे: "इसने औरों को तो बचाया परन्तु अपने को नहीं बचा सकता। यदि यह इस्राएल का राजा है तो अब क्रूस पर से उतरे और हम उसपर विश्वास करेंगे। इसने ईश्वर पर भरोसा रखा; यदि ईश्वर इससे प्रेम रखता है तो वह अब इसे बचाए। इसने तो कहा था: 'मैं ईश्वर का पुत्र हूँ'।" सिपाही भी पास आकर और उन्हें सिरका देकर यह कहते हुए उनकी हँसी उड़ाते थे: "यदि तू यहूदियों का राजा है तो अपने को बचा ले।"

क्रूस पर चढ़ाए हुए डाकुओं में से एक इस प्रकार येसु की निन्दा करने लगा: "यदि तू ख्रीस्त है **पश्चात्तापी डाकू** ३५५

तो अपने आपको और हमें भी बचा।" पर दूसरे ने उसे डाँटकर कहा: "क्या तू, जो एक ही दण्ड पा रहा है, ईश्वर से नहीं डरता? हम तो न्याय के अनुसार अपनी करनी का फल भोग रहे हैं; पर इसने कोई अपराध नहीं किया।" और उसने येसु से कहा: "हे प्रभु, जब आप अपने राज्य में आएँगे तो मुझे याद कीजिएगा।" और येसु ने उससे कहा: "मैं तुझसे कहता हूँ: आज ही तू मेरे साथ स्वर्गराज्य में होगा।"

३५६ प्रभु येसु की माता येसु के क्रूस के पास ही उनकी माता और उनकी माता की बहन, क्लेओफ़स की पत्नी, मरिया और मरिया मगदलेना खड़ी थीं। अपनी माता को और अपने उस शिष्य को, जिसे वे प्यार करते थे, खड़े देखकर, येसु ने अपनी माता से कहा: "भद्रे, देखिए, यह आपका पुत्र है।" तब उन्होंने शिष्य से कहा: "देख, यह तेरी माता है।" और उसी घड़ी से उस शिष्य ने उसे अपने यहाँ डेरा दिया।

३५७ प्रभु येसु का मरण दोपहर के बाद सारे देश पर तीसरे पहर तक अंधकार छा गया। और तीसरे पहर येसु ने ऊँचे स्वर से पुकारा: "एलोई, एलोई, लम्मा सबक्थानी?" जिसका अर्थ है: "हे मेरे ईश्वर, हे मेरे ईश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया है?" यह सुनकर पास खड़े लोगों में से कितनों ने कहा: "देखो, वह एलियस को बुला रहा है।"

इसके बाद यह जानकर कि अब सब कुछ पूरा हो गया है, येसु ने कहा: "मैं प्यासा हूँ।" यह इसलिए हुआ कि धर्मग्रंथ का कथन पूरा हो। वहाँ पर सिरके से भरा एक बरतन रखा था; उनमें से एक दौड़कर आया, पनसोख्ता सिरके में डुबाकर सरकंडे पर लगाया और येसु को पीने के लिए दिया। पर दूसरों ने कहा: "ठहरो, देखें एलियस उसको छुड़ाने आता है या नहीं।" येसु ने सिरका लेकर कहा: "सब पूरा हो चुका है। तब उन्होंने ऊँचे स्वर से पुकारकर कहा: "हे पिता, मैं अपनी आत्मा को तेरे हाथों सौंप देता हूँ।" और सिर झुकाकर उन्होंने प्राण त्याग दिए।

चमत्कार ३५८

तब मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया, पृथ्वी काँप उठी और चट्टानें फट गईं, क़ब्रें खुलीं और मरे हुए सन्तों के बहुत-से शरीर फिर जी उठे; वे येसु के पुनरुत्थान के बाद अपनी क़ब्रों से निकले और पवित्र नगर में जाकर बहुतों को दिखाई दिए।

शतपति, और जो उसके साथ येसु का पहरा दे रहे थे, भूकंप और सारी घटनाओं को देखकर बहुत डर गए और बोले: "यह मनुष्य सचमुच ईश्वर का पुत्र था।" और सारी भीड़ भी, जो यह दृश्य देखने के लिए इकट्ठी हुई थी, यह देखकर कि क्या-क्या हो रहा है अपनी छाती पीटती हुई लौट गई।

स्त्रियाँ भी दूर से देख रही थीं; इनमें मरिया मगदलेना, याकूब और योसेफ की माता मरिया और सलोमी थीं, जो येसु के गलीलिया में रहते समय उनके पीछे-पीछे चलकर उनकी सेवा किया करती थीं; और कुछ दूसरी स्त्रियाँ भी जो येसु के साथ येरुसलेम आई थीं।

हृदय-छेदन ३५९

यह पास्का की तैयारी का दिन था। यहूदियों ने पिलातुस से विनती की कि उनकी टाँगें तोड़ दी जाएँ और वे हटा दिए जाएँ। जिससे लाशें विश्राम के दिन क्रूस पर न रह जाएँ क्योंकि उस विश्राम के दिन को बड़ा त्योहार था।

इसलिए सिपाहियों ने आकर पहले की टाँगें तोड़ दीं, फिर दूसरे की भी, जो उनके साथ क्रूस पर चढ़ाये गये थे। पर जब येसु के पास आए, तो उन्होंने देखा कि वे मर चुके हैं, इसलिए उन्होंने उनकी टाँगें नहीं तोड़ीं; पर एक सिपाही ने भाले से उनकी बगल खोल दी और उससे तुरन्त लोहू और पानी निकल पड़ा।

जिसने यह देखा उसी ने साक्ष्य दिया है और उसका साक्ष्य सत्य है; वह जानता है कि मैं सच बोलता हूँ जिससे तुम भी विश्वास करो। क्योंकि ये बातें इसलिए घटीं कि धर्मग्रंथ का यह कथन पूरा हो: "तुम उसकी एक भी हड्डी न तोड़ोगे"; और फिर दूसरी जगह धर्मग्रंथ कहता है: "उन्होंने जिसको छेदा उसे देखेंगे।"

प्रभु येसु का दफ़न ३६०

यहूदिया के अरीमथिया नगर का निवासी योसेफ नामक एक सभासद था; वह भला और धार्मिक था, और ईश्वर के राज्य की बाट जोह रहा था। वह यहूदियों के डर से गुप्त रूप से येसु का शिष्य था। वह सभा के निर्णय और उसके कार्यों से

सहमत नहीं हुआ था। सन्ध्या होने पर वह साहस करके पिलातुस के पास गया और येसु की लाश माँगी। पिलातुस को आश्चर्य हुआ कि येसु इतने शीघ्र मर गए हैं; उसने शतपति को बुलवाकर पूछा: "वह मर चुका है या नहीं?" और शतपति से इसकी सूचना पाकर उसने योसेफ़ को लाश दे दी। अतः वह आकर येसु की लाश ले गया। निकोदेमुस भी, जो पहले-पहल रात में येसु के पास आया था, करीब एक मन गंधरस और अगरू का सम्मिश्रण लेकर आया। उन्होंने येसु की लाश लेकर उसे सुगंधित द्रव्यों के साथ सन के कपड़े में लपेटा, जैसे यहूदियों में गाड़ने की रीति है।

उसी जगह, जहाँ येसु क्रूस पर चढ़ाए गए थे, एक वाटिका थी, और वाटिका में एक नई क़ब्र, जिसमें कभी कोई नहीं रखा गया था।* यहूदियों के पास्का की तैयारी का दिन होने के कारण उन्होंने येसु को वहीं रख दिया क्योंकि वह क़ब्र निकट थी।

जो स्त्रियाँ येसु के साथ गलीलिया से आई थीं, उन्होंने पीछे-पीछे चलकर क़ब्र को देख लिया और यह भी कि किस तरह येसु की लाश दफ़नाई गई है। लौटकर उन्होंने सुगन्धित मसाले और इत्र तैयार किए; और विश्राम के दिन उन्होंने नियम के अनुसार आराम किया।

३६१ क़ब्र पर पहरा
[शनिवार को]

दूसरे दिन, तैयारी के दिन के बाद, महायाजकों और फ़रीसियों ने पिलातुस के यहाँ एकत्र होकर कहा: "श्रीमान्! हमें याद आता है कि उस धूर्त्त ने जीते समय कहा था कि मैं तीन दिन के बाद फिर जीवित हूँगा। इसलिए आज्ञा दीजिए कि क़ब्र को तीसरे दिन तक सुरक्षित कर दिया जाए, कहीं ऐसा न हो कि उसके चेले आकर उसकी लाश चुरा ले जाएँ और लोगों से कहें: वह मुरदों में से फिर जीवित हुआ; यह अन्तिम धोखा पहले धोखे से भी बुरा होगा।" पिलातुस ने उनसे कहा: "पहरेदारों को ले जाओ और अपनी समझ के अनुसार क़ब्र को सुरक्षित कर लो।" इसपर उन्होंने जाकर पत्थर पर मुहर लगायी और क़ब्र पर पहरा बिठा दिया।

---

*सन्त मत्ती के सुसमाचार में लिखा है – "योसेफ़ ने लाश लेकर उसे निर्मल कपड़े में लपेटा। और जो नयी क़ब्र उन्होंने अपने लिए खुदवाई थी, उसीमें लाश को दफ़ना दिया। फिर क़ब्र के द्वार पर बड़ा-सा पत्थर लुढ़काकर चला गया।"

३३—प्रभु येसु का पुनरुत्थान

[इतवार को]

पवित्र स्त्रियों का क़ब्र के पास पहुँचना ३६२

विश्राम का दिन बीत जाने पर, मरिया मगदलेना, याकूब की माता मरिया और सलोमी ने येसु का लेपन करने के लिए सुगंधित मसाला खरीदा। एकाएक भारी भूकंप आया क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा और आकर पत्थर को अलग लुढ़काकर उसपर बैठ गया। उसका रूप बिजली के समान था और उसके वस्त्र बर्फ़ की भाँति उजले थे। दूत के डर से पहरेदार भयभीत होकर मृतप्राय हो गए।

सप्ताह के पहले दिन, बहुत सवेरे, सूर्योदय होते ही, स्त्रियाँ क़ब्र के पास पहुँचीं और आपस में कहने लगीं: "पत्थर को क़ब्र के मुँह पर से हमारे लिए कौन हटा देगा?" तब उन्होंने आँखें उठाकर पत्थर को एक ओर लुढ़काया हुआ देखा। वह पत्थर बहुत विशाल था। इसपर मरिया मगदलेना, सिमोन पेत्रुस और उस दूसरे चेले के पास, जिसको येसु प्यार करते थे, दौड़ आई और कहने लगी: "वे प्रभु को क़ब्र में से ले गए हैं और हमें पता नहीं कि उन्हें कहाँ रख दिया है।"

स्वर्गदूतों का सन्देश ३६३

क़ब्र में प्रवेश करने पर उन्होंने प्रभु येसु की लाश नहीं पाई। वे इसपर आश्चर्य कर रही थीं कि उज्ज्वल वस्त्र पहने दो पुरुष उनके पास आ खड़े हुए। वे डर गईं और धरती की ओर मुँह झुकाया; तब पुरुषों ने उनसे कहा: "घबराओ मत। तुम येसु नाजरी को ढूँढ़ती हो जो क्रूस पर चढ़ाए गए थे। तुम जीवित को मुरदों में क्यों ढूँढ़ती हो? वे यहाँ नहीं हैं, जी उठे हैं जैसा कि उन्होंने कहा था। आकर उस जगह को देखो जहाँ प्रभु पड़े थे। याद करो कि उन्होंने गलीलिया में रहते समय तुमसे कहा था: यह आवश्यक है कि मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथों सौंपा जाए, क्रूस पर चढ़ाया जाए और तीसरे दिन फिर जी उठे।

जाकर उनके चेलों और पेत्रुस से कहो कि येसु तुम्हारे आगे गलीलिया को जाते हैं, वहाँ तुम उनको देखोगे, जैसा उन्होंने तुमसे कहा था।"

तब स्त्रियों को येसु का यह कहना याद आया; डर और आनन्द के साथ शीघ्र ही क़ब्र से लौटकर उन्होंने येसु के चेलों से यह सब कह सुनाया।

मरिया मगदलेना, योहन्ना और याकूब की माता मरिया ने, और कुछ अन्य स्त्रियों ने भी, जो उनके साथ थीं, इन बातों को प्रेरितों से कहा। परंतु उनको यह सब प्रलाप जान पड़ा और उन्होंने स्त्रियों पर विश्वास नहीं किया।

३६४ **पेत्रुस और योहन** पेत्रुस और वह दूसरा चेला निकल पड़े और क़ब्र की ओर चले। वे दोनों साथ-साथ दौड़ रहे थे और वह दूसरा चेला पेत्रुस से आगे बढ़कर क़ब्र पर पहले पहुँचा। उसने झाँककर देखा कि पट्टियाँ पड़ी हुई हैं, किन्तु वह भीतर नहीं गया। तब सिमोन पेत्रुस उसके पीछे-पीछे आया और क़ब्र के अंदर गया; उसने पट्टियाँ पड़ी हुई देखीं, और जो अंगोछा येसु के सिर पर था, उसे पट्टियों के साथ नहीं, परन्तु एक जगह में अलग लपेटा हुआ देखा। तब वह दूसरा चेला भी, जो क़ब्र के पास पहले आया था, भीतर गया और उसने देखा और विश्वास किया। क्योंकि वे अब तक धर्मग्रंथ नहीं समझ पाए थे, कि येसु मुरदों में से जी उठनेवाले थे। इसके बाद चेले अपने घर लौटे।

३६५ **मरिया मगदलेना को दर्शन** मरिया रोती हुई क़ब्र के पास खड़ी रही। रोते-रोते उसने झुककर क़ब्र के भीतर दृष्टि डाली, और उज्ज्वल वस्त्रधारी दो दूतों को बैठे देखा – एक को सिरहाने पर और दूसरे को पैताने पर, जहाँ येसु की लाश रखी गई थी। दूतों ने उससे कहा: "भद्रे, तू क्यों रोती है?" उसने उनसे कहा: "क्योंकि वे मेरे प्रभु को ले गए हैं और मुझे पता नहीं कि उन्हें कहाँ रखा है।" यह कहकर वह पीछे मुड़कर येसु को खड़ा हुआ देखा, परंतु उसे मालूम नहीं था कि वे येसु हैं। येसु ने उससे कहा: "भद्रे, तू क्यों रोती है? तू किसे ढूँढ़ती है?" मरिया ने उसे माली समझकर कहा: "महाशय, यदि आप उन्हें उठा ले गए हैं, तो मुझे बताइए कि आपने उन्हें कहाँ रखा है और मैं उन्हें ले

जाऊँगी।" येसु ने उससे कहा: "मरिया।" इसने मुड़कर उनसे इब्रानी में कहा: "रब्बोनी!" अर्थात्: "गुरुवर!" येसु ने उससे कहा: "चरणों से लिपटी रहकर मुझे न रोकना; मैं अब तक अपने पिता के पास नहीं गया हूँ; मेरे भाइयों के पास जाकर उनसे कह दे कि मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता, अपने ईश्वर और तुम्हारे ईश्वर के पास जाता हूँ।"

मरिया मगदलेना ने जाकर चेलों को यह समाचार सुनाया कि मैंने प्रभु को देखा है और उन्होंने मुझसे ये बातें कही हैं। और उन्होंने यह सुनकर विश्वास नहीं किया कि येसु जीवित हैं और इसको दिखाई दिए हैं।

पहरेदारों को रिश्वत ३६६

स्त्रियाँ जा ही रही थीं कि कई पहरेदारों ने नगर में आकर महायाजकों को सारा हाल कह सुनाया। महायाजकों ने प्राचीनों से मिलकर परामर्श किया और सिपाहियों को बहुत रुपया देकर कहा: "तुम लोग यह कहो कि रात को जब हम सोए हुए थे, येसु के चेले आकर उसे चुरा ले गए। यदि राज्यपाल यह बात सुन पाएँगे तो हम उन्हें समझाकर तुम लोगों की चिन्ता दूर करेंगे।" पहरेदारों ने रुपया ले लिया और उनके सिखलाने के अनुसार किया। यही अफ़वाह आज तक यहूदियों में फैली हुई है।

एम्माउस जानेवाले चेलों को दर्शन ३६७

उसी दिन चेलों में से दो इन सब घटनाओं पर बातचीत करते हुए एम्माउस नामक गाँव जा रहे थे; वह येरुसलेम से कोई चार कोस दूर है। वे आपस में बातचीत और वाद-विवाद कर ही रहे थे कि येसु स्वयं निकट आकर उनके साथ चलने लगे; परन्तु चेलों की आँखों पर परदा पड़ा था, इसलिए वे येसु को पहचान न सके।

येसु ने उनसे कहा: "ये कौन-सी बातें हैं जिनपर तुम रास्ते में बातचीत कर रहे हो?" इसपर वे रुककर उदास मन खड़े रहे, और उनमें से क्लेओफ़स नामक एक ने उत्तर दिया: "आप येरुसलेम में एक ही परदेशी होंगे जो यह जानते नहीं कि इन दिनों येरुसलेम में क्या-क्या हुआ है।" येसु ने उनसे कहा: "क्या हुआ?" उन्होंने उत्तर दिया: "येसु नाजरी के विषय में। वे ईश्वर और सारी जाति के सामने कर्म और वचन में शक्तिशाली नबी थे: हमारे

महायाजकों और शासकों ने उनको प्राणदंड दिलाया और क्रूस पर चढ़ाया है। हम तो आशा करते थे कि येही इस्राएल का उद्धार करनेवाले थे; और देखिए, यह सब वीते आज तो अब तीसरा दिन है। किंतु यह भी है कि हममें से कई स्त्रियों ने हमको बड़े अचम्भे में डाल दिया है। वे तड़के ही क़ब्र पर गई थीं; येसु की लाश न पाकर वे लौट आईं और बोलीं: हमने स्वर्ग-दूतों के दर्शन किए हैं जो कहते हैं कि येसु जीते हैं। इसपर हमारे कुछ साथी क़ब्र पर जाकर सब कुछ स्त्रियों के कहे अनुसार पाया परंतु येसु को उन्होंने नहीं देखा।"

इसपर येसु ने उनसे कहा: "हे निर्बुद्धियो और नबियों की सब उक्तियों पर विश्वास करने में मंदमतियो, क्या यह आवश्यक न था कि ख्रीस्त यह सब सह लें और इस प्रकार अपनी महिमा में प्रवेश करें?" तब येसु मूसा और सब नबियों से लेकर जो कुछ धर्मग्रंथ में अपने विषय में लिखा है यह सब उन्हें समझाने लगे।

इतने में वे उस गाँव के पास पहुँच गए जहाँ जा रहे थे; येसु ने ऐसा किया मानो आगे बढ़ना चाहते हों। परन्तु चेलों ने उनको यह कहकर रोक लिया: "हमारे साथ रह जाइए; साँझ हो चली है और दिन बहुत ढल चुका है।" और वे उनके साथ भीतर गए।

जब येसु उनके साथ भोजन कर रहे थे, उन्होंने रोटी लेकर आशिष दी और उसे तोड़कर उन्हें दे दिया। इसपर चेलों की आँखें खुल गई और उन्होंने येसु को पहचान लिया। इतने में येसु उनके लिए अदृश्य हो गए। इसपर चेले आपस में कहने लगे: "क्या हमारा हृदय प्रदीप्त नहीं होता था जब वे रास्ते में हमसे बातचीत करते हुए धर्मग्रंथ की व्याख्या कर रहे थे?"

उसी घड़ी उठकर वे येरुसलेम लौट गए; वहाँ उन्होंने ग्यारहों और उनके साथियों को एकत्र पाया; वे भी कहने लगे: "प्रभु सचमुच जी उठे हैं और सिमोन को दिखाई दिए हैं।" तब चेलों ने भी बताया कि रास्ते में क्या-क्या हुआ था और उन्होंने रोटी तोड़ते समय येसु को किस प्रकार पहचान लिया था।

३६८ ब्यारी की कोठरी में प्रेरितों को दर्शन

उसी दिन, सप्ताह के प्रथम दिन, साँझ को, द्वार बन्द होने पर भी, येसु आए जहाँ यहूदियों के डर के कारण चेले एकत्र थे; और उनके बीच खड़े होकर उन्होंने उनसे कहा: "तुम्हें शान्ति मिले।" परंतु वे भयभीत

होकर समझते थे कि हम कोई प्रेत देख रहे हैं। तब येसु ने उनसे कहा: "क्यों घबराते हो? तुम्हारे मन में सन्देह क्यों उठता है? मेरे हाथ और मेरे पैर देखो; मैं ही हूँ, मुझे छुओ और देख लो: मेरे समान भूत के हाड़-मांस नहीं होते।" यह कहकर उन्होंने चेलों को अपने हाथ और पैर दिखाए। इसपर भी चेलों को आनन्द के कारण विश्वास नहीं हो रहा था, और वे अचम्भा कर रहे थे; तब येसु ने कहा: "क्या तुम्हारे पास यहाँ कुछ खाने को है?" उन्होंने येसु को भूनी मछली का एक टुकड़ा परोस दिया; उन्होंने उसे ले लिया और उनके सामने ही खाया। तब उन्होंने उनसे कहा: "तुम्हें शान्ति मिले। जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसेही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।" इतना कहकर येसु ने उनपर फूँककर कहा: "पवित्र आत्मा को ग्रहण करो। जिन लोगों के पाप तुम क्षमा करते हो, उनके पाप क्षमा हो जाते हैं; और जिनके पाप तुम रोक रखते हो, उनके पाप रुके रहते हैं।"*

थोमस और प्रेरितों को दर्शन ३६९

जिस समय येसु आए थे, बारहों में से एक, थोमस, जो दिदिमुस कहलाता है, चेलों के साथ नहीं था। दूसरे चेलों ने उससे कहा: "हमने प्रभु को देखा है।" परन्तु उसने कहा: "जब तक मैं उनके हाथों में कीलों का निशान न देख लूँ और कीलों की जगह में अपनी उँगली न रखूँ, और उनकी बगल पर हाथ न लगाऊँ, तब तक मैं विश्वास नहीं करूँगा।"

आठ दिन के बाद जब फिर उनके चेले घर के भीतर थे और थोमस उनके साथ था, द्वार के बन्द होने पर भी येसु आए और उनके बीच खड़े होकर कहने लगे: "तुम्हें शान्ति मिले।" तब उन्होंने थोमस से कहा: "अपनी उँगली यहाँ रख और मेरे हाथ देख ले; अपना हाथ बढ़ाकर मेरी बगल पर लगा, और अविश्वासी न रहकर विश्वासी बन।" उत्तर में थोमस ने येसु से कहा: "मेरे प्रभु! मेरे ईश्वर!" येसु ने उससे कहा: "हे थोमस, तूने मुझे देखकर विश्वास किया है; धन्य हैं वे, जिन्होंने बिना देखे ही विश्वास किया है।"

---

*पापों की क्षमा करने की शक्ति इससे और स्पष्ट रूप से नहीं दी जा सकती थी। यह शक्ति प्रेरितों और उनके उत्तराधिकारियों को दी जाती है।

३४—गलीलिया में दर्शन

३७० **तिबेरिअस के समुद्र के पास दर्शन**

बाद में येसु तिबेरिअस के समुद्र के पास अपने चेलों को फिर दिखाई दिए। वे इस प्रकार दिखाई दिए; सिमोन पेत्रुस और थोमस, जो दिदिमुस कहलाता है, और नथानाएल, जो गलीलिया के काना का था, और ज़ेबेदी के बेटे, और येसु के और दो चेले साथ थे। सिमोन पेत्रुस ने उनसे कहा: "मैं मछली मारने जाता हूँ।" उन्होंने उससे कहा: "हम भी तेरे साथ चलते हैं।" वे निकले और नौका पर चढ़े; किंतु उस रात उनको कुछ भी नहीं मिला।

भोर के समय येसु तट पर खड़े थे; परंतु चेले पहचान नहीं सके कि वे येसु हैं। तब येसु ने उनसे कहा: "मित्रो, खाने को कुछ मिला?" उन्होंने उत्तर दिया: "नहीं।" येसु ने उनसे कहा: "नौका की दाईं ओर जाल फेंको और तुम्हें मिलेगा।" इसपर उन्होंने जाल फेंका और अब की बार मछलियों की अधिकता के कारण वे उसे खींचकर न ला सके। तब उस दूसरे चेले ने, जिसे येसु प्यार करते थे, पेत्रुस से कहा: "प्रभु ही हैं।" सिमोन पेत्रुस ने जब सुना कि प्रभु हैं, तो अपना कुरता कस लिया, क्योंकि वह नंगा था, और समुद्र में कूद पड़ा। दूसरे चेले मछलियों से भरा हुआ जाल खींचते हुए नौका पर आए; वे केवल लगभग दो सौ हाथ किनारे से दूर थे।

उतरते ही उन्होंने कोयले की आग और उसपर रखी हुई मछली और रोटी देखी। येसु ने उनसे कहा: "जिन मछलियों को तुमने अभी पकड़ा है उनमें से कुछ लाओ।" सिमोन पेत्रुस ने नौका पर चढ़कर एक सौ तिरपन बड़ी-बड़ी मछलियों से भरा हुआ जाल किनारे खींच लिया। और यद्यपि मछलियाँ इतनी अधिक थीं, जाल फटा नहीं। येसु ने उनसे कहा: "आकर जलपान करो।" उनमें से किसी को साहस न हुआ कि उनसे पूछे: "आप कौन हैं?" क्योंकि वे जानते थे कि प्रभु ही हैं। तब येसु आए और रोटी लेकर उन्हें देने लगे; साथ-साथ मछली भी।

इस प्रकार मुरदों में से फिर जी उठने के बाद येसु तीसरी बार* अपने चेलों के सामने प्रकट हुए।

पेत्रुस को परम अधिकार ३७१

जलपान के बाद येसु ने सिमोन पेत्रुस से कहा: "सिमोन! योहन का बेटा, क्या इनकी अपेक्षा तू मुझे अधिक प्यार करता है?" उसने उनसे कहा: "हाँ, प्रभु, आप जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।" उन्होंने उससे कहा: "मेरे मेमनों को चरा।" येसु ने उससे फिर कहा: "सिमोन! योहन का बेटा, क्या तू मुझे प्यार करता है?" उसने उनसे कहा: "हाँ, प्रभु, आप जानते ही हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।" उन्होंने उससे कहा: "मेरे मेमनों को चरा।" येसु ने तीसरी वार उससे कहा: "सिमोन! योहन का बेटा, क्या तू मुझे प्यार करता है?" पेत्रुस को दुःख हुआ कि उन्होंने तीसरी बार कहा था—क्या तू मुझे प्यार करता है; और उसने उनसे कहा: "प्रभु! आपको तो सब बातें मालूम हैं, आप जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।" उन्होंने उससे कहा: "मेरी भेड़ों को चरा। मैं तुझसे सच-सच कहता हूँ: जब तू युवक था तो अपनी कमर आपही कस लेता था और जहाँ चाहता वहाँ घूमता-फिरता था। परंतु बूढ़ा हो जाने पर तू अपने हाथ पसारेगा और कोई दूसरा तेरी कमर कसेगा और जहाँ तू न चाहेगा वहाँ तुझे ले जाएगा।" येसु ने इन शब्दों से संकेत किया कि पेत्रुस किस ढंग मरकर ईश्वर की महिमा को बढ़ाएगा। और यह कह चुकने के बाद वे उससे बोले: "मेरा अनुसरण कर।"

पेत्रुस ने फिरकर उस चेले को आते देखा, जिसे येसु प्यार करते थे और जिसने व्यारी के समय उनकी छाती पर झुककर पूछा था: "प्रभु! वह कौन है, जो आपको पकड़वा देगा?" इसलिए पेत्रुस ने उसे आते देखकर येसु से कहा: "प्रभु! इसका क्या हाल होगा?" येसु ने उससे कहा: "यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक रहे, तो तुझे इससे क्या? तू मेरा अनुसरण कर।"

इस कारण भाइयों में यह चर्चा फैल गई कि वह चेला नहीं मरेगा; पर येसु ने उससे यह नहीं कहा था कि वह नहीं मरेगा वरन्: "यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक रहे, तो तुझे इससे क्या?"

---

*सन्त योहन के सुसमाचार में यह तीसरा दर्शन है।

३७२ **गलीलिया के एक पहाड़ पर दर्शन** ग्यारह चेले गलीलिया के उस पहाड़ पर गए जहाँ येसु ने उनको बुलाया था। येसु को देखकर चेलों ने उनकी आराधना की ; पर किसी-किसी को सन्देह भी हुआ।

३७३ **चेलों को भेजना** तब येसु ने पास आकर उनसे कहा: "स्वर्ग और पृथ्वी पर सारा अधिकार मुझे दिया गया है। जाओ और सब जातियों को शिष्य बनाकर उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दो। जो-जो आज्ञाएँ मैंने तुम्हें दी हैं, इन सब का पालन करना उन्हें सिखलाओ। जो कोई विश्वास करे और बपतिस्मा ग्रहण करे वह मुक्ति पाएगा ; पर जो विश्वास न करे वह दंड की आज्ञा पाएगा। विश्वास करनेवालों के साथ ये लक्षण रहेंगे: मेरा नाम लेकर वे नरकदूतों को निकालेंगे, नई-नई भाषाएँ बोलेंगे, साँपों को उठा लेंगे, और यदि कोई विष पी जाएँ तो उससे उन्हें कोई हानि नहीं होगी, रोगियों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएँगे। देखो, मैं सदा ही, हाँ, संसार के अन्त तक तुम्हारे साथ हूँ।"*

३५—प्रभु येसु का स्वर्गारोहण

३७४ **अन्तिम निर्देश** येसु ने उनसे कहा: "तुम्हारे साथ रहते हुए मैंने तुम लोगों से यह कहा है कि जो-जो बातें मूसा के नियम में, नबियों और भजनों में मेरे विषय में लिखी गई हैं सब का पूरा होना आवश्यक है।" तब उन्होंने उनके मन का अंधकार दूर किया ताकि वे धर्मग्रंथ समझ सकें, और उनसे कहा: "ऐसा ही लिखा था और इसलिए आवश्यक था कि ख्रीस्त दुःख भोगें और तीसरे दिन मुरदों में से जीवित हो उठें ; और यह भी कि मेरे नाम पर येरुसलेम से लेकर सभी जातियों में पाप-क्षमा के लिए पछतावे का उपदेश दिया जाए। तुम इन सब बातों के साक्षी हो।"

---

*धर्ममंडली भूल में नहीं पड़ सकती है क्योंकि ख्रीस्त उसके साथ सदा रहेंगे।

प्रेरितों के साथ भोजन करते समय येसु ने उन्हें यह आज्ञा दी: "पिता की जो प्रतिज्ञा तुमने मुझसे सुनी है उसी की बाट जोहते रहो। उसे मैं तुम्हारे पास भेजूँगा। जब तक ऊपर की शक्ति से आभूषित न हो जाओ तब तक नगर में ठहरे रहो। क्योंकि योहन ने तो पानी से बपतिस्मा दिया, परन्तु तुम थोड़े ही दिनों के बाद पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।"

इसपर जो साथ थे वे येसु से पूछने लगे: "प्रभु! क्या आप इसी समय इस्राएल का राज्य फिर स्थापित करेंगे?" येसु ने उनसे कहा: "जो समय और जो तिथियाँ पिता ने अपने ही अधिकार से निश्चित की हैं, उनका ज्ञान तुम्हारे लिए नहीं है; परंतु पवित्र आत्मा तुमपर उतरेगा और तुम उससे बल प्राप्त करोगे; और येरुसलेम में, सारे यहूदिया में, समारिया में, हाँ, पृथ्वी के छोर तक तुम मेरे साक्षी होगे।"

स्वर्गारोहण ३७५

[पुनरुत्थान के ४० दिन बाद]

यह कहकर, येसु उन्हें बेथानिया तक ले गए और अपना हाथ उठाकर उन्हें आशिष दी। आशिष देते ही येसु उनके देखते-देखते उठा लिए गए और बादल ने येसु को उनकी आँखों से छिपा लिया। तब वे स्वर्ग में उठा लिए गए और अब ईश्वर की दाहिनी ओर विराजमान हैं।

येसु के स्वर्ग जाते समय प्रेरित आकाश की ओर एकटक देख रहे थे; तब उज्ज्वल वस्त्र पहने दो पुरुष उनके निकट आ खड़े हुए थे और प्रेरितों से कहने लगे: "हे गलीलियो, तुम स्वर्ग की ओर ताकते हुए क्यों खड़े हो? जो तुम्हारे बीच से स्वर्ग में उठा लिए गए हैं, वे ही येसु उसी प्रकार फिर आएँगे, जिस प्रकार तुमने उनको स्वर्ग जाते देखा है।"

वे येसु को दण्डवत् करके बड़े आनन्द से येरुसलेम लौटे; और निरन्तर मंदिर में ईश्वर की स्तुति और प्रशंसा करने लगे।

पेन्तेकोस्त का पर्व ३७६

[स्वर्गारोहण के १० दिन बाद]

पेन्तेकोस्त का दिन आया और वे सब एक स्थान पर एकत्र थे। एकाएक आकाश से आती हुई घोर आँधी की-सी आवाज़ सुन पड़ी, और सारा घर, जहाँ वे बैठे थे, गूँज उठा। आग की-सी

अलग-अलग जीभें उन्हें दीख पड़ीं जो हर एक व्यक्ति पर आ बैठीं; सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए और भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलने लगे ज्यों-ज्यों पवित्र आत्मा उन्हें बोलने की शक्ति देता था।

उन दिनों आकाश के नीचे के सब देशों के धर्मी यहूदी येरुसलेम में ठहरे थे। यह आवाज़ सुनते ही जनता दौड़ आई, और देखकर दंग रह गई, क्योंकि हर एक मनुष्य ने उन्हें अपनी ही भाषा में बोलते सुना। सब चकित और अचम्भित होकर कहने लगे: "देखो, क्या ये बोलनेवाले सब के सब गलीली नहीं हैं? यह क्या बात है कि हममें से हर एक अपनी-अपनी जन्मभूमि की भाषा सुनता है? पारथी, मेदी और एलामीती; मेसोपोटेमिया, यहूदिया और कपादोसिया, पोन्तुस और एशिया, फ्रीजिया और पंफिलिया, मिस्र और किरीन के निकटवर्त्ती लीबिया के निवासी; रोम के प्रवासी, क्या यहूदी, क्या यहूदी दीक्षार्थी; क्रेता और अरब के निवासी: हम सब के सब अपनी-अपनी भाषा में उन्हें ईश्वर के महान् कार्यों का गुणगान करते सुनते हैं।"

३७७ सन्त पेत्रुस के उपदेश का सारांश

पेत्रुस ग्यारहों के साथ खड़े होकर ऊँचे स्वर में उनसे कहने लगे:

"हे यहूदियो और सब येरुसलेम-निवासियो, मेरी बातें ध्यान से सुनो…। येसु नाजरी एक मनुष्य था जिसको ईश्वर ने तुम लोगों के सामने सत्य प्रमाणित किया था; उन महान् कार्यों, चमत्कारों और चिह्नों से, जो ईश्वर ने उनके द्वारा तुम्हारे बीच में किए, जैसा तुम स्वयं ही जानते हो। वे ईश्वर के विधान और पूर्व ज्ञान के अनुसार पकड़वाए गए; और तुमने उनको दुष्टों द्वारा क्रूस पर ठोंककर मरवा डाला…।

"इन्हीं येसु को ईश्वर ने फिर जीवित किया, हम सब इस बात के साक्षी हैं। ईश्वर की दाहिनी ओर ऊँचा पद पाकर और पिता से प्रतिज्ञात पवित्र आत्मा को प्राप्त कर, येसु ने उसको भेज दिया है। उस पवित्र आत्मा को तुम देखते और सुनते हो…। इसलिए इस्राएल का सारा वंश यह निश्चित रूप से जान ले: जिनको तुमने क्रूस पर चढ़ाया है: उन्हीं येसु को ईश्वर ने प्रभु भी और ख्रीस्त भी ठहराया है।"

तीन हज़ार का बपतिस्मा ३७८

इन बातों के सुनने पर लोगों के हृदय पछतावे से भर गये; वे पेत्रुस और अन्य प्रेरितों से पूछने लगे: "भाइयो! हम क्या करें?" पेत्रुस ने उन्हें उत्तर दिया: "पछतावा करो और तुममें से प्रत्येक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए येसु ख्रीस्त के नाम पर बपतिस्मा ग्रहण करे; तब पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम्हारे लिए, तुम्हारी सन्तान के लिए और दूरवर्ती उन सब लोगों के लिए है, जिनको प्रभु हमारा ईश्वर बुलाएगा।" साथ ही और बहुत-से शब्दों द्वारा उन्हें समझाकर पेत्रुस ने कहा: "इस बुरी पीढ़ी से बचे रहो।" जिन्होंने पेत्रुस की बातें मानीं, उन्होंने बपतिस्मा ग्रहण किया; उस दिन लगभग तीन हजार सम्मिलित हुए।

सुसमाचार का प्रचार ३७९

तब वे (प्रेरित) सब स्थानों में जा-जाकर उपदेश देने लगे। प्रभु उनको सहायता देते रहे और साथ-साथ किए जानेवाले चमत्कारों द्वारा उनकी शिक्षा को प्रमाणित करते रहे।

सन्त योहन के सुसमाचार का उपसंहार ३८०

येसु ने अपने चेलों के सामने और भी बहुत चमत्कार किए, जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं; परन्तु इतना ही लिखा गया है जिससे तुम विश्वास करो, कि येसु ही ख्रीस्त हैं, ईश्वर के पुत्र हैं, और तुम विश्वास करके उनके नाम के द्वारा जीवन प्राप्त करो।

यह वही चेला है, जो इन बातों का साक्ष्य देता है, और जिसने ये बातें लिखी हैं; और हमें विदित है कि उसका साक्ष्य सत्य है। और भी बहुत से कार्य येसु ने किए हैं; यदि वे एक-एक करके लिखे जाते, तो मैं सोचता हूँ कि जो पुस्तकें लिखी जातीं, वे जगत्-भर में भी न समातीं।

HARMONY

Ref. No.	Mt.	Mk.	Lk.	Jo.
1- 4	...	...	...	1, 1–18
5-11	...	...	1, 1–80	...
12	1, 18–25	...	...	...
13	1, 1–17	...	3, 23b–38	...
14-20	...	...	2, 1–38	...
21-23	2, 1–18	...	...	...
24	2, 19–23	...	2, 39	...
25-26	...	...	2, 40–52	...
27-28	3, 1–10	1, 1– 6	3, 1– 9	...
29	...	...	3, 10–14	...
30	3, 11–12	1, 7– 8	3, 15–18	...
31	3, 13–17	1, 9–11	3, 21–23a	...
32	4, 1–11	1, 12–13	4, 1–13	...
33-37	...	...	...	1, 19–51
38-39	...	...	...	2, 1–12
40	21, 12–13	11, 15–17	19, 45–46	2, 13–17
41-42	...	...	...	2, 18–25
43-47	...	...	...	3, 1–36
48	14, 3– 5	6, 17–20	3, 19–20	...
49	4, 12	1, 14a	4, 14a	4, 1– 4
50-54	...	...	...	4, 5–54
55	4, 13–17	1, 14b–15	4, 14b–15	...
56	4, 18–22	1, 16–20	5, 1–11	...
57	...	1, 21–28	4, 31–37	...
58-59	8, 14–17	1, 29–34	4, 38–41	...
60	4, 23	1, 35–39	4, 42–44	...
61	8, 2– 4	1, 40–45	5, 12–16	...
62-66	9, 1–17	2, 1–22	5, 17–39	...
67	12, 1– 8	2, 23–28	6, 1– 5	...
68-69	12, 9–15a	3, 1– 6	6, 6–11	...
70	12, 15b–21	...	...	...
71	10, 1– 4	3, 13–19	6, 12–16	...
72	4, 24–25	3, 7–12	6, 17–19	...
73	5, 1–12	...	6, 20–23	...
74	...	...	6, 24–26	...
75	5, 17–20	...	16, 17	...
76	5, 21–24	...	...	...

Ref. No.	Mt.	Mk.	Lk.	Jo.
77-79	5, 27–37	...	...	...
80	5, 38–42 7, 12	...	6, 29–31	...
81	5, 43–48	...	6 { 27–28 32–36	...
82-83	6, 1–9	...	...	...
84	6, 16–18	...	...	...
85	7, 1–5	4, 24b	6 { 37–38 41–42	...
86	7, 6	...	...	...
87	7, 13–14	...	...	...
88	7, 15–20	...	6, 43–44	...
89	7, 21.24–29	...	6, 46–49 7, 1	...
90	8, 1.5–10.13	...	7, 2–10	...
91	...	...	7, 11–17	...
92	11, 2– 6	...	7, 18–23	...
93	11, 7–15	...	7, 24–28 16, 16	...
94	11, 16–19	...	7, 29–35	...
95	...	...	7, 36–50	...
96	...	...	8, 1– 3	...
97	...	3, 20–21	...	...
98	9, 32–34 12, 22–24	3, 22	11, 14–15	...
99	12, 25–30	3, 23–27	11, 17–23	...
100	12, 31–37	3, 28–30	12, 10 6, 45	...
101	12, 46–50	3, 31–35	8, 19–21	...
102	13, 1– 9	4, 1– 9	8, 4– 8	...
103	13, 10–15	4, 10–12.25	8, 9–10.18b	...
104	13, 18–23	4, 13–20	8, 11–15	...
105	...	4, 21–24a	8, 16–18a	...
106	...	4, 26–29	...	...
107	13, 24–30	...	...	...
108	13, 31–32	4, 30–32	13, 18–19	...
109	13, 33	...	13, 20–21	...
110	13, 34–35	4, 33–34	...	...
111-115	13, 36–53	...	...	...
116	8, 18.23–27	4, 35–40	8, 22–25	...
117	8, 28–34	5, 1–20	8, 26–39	...
118-120	9, 18–26	5, 21–43	8, 40–56	...
121	9, 27–31	...	...	...
122	13, 54–58 9, 35	6, 1– 6	4, 16–30	...
123	10, 5–15	6, 7–11	9, 1– 5	...
124	11, 1	6, 12–13	9, 6	...
125	14, 6–12	6, 21–29	...	...
126	14, 1– 2	6, 14–16	9, 7– 9	...

Ref. No.	Mt.	Mk.	Lk.	Jo.
127	…	6, 30–32	9, 10	…
128	9, 36 14, 13–21	6, 33–44	9, 11–17	6, 1–13
129-130	14, 22–33	6, 45–52	…	6, 14–21
131	14, 34–36	6, 53–56	…	…
132-136	…	…	…	6, 22–72
137-139	…	…	…	5, 1–47
140	…	…	…	7, 1
141	15, 1–11	7, 1–16	…	…
142	15, 12–20	7, 17–23	6, 39	…
143-145	15, 21–31	7, 24–37	…	…
146	15, 32–39	8, 1–10	…	…
147	16, 1. 4	8, 11–13	…	…
148	16, 5–12	8, 14–21	…	…
149	…	8, 22–26	…	…
150-152	16, 13–28	8, 27–39	9, 18–27	…
153-155	17, 1–17	9, 1–26	9, 28–43	…
156	17, 18–20	9, 27–28	17, 5– 6	…
157	17, 21–22	9, 29–31	9, 44–45	…
158	18, 1– 5	9, 32–36	9, 46–48	…
159	…	9, 37–39	9, 49–50	…
160	10, 41–42	9, 40	…	…
161	18, 6–7.10	9, 41	17, 1–3a	…
162	18, 8– 9	9, 42–48	…	…
163	5, 13	9, 49	14, 34–35	…
164	5, 14–16	…	…	…
165	18, 15–20	…	…	…
166	18, 21–22	…	17, 3b– 4	…
167	18, 23–35	…	…	…
168	17, 23–26	…	…	…
169	11, 20–24	…	10, 13–15	…
170-175	…	…	…	7, 2–53 8, 1
176-181	…	…	…	8, 2–59
182-185	…	…	…	9, 1–41
186-189	…	…	…	10, 1–21
190	…	…	9, 51–56	…
191	8, 19–22	…	9, 57–62	…
192	9, 37–38 10, 16.40	…	10, 1–12.16	…
193	…	…	10, 17–20	…
194	11, 25–30 13, 16–17	…	10, 21–24	…
195-197	…	…	10, 25–42	…
198	6, 7–15	11, 25–26	11, 1– 4	…
199	…	…	11, 5– 8	…
200	7, 7–11	…	11, 9–13	…
201	12, 38–42	…	11, 16.29–32	…
202	12, 43–45	…	11, 24–26	…

Ref. No.	Mt.	Mk.	Lk.	Jo.
203	...	...	11, 27–28	...
204	6, 22–23	...	11, 33–36	...
205-208	...	...	11, 37–54	...
209	10 { 19–20 24–33	...	{ 6, 40 12, 1– 9 12, 11–12	...
210	...	...	12, 13–21	...
211	6, 25–34	...	12, 22–31	...
212	6, 19–21	...	12, 32–34	...
213	24, 42	13, 33–37	12, 35–38	...
214	24, 43–44	...	12, 39–40	...
215	24, 45–51	...	12, 41–48	...
216	10, 34–36	...	12, 49–53	...
217	16, 2– 3	...	12, 54–56	...
218	5, 25–26	...	12, 57–59	...
219-221	...	...	13, 1–17	...
222	...	...	13, 22	...
223-224	...	...	...	10, 22–39
225	19, 1– 2	10, 1	...	10, 40–42
226	{ 7, 22–23 8, 11–12	...	13, 23–30	...
227	...	...	13, 31–33	...
228-231	...	...	14, 1–24	...
232	10, 37–38	...	14, 25–27	...
233-234	...	...	14, 28–33	...
235	18, 12–14	...	15, 1– 7	...
236-237	...	...	15, 8–32	...
238	...	...	16, 1– 8	...
239	6, 24	...	16, 9–13	...
240	...	...	16, 14–15	...
241	...	...	16, 19–31	...
242	...	...	17, 7–10	...
243-244	...	...	17, 11–21	...
245	{ 24 { 26–28 37–41 10, 39	...	17, 22–37	...
246-247	...	...	18 1–14	...
248	19, 3– 9	10, 2–12	16, 18	...
249	19, 10–12	...	...	...
250-253	19, 13–29	10, 13–30	18, 15–30	...
254	{ 19, 30 20, 1–16a	10, 31	...	...
255-259	...	...	...	11, 1–56
260	20, 17–19	10, 32–34	18, 31–34	...
261	20, 20–23	10, 35–40	...	...
262	20, 24–28	10, 41–45	22, 25–26.30b	...
263	20, 29–34	10, 46–52	18, 35–43	...
264	18, 11	...	19, 1–10	...
265	...	...	19, 11–28	...

Ref. No.	Mt.	Mk.	Lk.	Jo.
266	26, 6–13	14, 3– 9	...	12, 1– 8
267	...	...	...	12, 9–11
268-269	21, 1– 9	11, 1–10	19, 29–40	12, 12–19
270	...	...	19, 41–44	...
271	21 { 10–11 14–16	11, 11a	...	...
272	21, 17	11, 11b	...	12, 20–36
273	21, 18–19a	11, 12–14	...	...
274	...	11, 18–19	19, 47–48	...
275	21, 19b–22	11, 20–24	...	...
276	21, 23–27	11, 27–33	20, 1– 8	...
277	21, 28–32	...	...	...
278-280	21, 33–46	12, 1–12a	20, 9–19	...
281	22, 1–10	...	...	...
282	{ 22, 11–14 20, 16b	...	...	...
283-284	22, 15–33	12, 12b–27	20, 20–39	...
285	22, 34–40	12, 28–34a	...	...
286	22, 41–46	12, 34b–37	20, 40–44	...
287	23, 1–12	12, 38–40	20, 45–47	...
288-289	23, 13–36	...	...	...
290	23, 37–39	...	13, 34–35	...
291	...	12, 41–44	21, 1– 4	...
292	...	...	21, 37–38	...
293	24, 1– 3	13, 1– 4	21, 5– 7	...
294	{ 24, 4–14 10 { 17–18 21–23	13, 5–13	21, 8–19	...
295	24, 15–25	13, 14–23	21, 20–24	...
296	24, 32–35	13, 28–31	21, 28–33	...
297	24, 29–31	13, 24–27	21, 25–27	...
298	24, 36	13, 32	...	...
299	...	...	21, 34–36	...
300-302	25, 1–46	...	...	...
303-304	...	...	...	12, 37–50
305-310	...	...	...	{ 15, 1–27 16, 1–33
311	26, 1– 5	14, 1– 2	22, 1– 2	...
312	26, 14–16	14, 10–11	22, 3– 6	...
313	26, 17–19	14, 12–16	22, 7–13	...
314	26, 20.29	14, 17.25	22, 14–18	13, 1
315	...	...	22, 24.27–30a	...
316	...	...	...	13, 2–17
317	26, 21–25	14, 18–21	22, 21–23	13, 18–22
318	...	...	...	13, 23–30
319	26, 26–28	14, 22–24	22, 19–20	...
320	...	...	...	13, 31–35
321	26, 31–32	14, 27–28	...	...
322	26, 33–35	14, 29–31	22, 31–34	13, 36–38

Ref. No.	Mt.	Mk.	Lk.	Jo.
323	...	...	22, 35–38	...
324-326	...	...	...	14, 1–31
327-330	...	...	...	17, 1–26
331	26, 30.36–46	14, 26.32–42	22, 39–46	18, 1
332	26, 47–56	14, 43–52	22, 47–53	18, 2–12
333	26, 57	14, 53	22, 54a	18, 13.24.14
334	26, 58.69–70	14, 54.66–68	22, 54b–57	18, 15–18
335	...	...	...	18, 19–23
336	26, 71–75	14, 69–72	22, 58–62	18, 25–27
337	26, 67–68	14, 65	22, 63–65	...
338	{27, 1 {26, 59–66	15, 1a 14, 55–64	22, 66–71	...
339-340	27, 3–10	...	...	...
341	27, 2	15, 1b	23, 1– 2	18, 28–32
342-343	27, 11–14	15, 2– 5	23, 3– 7	18, 33–38
344-345	...	...	23, 8–16	...
346	27, 15–23	15, 6–14	23, 17–23.25a	18, 39–40
347	27, 26b.27–30	15, 15b.16–19	...	19, 1– 3
348	...	...	...	19, 4–12
349	27 {26a.c {24–25	15, 15a.c	23, 24.25b	19, 13–16a
350	27, 31–32.33b	15, 20–22	23, 26–32	19, 16b–17
351-353	27, 33a.34–38	15, 23–28	23, 33–34.38	19, 18–24
354	27, 39–43	15, 29–32a	23, 35–37	...
355	27, 44	15, 32b	23, 39–43	...
356	...	...	...	19, 25–27
357	27, 45–50	15, 33–37	23, 44–45a.46	19, 28–30
358	27, 51–56	15, 38–41	23, 45b.47–49	...
359	...	...	...	19, 31–37
360	27, 57–61	15, 42–47	23, 50–56	19, 38–42
361	27, 62–66	...	...	...
362	28, 1– 4	16, 1– 4	24, 1– 2	20, 1– 2
363	28, 5– 8	16, 5– 8	24, 3–11	...
364	...	...	24, 12	20, 3–10
365	28, 9–10	16, 9–11	...	20, 11–18
366	28, 11–15	...	...	...
367	...	16, 12–13	24, 13–35	...
368	...	16, 14	24, 36–43	20, 19–23
369	...	...	...	20, 24–29
370-371	...	...	...	21, 1–23
372	28, 16–17	...	...	...
373	28, 18–20	16, 15–18	...	...
374	Acts 1, 4– 8 Lk. 24, 44–49			
375	Acts 1, 9–12 Mk. 16, 19 Lk. 24, 50–53			
376	Acts 2, 1–11			
377	Acts 2, 14.22b–23.32–33.36			
378	Acts 2, 37–41			
379	Mk. 16, 20			
380	Jo. 20, 30–31; 21, 24-25			

अनुक्रमणिका

सूचना – १ अंक अनुच्छेदों के सूचक हैं।
२ प्रभु के भाषण, दृष्टान्त और चमत्कार एकही स्थान पर एकत्र दिए गए हैं (दे० **भाषण, दृष्टान्त, चमत्कार**); वे प्राय: इस अनुक्रमणिका में अन्यत्र नहीं दुहराए जाते हैं।

इतवारों के सुसमाचार

इतवारों के सुसमाचार

सन्तों के परबों के सुसमाचार

PRINTED AT THE CATHOLIC PRESS, RANCHI